B.Ed.SE.-82

दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन
मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

खण्ड–1	**पाठ्यक्रम की अवधारणा और प्रकार**	**5-38**
इकाई–1	पाठ्यचर्या– आवश्यकता और प्रकार	5–16
इकाई–2	विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्यायी उपागम	17–26
इकाई–3	पाठ्यचर्या नियोजन/योजना और कार्यान्वयन	27–38
खण्ड–2	**कार्यात्मक भौक्षणिक कौशल सिखाना**	**39-72**
इकाई–4	शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनीक	39–**50**
इकाई–5	ब्रेल शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ	51–58
इकाई–6	दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु पढ़ने और लिखने के उपकरण	59–72
खण्ड–3	**स्वतंत्र जीवन कौशल का शिक्षण**	**73-96**
इकाई–7	स्वतंत्र जीवन कौशल	73–80
इकाई–8	दैनिक जीवन कौशल और संवेदी दक्षता	81–88
इकाई–9	सामाजिक संपर्क कौशल शिक्षण की तकनीकें	89–96
खण्ड–4	**पाठ्यकम अनुकूलन**	**97-128**
इकाई–10	पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन	97–106
इकाई–11	शिक्षण हेतु पाठ योजना और शिक्षण सहायक सामग्री	107–118
इकाई–12	शिक्षणशास्त्र नीतियाँ/शैलियाँ	119–128
खण्ड–5	**पाठ्यचर्या संबधी गतिविधियॉ**	**129-160**
इकाई–13	शारीरिक शिक्षा गतिविधियों का अनुकूलन	129–142
इकाई–14	दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला	143–153
इकाई–15	खेल संस्कृति और मनोरंजन गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली एजेंसियां/संगठन	154–160

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed.SE.82 दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रो0 सत्यकाम	**कुलपति, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज**

विशेशज्ञ समिति

प्रो0 पी0के0स्टालिन	निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 पी 0के 0पाण्डेय	आचार्य , शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 छत्रसाल सिंह	आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा,उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0के0 एस0 मिश्रा	पूर्व कुलपति एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 धनन्जय यादव	आचार्य, विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज
प्रो0 मीनाक्षी सिंह	आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,वाराणसी
डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी	सह–आचार्य, शिक्षाविद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
डॉ0 दिनेश सिंह	सह–आचार्य, शिक्षाविद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

डॉ0 आद्या शक्ति	सह–आचार्य, विशिष्ट शिक्षा,
डॉ0 शकुन्तला मिश्रा	राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उत्तर प्रदेश (इकाई 1,2,3,10,11,12,)
डॉ0 पंकज कुमार	सहायक आचार्य राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान,देहरादून (इकाई 4,6)
श्री प्रियदर्शी मिश्रा	सहायक आचार्य सी.आर.सी. सुंदरनगर,मंडी, हिमाचल प्रदेश (इकाई 7,9)
श्रीमति विशा हुड़ा	सहायक आचार्य राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान,देहरादून (इकाई 8)
श्री बृजलाल	प्रवक्ता राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान,देहरादून (इकाई 5)
डॉ0 हेमन्त कुमार मौर्या	सहायक आचार्य आई0आई0 टी0 गांधीनगर,गुजरात (इकाई 13,14,15)

सम्पादक

डॉ0 विनोद केन	सहायक आचार्य राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9, 10,11,12,13,14,15)

परिमापक

प्रो0 पी 0के 0 पाण्डेय	आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,13,14,15)

समन्वयक

डॉ. नीता मिश्रा	सहा0 आचार्य, (विशेष शिक्षा), शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज.

प्रकाशक

© उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

ISBN-978-93-48270-08-5

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन वि'वविद्यालय, प्रयागराज सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठयसामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

नोट : पाठय सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आमड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन – उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रकाशक – कुलसचिव, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज – 2024

मुद्रक : चंद्रकला यूनिवर्सल प्राइवेट लिमिटेड, 42/7 जवाहरलाल नेहरू रोड, प्रयागराज–211002

खण्ड परिचय

दृष्टि बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

खण्ड–1 पाठ्यक्रम की अवधारणा और प्रकार

इस खण्ड में आप पाठ्यक्रम की अवधारणा और प्रकार से अवगत हो सकेंगे। इस खण्ड में कुल तीन इकाइयां है।

इकाई–01 : में आप पाठ्यचर्या का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे साथ ही इसकी विविध परिभाषाओं का विश्लेषण एवं इसकी आवश्यकता एवं प्रकार से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–02 : में आप विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या विकास के विविध उपागमों को विस्तार से समझ सकेंगे।

इकाई–03 : में आप पाठ्यचर्या के नियोजन एवं क्रियान्वयन का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

खण्ड–2: कार्यात्मक शैक्षणिक कौशल सिखाना

इस खण्ड में आप दष्टिवान मार्गदर्शक तकनीकि से अवगत हो सकेंगे। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयां है।

इकाई–04 : में आप दृष्टिबाधित बच्चों के लिए प्रयोग होने वाली विभिन्न शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनीकों से अवगत होगे।

इकाई–05 : में आप ब्रेल पठन–लेखन से पूर्व की तैयारियां, विधियाँ ब्रेल शिक्षण प्रक्रिया के विषय से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–06 : में आप उभरे हुए पेपर संबंधी तकनीकी या स्पर्शीय ग्राफिक्स संबंधी विषयों से अवगत हो सकेंगे।

खण्ड–3: स्वतंत्र जीवन कौशल का शिक्षण

इस खण्ड में आप स्वतंत्र जीवन कौशल में प्रशिक्षण से अवगत हो सकेंगे। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयां है।

इकाई–07 : में आप स्वयं देख–भाल और इशारा को समझ सकेंगे।

इकाई–08 : में आप दृष्टिबाधित लोगो के दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी तरीके को समझ सकेंगे।

इकाई–09 : में आप दिव्यांगजनों के सामाजिक कौशल के विकास के विभिन्न पहलूओं पर चर्चा करेगें।

खण्ड–4: पाठ्यक्रम अनुकूलन

इकाई–10 : में आप पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन के अर्थ,प्रकार व उपयोगिता को समझ सकेंगे।

इकाई–11 : में आप दृष्टिबाधित बच्चों के शिक्षण हेतु पाठ योजना और शिक्षण सहायक सामग्रियों से अवगत हों सकेंगे।

इकाई–12 : में आप दृष्टिबाधित बच्चों के शिक्षण हेतु शिक्षणशास्त्र नीतियाँ/शैलियाँ के विभिन्न पहलूओं को समझ सकेंगे।

खण्ड–5: पाठ्यचर्या संबधी गतिविधियॉ

इकाई–13 : में आप दृष्टिबाधित बच्चों के शारीरिक शिक्षा गतिविधियों का अनुकूलन को समझ सकेंगे।

इकाई–14 : में आप दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला तरीके को समझ सकेंगे।

इकाई–15 : में आप दृष्टिबाधित बच्चों के लिए खेल संस्कृति और मनोरंजन गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली एजेंसियां/संगठनों से अवगत हो सकेगें।

सन्देश

मेरे प्रिय शिक्षार्थियों,

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय,प्रयागराज में आपके प्रवेश लेने पर मैं गर्मजोशी से स्वागत करते हुए खुशी का अनुभव कर रहा हूँ। सन् 1999 में स्थापित उत्तर प्रदेश का यह एकमात्र ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ पर "मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धित" (O.D.E.) के माध्यम से शिक्षा प्रदान की जाती हैं। अपनी स्थापना के मात्र एक दशक के समय में विश्वविद्यालय ने 12 क्षेत्रीय और 1300 से अधिक अध्ययन केन्द्रों की सहायता से उत्तर प्रदेश के उन दुर–दराज इलाकों में भी, जहाँ अन्य शिक्षण संस्थान नहीं पहुँचा पाये हैं अपनी व्यापक पहुँच बनायी हैं। विश्वविद्यालय के लगभग 125 स्नातक/स्नाकोत्तर, डिग्री, डिप्लोमा और प्रमाणपत्र कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश की उच्च शिक्षा के विकास में निरन्तर अपना योगदान दे रहा है।

वर्तमान समय में भारत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में **विश्व में दूसरे स्थान** पर है। हमारे देश में अधिकतर विश्वविद्यालय एवं कालेज शहरी क्षेत्रों में स्थापित है जबकि एक बहुत बड़ी आबादी, जो ग्रामीण एवं दूरदराज इलाके में बसी है, उनको उच्च शिक्षा का अवसर उपलब्ध नही हो पाता है। ऐसे लोगो के लिए यह मुक्त विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा प्राप्त करने का एक सुनहरा अवसर उपलब्ध कराती हैं। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा उन लोगों के लिए अध्ययन का अवसर प्रदान करता है जो आर्थिक, सामाजिक और भौगौलिक सीमा/बन्धन के कारण उच्च शिक्षा से वंचित हैं। भारत की शिक्षा व्यवस्था को एव मजबूत आधार प्रदान करने एवं सतत् शिक्षा के विकास के लिए मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति ने नवीन मार्ग का सृजन किया है।

हमारे कार्यक्रम कई दृष्टिकोणों से सुविधाजनक हैं क्योकि यह **"छात्र जहाँ हम वहाँ"** जैसे आदर्श एवं लचीली पद्धति पर पर आधारित है। जहाँ एक ओर परम्परागत शिक्षा के अन्तर्गत समय से कक्षा में उपस्थित होने जैसी बाध्यताएं हैं वही दूसरी ओर मुक्त विश्वविद्यालय में इस बन्धन से आजादी मिलती है और शिक्षार्थी अपनी सुविधानुसार परामर्श कक्षाओं मे आकर या मोबाइल काउन्सिलिंग के माध्यम से ज्ञान प्राप्त कर सकते है। विषय के विविध पक्षों का ज्ञान कराने के लिए विद्वान विषय–विशेषज्ञों द्वारा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के आधार पर पाठ्य सामग्री तैयार करायी जाती है। जो विविध विद्वानों के ज्ञान और कौशल का निचोड़ है। इस प्रकार यहाँ पर **"कोई भी, कहीं भी और किसी भी समय"** अध्ययन कर सकता है। अर्थात् "**3A (Any One, Any Where and Any Time)**' मुक्त और दूरस्थ शिक्षा पद्धति के विकास का मूल दर्शन है। शिक्षार्थियों के शिक्षा के स्तर में गुणोत्तर वृद्धि के लिए आईसीटी आधारित कार्यक्रमों की शुरूआत की गई है तथा शिक्षा में नवीन तकनीक को जोड़ने के लिए कई महत्वपुर्ण कदम मुक्त विश्वविद्यालय उठा चुका है। शिक्षा को और सरल तथा रोचक विधि से आप तक पहुँचाने एवं समझाने के लिए हम नित नवीन सूचना तकनीकियों का प्रयोग कर रहे हैं।

अन्त में मुझे विश्वास है कि हम विश्वविद्यालय से शिक्षार्थी के रूप में जुड़कर आप अपने ज्ञान और कौशल में वृद्धि करेंगे और अपने जीवन में सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि उच्च गुणवत्ता के साथ मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा क्षेत्र में यह विश्वविद्यालय देश में एक आदर्श बनकर उभरेगा।

आपकी सफलता की कामनाओं के साथ

आपका

कुलपति

खण्ड–1 पाठ्यक्रम की अवधारणा और प्रकार

इकाई– 1 पाठ्यचर्या– आवश्यकता और प्रकार

संरचना

1.01 प्रस्तावना

1.02 उद्देश्य

1.03 पाठ्यचर्या का संप्रत्यय

1.04 पाठ्यचर्या की आवश्यकता

1.05 पाठ्यचर्या के प्रकार

1.06 सारांश

1.07 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1.08 अभ्यास कार्य

1.09 चर्चा के बिंदु

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.01 प्रस्तावना

समस्त शैक्षिक क्रियाओं का आयोजन शिक्षार्थियों में अन्तर्निहित गुणों को परिलक्षित करने के उद्देश्य से किया जाता है। शिक्षार्थी शिक्षा, औपचारिक, आनौपचरिक एवं निरौपचारिक तीनों माध्यमों से ग्रहण करते है। हम जानते हैं कि विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक प्रकार की गतिविधियां जैसे – प्रार्थना, विशेष दिनों का आयोजन, एक निश्चित समय सारणी के अनुसार कक्षाओं का संचालन, प्रायोगिक क्रियाकलाप, परीक्षाएं इत्यादि शैक्षणिक गतिविधियों के साथ ही खेलकूद, प्रतियोगिता, पुस्तक मेला, विज्ञान प्रदर्शनी, प्रयोगशालाओं में विशेष गतिविधियाँ, स्काउट गाइड, एन.सी.सी., सांस्कृतिक कार्यक्रम इत्यादि विविध क्रियाकलापों का आयोजन करता है। इन सभी गतिविधियों के समुच्चय को पाठ्यचर्या के नाम से जाना जाता है। अर्थात पाठ्यचर्या एक ऐसी धुरी है जिसके चारों तरफ विद्यालय के विविध कार्यक्रम एवं समस्त क्रियाकलाप विकसित, नियोजित, आयोजित तथा संचालित किए जाते हैं यह सभी क्रियाकलाप एक दूसरे से संबंधित होते हैं। यह क्रियाकलाप शिक्षार्थियों का मानसिक, शारीरिक एवं मनोसंवेगात्मक विकास करते हैं।

प्रस्तुत इकाई में शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु प्रयुक्त साधन अर्थात पाठ्यचर्या का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे साथ ही इसकी विविध परिभाषाओं का विश्लेषण एवं इसकी आवश्यकता एवं प्रकार की भी चर्चा करेंगे।

1.02 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत के बाद आपः–

1. पाठ्यचर्या की संकल्पना समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या की विविध परिभाषाओं को समझ सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या के अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या की आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या के लाभों को जान सकेगे।
6. पाठ्यचर्या के प्रकारों को जान सकेंगे।

7. विविध पाठ्यचर्या प्रकारों के मध्य परस्पर सम्बन्ध की विवेचना कर सकेंगे।

8. पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के मध्य अंतर कर सकेंगे।

1.03 पाठ्यचर्या का संप्रत्यय

पाठ्यचर्या सुपरिचित शब्द है जो विद्यालय, विश्वविद्यालय तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। शिक्षा –दीक्षा से जुड़े लोग प्रायः इसका प्रयोग करते हैं कई बार इसका प्रयोग बिना सटीक अर्थ जाने होता है। पाठ्यचर्या आंग्ल भाषा करिकुलम (curriculum) का हिंदी रूपांतरण है। करिकुलम शब्द लैटिन भाषा के कुर्रेर (Currer) शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है रेस कोर्स (Race course) अर्थात दौड़ का मैदान। जिस प्रकार धावक दौड़ के मैदान में विभिन्न कठिनाइयों को पार करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करता है उसी प्रकार पाठ्यचर्या में भी शिक्षक एवं शिक्षार्थी अपने निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए विभिन्न स्तरों से होकर गुजरते है। इसलिए पाठ्यचर्या की तुलना दौड़ के मैदान से की गयी है। विद्यार्थी अपने पाठ्यचर्या के अनुसार विद्यालय में सभी क्रियाकलापों में प्रतिभाग करता हैं। हिंदी में इसके शाब्दिक अर्थ को देखे तो पाठ्यचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है–– पाठ्य और चर्या। पाठ्य का अर्थ है 'पढ़ने योग्य' अथवा 'पढ़ाने योग्य' और चर्या का अर्थ है नियमपूर्वक अनुसरण'। इस प्रकार पाठ्यचर्या का अर्थ हुआ–– पढ़ने योग्य (सीखने योग्य) अथवा पढ़ाने योग्य (सिखाने योग्य) विषयवस्तु और क्रियाओं का नियमपूर्वक अनुसरण करना।

वृहत अर्थों में पाठ्यचर्या के अंतर्गत वह सारी क्रियाएं एवं अनुभव समाहित होते हैं जो विद्यार्थी विद्यालय के अंदर एवं विद्यालय के बाहर प्राप्त करता है तथा अपना सर्वांगीण विकास करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थी विद्यालय में प्राप्त ज्ञान के साथ–साथ विद्यालय के बाहर से मिलने वाले ज्ञान को भी प्राप्त करता है तथा वास्तविक जीवन के अनुभवों में उसका उपयोग/प्रयोग करता है और अपने जीवन काल में उसका प्रयोग करता है। पाठ्यचर्या से आशय विद्यार्थी द्वारा प्राप्त किये गए समग्र ज्ञान से है जो वह अपनी शैक्षिक प्रक्रिया के दौरान प्राप्त करता है। पाठ्यचर्या में उन सभी अध्ययन परिस्थितियों में क्रमिक रुपरेखा बनायी जाती है जो शिक्षा के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आवश्यक हैं। इसमें शिक्षण के ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनों पक्ष शामिल होते हैं। शिक्षा की प्रक्रिया में पहला कदम पाठ्यचर्या से शुरू होता है। पाठ्यचर्या शिक्षा एवं सीखने से संबंधित क्यों, क्या, कब, कहां, कैसे, और किसके साथ, को परिभाषित करता हैः

इसका सम्बन्ध समग्रता से शिक्षण–अधिगम के परिप्रेक्ष्य, शिक्षण सामग्री, उपलब्ध समय में सीखने के अनुभव का अनुक्रमण, शिक्षण संस्थानों की विशेषताओं, सीखने के अनुभव की विशेषताओं, सीखने और सिखाने के लिए संसाधन (जैसे पाठ्यपुस्तकों और नई प्रौद्योगिकियों), मूल्यांकन इत्यादि सभी से है।

पाठ्यचर्या और पाठ्क्रम में अंतर

- संकीर्ण अर्थ में पाठ्यचर्या (Curriculum) को पाठ्यवस्तु (Syllabus) और पाठ्यक्रम का पर्याय मान लिया जाता है या ये शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं। जबकि ये तीनों अलग अलग संप्रत्यय हैं पाठ्यचर्या बहुत बृहद एवं व्यापक पद है। पाठ्यवस्तु का तात्पर्य वह ज्ञान जो कि केवल पुस्तकों तक ही सीमित है। सीमित ज्ञान होने की वजह से यह केवल पुस्तकों में लिखे गए ज्ञान को समझने तक ही सीमित रह जाता है। अतः इस अर्थ के अनुसार विद्यार्थी केवल पुस्तकों में दिए गए ज्ञान को ही प्राप्त कर पाता है तथा वास्तविक जीवन से अनभिज्ञ रहता है।

पाठ्यक्रम अर्थात् किसी विषय या अध्ययन की वह विषयवस्तु है जो क्रम से व्यवस्थित हो, पाठ्यक्रम कहलाता है। पहले पाठ्यचर्या के लिए पाठयक्रम शब्द का प्रयोग किया जाता था, लेकिन अब पाठ्यचर्या की संकुचित मान्यता होने के कारण इस शब्द का प्रयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम में केवल ज्ञानात्मक पक्ष से सम्बंधित तथ्य ही क्रमबद्ध करते हैं। पाठ्यचर्या का वह भाग जिसमें उस स्तर के लिए सैद्धांतिक विषयों के ज्ञान की सीमा निश्चित की जाती है, पाठ्यक्रम होता है। अतः पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम में पूर्ण और अंश का भेद होता है। व्यापक अर्थ में पाठ्यचर्या का तात्पर्य विद्यार्थियों के बहुआयामी विकास करने तथा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शिक्षक द्वारा अपनायी गयी वे तमाम परिस्थितियां होती हैं जिनसे वह ज्ञान, अनुभव, क्रिया का अर्जन तथा आदत एवं व्यवहार में परिमार्जन करता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या में शिक्षक द्वारा पढ़ाये जाने वाले विषय वस्तु या पाठ्यक्रम की क्रियाएं, प्रयोगशाला के कार्य, सामुदायिक कार्य, लेखन, वाचन, पुस्तकालय आदि सभी क्रिया–कलापें

शामिल होते हैं। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–1953) ने पाठ्यचर्या को परिभाषित करते हुआ कहा था कि **"पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धांतिक विषयों से नहीं है जो विद्यालय में परंपरागत रूप से पढ़ाये जाते हैं अपितु इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी निहित है जिसे विद्यार्थी– विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला तथा खेल के मैदान एवं शिक्षक और शिक्षार्थियों के अनगिनत संपर्कों से प्राप्त करता है, इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यचर्या बन जाता है, जो विद्यार्थियों के सभी पक्षों को प्रमाणित कर सकता है तथा विकास में सहायता दे सकता है।"** पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों के विद्यालय या उसके बाहर के वे सभी अनुभव शामिल हैं जो अध्ययन कार्यक्रम में शामिल किये जाते हैं जिसका आयोजन विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक विकास में सहायता करते हैं।

विद्यार्थी विद्यालय में अनेक अनुभव प्राप्त करता है, कक्षा की शिक्षा से उसे ज्ञान प्राप्त होता है किन्तु उससे भी अधिक ज्ञान उसे खेल के मैदान में मिलता है। विद्यार्थियों और शिक्षकों से सुनकर, वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग लेकर इत्यादि क्रियाकलापों से वे नये अनुभव प्राप्त करता है। पाठ्यचर्या में ये सभी अनुभव सम्मिलित हैं। पाठ्यचर्या को विद्यालय की संपूर्ण कार्यप्रणाली के रूप में देखा और समझा जाता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि विद्यालय का सारा कार्य एक प्रकार की पाठ्यचर्या है। शिक्षण–अधिगम कार्य हो या सह पाठ्यचर्या गतिविधियां, पाठ्यचर्या के आधार पर एक शिक्षक अपना शिक्षण कार्य पूरा करता है। पाठ्यचर्या के लक्ष्य या प्रयोजन उससे सम्बंधित शैक्षिक उद्देश्यों से निर्दिष्ट होते हैं।

पाठ्यचर्या लिखित और अलिखित दोनों हो सकती है। सारभूत रूप से कहा जा सकता है कि पाठ्यचर्या वह है, जो विद्यालय पढ़ाने का प्रयास कर रहा है, जिसमें सामाजिक व्यवहार के साथ–साथ विषय वस्तु और चिंतन कौशल भी शामिल हो सकते हैं।

एक पाठ्यचर्या –

1. अध्ययन का एक कोर्स (course of study) जो शिक्षार्थी को विशिष्ट ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सक्षम करता है।
2. एक पाठ्यचर्या में किसी दिए गए अनुशासन का ''रोडमैप'' या ''दिशानिर्देश'' होता है। शिक्षकों के साथ–साथ शैक्षिक संस्थान के शिक्षण दर्शन दोनों ही दो सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं जिन पर एक पाठ्यचर्या आधारित होता है।
3. एक पाठ्यचर्या निर्देशात्मक अभ्यासों, सीखने के अनुभवों और विद्यार्थियों के प्रदर्शन के आकलन का संयोजन है जो किसी विशेष कोर्स के लक्षित उद्देश्यों को सामने लाने और उनका मूल्यांकन करने के लिए डिजाइन किया गया है।

व्यापक अर्थ में पाठ्यचर्या शब्द का प्रयोग अनेक रूपों में किया गया है। सामान्य रूप से इसका आशय इस प्रकार से समझा जा सकता है–

- विद्यालय में अध्ययन के लिए निर्दिष्ट पाठ्यचर्या तथा अन्य सम्बंधित सामग्री।
- विद्यार्थियों को पढ़ाये जाने वाली समस्त विषय सामग्री।
- किसी विद्यालय में किसी निश्चित विषय का पाठ्यक्रम।
- विद्यालय में विद्यार्थियों को दिए जाने वाले नियोजित अधिगम अनुभवों का सम्मिलित रूप ।

बोध प्रश्नः– नीचे दिय प्रश्नों के उत्तर दिजिए।

प्रश्न 1. पाठ्यचर्या शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के किस शब्द से हुई है?

....

....

....

2. पाठ्यचर्या और पाठ्यवस्तु में अंतर बताईये?

....
....
....

3. पाठ्यचर्या में निहित क्रियाओं के नाम लिखिए।

....
....
....

1.04 पाठ्यचर्या की आवश्यकता

शिक्षा एक सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जो विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति किन साधनों से की जा सकती है? शिक्षा के उद्देश्य यदि साध्य है तो उस तक पहुँचने हेतु साधन की आवश्यकता होगी। पाठ्यचर्या उन्ही साधनों में से एक महत्वपूर्ण साधन एवं शिक्षा का आधार है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो विद्यार्थी तथा शिक्षक को जोड़ता है। शिक्षक, विद्यार्थी के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए जो भी प्रयास करता है, पाठ्यचर्या के माध्यम से करता है। इससे अध्यापकों को दिशा–निर्देश प्राप्त होते हैं। शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए लक्ष्य निर्धारित होते है। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के लिए पाठ्यचर्या पथ प्रदर्शक है। इस सन्दर्भ में कनिघंम द्वारा दी गयी परिभाषा को उद्धरित करना उचित होगा जिसके अनुसार **"पाठ्यचर्या अध्यापक रुपी कलाकार के हाथ में वह साधन है जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ रुपी शिष्य को अपने कलागृह रुपी स्कूल में अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार विकसित अथवा रूप प्रदान करता है"**। पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन जैसे विद्यालय भवन, विद्यालय के अन्य उपकरण, पुस्तकालय की पुस्तकें तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एक मात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है। आइये, अब बिन्दुवार पाठ्यचर्या की आवश्यकता पर चर्चा करते हैं।

1. **शिक्षक एवं शिक्षार्थी हेतु**– पाठ्यचर्या शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को सही दिशा का बोध कराती है इससे समय और शक्ति का अपव्यय नहीं होता। पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षा की प्रक्रिया सुचारू रूप से चलती है। शिक्षा के किस स्तर (पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च) पर किन पाठ्य विषयों को पढ़ाना है, किन क्रियाओं को सिखाना है और किन अनुभवों को देना है ये सभी बातें पाठ्यचर्या में स्पष्ट रूप से दी जाती हैं।
2. **समाज एवं सांस्कृतिक उन्नयन हेतु**– किसी भी समाज की शिक्षा व्यवस्था, समाज एवं समाज की संस्कृति के अनुरूप होती है। संस्कृति के द्वारा उसके समाज की शैक्षिक प्रक्रिया पर्याप्त सीमा तक प्रभावित होती है। एक मूल्यनिष्ठ एवं मानवोचित समाज सदैव शाश्वत मूल्यों की प्राप्ति वाली शिक्षा पर बल देती है। भौतिक स्वरुप वाले समाज की संस्कृति सदैव शिक्षा द्वारा भौतिक उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास करती है। पाठ्यचर्या को संस्कृति अत्यंत प्रभावित करती है तथा वहां की पाठ्यचर्या वहां की संस्कृति के वर्तमान एवं भविष्य दोनों को प्रभावित करती है। इसके पीछे करण यह है कि समाज की संस्कृति शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करती है और पाठ्यचर्या इन उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है। अतः पाठ्यचर्या और समाज की संस्कृति में अन्योनाश्रितता का सम्बन्ध होता है।
3. **शिक्षा एवं समाज को दिशा प्रदान करने के लिए**– पाठ्यचर्या के माध्यम से एक ऐसी शैक्षिक प्रणाली का निर्माण होता है जो असमानताओं को न सिर्फ घटाती है बल्कि सभी प्रकार की उत्कृष्टताओं को प्रोत्साहित करती है। पाठ्यचर्या का एक प्रमुख प्रयोजन है, समावेशी और सभ्य समाज के विकास के लिए शिक्षा उपलब्ध कराना, जिससे विभिन्न समूहों विशेष कर वंचित वर्ग जैसे– विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों और सुविधा वंचित समूहों के शिक्षार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान कर उनके लिए शिक्षा की समान सुलभता सुनिश्चित की जा सके। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

– 2000 में विद्यालयी शिक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात कही गयी है – पाठ्यचर्या तीन स्तम्भों – प्रासंगिकता, समता और उत्कृष्टता पर आधारित होनी चाहिए।

4. **शिक्षा में एकरूपता के लिए**– एक निश्चित स्तर के लिए एक निश्चित पाठ्यचर्या होने से पूरे प्रदेश अथवा देश में शैक्षिक स्तर में समानता और एकरूपता बनी रहती है। जब किसी नए विषय की पढ़ाई किसी शिक्षा संस्था में प्रारंभ हो जाती है अथवा कोई नयी योजना लागू की जाती है तब सबसे पहले पाठ्यचर्या को ही निर्धारित करना पड़ता है।

5. **अध्ययन विषयों और जीवन के बीच संश्लेषण हेतु**– सभी पाठ्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य विद्यार्थियों को अध्ययन के विषय के साथ ही उन्हें सफल जीवन हेतु तैयार करना है। पाठ्यचर्या उन्हें शैक्षणिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक ज्ञान को एकीकृत करने की अनुमति देता है।

6. **समग्र विकास हेतु**– पाठ्यचर्या का उद्देश्य विद्यार्थी के समग्र विकास करना है, जिसमें उनका शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक विकास शामिल है।

7. **मूल्यांकन के लिए**– विद्यार्थी के मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या एक निश्चित आधार प्रदान करती है मूल्यांकन के आधार पर ही यह निर्णय किया जा सकता है कि जो कुछ प्राप्त हो चुका है उसे कैसे आगे बढ़ाया जाये तथा जिसकी प्राप्ति नहीं हो सकी है उसके लिये किस तरह के परिवर्तन किये जायें।

8. **विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की एवं विशिष्टता की पूर्ति हेतु**– विद्यार्थियों के पास रुचियों, कौशल, योग्यता, दृष्टिकोण, योग्यता आदि की एक विशाल विविधता होती है। पाठ्यचर्या विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं और विशिष्टताओं को पूरा करने का प्रयास करता है।

9. **मूल्यों की प्राप्ति हेतु**– शिक्षा का एक उद्देश्य चरित्र का विकास करना भी है और इसके लिए आवश्यक है कि विद्यार्थियों को विभिन्न वांछनीय मूल्यों को आत्मसात करने में मदद की जाए। इसलिए पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को एक वांछनीय मूल्य प्रणाली विकसित कर उन्हें सक्षम बनाता है। विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करना पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण घटक है। विभिन्न पाठ्यचर्या घटकों के माध्यम से, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व सहित सभी लोकतांत्रिक आदर्शों के साथ–साथ सहिष्णुता, दूसरों के प्रति सम्मान और सहयोग जैसे मूल्यों को स्थापित किया जाता है। इसका विकास एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने के अलावा एक अंतर्राष्ट्रीयतावादी मानसिकता को प्रोत्साहित करता है।

10. **व्यक्ति और समाज के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए**– लोकतंत्र की प्रभावशीलता व्यक्ति और समाज के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंधों पर निर्भर करती है। इसलिए एक ऐसे वातावरण का निर्माण जो व्यक्ति को उसके और समाज के बीच सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाता है, जो समाज की बेहतरी की ओर ले जाता है, यह पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

11. **अनुकूल वातावरण का निर्माण**– अनुकूल अधिगम वातावरण विद्यार्थियों को उनकी बुद्धि, भावनाओं और कौशल के अधिकतम संभव विकास को प्राप्त करने में सहायता करता है। इसलिए विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल शिक्षण वातावरण का निर्माण पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण कार्य है।

बोध प्रश्नः– नीचे दिय प्रश्नों के उत्तर दिजिए।

4.शिक्षा के उद्देश्य की प्राप्ति का साधन क्या है?

....
....
....

5.पाठ्यचर्या से सिर्फ शिक्षार्थी को दिशा–निर्देश प्राप्त होते हैं। (सत्य / असत्य)

....
....
....

6.पाठ्यचर्या विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है।(सत्य/असत्य)

....

....

....

7.विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए अनुकूल शिक्षण वातावरण का निर्माण पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण कार्य है। (सत्य/असत्य)

....

....

....

1.05 पाठ्यचर्या के प्रकार

शिक्षा बहु आयामी प्रक्रिया है और उसके उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बहु आयामी साधनों की आवश्यकता पड़ती हैं। अतः पाठ्यचर्या को अनेकों आधार पर विभाजित किया गया है। पाठ्यचर्या के कुछ प्रकारों का वर्णन निम्नलिखित हैं—

लिखित पाठ्यचर्या— एक लिखित पाठ्यचर्या वह है जिसे औपचारिक रूप से लिखित रूप में तैयार कर, शिक्षणकार्य के लिए प्रलेखित किया जाता है।

पढ़ाए गए पाठ्यचर्या— इस प्रकार के पाठ्यचर्या से तात्पर्य है कि शिक्षक वास्तव में कैसे पढ़ाते हैं।

समर्थित पाठ्यचर्या— एक समर्थित पाठ्यचर्या में कक्षा के अंदर और बाहर पाए जाने वाले अतिरिक्त उपकरण, संसाधन और सीखने के अनुभव शामिल होते हैं। इनमें विद्यार्थियों की अधिगम प्रकिया में शामिल करने के लिए अन्य नवीन तकनीकों के अलावा पाठ्यपुस्तकें, क्षेत्र यात्राएं, सॉफ्टवेयर और प्रौद्योगिकी शामिल हैं।

आकलित पाठ्यचर्या— एक आकलित पाठ्यचर्या या परीक्षित पाठ्यचर्या, विद्यार्थियों की सफलता को मापने के लिए प्रश्नोत्तरी, परीक्षण और अन्य प्रकार के तरीकों को संदर्भित करता है।

अनुशंसित पाठ्यचर्या— इस प्रकार की पाठ्यचर्या शिक्षा के विशेषज्ञों के सुझाव से उपजा है। अनुशंसित पाठ्यक्रम राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त शोधकर्ताओं, नीति निर्माताओं और विधायकों और अन्य विभिन्न स्रोतों से आता है।

गुप्त पाठ्यचर्या— इस पाठ्यचर्या की कोई योजना नहीं बनाई जाती है परन्तु विद्यार्थियों के सीखने पर इसका महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार की पाठ्यचर्या को हमेशा संप्रेषित या औपचारिक रूप से लिखा नहीं जाता है और इसमें अंतर्निहित नियम, अनिर्दिष्ट अपेक्षाएं और संस्कृति के मानदंड और मूल्य शामिल होते हैं। गुप्त पाठ्यचर्या अनियोजित या अनपेक्षित पाठ्यक्रम को संदर्भित करता है। इसमें मानदंड, मूल्य और प्रक्रियाएं शामिल हैं।

कोर पाठ्यचर्या— कोर पाठयचर्या वह है जिसमें विद्यार्थी को कुछ विषय अनिवार्य रूप से पढ़ने होते हैं। तो कुछ विषयों का विविध विषयों में से चुनाव करना पड़ता है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कोर पाठयचर्या को अधिक महत्व दिया है। पाठयचर्या इस बात पर बल देता है कि विद्यालय अधिक सामाजिक दायित्वों को ग्रहण करे और सामाजिक रूप से कुशल क्षमतावान कर्तव्यपरायण व्यक्तियों का निर्माण करें। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में वर्णित है कि हमारा भारतीय समाज अनेक वर्गों, सम्प्रदायों, जातियों, संस्कृतियों, सभ्यताओं, प्रथाओं, मान्यताओं,भौगोलिक स्थितियों तथा विविध भाषाओं में बँटा हुआ है। इसलिए पाठयचर्या का सृजन स्थानीय भाषायी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। कुछ विषय अनिवार्य एवं कुछ— क्षेत्रीय या भाषायी विषय, ऐच्छिक रूप में होना चाहिए। जिससे हम अपने भारतीय समाज में कर्तव्यनिष्ठ एवं परिश्रमी व्यक्तियों का निर्माण कर सके। इसके द्वारा हमारे समाज में व्यक्तिगत एवं सामाजिक समस्याओं का अन्त हो सके। कोर पाठयचर्या व्यक्ति को सामाजिक जीवनयापन करने पर जोर देता है। कोर पाठयचर्या विद्यार्थी के सामान्य विकास पर केन्द्रित है। इसलिए भारतीय समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कुछ विषयों को ध्यान में रखना जरूरी है। जैसे लोकतंत्र, भारतीय स्वतंत्रता

का इतिहास, सभी वर्गो में समानता, स्थानीय भाषाओं का ज्ञान, सामाजिक समता, धर्म निरपेक्षता, पर्यावरण संरक्षण, जनसंख्या, मानवाधिकार, संस्कृति एवं सभ्यता, राष्ट्रीयता की भावना को ध्यान में रखकर अनिवार्य एवं ऐच्छिक विषय का चयन किया जाना चाहिए। क्योंकि कोर पाठयचर्या उपयोगिता की दृष्टि से पाठयचर्या का एक अहम हिस्सा बन चुका है। इसका प्रमुख कारण आधुनिक युग की सामाजिक अव्यवस्था है। हमें विद्यार्थी को विद्यालय में सामाजिक दायित्वों को ग्रहण कराना है, जिससे कुशल व्यक्तियों का निर्माण करें। शिक्षण में एक मुख्य पाठयचर्या अथवा अध्ययन का कोर्स होता है। जिसकी भूमिका को केन्द्रीय माना जाता है तथा जिसे आमतौर पर एक स्कूल या स्कूल पद्धति के सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य रूप से लागू किया जाता है। हालांकि हमेशा ऐसा नहीं होता है। उदाहरण के लिए कोई स्कूल संगीत संबंधी कक्षा को अनिवार्य कर सकता है। लेकिन विद्यार्थी यदि आर्केस्ट्रा, बैंड, कोरस जैसे किसी प्रदर्शन करने वाले समूह में भाग लेते हैं तो इससे बाहर रहने का चुनाव कर सकते हैं। प्रमुख कोर पाठयचर्या को अक्सर प्राथमिक तथा माध्यमिक सतर पर स्कूली बोर्ड, शिक्षा विभाग या शिक्षा का कार्य देखने वाली अन्य प्रशासनिक संस्थाओं द्वारा स्थापित कर दिया जाता है।

विस्तारित कोर पाठ्यचर्या–

दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों का यह अधिकार है कि वे भी दूसरे बच्चों जैसे नियमित विद्यालयों में उपयुक्त अनुकूलन एवं विशेष सहायक सेवाओं के साथ पढ़े। दृष्टिदिव्यांग बच्चों कों गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए उनकी कक्षाओं में उपयुक्त अनुकूलन, तकनीकी, विशेष सामग्री तथा उपकरण की उपलब्धता आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष प्रविधियों की भी आवश्यकता है, जो ये इन बच्चों के शैक्षिक अधिगम, सामाजिक मनोरंजन तथा स्वतंत्र रूप से रहने में उपयोगी है। ये क्रियाएं, प्रविधियां या दक्षताएं पाठ्यक्रम के साथ मिलकर, विस्तारित कोर पाठ्यचर्या बनाती हैं। ये अनुकूलन एवं विशेष सहायक हो सकते हैः ब्रेल अनुदेशन, अनुस्थिति एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण, तकनीकी का प्रयोग, बड़े प्रिंट वाली पुस्तक, प्रकाशीय उपकरण, एवं अन्य अनुकूलित उपकरण। अनुकूलन एवं सहायक सेवाएं केवल कोर पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं हैं। दूसरे शब्दों में, विस्तारित कोर पाठ्यचर्या, कोर पाठ्यचर्या एवं विस्तारित पाठ्यचर्या जो दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को सफल होने हेतु आवश्यक है को सम्मिलित करता है।

सामान्य पाठ्यचर्या का निर्माण सामान्य विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर किया जाता इस पाठ्यचर्या में दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों की कुछ कड़ियाँ गायब हैं। वह कड़ियाँ विद्यार्थियों एवं कोर पाठ्यक्रम के बीच की हैं जो या तो उनके अनुकूल नहीं हैं या पूरी तरह से गायब हैं। विस्तारित कोर पाठ्यचर्या का उद्देश्य उन्ही रिक्तयों को भरने का है। यह मूल पाठ्यचर्या एवं विद्यार्थी के मध्य एक कड़ी प्रदान करता है। प्रत्यय विकास, स्थिति की समझ, पढ़ने में कौशल, संगठन, बोलना, सुनना, तथा अन्य अनुकूलन, इन सब को पाने हेतु विस्तारित कोर पाठ्यचर्या आवश्यक है। विस्तारित कोर पाठ्यचर्या ना केवल उपकरणों का प्रयोग करना सम्मिलित करता है बल्कि उनके प्रयोग हेतु प्रशिक्षण को भी सम्मिलित करता है।

विस्तारित कोर पाठ्यचर्या के घटक– विस्तारित कोर पाठ्यचर्या में निम्नलिखित कौशल समाहित हैः

1. क्षतिपूर्ति शैक्षिक कौशल के साथ सम्प्रेष्ण माध्यम

क्षतिपूर्ति शैक्षिक कौशल में वे दक्षताएं सम्मलित हैं, जिनके द्वारा दृष्टिदिव्यांग बच्चे दृष्टि आधारित कार्यों की परिपूर्ति करते हैं। बच्चों के क्षतिपूर्ति शैक्षिक कौशल में ब्रेल, बड़े प्रिंट वाली पुस्तकें, विशेष प्रकाशीय उपकरणों का प्रयोग, रेकॉर्डेड सामग्री आदि हो सकता है। ये क्षतिपूर्ति विधियाँ विद्यार्थी को शैक्षिक कार्यक्रम को प्राप्त करने में सहायक हैं, बिना इनके विद्यार्थी पढ़ने में असमर्थ/कठिनाई का सामना करेगा।

2. सामाजिक अंतःक्रिया कौशल

सामाजिक अंतःक्रिया कौशल विस्तारित कोर पाठ्यचर्या का एक दूसरा महत्वपूर्ण घटक है। दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों की एक सीमितता यह है कि वे इन सामाजिक कौशलों को अनुकरण द्वारा नही सीख पाते हैं। विद्यार्थी की दूसरों के साथ मिलने–जुलने की योग्यता समावेशी समाज के सृजन में महत्वपूर्ण है तथा यह कौशल उनके आत्मविश्वास को भी बढाता है। सामूहिक कार्य, कक्षा में चर्चा इत्यादि अन्य क्षेत्रों में दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों का कौशल अथवा अंतःक्रिया की योग्यता अपने दृष्टिवान साथियों जैसी ही होनी चाहिए। दृष्टिदिव्यांग बच्चों के शिक्षक सभी स्तरों पर इनको स्वतंत्र रूप से रहने के कौशल का शिक्षण करके उनकी मदद कर सकते हैं। बच्चों के

माता–पिता को इस प्रयास में सम्मिलित करने से बेहतर परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं। अतः उनको निश्चित रूप से इन क्रियाओं की दक्षता के लिए शैक्षिक टीम में शामिल करना चाहिए।

3. स्वतंत्र जीवन कौशल

स्वतंत्र जीवन कौशल दैनिक जीवन में निष्पादित किए जाने वाले कार्यों को सम्मिलित करता है यह विद्यार्थियों की दैनिक जीवन की मांगो और चुनौतियों का सामना करने की योग्यता का विकास करता है। यह परिवार को योगदान देने और व्यक्तियों के स्वतंत्र जीवन यापन करने के लिए आवश्यक कौशल है इन कौशलों में व्यक्तिगत स्वच्छता, सुरक्षा, खान–पान कौशल, भोजन की तैयारी, समय एवं धन प्रबंधन, वेशभूषा, गृह सज्जा इत्यादि सम्मिलित हैं। दृष्टिवान व्यक्ति ऐसे दैनिक क्रियाकलापों को विशिष्ट रूप से अवलोकन के माध्यम से सीखते हैं जबकि दृष्टिबाधित लोग प्राय व्यवस्थित निर्देश एवं अभ्यास से इन दैनिक कार्यों को सीख पाते हैं। ये कौशल जीवन के लक्ष्यों, जीवन की गुणवत्ता में सुधार तथा समाज में सफल समायोजन के लिए आवश्यक है।

4. मनोरंजन एवं खाली समय के कौशल

खाली समय का सदुपयोग तथा मनोरंजन क्रियाएँ सभी के लिए महत्वपूर्ण हैं और दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थी भी इससे भिन्न नहीं हैं। सामान्य लोगों की दृष्टि में दिव्यांगता मनोरंजन एवं अवकाश के अवसरों की जागरूकता को घटा देता है, जबकि ऐसा नहीं है। हम सभी, विभिन्न प्रकार के उपलब्ध मनोरंजन एवं खाली समय की क्रियाओं में से अपने लिए क्रियाओं का चयन करते हैं परन्तु दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थी के लिए यह उतना आसान नहीं है। इस हेतु उन्हें उचित प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है दृष्टिबाधा उन्हें सामाजिक अंतःक्रिया एवं स्वतंत्र रूप से जीने एवं मनोरंजन के चयन में सीमित कर देता है। दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को मनोरंजन एवं शारीरिक कार्यो को चयन में विशेष सहायता की आवश्यकता होती है। वास्तविक कक्षा में खेले जाने वाले खेल निर्देशनः पठन कौशल, क्रॉसवर्ड पहेली, शब्दावली पाठ, और कक्षा में टीम चुनोतियाँ, इन सब में दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इनके लिए विभिन्न शारीरिक क्रियाओं भी आयोजित किया जा सकता है। यह निर्देश दीर्घ कालीन जीवन कौशलों के विकास पर केंद्रित होने चाहिए।

5. सहायक तकनीकी का प्रयोग

सहायक तकनीकी उन सभी उपकरणों तथा तकनीकी को सम्मिलित करता है जिसका उपयोग कर दिव्यांगता से प्रभावित व्यक्ति उन कार्यों को कर सकता है जो सामान्यतः या इन उपकरणों के बिना असंभव है। यह सहयोगी एवं अनुकूलित उपकरणों के साथ निर्देशात्मक सेवाओं को भी शामिल करते हैं जिससे इन विद्यार्थियों में सम्प्रेषण, अधिगम और पहुँच को बढाया जा सकता है। इसके अंतर्गत छोटे से अबेकस से लेकर ब्रेल एम्बोस्सेर या स्क्रीन रीडर आदि सभी आते हैं। ये विशेष तकनीकी दृष्टिदिव्यांग तथा किसी भी अन्य प्रकार के दिव्यांग बच्चों को उसके शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है। दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को दूसरे विद्यार्थियों की अपेक्षा ज्यादा से ज्यादा तकनीकी एवं निर्देश की आवश्यकता होती है। जिससे इसके द्वारा वे दूसरे बच्चों के समान पढ़ सके तथा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर सके।

6. अनुस्थिति एवं चलिष्णुता कौशल

अन्य विद्यार्थियों के समान दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थी का भी यह मौलिक अधिकार है कि वह भी स्वतंत्र पूर्वक चल सके। अतः अनुस्थिति एवं चलिष्णुता दृष्टिदिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है इस का लक्ष्य है दृष्टिदिव्यांग व्यक्तियों के संपूर्ण जीवन को स्वतंत्र, सरल, सुलभ एवं स्वबलम्बी बनान है। अनुस्थिति एवं चलिष्णुता कौशल अनुदेशन में ज्ञानेन्द्रिय के उपयोग का अद्यतन या संवेदी विकास (हाथ का उपयोग, उँगली कौशल, श्रवण प्रशिक्षण, विभिन्न सतहों की पहचान, शेष दृष्टि का उपयोग) अनुस्थिति ज्ञान एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण मे उन्न्त विधियाँ और तकनीक, स्वतंत्र जीवन के कौशल का प्रशिक्षण, संप्रत्य विकास, गामक विकास इत्यादि क्षेत्रों को शामिल किया जाना चाहिए।

7. व्यावसायिक एवं जीवन वृति शिक्षा

व्यावसायिक एवं जीवन वृति शिक्षा एक व्यापक और वृहद् अवधारणा है। इसका उद्देश्य सिर्फ ऐसी नौकरियों को ढूँढना नहीं है जिसको की दृष्टिदिव्यांग कर सकते हैं। दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों के लिए कैरियर शिक्षा जितनी जल्दी संभव हो, प्रारम्भ कर देना चाहिए। उसमें आत्म–जागरूकता और कैरियर अन्वेषण गतिविधियों, नौकरी

खोजने के कौशल की शिक्षा, नौकरी में बने रहने सम्बन्धी सूचना तथा और काम करने का अनुभव के लिए अवसरों को प्रोत्साहित करना शामिल होना चाहिए। दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को एक व्यवस्थित, सुनियोजित ढंग से कैरियर की एक विस्तृत श्रृंखला का पता लगाने के लिए अवसर दिया जाना चाहिए। क्योंकि वे दृष्टिवान विद्यार्थियों जैसे इन नौकरियों के निरीक्षण करने के लिए सक्षम नहीं होते हैं। वास्तव में, शिक्षकों को दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को किसी अन्य सामान्य दृष्टि वाले विद्यार्थी के लिए उपलब्ध कैरियर विकल्प की पूरी विस्तृत श्रेणी प्रस्तुत करना एवं उसे प्रोत्साहित करनी चाहिए। व्यावसायिक एवं जीवन वृति शिक्षा को योजनाबद्ध तरीके से आयोजित करते हुए शैक्षिक अवसरों में विविधता प्रदान करना चाहिए, ताकि व्यक्तिगत दक्षता में वृद्धि हो एवं कुशल जनशक्ति तैयार हो तथा उच्चतर शिक्षा पाने के इच्छुक विद्यार्थियों को विकल्प प्रदान किया जा सके।

8. संवेदी दक्षता कौशल

दृष्टिदिव्यांग बच्चे का वातावरण से सूचनाओं को ग्रहण करने का माध्यम अवशिष्ट दृष्टि तथा अन्य इन्द्रियां जैसे श्रवण, स्पर्श–संबंधी, घ्राण, तथा स्वाद है। दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को दृष्टि अधिकतम उपयोग, सकल गामक कौशल का विकास, सूक्ष्म गामक कौशल का विकास, ताकत, सहनशक्ति, पैर और हाथ में मजबूती, उन्हें स्पर्श तथा पैरों से विविध सतहों को पहचानना, गति–संवेदी और स्वांतरग्राही और घ्राण स्रोतों की पहचान इत्यादि में प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

संवेदी दक्षता कौशल का तात्पर्य अवशिष्ट दृष्टि तथा अन्य इन्द्रियों के समुचित प्रयोग के कौशल से है। अवलोकन, साक्षात्कार और जाँच सूची का उपयोग कर संवेदी क्षमता सम्बन्धी जानकारी एकत्र करनी चाहिए जिससे की विद्यार्थियों को अपने क्षमता के अनुसार संवेदी जानकारी का उपयोग करना सीख सकें।

9. आत्मा निश्चय

आत्मा निश्चय विकल्प निर्माण, निर्णय निर्माण, समस्या समाधान, व्यक्तिक समर्थन आग्रहिता एवं लक्ष्य निर्धारण को सम्मिलित करता है जिनके पास निश्चय आत्म कौशल है वह स्वयं के लिए प्रभावी समर्थक होते हैं इसलिए उन्हें अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण होता है। आत्मनिर्णय व्यक्ति और व्यक्ति के वातावरण के बीच परस्पर क्रिया से उत्पन्न होता है। यह अकेले या शून्य में घटित नहीं होता है। आत्मनिर्भर बनने के लिए, वातावरण के साथ अवलोकन के माध्यम से जानकारी प्राप्त करना आवश्यक शर्त है। इसलिए दृष्टि दिव्यांग व्यक्तियों के लिए इस कौशल विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। आत्म–निश्चयी लोग अपने जीवन में सशक्त संचालक होते हैं। लक्ष्य निर्धारण, समस्या समाधान और निर्णय लेने सहित बेहतर आत्मनिर्णय की ओर ले जाने वाले कौशल व्यक्ति को उसके प्रारंभिक विकासात्मक उम्र से लेकर शिक्षा और करियर तक अपने जीवन की अधिक जिम्मेदारी और नियंत्रण हेतु तैयार करता है। ये व्यक्ति जानते हैं कि वे क्या अच्छा करते हैं और उन्हें कहाँ सहायता की आवश्यकता है। आत्मनिश्चयी व्यक्ति दूसरों से निर्देशित नहीं होता है।

बोध प्रश्न– नीचे दिय प्रश्नों के उत्तर दिजिए।

8. किस पाठ्यचर्या को संप्रेषित या औपचारिक रूप से लिखा नहीं जाता है

....
....
....

9. विस्तारित मूल पाठ्यचर्या, मूल पाठ्यचर्या एवं विद्यार्थी के मध्य एक कड़ी का कार्य करता है। (सत्य / असत्य)

....
....
....

10.आत्मनिश्चयी व्यक्ति की किन्हीं दो विशेषताओं को बताईये।

....

....

....

1.06 सारांश

पाठ्यचर्या के अंतर्गत वह सारी क्रियाएं एवं अनुभव समाहित होते हैं जो विद्यार्थी विद्यालय के अंदर एवं विद्यालय के बाहर प्राप्त करता है तथा अपना सर्वांगीण विकास करता है। अतःविद्यार्थी विद्यालय में प्राप्त ज्ञान के साथ–साथ विद्यालय के बाहर से मिलने वाले ज्ञान को भी प्राप्त करता है तथा वास्तविक जीवन के अनुभवों को प्राप्त करता है और अपने जीवन काल में उसका प्रयोग करता है।

इसका सम्बन्ध समग्रता से शिक्षण–अधिगम के परिप्रेक्ष्य, शिक्षण सामग्री,उपलब्ध समय में सीखने के अनुभव का अनुक्रमण, शिक्षण संस्थानों की विशेषताओं, सीखने के अनुभव की विशेषताओं, सीखने और सिखाने के लिए संसाधन (जैसे पाठ्यपुस्तकों और नई प्रौद्योगिकियों), मूल्यांकन इत्यादि सभी से है।

पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है जो विद्यार्थी तथा शिक्षक को जोड़ता है। शिक्षक, विद्यार्थी के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए जो भी प्रयास करता है, पाठ्यचर्या के माध्यम से करता है। इससे अध्यापकों को दिशा–निर्देश प्राप्त होते हैं। शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए लक्ष्य निर्धारित होते हैं।

लिखित पाठ्यचर्या, पढ़ाए गए पाठ्यचर्या, समर्थित पाठ्यचर्या, आकलित पाठ्यचर्या, अनुशंसित पाठ्यचर्या, गुप्त पाठ्यचर्या, कोर पाठ्यचर्या इत्यादि पाठ्यचर्या के कुछ प्रकार हैं। दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति विस्तारित कोर पाठ्यचर्या के माध्यम से होती है। दृष्टिदिव्यांग बच्चों कों गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए उनकी कक्षाओं में उपयुक्त अनुकूलन, तकनीकी, विशेष सामग्री तथा उपकरण की उपलब्धता आवश्यक है। इसके अतिरिक्त कुछ विशेष प्रविधियों की भी आवश्यकता है, जो ये इन बच्चों के शैक्षिक अधिगम, सामाजिक, मनोरंजन तथा स्वतंत्र रूप से रहने में उपयोगी है। ये क्रियाएं, प्रविधियां या दक्षताएं पाठ्यक्रम के साथ मिलकर ये विस्तारित कोर पाठ्यचर्या बनाती हैं।

1.07 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. कुर्रेर (Currer)
2. (i)पाठ्यचर्या के अंतर्गत विद्यालय की सभी गतिविधियाँ आती है जबकि पाठ्यवस्तु वह ज्ञान है जो कि केवल पुस्तकों तक ही सीमित है।

   (ii)पाठ्यचर्या जीवन के व्यावहारिक ज्ञान से जुड़ा हुआ है जबकि पाठ्यवस्तु में विद्यार्थी वास्तविक जीवन से अनभिज्ञ रहता है।

   (iii)पाठ्यचर्या निर्देशात्मक होती है जबकि पाठ्यवस्तु वर्णात्मक
3. दो, पाठ्य एवं पाठ्येत्तर क्रियाएं
4. पाठ्यचर्या
5. असत्य
6. सत्य
7. सत्य
8. गुप्त पाठ्यचर्या
9. सत्य

10. (i)आत्मनिश्चयी व्यक्ति स्वयं से निर्देशित होता है।

(ii)समस्या समाधान और निर्णय लेने की योग्यता होती है

1.08 अभ्यास कार्य

1. पाठ्यचर्या से आप क्या समझते है? स्पष्ट कीजिए।
2. पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमके मध्य अंतर कीजिए।
3. पाठ्यचर्या के शिक्षा में स्थान को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
4. पाठ्यचर्या की आवश्यकता की व्याख्या कीजिये।
5. पाठ्यचर्या किस प्रकार विद्यार्थी और शिक्षक हेतु लाभकर है समझाइये।
6. पाठ्यचर्या के प्रकारों को चिन्हित कीजिये।
7. दृष्टिदिव्यांग बच्चों के सन्दर्भ में विस्तारित कोर पाठ्यचर्या की क्या आवश्यकता है?
8. विस्तारित कोर पाठ्यचर्या के अर्थ और आवश्यकता की विवेचना कीजिए।
9. कोर पाठ्यचर्या एवं विस्तारित कोर पाठ्यचर्या के मध्य परस्पर सम्बन्ध की विवेचना कीजिए।

1.09 चर्चा के बिंदु

दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों के विद्यालय जाकर उनके विस्तारित मूल पाठ्यचर्या की स्थिति पर एक रिपोर्ट बनाईये तथा उसपर चर्चा आयोजित कीजिए।

1.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Chaudhary, G. K. & Kalia R. (2015) Development Curriculum and Teaching Models of Curriculum design for Teaching Institute, International Journal of Pyshical Education ,Sport and Health, Vol. 1 No. 4 p. 57-59
- Dignan, K. C. (2012). Expanded Core Curriculum. Texas School for the Blind and Visually Impaired Retrieved from http://www.tsbvi.edu/tb-ecc.
- Expanded Core Curriculum Advocacy (2016). Recreation, Fitness, and Leisure and the Expanded Core Curriculum. American Foundation for the Blind and Perkins School for the Blind. Retrieved from http://www.eccadvocacy.org
- Hussain, A., Dogar, A. H., Azeem, M. & Shakoor A. (2011) Evaluation of Curriculum Development Process, International Journal of Humanities and Social Science, Vol. 1 No. 14 P. 263-271 4. Agrawal,
- J. C. (1990) Curriculum Reforms in India: World Overview, Doaba House Book Sellers and Publishers, Delhi.
- Shinali, M. C. , Mnjokava, C. & Thinguri, R.(2014). Adaptation of the Curriculum to Suit Children with Visual Impairment in Integrated ECD Centres in Kenya: A Case of Narok Sub-County, Educational Research International Vol. 3(4) August 2014.
- SSA (2016). Curricular Adaptations for Children with Special Needs, Confluence, February 2016, Vol.18. Ministry of Human Resource Development, Govt. of India.
- Stenhouse, L. (1975) An Introduction to Curriculum Research and Development, Heinemann, Landon.

- The New Jersey Council on Developmental Disabilities (2016). Curriculum modifications & Adaptations, Tools for teachers (15). Retrieved from http://njcdd.org/wp-content/uploads/2016/08/tools-teacherspart2.pdf
- TSBVI (2017). What is the Expanded Core Curriculum? Texas School for the Blind and Visually Impaired. Retrieved from http://www.tsbvi.edu/math/3973-ecc-flyer
- UNESCO (2016). Different meanings of “curriculum'. The United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, Paris. Retrieved from http://www.unesco.org/new/en/education/themes/strengthening-education-systems/quality-framework/technical-notes/different-meaning-of-curriculum/
- UNESCO (n.d.) Curriculum, available at http://www.unesco.org/new/ en/education/themes/strengthening-education-systems/quality framework/ core-resources/ curriculum/ [retrieved on 14/06/2017]
- Wheeler, D. K. (1988) Curriculum Process, University of London Press, London

इकाई–2 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्यायी उपागम

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 पाठ्यचर्या उपागम का अर्थ

2.4 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम

2.4.1 विकासात्मक पाठ्यचर्या उपागम

2.4.2 क्रियात्मक पाठ्यचर्या उपागम

2.4.3 पारिस्थितिकीय पाठ्यचर्या उपागम

2.4.4 उदारवादी पाठ्यचर्या उपागम

2.4.5 तंत्रप्रणाली पाठ्यचर्या उपागम

2.5 सारांश

2.6 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

2.7 अभ्यास प्रश्न

2.8 चर्चा के बिंदु

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.01 प्रस्तावना

हम जानते है की शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति पाठ्यचर्या के माध्यम से होती है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में अद्वितीय होता है। शैक्षिक संस्थान अपने विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए पाठ्यचर्या के माध्यम से उन्हें विविध गतिविधियों एवं क्रियाकलापों से गुजारता है। शिक्षा का अंतिम लक्ष्य सभी का सर्वांगीण विकास है परन्तु विद्यार्थियों की संवेदी, मानसिक, भावनात्मक, संवेगनात्मक इत्यादि विविधता के कारण प्रत्येक विद्यार्थी के विकास के अलग अलग उद्देश्य होता है जिसे पाठ्यचर्या के माध्यम से पूरा किया जाना चाहिए। अतः सभी के लिए एक जैसी पाठ्यचर्या नहीं होनी चाहिए। पाठ्यचर्या विद्यार्थियों की आवश्यकता अनुरूप लचीली होनी चाहिए। अतः विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए पाठ्यचर्या में कुछ उपागम सामान्य पाठ्यचर्या के होते हैं कुछ उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विशिष्ट उपागम होते हैं।

प्रस्तुत इकाई में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या विकास के विविध उपागमों का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

2.02 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप–

1. पाठ्यचर्या उपागम का अर्थ समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या के विविध उपागमों को चिन्हित कर सकेंगे।
3. पाठ्यचर्या के विविध उपागमों को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकेंगे।
4. पाठ्यचर्या के विविध उपागमों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं की व्याख्या कर सकेंगे।
5. पाठ्यचर्या के विविध उपागमों के मध्य परस्पर सम्बन्ध की विवेचना कर सकेंगे।

6. पाठ्यचर्या के विविध उपागमों के मध्य अंतर कर सकेंगे।

2.03 पाठ्यचर्या उपागम

पाठ्यचर्या, अधिगम के अनुभव की समग्रता को दर्शाने वाला एक व्यापक शब्द है। पाठ्यचर्या क्या, कैसे और क्यों के प्रश्नों के साथ—साथ मूल्यांकन को भी सम्मिलित करता है। पाठ्यचर्या में स्कूल के मार्गदर्शन में चल रहे बच्चों के अनुभव शामिल होते हैं। उपागम का अर्थ होता है कार्य करने का तरीका अतः पाठ्यचर्या उपागम का आशय हुआ कि पाठ्यचर्या के सृजन एवं डिजाइन करने का एक तरीका। पाठ्यचर्या उपागम वह मूल सिद्धांत हैं जो पाठ्यचर्या विकास, डिजाइन और कार्यान्वयन का दिशा—निर्देश करते हैं। वे पाठ्यचर्या की योजना बनाने, शिक्षकों, शिक्षार्थियों और पाठ्यचर्या विशेषज्ञों की भूमिकाओं को परिभाषित करते हैं और शैक्षिक प्रणाली के लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित करते हैं। एक उपागम व्यक्त करता है कि पाठ्यचर्या कैसे विकसित और डिजाइन किया जाता है। विद्यालय के क्रिया—कलाप समाज द्वारा निर्धारित कुछ सिद्धांतों और नियमों के आधार पर नियोजित एवं संगठित किए जाने चाहिए। शिक्षण—अधिगम क्रिया—कलापों द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कुछ सुनियोजित कार्य—विधियाँ होती हैं। यह आवश्यक है कि इन क्रिया—कलापों अर्थात् अधिगम—अनुभवों का सावधानी पूर्वक चयन, नियोजन एवं क्रियान्वयन किया जाए। अतः हम पाठ्यचर्या विकास या उसके क्रियान्वयन में किसी सुव्यवस्थित उपागम का पालन करते हैं। यह उपागम 'पाठ्यचर्या' उपागम के नाम से जाना जाता है। पाठ्यचर्या उपागम का अर्थ है पाठ्यचर्या विकास और उसके क्रियान्वित करने संबंधी विविध पक्षों के विषय में निर्णय लेने के लिए प्रयुक्त प्रतिमान अथवा अभिकल्पन। इस प्रकार पाठचार्य उपागम एक योजना है जिसका अनुसरण शिक्षक विद्यार्थियों को अधिगम अनुभव अथवा क्रियाएं प्रदान करने के लिए करता है। यह एक समग्र स्थिति को भी दर्शाता है, जिसमें पाठ्यचर्या की नींव, उसके डोमेन (क्षेत्र के भीतर सामान्य और महत्वपूर्ण ज्ञान), और पाठ्यचर्या के सैद्धांतिक और व्यावहारिक सिद्धांत शामिल हैं। पाठ्यचर्या की योजना बनाने में शिक्षार्थी, शिक्षक और पाठ्यचर्या विशेषज्ञ की भूमिका, और महत्वपूर्ण मुद्दों की जांच की जानी चाहिए। महत्वपूर्ण उपागम इस प्रकार हैं—विकासात्मक उपागम, कार्यात्मक उपागम, पारिस्थितिक उपागम, प्रणाली उपागम, कार्य विश्लेषण उपागम। सबसे अनुकूल पाठ्यचर्या और निर्देशात्मक प्रक्रिया के साथ छात्र तक पहुँचने के उद्देश्य से एक उपयुक्त उपागम या एक से अधिक दृष्टिकोणों के संयोजन का चयन करना शिक्षक की जिम्मेदारी है। आमतौर पर इस्तेमाल किए जाने वाले कुछ तरीकों में शामिल हैं।

2.4 विशेष शिक्षा में पाठ्यचर्या उपागम

दिव्यांग बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, विशेष रूप से डिजाइन किए गए निर्देश, विशेष शिक्षा कहलाता है। विशेष शिक्षा, कुछ विशेष विधियां और प्रविधियां होती हैं जो विशेष शिक्षक, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप विधियों से पढ़ना—लिखना और जीवन के अन्य कौशल सिखाती है। विशेष शिक्षा वह शिक्षा है जो उन बच्चों की आवश्यकता को पूरा करती है जो मानसिक, शारीरिक और सामाजिक रूप से औसत बच्चों से भिन्न होते हैं। ऐसे बच्चे जो भावनात्मक विक्षोभ, मानसिक मंदता, श्रवण और दृष्टिक्षमता में कमी, वाणी विकार, या किसी भी अन्य विकार या असमान्यता से ग्रसित हैं जिससे उन्हें सामान्य शिक्षा लेने में कठिनाई का सामना करना पड़ता हो, को विशेष विद्यार्थी कहते हैं। इन बच्चों की शिक्षा कुछ विशेष कार्यविधियों द्वारा पूरी की जाती है। यह एक ऐसा उपागम है जो उनके लिए सीखना सुगम बनाता है और विभिन्न क्रियाकलापों में उनकी भागीदारी को संभव बनाता है जिससे वे अपनी अक्षमता अथवा विद्यालय के कारण भाग नहीं ले पाते। विशेष शिक्षा को प्रभावी बनाने हेतु सबसे आवश्यक यह है कि शिक्षा शिक्षक या पाठ्यचर्या केन्द्रित न होकर बालकेन्द्रित हो। इसमें शिक्षा के अन्तर्गत पाठ्यचर्या का संगठन बालक की प्रवृत्तियों, रुचियों, योग्यताओं व अवस्थाओं आदि का ध्यान रखकर किया जाता है। इसमें पाठ्यचर्या का नियोजन एवं क्रियान्वयन विद्यार्थी को केन्द्र मानकर किया जाना चाहिए । इस प्रकार पाठ्यचर्या में विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों की आवश्यकता, अभिप्रायों, संवेगों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

सामान्य रूप से पाठ्यचर्या का निर्धारण औसत क्षमता वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते हुए किया जाता है। विशेष विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या को कुशलता के साथ पूर्ण करने में असफल रहते हैं अतः उनके लिए पाठ्यचर्या विकास का उपागम उनकी अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं, क्षमताओं व रुचियों के अनुकूल हो। इन विद्यार्थियों को उपयोगी नागरिक व कुशल कार्यकर्ता बनाना पाठ्यचर्या का उद्देश्य होना चाहिए।

अतः इनके लिए पाठ्यचर्या उपागम इनकी आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए पाठ्यचर्या विकास के लिए विभिन्न उपागम हैं। कुछ सामान्य और विशेष शिक्षा दोनों में समान हैं जबकि कुछ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अधिक उपयुक्त हैं। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त कुछ उपागम निम्नवत हैः–

2.4.1 विकासात्मक पाठ्यचर्या उपागम

बच्चों की उम्र के साथ उनके व्यवहार एवं अनुभव में परिवर्तन आता है। ये परिवर्तन और अनुभव उनके सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाठ्यचर्या के लिए एक विकासात्मक उपागम इस सिद्धांत को ध्यान में रखता है कि बच्चों को उनके उम्र में क्या सीखना चाहिए, और वे कैसे सीख सकते हैं, उनकी इस बुनियादी विकासात्मक सिद्धांत से उनको कैसे और कब सिखाया जाए, के कई सिद्धांत निकलते हैं। छोटे बच्चे जितना परस्पर संवादात्मक और सक्रिय प्रक्रियाओं के माध्यम से सीखते हैं उतना निष्क्रिय एवं ग्रहणशील प्रक्रियाओं से नहीं सीखते है। इसी तरह बुनियादी सामाजिकता छोटे पर सीखना आवश्यक है क्योंकि बाद में इसे हासिल करना बहुत मुश्किल होता है। अभ्यास के ये विकासात्मक सिद्धांत यह संकेत देते हैं कि छोटे बच्चों के लिए निर्मित पाठ्यचर्या में उनके लिए छोटे समूहों में काम करने का अवसर शामिल होना चाहिए साथ ही बच्चे को अपने वातावरण में वास्तविक घटनाओं की विस्तारित अवलोकन एवं जांच का अवसर होना चाहिए।

विकासात्मक पाठ्यचर्या, विभिन्न संज्ञानात्मक अक्षमता वाले अधिगमकर्ताओं के लिए उनके विकासात्मक स्तर को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। यह पाठ्यचर्या उनके आयु एवं विकासात्मक परिवर्तन के अनुरूप होनी चाहिए। इस तरह की पाठ्यचर्या को विशिष्ट चुनौतियों को ध्यान में रखने के साथ ही अधिगमकर्ताओं की क्षमता को पूर्ण रूप से विकसित करने में योगदान देना चाहिए। विकासात्मक पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित करके सीखाने वाली खेल आधारित पाठ्यचर्या है जिसमें बच्चों के लिए रोमांचक एवं प्रामाणिक अधिगम अनुभव सम्मिलित होते हैं, जो प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत आवश्यकता, रुचि एवं क्षमता को दर्शाते है। यह शिक्षण रणनीतियों और अनुभवों को बच्चों के विकासात्मक चरण के अनुसार रखता है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि वे अधिगमकर्ता उसी प्रकार के कार्यों में संलग्न हैं जो उनके विकास के स्तर के अनुकूल है। इसका उद्देश्य सभी बच्चों के लिए समृद्ध, मौखिक भाषा को बढ़ावा देना और अधिगम अनुभवों में साक्षरता और संख्यात्मकता की अवधारणा को शामिल करना है। सभी विद्यार्थी पाठ्यचर्या के माध्यम से एक रेखीय विकासात्मक प्रगति को प्रदर्शित नहीं करते हैं।

विकासात्मक पाठ्यचर्या को क्रियान्वित करने के दो उद्देश्य हैः पहला यह सुनिश्चित करना कि पाठ्यचर्या विद्यार्थियों के उच्च स्तर के संज्ञानात्मक कौशल एवं व्यवहारों को बाधित न करें; दूसरा उद्देश्य एक 'आदर्श' अधिगमकर्ता की वांछनीय विशेषताओं की पहचान करना और शैक्षिक कार्यक्रम के लिए एक अनुदैर्ध्य रणनीति तैयार करना है, जो विद्यार्थियों के विकास को बढ़ावा देता है और जिससे वांछनीय विकासात्मक अधिगम स्तर प्राप्त हो सके। विद्यार्थियों की प्रगति को यदि शैक्षिक कार्यक्रम के द्वारा समर्थन एवं प्रबलन नहीं मिलता तो उनकी उपलब्धियां धीरे धीरे समाप्त होने लगती हैं। इस कारण से विद्यार्थियों में विकास को प्रोत्साहन देने के क्रम में चुनौतियों के तरीकों को शामिल करना अनिवार्य है साथ ही साथ विद्यार्थियों द्वारा नए अधिगम स्तरों को प्राप्त करने में किस प्रकार की सहायता की आवश्यकता होगी, इसकी पहचान भी आवश्यक है। विकासात्मक पाठ्यचर्या को मनोसामाजिक, नैतिक एवं व्यवसायिक विकास संबंधी आयामों में भी विकसित किया जा सकता है। इन आयामों में विद्यार्थियों की परिपक्वता संबंधी अपेक्षाएं, पाठ्यचर्या के अधिगम उद्देश्यों, अभ्यास–आधारित, पारस्परिक अंतःसंबंधित एवं प्रयोगात्मक कौशलों में प्रदर्शित होने चाहिए।

इस प्रकार विकासात्मक उपागम विद्यार्थियों के शैक्षणिक अधिगम और उनके विकासात्मक चरणों के साम्यता से संबंधित है। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत क्षमता और वैश्विक जरूरतों के उद्देश्यों को पूरा करना है। पाठ्यचर्या में अधिकतम संभव व्यक्तिगत वृद्धि और सामाजिक क्षमता प्राप्त करने के निर्देश शामिल होने चाहिए। पाठ्यचर्या का विकासात्मक उपागम शिक्षार्थी की शारीरिक और मानसिक वृद्धि की गतिविधियों, योग्यताओं और रुचियों पर केंद्रित है। पाठ्यचर्या के निर्माण या चुनाव करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि पाठ्यचर्या प्रत्येक बच्चे के वैयक्तिक आवश्यकताओं एवं उसकी क्षमताओं और सीमाओं के संदर्भ में उससे निकटता से संबंधित हो। उससे उस, उम्र में जो प्रदर्शन करने की उम्मीद की जा सकती है तथा विकास के मानदंडों को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। इसका उद्देश्य व्यक्ति को बड़े होने और उत्पादक वयस्क जीवन जीने में मदद करना है। शिक्षक को प्रत्येक बच्चे की विशेष आवश्यकताओं, कमी, कौशल और अद्वितीय प्रतिभा की पहचान एवं

चिन्हांकन करना होता है और फिर प्रशिक्षण और प्रबंधन की सभी आवश्यक सामग्री और तकनीकों के साथ एक व्यक्तिगत पैकेज के रूप में एक पाठ्यचर्या को विकसित करना होता है।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1ः– विकासात्मक उपागम का मूलभूत सिद्धांत क्या है?

....
....
....

प्रश्न 2ः– विकासात्मक उपागम की एक प्रमुख विशेषता बताईये।

....
....
....

प्रश्न 3ः– विकासात्मक पाठ्यचर्या को मनोसामाजिक, नैतिक एवं व्यवसायिक विकास संबंधी आयामों में विकसित नहीं किया जा सकता है। (सत्य/असत्य)

....
....
....

2.4.2. कार्यात्मक पाठ्यचर्या उपागम

विशेष शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य विद्यार्थियों के लिए यथासंभव स्वतंत्रता और स्वायत्तता हासिल करना है, चाहे उनकी विकलांगता भावनात्मक, बौद्धिक, शारीरिक या दो या दो से अधिक (बहु) विकलांगताओं का संयोजन हो। क्रियात्मक कौशल से आशय वे कौशल हैं जिनकी हम सभी को अपने जीवन में आवश्यकता होती है। विशेष शिक्षा के लिए एक कार्यात्मक उपागम– शैक्षिक, सामुदायिक, घरेलू, मनोरंजन/अवकाश और व्यावसायिक क्षेत्र में स्वतंत्र कामकाज के लिए आवश्यक व्यक्तिगत कौशल पर केंद्रित है। कार्यात्मक पाठ्यचर्या ऐसी पाठ्यचर्या है जो विद्यार्थियों को स्वतंत्र वयस्क जीवन में कार्य करने के लिए आवश्यक कौशल जैसे खरीदारी, दूसरों के साथ संवाद करना और व्यक्तिगत स्वच्छता सिखाने पर केंद्रित है। एक कार्यात्मक पाठ्यचर्या का कार्य दिव्यांग विद्यार्थियों को जीवन जीने के लिए तैयार करना है और इसमें आम तौर पर कार्यात्मक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, सामुदायिक पहुंच, दैनिक जीवन कौशल, वित्तीय कौशल, स्वतंत्र जीवन कौशल, परिवहन, सामाजिक/संबंध कौशल और आत्मनिर्णय इत्यादि घटक शामिल होते हैं। कुछ बच्चों के लिए, वे कौशल– अपने आप भोजन करना हो सकता हैं। अन्य बच्चों के लिए सामुदायिक सुविधाओं का उपयोग करना, दैनिक जीवन के कार्य करना और कक्षा शेड्यूल पढ़ना सीखना हो सकता है।

इसका उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए उत्पादक रोजगार, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता, जीवन कौशल क्षमता तथा विद्यालय और समुदाय के भीतर सफलतापूर्वक भाग लेने का अवसर है। इस पाठ्यचर्या को निर्देश कक्षाओं और सामुदायिक परिस्थितियों दोनों में आयोजित किया जाना चाहिए, ताकि विद्यार्थी सीखे गए जीवन कौशल को अपने दैनिक जीवन के वातावरण में लागू करना सीख सकें। कार्यात्मक शिक्षण गतिविधियाँ निर्देशात्मक कार्यक्रम हैं जिनमें व्यक्तियों के लिए तत्काल उपयोगिता के कौशल शामिल होते हैं और ऐसी शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाता है जो नकली के बजाय वास्तविक होती हैं। दूसरे शब्दों में, कौशल तुरंत उपयोगी होना चाहिए (यानी साथियों से उचित रूप से व्यवहार करना सीखना) और भविष्य और वयस्क व्यवस्था में उपयोगी होना चाहिए (यानी नौकरी, साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता को उचित रूप से नमस्कार करना सीखना)। शौचालय प्रशिक्षण और सामान्य जीवन दोनों के साथ–साथ हाथ धोने और कपड़े पहनने का कौशल भी महत्वपूर्ण है। बौद्धिक विकलांगता वाले व्यक्तियों को कार्यात्मक कौशल पढ़ाना उनकी मानसिक उम्र और कार्य के स्तर के आधार पर होता है। यह उन कौशलों को प्राप्त करने के लिए संरचना और उपयुक्त परिस्थितियों का निर्माण करने का मामला है कार्यात्मक शिक्षण गतिविधियाँ निर्देशात्मक कार्यक्रम हैं जिनमें व्यक्तियों के लिए तत्काल उपयोगिता के कौशल शामिल होते

हैं और ऐसी शिक्षण सामग्री का उपयोग किया जाता है जो नकली के बजाय वास्तविक होती है। कार्यात्मक पाठ्यचर्या के पीछे तर्क इस तथ्य से दर्शाया जाता है कि विकलांग छात्रों को दैनिक और शैक्षणिक कौशल हासिल करने के लिए प्रत्यक्ष और स्पष्ट शिक्षण की आवश्यकता होती है क्योंकि वे इन कौशलों को साथियों और वयस्कों के साथ दैनिक संपर्क के माध्यम से हासिल नहीं करते हैं व्यक्तियों के व्यावहारिक जीवन कौशल को बढ़ाने से उनकी कार्यात्मक स्वतंत्रता, सामाजिक क्षमता और जीवन की गुणवत्ता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसके अलावा, कार्यात्मक पाठ्यचर्या में भाग लेने से विद्यार्थियों को समुदाय में वयस्कों द्वारा की जाने वाली सामान्य गतिविधियों को करने में मदद मिलती है जो उन्हें अपने समाज में सदस्य बनने के लिए आवश्यक कौशल है। इस पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कक्षा में हुए अधिगम एवं कौशल को विद्यार्थी प्राकृतिक वातावरण में अनुप्रयोग कर सके। मध्यम और गंभीर रूप से विकलांगता से प्रभावित बच्चों के साथ उपयोग की जाने वाली पाठ्यचर्या, कार्यात्मक गतिविधियों के प्रशिक्षण पर जोर देती है। पाठ्यचर्या की सामग्री को उन विभिन्न गतिविधियों, क्रियाकलापों एवं कार्यों से चुना जाता है जिनकी दैनिक जीवन में आवश्यक होने की संभावना अधिक होती है। इन कार्यों में व्यक्तिगत, सामाजिक, व्यावसायिक और मनोरंजक गतिविधियाँ शामिल हैं। शैक्षणिक कौशल वहाँ शामिल किए जाते हैं जहाँ बच्चों में सीखने की क्षमता होती है। बच्चे की अनूठी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, स्वतंत्र कार्यात्मक स्तर प्राप्त करने के लिए सामग्री एवं प्रक्रिया की योजना बनायी जाती है। एक कार्यात्मक पाठ्यचर्या सामाजिक कौशल, स्वतंत्र जीवन कौशल और व्यावसायिक कौशल पर केंद्रित है। यद्यपि पाठ्यचर्या के कई हिस्से को कक्षा कक्ष व्यवस्था में पढ़ाया जा सकता है फिर भी सिखाए गए उन कौशलों का सामान्यीकरण समुदाय में किया जाना अनिवार्य है। स्वतंत्र बनाने एवं सफलतापूर्वक रोजगार पाने के लिए मानसिक मंदता युक्त बच्चों के लिए कार्यात्मक शैक्षणिक कौशल सीखना अति आवश्यक है। "सभी के लिए शिक्षा" का अधिकार 2009 के अंतर्गत दिव्यांग बच्चों को शामिल किया गया है, यह मानसिक मंदता वाले विद्यार्थियों की सीखने की जरूरतों को भी संबोधित करता है। सीमित बौद्धिक क्षमता के कारण मानसिक मंदता युक्त बच्चों के साक्षरता कौशल अन्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के समान नहीं है। यदि, सही प्रकार से उनका प्रशिक्षण दिया जाए तो मानसिक मंदता वाले विद्यार्थी साक्षरता एवं संख्यात्मक कौशल का विकास किया जा सकता है। कार्यात्मक पाठ्यचर्या सामुदायिक कौशल, उपभोक्ता कौशल और घरेलू एवं स्वयं सहायता कौशल सहित विभिन्न क्षेत्रों, पर ध्यान केंद्रित करता है। उपभोक्ता कौशल से तात्पर्य है खरीदारी करने की क्षमता, नकद भुगतान करने की क्षमता, डेबिट कार्ड के माध्यम से भुगतान करने की क्षमता एवं किसी वस्तु का पता लगाने और उसके लिए भुगतान करने में सक्षम होना। पैसे से जुड़े अन्य कौशल जो सिखाए जाते हैं उसमें रेस्टोरेंट में आर्डर देना एवं वेंडिंग मशीन के माध्यम से उसका भुगतान करना शामिल है। सामुदायिक कौशल में स्ट्रीट क्रॉसिंग जैसे बुनियादी कौशल शामिल है जबकि कार्यालय कौशल एवं व्यावसायिक कौशल भी इस पाठ्यचर्या में शामिल है। इसके अतिरिक्त घरेलू एवं स्वयं सहायता श्रेणी में, विद्यार्थियों को अपने घर में अपनी देखभाल करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जिससे वे स्वतंत्र रूप से जीवन निर्वाह कर सकें। इस तरह की क्षमता में कपड़े धोने का कौशल, भोजन तैयार करना, स्वच्छता, किराने का सामान रखना, और कपड़े पहनना आदि शामिल है। कार्यात्मक उपागम पाठ्यचर्या को व्यक्ति की जरूरतों के विश्लेषण और समाज में उससे अपेक्षित भूमिका के विश्लेषण से लिया जाना चाहिए। इसलिए, एक अच्छी पाठ्यचर्या बौद्धिक अक्षमता वाले बच्चों को सामाजिक दक्षता प्रदान करने पर केंद्रित होना चाहिए ताकि वे समुदाय में यथासंभव स्वतंत्र रूप से रह सकें। इस तरह की पाठ्यचर्या में कार्यात्मक पठन, लेखन, अंकगणित, समय, यात्रा, पैसा और अन्य संबंधित कौशल शामिल हैं।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 4ः— कार्यात्मक उपागम किस प्रकार के कौशलों पर केन्द्रित है?

....

....

....

प्रश्न 5:— कार्यात्मक उपागम विद्यार्थी को जीवन के लिए तैयार करती है। (सत्य / असत्य)

....

....

....

प्रश्न 6:— बौद्धिक विकलांगता वाले व्यक्तियों को कार्यात्मक कौशल पढ़ाना उनकी मानसिक उम्र और कार्य के स्तर के आधार पर होता है। (सत्य / असत्य)

....

....

....

2.4.3. पारिस्थितिक पाठ्यचर्या उपागम

यह पाठ्यचर्या विकास का एक समग्र उपागम है जो की यह मानता है कि अधिगम एक सतत, संवादात्मक और प्रासंगिक प्रक्रिया है जो अधिगमकर्ता के वातावरण से प्रभावित होती है। व्यक्ति अकेला समाज में नहीं रहता है वह एक संरचित समाज का हिस्सा है अतः यह समाज के विविध घटकों के मध्य, मनुष्य और विविध घटकों के मध्य तथा, मनुष्य —मनुष्य के मध्य अंतःक्रिया पर निर्भर करती है। पारिस्थितिक उपागम उन संदर्भों, वातावरणों और प्रणालियों पर केंद्रित है जो विद्यार्थियों के विकास और कल्याण को प्रभावित करते हैं। एक पारिस्थितिक उपागम घर, शिक्षा, सांस्कृतिक और सामुदायिक परिस्थिति से संबंधित कारकों पर विचार करता है। यह उपागम उन संदर्भों को स्वीकार करता है जिनमें शिक्षा संचालित होती है, विद्यार्थी अपने वातावरण में कैसे बातचीत करते हैं, और ये बातचीत उनके व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों और जरूरतों पर कैसे प्रभाव डालती है। यह उपागम भौतिक वातावरण, पारस्परिक और सीखने के माहौल और विद्यार्थियों की विशेषताओं और जरूरतों के बीच किसी भी बेमेल की पहचान करते हैं और उसका समाधान करते हैं। विद्यार्थी और उनके सीखने का माहौल अंतःक्रियात्मक होना चाहिए। विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने के लिए, हमें इन अंतःक्रियाओं को ध्यान में रखना चाहिए। व्यक्तियों और वस्तुओं के अंतर—संबंधित संसाधन तत्वों का एक समुच्चय, और उनके बीच की अंतःक्रिया एक विशेष संदर्भ प्रदान करती है और यह सन्दर्भ बच्चे के अधिगम को प्रभावित करता है। सीखना एक सीमित और आंतरिक प्रक्रिया नहीं है बल्कि इसमें व्यक्तियों और उनके वातावरण यथा सामाजिक, बौद्धिक और डिजिटल सामग्री के बीच पारस्परिक रचनात्मक संबंध शामिल होते हैं, जहां व्यक्ति और पर्यावरण दोनों रूपान्तरित होते हैं।

वायगोत्सकी के सामाजिक—सांस्कृतिक सिद्धांत अनुसार, व्यक्ति सक्रिय रूप से विभिन्न प्रकृति (सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत, संस्थागत) वातावरण से संबंधित होता है और फिर ये सम्बन्ध आत्मसात होते जाते हैं। और एक व्यक्ति कैसे सीखता है और विकसित होता है, का हिस्सा बन जाता है। किसी बच्चे के सम्बन्ध में आकलन करने के लिए यह आवश्यक है कि उसके अधिगम और कौशल को प्रभावित और निर्धारित करने के लिए विभिन्न पर्यावरणीय कारकों को ध्यान में रखा जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, अल्प बौद्धिक दिव्यांगता वाले बच्चे प्री—स्कूल स्तर पर ही शहरी वातावरण में उनके माता—पिता के लिए चिंता का कारण बन जाते है क्योंकि उनके माता—पिता उसे स्कूल में असामान्य पाते हैं। दूसरी ओर एक ग्रामीण क्षेत्र में इन बच्चों को बिना किसी समस्या के स्वीकार किया जा सकता है। हो सकता है कि एक वयस्क के रूप में उससे अपेक्षित प्रमुख कार्यों का निष्पादन वह आसानी से कर रहा हो जैसे कि कृषि, डेयरी या गाँव—घर के अन्य कार्य वो आसानी से कर पा रहा हो, जो उसकी उम्र के उसके साथी पुरुष करते हैं। एक पाठ्यचर्या के लिए एक पारिस्थितिक अभिविन्यास का अर्थ है कि बच्चों के जीवन को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारकों को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रमों की योजना बनायी और कार्यान्वित की जाए। पारिस्थितिकी में एक बच्चे को प्रभावित करने वाले सभी कारक शामिल हैं जैसे कि प्राकृतिक भौगोलिक, शहरी, ग्रामीण, सामाजिक, सांस्कृतिक और व्यावसायिक कारक। पाठ्यचर्या को प्रत्येक बच्चे को बड़े होने पर उत्पादक और समुदाय के प्रभावी सदस्य बनने में मदद करनी चाहिए। यह पाठ्यचर्या को उन स्थितियों में अनुभवों और निर्देशों को शामिल करता जो उसके प्राकृतिक वातावरण से निकटता से संबंधित हो, जैसे व्यक्तिगत, सामाजिक, विद्यालय, मनोरंजक और व्यावसायिक व्यवस्थाद्य। इसमें पाठ्यचर्या की योजना बनाते समय शिक्षक विद्यार्थी के वर्तमान और भविष्य के वातावरण का आकलन करता है और फिर बच्चे की क्षमताओं का उसके वातावरण विवरण से तुलना करता है। यह उस पर वातावरण की मांग और बच्चे की वर्तमान

क्षमताओं के बीच विसंगति को चित्रित करता है। फिर शिक्षक अंतर को भरने के लिए तदनुसार पाठ्यचर्या का निर्धारण एवं क्रियान्वयन करता है। पाठ्यचर्या नियोजन टीम पारिस्थितिक उपागम का प्रयोग पाठ्यचर्या विकास के लिए करती है, जिससे व्यक्तिगत पाठ्यचर्या का निर्माण होता है, जो कि विद्यार्थियों के लिए सबसे अधिक उपयुक्त कौशल, गतिविधियों एवं वातावरण को संबोधित करती है। विद्यार्थियों की आवश्यकता में परिवर्तन के साथ ही पाठ्यचर्या की विषय वस्तु भी सदैव बदलती रहती है। यह उम्र के अनुसार, उपयुक्त, एवं विद्यार्थियों के दैनिक जीवन के लिए सार्थक शिक्षण कौशलों को प्रोत्साहित करती है और जटिलता के क्रम में कौशलों को सिखाने का प्रयास किया जाता है। पारिस्थितिक मूल्यांकन में विद्यार्थियों से उनके वातावरण से संबंधित जानकारी एकत्र करना शामिल है। एकत्र की गई जानकारी उनके भौतिक वातावरण, व्यवहार और गतिविधि के पैटर्न, व्यक्तिगत और सामूहिक शक्तियों और बाधाओं, विद्यार्थियों और पर्यावरण के बीच बातचीत से संबंधित हो सकती है।

बोध प्रश्न– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 7ः– पारिस्थितिक पाठ्यचर्या उपागम की मुख्य विशेषता क्या है?

....
....
....

प्रश्न 8ः– किसी बच्चे के सम्बन्ध में आकलन करने के लिए क्या आवश्यक है? पारिस्थिकीय उपागम के दृष्टिकोण से स्पष्ट करें?

....
....
....

2.4.4 उदारवादी पाठ्यचर्या विकास

उदारवादी शब्द मूल रूप से "चुनाव" से निकला है। उदारवादी उपागम किसी एक उपागम का अनुसरण नहीं करता अपितु सभी उपागमों का जो सर्वश्रेष्ठ हो उसका चुनाव एवं उपयोग करना है। विभिन्न उपागमों से अच्छे विचारों, प्रत्यय एवं सिद्धांतों को चुनकर, निकालकर एवं उन्हें एक साथ मिलाकर एक संपूर्ण दर्शन बनता है। इसलिए उदारवाद चुनाव करने का दर्शन है। उदारवाद विभिन्न स्रोतों से प्राप्त ज्ञान के मिश्रण के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। यह एक अनूठा उपागम है जो विभिन्न उपागमों से सभी अच्छे विचारों और सिद्धांतों को लेकर उन्हें आपस में जोड़ता है। उदारवाद एक संप्रत्यात्मक उपागम है जो मूल रूप से एक प्रतिमान या मान्यताओं के सेट पर दृढ़ता के साथ नहीं टिका रहता है अपितु किसी एक विशेष विषय पर पूरक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए विभिन्न सिद्धांतों, शैलियों या विचारों का प्रयोग करता है उदारवादी उपागम आवश्यक नहीं है की सभी उपागमों से विचारों या क्रियाओं से ले द्य यह दो या दो से अधिक उपागमों से भी मिलकर प्रयुक्त होती हैं।

उदाहरणस्वरुप जब एक बच्चा प्रत्येक दिन का एक हिस्सा अलग–अलग उपचार प्राप्त करने में बिताता हैं, जैसे कि व्यावहारिक व्यवहार विश्लेषण (एबीए), संवेदी एकीकरण और उत्तेजना (ब्रश करना और झूलना), फ्लोरटाइम प्रक्रियाएं, संगीत सत्र के तरीकों का उपयोग करके संरचित शिक्षण, विशिष्ट साथियों के साथ स्वतंत्र खेल। शिक्षक यह सुनिश्चित करता है कि समूह में शिक्षार्थियों के आधार पर और पाठ के उद्देश्यों के आधार पर किस पद्धति या उपागम का उपयोग किया जाए। इस प्रकार उदार उपागम सभी प्रसिद्ध उपागमों और विधियों की सर्वोत्तम तकनीकों को अपने में समाहित करता है और उन उद्देश्यों के लिए उनका उपयोग करता है जो उनके लिए सबसे उपयुक्त हैं। इस उपागम की मुख्य आलोचना यह है कि यह किस आधार पर और किन सिद्धांतों के आधार पर विभिन्न पहलुओं और विधियों को चुना और संयोजित किया जा सकता है, पर कोई मार्गदर्शन नहीं प्रदान करता है। कई बार उदार पाठ्यचर्या की आलोचना उनकी सोच में निरंतरता की कमी के कारण भी की जाती है। एक उदारवादी उपागम वह होगा जिसमें किसी कार्य हेतु, विभिन्न प्रकार की उपागम वाली विधियों, चुनौतियों, कार्य तक पहुंच, किसी विषय से निपटने के विभिन्न तरीकों, समस्याओं एवं चुनौतियां का प्रयोग किया जाता है।

इस उपागम का मुख्य लाभ यह है कि मनुष्य की प्रकृति है कि वह परिवर्तन को पसंद करता है, वह कार्य के हर क्षेत्र में नए एवं नवीन तरीके चाहता है, बिल्कुल ऐसा ही अधिगम प्रक्रिया में भी है। शिक्षार्थी सदैव कुछ नया और रोमांचक पसंद करते हैं। यह उपागम भी ऐसा ही है। यह उपागम अत्यंत व्यापक है और इसमें हर प्रकार की सीखने की गतिविधि शामिल हो सकती है एवं शिक्षार्थियों को एकरसता से भी बचाया जा सकता है। यह पूर्व–विद्यालयी शिक्षा के लिए अधिक उपयुक्त है लेकिन अन्य कक्षाओं में भी कम लाभकारी नहीं है। यह उन सभी प्रकार के कौशलों को जो कि सृजनात्मक वातावरण तैयार करने में एवं शिक्षार्थियों को आत्मविश्वास प्रदान करने में सहायक है, को उद्दीप्त करता है। यह उपागम, परिस्थितियों और उपलब्ध शिक्षण सामग्री के अनुसार, हमारे पद्धति को ढालने और आकार देने का अवसर प्रदान करती है।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 9:– उदारवादी पाठ्यचर्या से आप क्या समझते हैं?

....
....
....

प्रश्न 10:– उदारवादी पाठ्यचर्या का एक प्रमुख लाभ बताईये।

....
....
....

2.4.5 तंत्रप्रणाली विश्लेषण उपागम

तंत्रप्रणाली विश्लेषण पाठ्यचर्या उपागम, पाठ्यचर्या के परस्पर संबंधित घटकों को प्रणाली के रूप में एक साथ कैसे काम करते पर केंद्रित हैं। यह उपागम मानता है कि एक पाठ्यचर्या केवल अलग–अलग पाठ्यक्रमों या विषय क्षेत्रों का एक संग्रह नहीं है, बल्कि एक जटिल प्रणाली है जिसमें लक्ष्यों, उद्देश्यों, सामग्री, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन और मूल्यांकन जैसे कई तत्व शामिल होते हैं। प्रणाली विश्लेषण, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया को एक चक्रीय प्रक्रिया के रूप में देखता है। इसमें आवश्यकताओं की पहचान करना, उद्देश्यों को विकसित करना, निर्देशात्मक रणनीतियों को डिजाइन करना, पाठ्यचर्या को लागू करना और इसकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना शामिल है। यह उपागम पाठ्यचर्या विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों, जैसे सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक प्रभावों पर विचार करने के महत्व पर जोर देता है। यह किसी समस्या के सभी पहलुओं को विशिष्ट उद्देश्यों के प्रति समन्वयित करने का एक व्यवस्थित प्रयास है। प्रणाली समग्र रूप से एक इकाई है जिसमें इसके सभी पहलुओं और भागों, अर्थात् विद्यार्थियों, शिक्षकों, पाठ्यचर्या, सामग्री और शिक्षण उद्देश्यों के मूल्यांकन को शामिल किया गया है।

प्रणाली के विभिन्न हिस्सों में एक दूसरे के बीच कार्यात्मक और संरचनात्मक संबंध होते हैं। व्यवहार में प्रणाली उपागम का उपयोग करना, पाठ्यचर्या का निरंतर मूल्यांकन कर तार्किक विकास की प्रक्रिया का उपयोग करने के प्रयास है।तंत्र उपागम का उपयोग किसी भी लंबाई के शिक्षण/सीखने के एक एपिसोड की योजना बनाने, इसे सप्ताहों, महीनों या वर्षों तक चलने वाले पूरे पाठ्यचर्या के लिए दीर्घकालिक योजना, दैनिक पाठ योजना के माध्यम से, या यहां तक कि केवल कुछ सेकंड की अवधि के सीखने के अनुभव के लिए ऑन–द–स्पॉट योजना पर भी लागू किया जा सकता है। इसे शिक्षकों के एक समूह द्वारा संपूर्ण पाठ्यचर्या को डिजाइन करने या अनुकूलित करने के साथ–साथ एक व्यक्तिगत शिक्षक द्वारा अपना विशिष्ट पाठ्यचर्या इनपुट तैयार करने के द्वारा लागू किया जा सकता है। इस उपागम का उपयोग पिछले शिक्षण/सीखने के अनुभव का विश्लेषण करने के लिए भी किया जा सकता है।

तंत्र उपागम किसी विशेष शिक्षण पद्धति (जैसे व्यक्तिगत अध्ययन, या समूह शिक्षण) को निर्धारित या बढ़ावा नहीं देता है। बल्कि, यह एक ऐसा साधन है जो शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक उद्देश्यों और उन्हें

प्राप्त करने और उनका आकलन करने के साधनों के बारे में अधिक व्यवस्थित और तार्किक रूप से सोचने में मदद करता है।

2.5 सारांश

इस इकाई में हमने पाठ्यचर्या के प्रमुख उपागमों का अध्ययन किया। विद्यालय की गतिविधियों की योजना और आयोजन समाज द्वारा निर्धारित कुछ सिद्धांतों, मानदंडों एवं आवश्यकताओं के आधार पर किया जाना चाहिए। शिक्षण और अधिगम की गतिविधियों के माध्यम से शैक्षिक लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कुछ नियोजित प्रक्रियाएं हैं। पाठ्यचर्या उपागम को पाठ्यचर्या विकास के विभिन्न पहलुओं के बारे में निर्णय लेने में उपयोग किए जाने वाले एक पैटर्न के रूप में समझ सकते हैं।पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया में अधिगम–अनुभवों के विधिवत चयन, नियोजन तथा क्रियान्वयन हेतु जिन विधियों नियमों तथा पैटर्न का उपयोग किया जाता है उसे हम पाठ्यचर्या उपागम कहते हैं।

विकासात्मक उपागम विद्यार्थियों के शैक्षणिक अधिगम और उनके विकासात्मक चरणों के साम्यता से संबंधित है। इसका उद्देश्य व्यक्तिगत क्षमता और वैश्विक जरूरतों के उद्देश्यों को पूरा करना है। पाठ्यचर्या में अधिकतम संभव व्यक्तिगत वृद्धि और सामाजिक क्षमता प्राप्त करने के निर्देश शामिल होने चाहिए। पाठ्यचर्या का विकासात्मक उपागम शिक्षार्थी की शारीरिक और मानसिक वृद्धि की गतिविधियों, योग्यताओं और रुचियों पर केंद्रित है।

क्रियात्मक कौशल से आशय वे कौशल हैं जिनकी हम सभी को अपने जीवन में आवश्यकता होती है। विशेष शिक्षा के लिए एक कार्यात्मक उपागम शैक्षिक, सामुदायिक, घरेलू, मनोरंजनध्अवकाश और व्यावसायिक क्षेत्र में स्वतंत्र कामकाज के लिए आवश्यक व्यक्तिगत कौशल पर केंद्रित है।

पारिस्थितिक उपागम उन संदर्भों, वातावरणों और प्रणालियों पर केंद्रित है जो विद्यार्थियों के विकास और कल्याण को प्रभावित करते हैं।एक पारिस्थितिक उपागम घर, शिक्षा, सांस्कृतिक और सामुदायिक सेटिंग्स से संबंधित कारकों पर विचार करता है। यह उपागम उन संदर्भों को स्वीकार करता है जिनमें शिक्षा संचालित होती है, विद्यार्थी अपने वातावरण में कैसे बातचीत करते हैं, और ये बातचीत उनके व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों और जरूरतों पर कैसे प्रभाव डालती है।

उदारवादी उपागम किसी एक उपागम का अनुसरण नहीं करता अपितु सभी उपागमों का जो सर्वश्रेष्ठ हो उसका चुनाव एवं उपयोग करना है। उदारवाद विभिन्न स्रोतों से प्राप्त ज्ञान के मिश्रण के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। यह एक अनूठा उपागम है जो विभिन्न उपागमों से सभी अच्छे विचारों और सिद्धांतों को लेकर उन्हें आपस में जोड़ता है।

प्रणाली विश्लेषण पाठ्यचर्या उपागम पाठ्यचर्या के परस्पर संबंधित घटकों और एक प्रणाली के रूप में एक साथ कैसे काम करते हैं पर केंद्रित हैं। यह उपागम मानता है कि एक पाठ्यचर्या केवल अलग–अलग पाठ्यक्रमों या विषय क्षेत्रों का एक संग्रह नहीं है, बल्कि एक जटिल प्रणाली है जिसमें लक्ष्यों, उद्देश्यों, सामग्री, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन और मूल्यांकन जैसे कई तत्व शामिल होते हैं।

2.6 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. विकासात्मक उपागम इस सिद्धांत को ध्यान में रखता है कि बच्चों को उनके उम्र में क्या सीखना चाहिए, और वे कैसे सीख सकते हैं।
2. विकासात्मक उपागम शिक्षण रणनीतियों और अधिगम अनुभवों को विद्यार्थियों के विकासात्मक चरण के अनुसार रखता है
3. असत्य
4. कार्यात्मक उपागम शैक्षिक, सामुदायिक, घरेलू, मनोरंजनध्अवकाश और व्यावसायिक क्षेत्र में स्वतंत्र कामकाज के लिए आवश्यक व्यक्तिगत कौशल पर केंद्रित है।
5. सत्य

6. सत्य

7. पारिस्थितिक उपागम उन संदर्भों, वातावरणों और प्रणालियों पर केंद्रित है जो विद्यार्थियों के विकास और कल्याण को प्रभावित करते हैं।

8. किसी बच्चे के सम्बन्ध में आकलन करने के लिए यह आवश्यक है कि उसके अधिगम और कौशल को प्रभावित और निर्धारित करने के लिए विभिन्न पर्यावरणीय कारकों को ध्यान में रखा जाए।

9. उदारवादी उपागम, विभिन्न उपागमों से सभी अच्छे विचारों और सिद्धांतों को लेकर उन्हें आपस में जोड़ता है।

10. उदारवादी उपागम से शिक्षार्थियों को एकरसता से बचाया जा सकता है।

11. प्रणाली विश्लेषण पाठ्यचर्या उपागम पाठ्यचर्या के परस्पर संबंधित घटकों और वे एक प्रणाली के रूप में एक साथ कैसे काम करते हैं पर केंद्रित है।

12. सत्य

13. असत्य

2.7 अभ्यास प्रश्न

1. पाठ्यचर्या उपागम से आप क्या समझते हैं? गंभीर रूप से दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु एक उपयुक्त पाठ्यचर्या का सोदाहरण वर्णन करें।
2. विकासात्मक उपागम और कार्यात्मक उपागम के मध्य अंतर कीजिए ।
3. पाठ्यचर्या के पारिस्थितिकीय उपागम से क्या आशय है? इसके गुणों और सीमितताओं की चर्चा करें।
4. तंत्र उपागम को अपने शब्दों में व्यक्त करें।
5. उदारवादी उपागम के गुणों और दोषों की विवेचना करें।

2.8 चर्चा के बिंदु

"एक शिक्षक के लिए विविध पाठ्यचर्या उपागमों की जानकारी क्यों आवश्यक है" इस विषय पर चर्चा करें।

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Al-Khatib, J.,& Al-Hadidi, M. (2016). Curricula and Teaching Methods in Special Education.Oman: House of Thought for Publishing and Distribution.
- Browder, Diane M. (2015). Curriculum and assessment for students with Moderate and severe disabilities. New York: Guilford Press.
- Detterman, D. K. and Thompson, L. A. (1997). 'What is so Special about Special Education?' American Psychologist 52(October): 63-82.
- Dewey, J. (1902) The child and the Curriculum, Chicago: University of Chicago Press, https://archive.org/details/childandcurricul00deweuoft
- Jones, Carroll J. (2010). Curriculum development for students with mild disabilities: Academic and social skills for RTI planning and inclusion IEP'S. Spring field, Illinois: Charles C. Thomas Publisher Limited
- Raina, J. and S. Verma. (2021a). A Philosophical Gaze on School Curriculum, The Armchair Journal, Apri https://armchairjournal.com/ philosophical-gaze-curriculum/
- Rossan, F. & Harun, S. (2018). Curricula and methods of teaching daily life skills to special groups. Riyadh: Golden Pages Library.

इकाई–3 पाठ्यचर्या नियोजन/योजना और कार्यान्वयन

संरचना

3.01 प्रस्तावना

3.02 उद्देश्य

3.03 पाठ्यचर्या नियोजन का अर्थ

3.04 पाठ्यचर्या नियोजन के बुनियादी संप्रत्यय

3.05 पाठ्यचर्या नियोजन के स्तर एवं शिक्षकों की भूमिका

3.06 पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन

3.07 सारांश

3.08 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

3.09 अभ्यास प्रश्न

3.10 चर्चा के बिंदु

3.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.01 प्रस्तावना

हम जानते हैं कि शिक्षण संस्थान पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक, संवेगात्मक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक विकास के लिए प्रयास करता है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है, यह शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। प्रभावी शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया हेतु आवश्यक और पहली शर्त है –अच्छी पाठ्यचर्या योजना। पाठ्यचर्या योजना की धारणा में कई परस्पर संबंधित दृष्टिकोण हैं जिसमें पाठ्यचर्या डिजाइन के सिद्धांत,सीखने के परिणाम लिखना, सीखने के अनुभवों को व्यवस्थित करना और अभ्यास, कौशल, मूल्यों, ज्ञान और सिद्धांत को एकीकृत करना तथा मूल्यांकन। यह एक क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसमें पाठ्यचर्या की आवश्यकता के विश्लेषण, पाठ्यचर्या के उद्देश्य निर्धारण, विषयवस्तु व अन्य अनुभवों का निर्णय, पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन इत्यादि सम्मिलित है।

यह शिक्षार्थी तथा शिक्षक दोनों के लिए अति महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या नियोजन में यह आवश्यक है कि विभिन्न मानसिक स्तर के विद्यार्थियों को उनके मानसिक स्तर के अनुकूल कौन–कौन सी क्रियाएं सिखानी है और कौन से अनुभव प्रदान किये जाए जिससे शिक्षा को जीवन से जोड़ा जा सकें क्योंकि पाठ्यचर्या ही एक ऐसी धुरी है जिसके चारों ओर कक्षा के विविध कार्य तथा विद्यालय के समस्त क्रियाकलाप विकसित किए जाते हैं। प्रस्तुत इकाई में पाठ्यचर्या के नियोजन एवं क्रियान्वयन का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

3.02 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत के बाद आपः

- पाठ्यचर्या योजना के विभिन्न घटकों की पहचान कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या नियोजन के प्रत्येक चरण और चरण के पीछे के तर्क की व्याख्या कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या नियोजन के महत्व का विश्लेषण कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या योजना की प्रक्रिया में सुधार हेतु कुछ बुनियादी सिद्धांतों की पहचान कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या नियोजन में किन–किन हितधारकों की भूमिका है। उनका वर्णन कर सकेंगे

3.03 पाठ्यचर्या नियोजन / योजना का अर्थ

पाठ्यचर्या योजना एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें पाठ्यचर्या और उससे संबंधित अन्य विषयों पर विचारों की परस्पर क्रिया सम्मिलित होती है। हालांकि, पाठ्यचर्या योजना का परम उद्देश्य विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध सीखने के अवसरों का वर्णन करना है। इस प्रकार पाठ्यचर्या नियोजन अंततः शिक्षार्थियों के अनुभवों से संबंधित है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण मुद्दा सिर्फ यह नहीं है कि विद्यार्थियों को क्या सीखना चाहिए, बल्कि यह भी है कि वे इसे कैसे सीखने जा रहे हैं? पाठ्यचर्या की योजनाएँ जो मात्र सिद्धांतों और अवधारणाओं या विचारों को परिभाषित करती हैं और उसका क्रियान्वयन कैसे किया जाना है, यह नहीं बताती है तो वह अधूरी हैं क्योंकि सीखने में अंततः जो सीखा गया है उसका अनुप्रयोग शामिल होना चाहिए। उसी तरह, योजना के उद्देश्य पर विचार किए बिना केवल कार्रवाई का वर्णन करने वाली योजनाएँ भी अधूरी हैं, अन्यथा सीखने की गतिविधि लक्ष्यहीन होने के कारण अर्थ हीन हो जाती है। पाठ्यचर्या नियोजन और संरचना एक प्रक्रिया है जिसमें विभिन्न स्तरों पर प्रतिभागी अधिगम के लक्ष्यों के बारे में निर्णय लेते हैं, उन शिक्षण–अधिगम स्थितियों के बारे में निर्णय लेते हैं, जिसके द्वारा ये हासिल किए जा सकते हैं और क्या अपनाए गए तरीके प्रभावी है, के बारे में निर्णय लिए जाते हैं। इसलिए पाठ्यचर्या नियोजन में विषयवस्तु और प्रक्रिया दोनों के बारे में निर्णय शामिल होते हैं। इसके अलावा, पाठ्यचर्या और निर्देश के क्षेत्रों के भीतर, कई विशिष्ट मुद्दे और विषय हैं जो पाठ्यचर्या योजना के अंतर्गत शामिल हो सकते हैं।

शब्द 'पाठ्यचर्या योजना' और 'पाठ्यचर्या विकास' अक्सर एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं। हालाँकि, कुछ का मानना है कि वे एक शैक्षिक गतिविधि के दो अलग–अलग चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। व्यापक अर्थों में पाठ्यचर्या योजना एक व्यापक अवधारणा है जो विशिष्ट शिक्षण / सीखने की स्थितियों के लिए व्यापक लक्ष्यों की पहचान से लेकर अनुभवों के वर्णन तक की गतिविधि का वर्णन कर सकती है। पाठ्यचर्या विकास मुख्य रूप से वास्तविक शिक्षण / अधिगम स्थितियों के डिजाइन से संबंधित गतिविधि है।

इस प्रकार, ''पाठ्यचर्या नियोजन'' शब्द एक व्यापक धारणा को संदर्भित करता है जिसमें पाठ्यचर्या विकास और निर्देशात्मक डिजाइन दोनों शामिल हैं, इसमें निर्देशनात्मक डिजाइन, शिक्षण और अधिगम के तरीकों पर केंद्रित एक अति विशिष्ट गतिविधि को निर्दिष्ट किया गया है। अतः पाठ्यचर्या नियोजन को समग्रता के साथ देखे जाने की आवश्यकता है। आमतौर पर इसमें पाठ्यचर्या से सम्बंधित विविध क्षेत्रों और मुद्दों के संयोजनों के बारे में निर्णय शामिल होते हैं। इसका पृथक रूप से विचार नहीं किया जा सकता। इसके साथ ही पाठ्यचर्या नियोजन किसी एक समूह का एकमात्र उत्तरदायित्व या विशेषाधिकार नहीं है इसके लिए टीम–वर्क की आवश्यकता होती है। इस प्रकार पाठ्यचर्या योजना में लोगों के कई समूह और संचालन के स्तर शामिल हैं और यह एक सतत प्रक्रिया है।

अतः 'पाठ्यचर्या नियोजन' शब्द को परिभाषित करते हुआ कहा जा सकता है कि यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें प्रतिभागी शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों के बारे में निर्णय लेने के लिए विभिन्न स्तरों पर योगदान करते हैं तथा यह भी विचार करते हैं कि उस उद्देश्य को कैसे पूरा किया जा सकता है अर्थात किन शिक्षण–अधिगम स्थितियों और वातावरण का सृजन कर शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

पाठ्यचर्या योजना को विकसित करने हेतु निम्न पांच मूलभूत मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिए :

- शैक्षिक उद्देश्य ;
- शैक्षिक अनुभवः जो इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रदान करने की आवश्यकता है ;
- इन शैक्षिक अनुभवों का प्रभावी संगठन ;
- प्रभावी कार्यान्वयन ; और
- मूल्यांकन।

पाठ्यचर्या योजना उस निर्देशात्मक सामग्री को पहचानने और व्यवस्थित करने की प्रक्रिया है जिसका पाठ्यचर्या अनुसरण करेगी। एक पाठ्यचर्या डिजाइनर इस बारे में निर्णय लेता है कि विद्यार्थी क्या सीखेंगे और उस सामग्री को विद्यार्थियों तक कैसे पहुँचाया जाए। पाठ्यचर्या विकल्पों का विश्लेषण करने के बाद, एक का

चयन किया जाता है जो स्कूल के मिशन का प्रतिनिधि होता है। अगला, सामग्री का चयन किया जाता है और पाठ्यक्रम बनाया जाता है। पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करती है कि क्या पढ़ाया जाएगा? किसे पढ़ाया जाएगा? और कैसे पढ़ाया जाएगा? प्रत्येक घटक अन्य घटकों के साथ संबंधित होता है और परस्पर क्रिया करता है। उदाहरण के लिए, जो पढ़ाया जाएगा, वह इस बात से प्रभावित होता है कि किसे पढ़ाया जा रहा है (उदाहरण के लिए, उम्र, परिपक्वता और शिक्षा में उनके विकास की अवस्था)। सामग्री कैसे सिखाई जाती है, इसके तरीके इस बात से प्रभावित होते हैं कि किसे पढ़ाया जा रहा है, उनकी विशेषताएं और सेटिंग।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1:— पाठ्यचर्या नियोजन का क्या अर्थ है?

....

....

....

प्रश्न 2:— पाठ्यचर्या योजना को विकसित करने हेतु किन मूलभूत मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिए?

....

....

....

3.04 पाठ्यचर्या योजना में बुनियादी संप्रत्यय

प्रयोजन/आवश्यकता विश्लेषणः नये पाठ्यचर्या की आवश्यकता क्यों हैं और पुराने में क्या परिवर्तन किया जाना है इस हेतु आवश्यकता का विश्लेषण करना अति महत्वपूर्ण कदम है। आवश्यकता विश्लेषण शिक्षार्थी और समाज के विश्लेषण को संदर्भित करता है जैसे शिक्षार्थियों की क्षमता और, योग्यता और सीखने की क्षमता, प्रेरणा, आवश्यकताएं, रुचियां और मूल्य साथ ही साथ व्यक्ति का पोषण या उपयोग करने के लिए समाज का उन्मुखीकरण। आवश्यकता विश्लेषण से प्राप्त परिणाम पर ही आगे की पाठ्यचर्या विकास निर्भर करेगा। इसके लिए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर की आवश्यकता होगी:

- विद्यार्थियों के उद्देश्यों और लक्ष्यों का पता लगाएं।
- पता लगाएँ कि सीखने के लिए विद्यार्थियों को क्या करने की जरूरत है।
- निर्धारित करें कि लक्षित स्थिति में विद्यार्थियों को क्या करने की आवश्यकता है।
- संसाधनों, उपकरणों, सामग्रियों और सुविधाओं की जगह और इसकी उपलब्धता की जाँच करें।
- कार्यक्रम की शुरुआत में विद्यार्थियों के भाषा स्तर पता करें।

यह किसी देश की भावनात्मक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और भौगोलिक स्थिति के बारे में धारणाओं का ढांचा भी प्रदान करता है। यह पाठ्यचर्या योजनाकारों को उद्देश्यों के चयन, अधिगम सामग्री के संगठन के चयन और उचित मूल्यांकन प्रक्रियाओं का सुझाव देने में मदद करता है।

शैक्षिक उद्देश्य—

पाठ्यचर्या का शैक्षिक उद्देश्य निर्धारित करने के कई घटक होते है जिसमें वृहद् स्तर पर समाज और संकुचित स्तर पर विद्यालय ध्संस्थान महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। किसी संस्था या समाज का लक्ष्य 'भविष्य की आशा' की एक साझा छवि है। यह उन सभी की आशाओं और आकांक्षाओं का वर्णनात्मक वर्णन है जो संस्था की प्रक्रियाओं, सेवाओं और उत्पादों से प्रभावित हैं। समाज या संस्था का उद्देश्य वहां के सदस्यों को उनके सभी प्रयासों में हमेशा के लिए आकार और ऊर्जा प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी संस्थान का लक्ष्य

बालिकाओं के लिए आधुनिक शिक्षा प्रदान करने वाला संस्थान बनाना है तो संस्थान को ई–कॉमर्स, वेबसाइट डिजाइनिंग, व्यवसाय प्रबंधन आदि जैसे कंप्यूटर अनुप्रयोग पाठ्यक्रमों में डिग्री प्रदान करना होगा। पाठ्यक्रमों के परिणामस्वरूप विशिष्ट लक्ष्य और उद्देश्य होंगे। शैक्षिक उद्देश्य को परिभाषित करने के लिए कुछ विचार सामाजिक प्रासंगिकता, विद्यार्थियों की जरूरतें और रुचियां और अंतर्राष्ट्रीय मानदंड होंगे।

संस्था जिस तरह के मूल्यों को बढ़ावा देना चाहती है, उसके क्षेत्र में सामाजिक प्रासंगिकता, जिस क्षेत्र में वह स्थित है, उसके आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन में वह जो भूमिका निभाना चाहेगी, वह उस शैक्षिक उद्देश्य को निर्धारित करती है जिसे संस्था पूरा करना चाहती है।. उदाहरण के लिए यदि वह धार्मिक सहिष्णुता के मूल्य को बढ़ावा देना चाहता है, तो पाठ्यक्रम में सभी धर्मों के लिए धार्मिक विचार शामिल होंगे। यदि संस्थान क्षेत्र में आर्थिक विकास का एक साधन बनना चाहता है तो वह व्यावसायिक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों जैसे सचिवीय अभ्यास, कंप्यूटर अनुप्रयोग पाठ्यक्रम आदि की पेशकश करेगा। यदि संस्थान का मानना है कि वह सामाजिक परिवर्तन करना चाहता है तो उसे ऐसे पाठ्यक्रम शामिल करने होंगे। सीमांत क्षेत्रों, लड़कियों आदि विद्यार्थियों को आकर्षित करना और उनका विकासात्मक अध्ययन आदि, एकीकृत विषयों में पाठ्यक्रम प्रदान करना। पाठ्यक्रम योजना के लिए विद्यार्थियों की जरूरतों और रुचियों को समझना महत्वपूर्ण है।

पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों की आकांक्षाओं और रुचियों के प्रति अधिक संवेदनशीलता होनी चाहिए, जो न केवल शिक्षा के लक्ष्यों को निर्धारित करने के मानदंड हैं, बल्कि 'पढ़ाई जाने वाली विषय वस्तु' और सीखने–सिखाने की पद्धति भी हैं। विद्यार्थी की जरूरतों और मौजूदा पाठ्यक्रम के बीच संतुलन खोजने के लिए विद्यार्थी की जरूरतों और रुचियों का आकलन किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या नियोजक सीधे इस पहलू पर विद्यार्थियों की राय को शामिल कर सकते हैं। पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और क्या वे पाठ्यक्रम के लक्ष्यों को समझते हैं, इस पर उनकी राय शायद ही कभी मांगा जाता है। पाठ्यचर्या के लक्ष्य पाठ्यक्रम/कार्यक्रम के संपर्क के परिणामस्वरूप ज्ञान, कौशल और मूल्यों के संदर्भ में विद्यार्थियों को क्या हासिल करना चाहते हैं, इसकी दीर्घकालिक अपेक्षाएं हैं। लक्ष्य विनिर्देश पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के निर्माण को दिशा देता है और ज्ञान, कौशल और मूल्यों के मापदंडों को निर्दिष्ट करता है जिसके भीतर पाठ्यचर्या के उद्देश्य फिट होते हैं। यह सामग्री के प्रभावी लेन–देन के संबंध में शिक्षकों और विद्यार्थियों को स्पष्टता और दिशा भी देता है और सीखने के परिणामों को सुगम बनाता है।

जब पाठ्यचर्या स्पष्ट रूप से तैयार की जाती है, तो इसके कई अन्य लाभ होते हैं:

- शिक्षक और विद्यार्थी के बीच प्रभावी संचार की संभावना;
- पाठ्यक्रम सामग्री और संरचनाओं के चयन के लिए एक रूपरेखा तैयार करना;
- सबसे उपयुक्त शिक्षण–अधिगम विधियों की दिशा दिखाता है;
- पाठ्यक्रम का मूल्यांकन, निगरानी और आकलन करने का सबसे अच्छा तरीका बताता है;
- यह शिक्षकों को उद्देश्यों के बारे में सोचने और उन्हें विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों और मूल्यांकन कार्यों से अधिक कुशलता से जोड़ने में मदद करता है।

शैक्षिक अनुभवों का व्यवस्थापन–

अब हम चर्चा करेंगे कि पाठ्यचर्या का कार्यान्वयन/निष्पादन कैसे होता है। पाठ्यचर्या योजना में अगला चरण पाठ्यचर्या के निर्धारित लक्ष्यों का रूपांतरण है जिसे वास्तव में विद्यालय में क्रियान्वित किया जाना है। यह इस प्रश्न का उत्तर देता है कि 'इस पाठ्यक्रम या कार्यक्रम को लेने के परिणामस्वरूप हमारे शिक्षार्थियों को क्या करने में सक्षम होना चाहिए?' इस प्रश्न का उत्तर कई स्रोतों से मिल सकता है, जिसमें विद्यार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों, शिक्षकों, नियोक्ताओं, सलाहकार समूहों, प्रमाणन निकायों, विशेषज्ञ समितियों, राष्ट्रीय नीतियों और/या समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ चर्चा शामिल है।

उपरोक्त वर्णित हित धारकों से प्राप्त उत्तर सीखने के परिणामों के निर्माण की ओर ले जाते हैं। अभीष्ट शिक्षण परिणाम निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देते हैं:

- अध्ययन की इस इकाई (कार्यक्रम, पाठ्यक्रम) को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद विद्यार्थी क्या जानेंगे या समझेंगे?
- जब वे अध्ययन की इकाई को सफलतापूर्वक पूरा कर लेंगे तो वे अपने ज्ञान या समझ के साथ क्या कर पाएंगे?

एक बार सीखने के परिणाम आने के बाद, पाठ्यचर्या कार्यक्रम के पूरा होने पर उनका मूल्यांकन किया जाएगा। प्रश्न जिनका उत्तर प्राप्त होना है वो हैं:

- उद्देश्यों की प्राप्ति की पुष्टि करने के लिए विद्यार्थी को कौन से मूल्यांकन कार्य की आवश्यकता होगी?
- ये मूल्यांकन कार्य किस तरह से उन संदर्भों को प्रतिबिंबित करते हैं जिनमें विद्यार्थी से इस पाठ्यक्रम/कार्यक्रम में सीखे गए ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण का उपयोग करने की अपेक्षा की जाएगी?
- क्या निर्धारित उद्देश्य और चुने गए साधन दोनों, प्रभावी पाठ्यचर्या योजना हेतु उपयुक्त हैं?

पाठ्यचर्या के अनुभव–

पाठ्यचर्या योजनाकार को उन कारकों से भी अवगत होना चाहिए जो पाठ्यचर्या योजना की सीमा को परिभाषित करते हैं। इसे संभव बनाने के लिए पाठ्यचर्या संबंधी निवेशोंध्इनपुट को विषयवस्तु और सीखने के अनुभवों के प्रकारों के साथ ही सीखने की प्रक्रिया में उनके प्रभाव से संबंधित होना चाहिए। पाठ्यचर्या इनपुट का मतलब सीखने की सामग्री और सीखने के अनुभव हैं जो ज्ञान, कौशल और मूल्यों को विकसित करते हैं। दूसरे, पाठ्यचर्या उन विशिष्ट पहलुओं या पाठ्यचर्या इनपुट का विवरण भी देती है जिन्हें मुख्य और वैकल्पिक पाठ्यक्रमों में प्रदान करने की आवश्यकता होती है। पाठ्यचर्या इनपुट तय करने में मुख्य विचार क्षेत्र/प्रसार, संतुलन, एकीकरण, अनुक्रम, निरंतरता, अभिव्यक्ति और हस्तांतरणीयता हैं।

क्षेत्र/प्रसार से तात्पर्य उस विस्तार, विविधता और शैक्षिक अनुभवों के प्रकार से है जो शिक्षार्थियों को कार्यक्रमों में प्रगति के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं। यह पढ़ाए जाने वाले बुनियादी कौशलों और अवधारणाओं तथा 'विद्यार्थियों में मन में बैठाए जाने वाले मूल्य और दृष्टिकोण' को भी संदर्भित करता है। पाठ्यचर्या योजनाकारों को अलग–अलग अनुशासनात्मक, व्यक्तिगत और सामाजिक विचारों को पूरा करना चाहिए। इस क्षेत्र में यह निर्णय लेना होता है कि एक पाठ्यचर्या के लिए कितने विषय निर्दिष्ट किए जाने चाहिए।

अनुक्रम कार्यक्रम की अवधि में समय आयाम या कार्यक्रम में एक विशिष्ट समय अवधि, जैसे पहले/दूसरे/तीसरे सेमेस्टर को संदर्भित करता है। अनुक्रमण के दो अन्य महत्वपूर्ण पहलू हैं: निरंतरता हर बार जटिलता के बढ़े हुए स्तर पर नियोजित दोहराव और सामग्री की पुनरावृत्ति के सिद्धांत को संदर्भित करती है। उदाहरण के लिए, प्रारंभिक शिक्षा में स्नातक की डिग्री के लिए, विद्यार्थियों को सैद्धांतिक विषयों के अलावा बच्चों और उनके सीखने के तरीकों का अनुभव देने के लिए, अनुभव पाठ्यक्रम में निर्मित होते हैं, जो वर्षों से उत्तरोत्तर जटिल होते जाते हैं।

पाठ्यचर्या आदानों में संतुलन, संरचना और क्रम को संदर्भित करता है, जो दायरे के साथ–साथ अनुक्रम को दर्शाता है, जिससे पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति होती है। पाठ्यचर्या आदानों में संतुलन का महत्व निम्नलिखित के लिए है:

- पाठ्यचर्या के उद्देश्य की संरचना और क्रम
- इस तरह के कारकों या दृष्टिकोणों के बीच संतुलन – शिक्षार्थी या विषय केंद्रित दृष्टिकोण, समाज की जरूरतें और शिक्षार्थियों के हित, सामान्य और विशेष शिक्षा, पाठ्यचर्या इनपुट की चौड़ाई और गहराई, उद्देश्य जैसे ज्ञान, कौशल और मूल्य, नवाचार और परंपरा, निर्देशात्मक तकनीकों का मिश्रण, प्राप्त की जाने वाली डिग्री की प्रवीणता/उत्कृष्टता में उन्नयन।

व्यवहार्यता वह कारक है जो यह सुनिश्चित करता है कि पाठ्यचर्या योजनाकारों को जीवन में सीखने के अनुप्रयोग को ध्यान में रखना चाहिए।

पाठ्यचर्या संव्यवहारः (Curriculum Transaction)

पाठ्यचर्या संव्यवहार अधिगम प्रक्रिया के केंद्र में है। यह लेन–देन की प्रक्रिया है जो सार्थक सीखने के अनुभव प्रदान करने की योजना की सफलता की कसौटी है। यह संभव है कि सर्वोत्तम पाठ्यचर्या योजना वांछित पाठ्यचर्या उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल हो सकती है क्योंकि प्रक्रिया–संचालन/पाठ्यचर्या संव्यवहार दोषपूर्ण था। अतः निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि निर्देशात्मक डिजाइन विशेष रूप से सीखने के अनुभवों की योजना बनाने की प्रक्रिया का केंद्र है।

एक ही पाठ्यचर्या में शामिल क्रियाओं को संचालित करने के लिए विविध उपागम हो सकते हैं जो समान रूप से प्रभावी हैं। पाठ्यचर्या संव्यवहार की योजना बनाते समय बुनियादी बातों को ध्यान में रखना चाहिएः

- उस व्यवस्था की भौतिक और सामाजिक विशेषताएँ जहाँ पाठ्यचर्या संव्यवहार किया जाना है।
- दूसरे, स्वयं शिक्षक जो वास्तव में पाठ्यचर्या का संचालन करेंगे, उनके पास सही क्षमताएं और व्यवहारिक स्वभाव होने की आवश्यकता है।
- शिक्षक भौतिक और सामाजिक व्यवस्था की बदलती मांगों के साथ–साथ लेनदेन के विभिन्न तरीकों में अपनी खुद की दक्षता को कितनी अच्छी तरह से अनुकूलित कर सकता है, यह कार्यक्रम की सफलता और प्रभावशीलता को निर्धारित करेगा।
- कार्यप्रणाली और सीखने की सहायक सामग्री का चुनाव, जिसका उपयोग पाठ्यचर्या के संचालन में किया जाएगा, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्रभावी उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 3ः– क्या आवश्यकता विश्लेषण आवश्यक है?

....

....

....

प्रश्न 4ः– लक्ष्य विनिर्देश पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के निर्माण को दिशा देता है और ज्ञान, कौशल और मूल्यों के मापदंडों को निर्दिष्ट करता है। (सत्य/असत्य)

....

....

....

प्रश्न 5ः– निर्देशात्मक डिजाइन विशेष रूप से सीखने के अनुभवों की योजना बनाने की प्रक्रिया का केंद्र है। (सत्य/असत्य)

....

....

....

3.05 पाठ्यचर्या नियोजन के स्तर एवं शिक्षकों की भूमिका

सीखने के अनुभवों की योजना शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण व्यावसायिक गतिविधियों में से एक है। यह एक महत्वपूर्ण गतिविधि है क्योंकि यह काफी हद तक शिक्षार्थियों के दैनिक जीवन को निर्धारित करती है। सीखने के अनुभवों की योजना बनाने में कई परिस्थितियाँ शामिल हैं। वे पाठ्यचर्या नियोजन गतिविधियों का प्रतिनिधित्व करते हैंः

राष्ट्रीय स्तर–

राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या योजना में देश भर के विभिन्न संस्थानों के कुछ विशेष विषयों के विद्वान शामिल होते हैं। वे चर्चा करते हैं और एक कार्यक्रम को विकसित करने और प्रसारित करने का निर्णय लेते हैं, मौजूदा कार्यक्रम या तो अप्रचलित है या मांगों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।

राज्य स्तर–

राज्य स्तरः इस परिदृश्य में, शिक्षकों का एक समूह (शिक्षक, सिद्धांत, पाठ्यक्रम समन्वयक, आदि) राज्य शिक्षा विभाग के तहत एक समिति बनाते हैं। समिति का कार्य यह सिफारिश करना है कि क्या राज्य भर में समग्र कार्यक्रम का गठन होना चाहिए। हालाँकि यह शिक्षार्थियों की विशेषताओं और शिक्षा के व्यापक लक्ष्यों पर निर्भर करता है।

संस्था/प्रणाली स्तर–

यह दृश्य एक विशेष संस्थान के माता–पिता, शिक्षकों, प्रशासकों, परामर्शदाताओं और छात्रों के समूह से संबंधित है। उन्हें उस संस्था के लिए एक नई अनुशासन नीति विकसित करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। समूह इस आधार पर काम करता है कि व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभवों के साथ एक छात्र का सामना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि शैक्षणिक गतिविधियों से प्राप्त अनुभव। इसलिए, ये व्यक्तिगत और सामाजिक अनुभव पाठ्यक्रम का हिस्सा बनते हैं। यह स्थिति पाठ्यचर्या योजना के एक रूप का प्रतिनिधित्व करती है जो इस मान्यता से उत्पन्न होती है कि छात्र 'छिपी हुई पाठ्यचर्या' कहलाने वाले से बहुत कुछ सीखते हैं। छिपे हुए पाठ्यक्रम में ऐसी संस्थागत विशेषताएं शामिल हैं जैसे शासन संरचना, समूहीकरण स्वरूप, ग्रेडिंग प्रक्रियाएं, शिक्षक अपेक्षाएं आदि।

शिक्षक टीम स्तर–

शिक्षक–टीम स्तरः यह दृश्य विभिन्न विषय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने वाले शिक्षकों के एक समूह से संबंधित है जो एक इकाई विकसित करने के लिए एक साथ आते हैं। इस प्रकार की गतिविधि को अंतर–अनुशासनात्मक पाठ्यचर्या योजना के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसमें विभिन्न विषयों या ज्ञान के विषयों से योगदान शामिल होता है।

व्यक्तिगत शिक्षक स्तर–

शिक्षक स्तरः इस मामले में, एक शिक्षक सीखने के उद्देश्यों के बारे में निर्णय लेने की कोशिश करता है –शिक्षक छात्रों के एक समूह को क्या सिखाना चाहेंगे। विषय वस्तु या सामग्री के क्षेत्र में, शिक्षक को महत्वपूर्ण तथ्यों, सिद्धांतों, अवधारणाओं और शिक्षार्थी परिणामों के बारे में निर्णय लेने होंगे जिन पर जोर दिया जाना चाहिए। शिक्षक को भी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों और संसाधनों की योजना बनानी चाहिए और यह मापने के तरीकों की भी योजना बनानी चाहिए कि शिक्षार्थियों ने विभिन्न उद्देश्यों को कितनी अच्छी तरह पूरा किया है।

पाठ्यचर्या नियोजन में शिक्षक की भूमिका–

पाठ्यचर्या नियोजन में चरणों की एक श्रृंखला शामिल है, जैसा कि हम पहले ही देख चुके हैं जैसे लक्ष्यों का विनिर्देशन, पाठ्यचर्या के उद्देश्यों को निर्धारित करना, प्रासंगिक मानदंडों के आधार पर पाठ्यचर्या मॉडल का चयन करना और पाठ्यचर्या इनपुट के चयन के साथ–साथ उपयुक्त संव्यवहार प्रणाली का निर्धारण करना। इनमें से प्रत्येक घटक आपस में जुड़ा हुआ है और कार्यक्रम की अंतिम प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे एक–दूसरे के साथ कितनी अच्छी तरह तालमेल बिठाते हैं। प्रश्न हैं – पाठ्यचर्या नियोजन के संबंध में महत्वपूर्ण निर्णय कौन लेता है? शिक्षक, जो वास्तव में पाठ्यचर्या का संचालन करते हैं, शामिल विभिन्न चरणों को निर्धारित करने में क्या भूमिका निभाते हैं? भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा के मामले में, विभिन्न निकाय हैं जो अंततः पाठ्यक्रम संबंधी निर्णयों के लिए उत्तरदायी हैं। इस प्रकार पाठ्यचर्या का विकास एवं सुधार करना शिक्षक के प्रमुख कार्यों के अन्तर्गत आता है। परन्तु इस कार्य हेतु एक शिक्षक को व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक स्वतंत्रता की आवश्यकता होती है। जब तक शिक्षक स्वायत्तता के आधार या मापदण्ड परिभाषित नहीं किए जाते तब तक शिक्षक स्वायत्तता के अभाव में, शिक्षकों के नये दायित्व अनुभव नहीं किए जा सकते। पाठ्यचर्या निर्माण में शिक्षकों का योगदान होना अनिवार्य है परन्तु यह कार्य प्रशासकों के सहयोग के अभाव में पूर्ण नहीं हो सकता है। शिक्षक पाठ्यचर्या

नियोजन में दो भाग की भूमिका निभाते हैं – शैक्षणिक निकायों के सदस्य के रूप में और दूसरा अपने विशिष्ट विषयों में पाठ्यचर्या सामग्री के बुनियादी मसौदों की तैयारी में। दो अन्य चरण हैं जहाँ शिक्षक सीधे पाठ्यचर्या को प्रभावित करते हैं – पाठ्यचर्या कार्यान्वयन और मूल्यांकन।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 6ः– पाठ्यचर्या का नियोजन सिर्फ राष्ट्रीय स्तर पर किया जाना चाहिए। (सत्य/असत्य)

....

....

....

प्रश्न 7ः– अंतर–अनुशासनात्मक पाठ्यचर्या योजना के लिए किस स्तर का नियोजन जिम्मेदार होता है?

....

....

....

प्रश्न 8ः– पाठ्यचर्या का विकास एवं सुधार करना शिक्षक के प्रमुख कार्यों के अन्तर्गत नहीं आता है। (सत्य/असत्य)

....

....

....

3.06 पाठ्यचर्या क्रियान्वयन

पाठचर्या की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसे विद्यालय में कितनी अच्छी तरह लागू/क्रियान्वित किया गया है। इसलिए पाठ्यचर्या तैयार करते समय योजनाकार विद्यालय में उनके सफल कार्यान्वयन के बारे में सबसे अधिक सरोकार/चिंतित रहते हैं। पाठचर्या के क्रियान्वयन से तात्पर्य है कि किसी भी संस्था में निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप विषय वस्तु एवं अधिगम अनुभवों के माध्यम से पाठ्यचर्या का विकास करते हुए उसे कार्य रूप में परिणित करना तथा विद्यार्थियों को अर्जित उपलब्धियों का मूल्यांकन करना है। पाठ्यचर्या क्रियान्वयन का अर्थ है विद्यालय में पाठ्यचर्या के औपचारिक रूप से अपनाया जाना दूसरे शब्दों में यह वह स्थिति है जिसमें पाठ्यचर्या को विद्यालय की औपचारिक परिस्थितियों में वास्तविक रूप से स्वीकार किया जाता है इसमें अधिगम संसाधन वास्तविक कक्षा कक्ष स्थितियां और शिक्षक शिक्षार्थी अंतः क्रियाएं इत्यादि अनुभव सम्मिलित हैं जो कि पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन के समय उत्पन्न होती।

पाठ्यचर्या कार्यान्वयन को अभीष्ट पाठ्यचर्या को संक्रियात्मक/क्रियाशील पाठ्यचर्या (कक्षा अभ्यास) में परिवर्तित करने की प्रक्रिया के रूप में भी समझ सकते है और इसे पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण और कभी–कभी सबसे कठिन चरण माना जाता है। इसलिए, पाठ्यचर्या का प्रभावी कार्यान्वयन, यह सुनिश्चित करता है कि विद्यार्थी सीखने के परिणाम प्राप्त कर रहे हैं या एक पाठ्यचर्या को इस तरह से संचालित करना है जिससे अभीष्ट सीखने के परिणामों की प्राप्ति हो सके। पाठ्यचर्या का प्रभावी कार्यान्वयन अंतःक्रियात्मक और अनुभवात्मक होना चाहिए। इस परिप्रेक्ष्य से देखने पर, पाठ्यचर्या कार्यान्वयन उस चरण को भी संदर्भित करता है जब पाठ्यचर्या, एक शैक्षिक कार्यक्रम के रूप में, प्रभाव में लाया जाता है। पाठ्यचर्या को संचालन में लाने के लिए एक कार्यान्वयन एजेंट की आवश्यकता होती है। पाठ्यचर्या कार्यान्वयन प्रक्रिया में शिक्षक एक अभिकर्मक की भूमिका का निर्वहन करता है। कार्यान्वयन वह तरीका है जिसमें शिक्षक पाठ्यचर्या दस्तावेज या पाठ्यचर्या में निहित ज्ञान के विभिन्न पहलुओं का चयन और मिश्रण करता है। कार्यान्वयन तब होता है जब शिक्षक द्वारा निर्मित पाठ्यचर्या, शिक्षक का व्यक्तित्व, शिक्षण सामग्री और शिक्षण वातावरण शिक्षार्थी के साथ परस्पर क्रिया करते हैं। इसलिए पाठ्यचर्या कार्यान्वयन से तात्पर्य यह है कि अध्ययन के नियोजित या आधिकारिक रूप से डिजाइन किए

गए पाठ्यचर्या को शिक्षक द्वारा पाठ्यचर्या, कार्य की योजनाओं और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले अनुभवों में कैसे परिवर्तित किया जाता है।

कार्यान्वयन विद्यालय की जिम्मेदारी होती है। यह एक जटिल प्रक्रिया है इसमें शिक्षा के सभी हितधारक अपनी–अपनी भूमिका निभाते हैं सभी मिलकर विद्यार्थियों की शिक्षा को आकार देते हैं इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण है बच्चे के लिए समग्र अधिगम का वातावरण जिसमें शिक्षक और समाज मिलजुलकर बच्चे के लिए समग्र विकास का साझा उद्देश्य प्राप्त करने हेतु प्रयास करें। सफल कार्यान्वयन इस तथ्य पर निर्भर करता है कि कितना सुगम उसका नियोजन हुआ है इसलिए योजनाकारों का पाठ्यचर्या के उद्देश्यों, सीखने के अनुभवों, शिक्षार्थियों की अधिगम परिस्थितियों, प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता इत्यादि पर विवेकपूर्ण दृष्टिकोण होना चाहिए जिससे कि कार्यान्वयन वास्तविक रूप से किया जा सके। कार्यान्वयन से ही योजनाकर्ता को पाठ्यचर्या के प्रतिपुष्टि या प्रतिक्रियाएं प्राप्त होती हैं। इसी से पाठ्यचर्या के वास्तविक कार्यस्थल विद्यालय हैं जहां से पाठ्यचर्या की सफलताओं और कमियों का ज्ञान प्राप्त कर पाठ्यचर्या योजनाकर्ता अपेक्षित सुधार करते हैं और पाठ्यचर्या को समस्त हित धारकों की की अपेक्षाओं को सफल बनाते हैं उसके अनुरूप ढालते हैं। पाठ्यचर्या कार्यान्वयन में आधिकारिक तौर पर निर्धारित पाठ्यचर्या और विषयों को व्यवहार में लाना शामिल है। इस प्रक्रिया में शिक्षार्थी को ज्ञान या अनुभव प्राप्त करने में मदद करना शामिल है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पाठ्यचर्या कार्यान्वयन शिक्षार्थी के बिना नहीं हो सकता है। इसलिए पाठ्यचर्या कार्यान्वयन प्रक्रिया में शिक्षार्थी केंद्रीय व्यक्ति है। कार्यान्वयन तब होता है जब शिक्षार्थी नियोजित या इच्छित अनुभव, ज्ञान, कौशल, विचार और दृष्टिकोण प्राप्त करता है जिसका उद्देश्य उसी शिक्षार्थी को समाज में प्रभावी ढंग से कार्य करने में सक्षम बनाना है।

पाठ्यचर्या पर शिक्षक प्रशिक्षण की कमी, पर्याप्त समय आवंटन और विषय पर अपर्याप्त शिक्षण अधिगम सामग्री आदि पाठ्यचर्या के कार्यान्वयन पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं। माता–पिता, स्कूलों और सरकार को पाठ्यचर्या कार्यान्वयन के मुद्दे पर ध्यान देना चाहिए। सेवाकालीन कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों का प्रशिक्षण तत्काल शुरू किया जाना चाहिए। साथ ही, अपर्याप्त शिक्षण–अधिगम सामग्री को उपलब्ध कराया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या कार्यान्वयन में कुछ मुख्य प्रक्रियाएँ शामिल हैं, जिनमें नीति निर्माताओं, प्रशासकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, पर्यवेक्षकों, शिक्षकों और अभिभावकों और अंततः शिक्षार्थियों के बदलते दृष्टिकोण शामिल हैं। इसमें इसे संभव बनाने के लिए सामग्री और प्रशासनिक साधन उपलब्ध कराना भी शामिल है। किसी नए पाठ्यचर्या के बारे में शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और अन्य शिक्षा हितधारकों का दृष्टिकोण यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि पाठ्यचर्या को कैसे संचालित किया जाएगा। किसी कार्यक्रम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उसके सफल कार्यान्वयन में सहायक होता है। शिक्षण सामग्री, सीखने में महत्वपूर्ण तत्व हैं और उनके बिना अभीष्ट पाठ्यचर्या को आसानी से लागू नहीं किया जा सकता है। शिक्षण सामग्री, विद्यार्थियों को जो कुछ उन्होंने सीखा है उसका उपयोग करने के लिए जानकारी और अवसर प्रदान करती है। विद्यालय के वातावरण की पाठ्यचर्या क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें विद्यालय के भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों तरह के वातावरण सम्मिलित है। शिक्षकों व माता–पिता के बीच लोकतांत्रिक संबंध विद्यार्थियों में लोकतान्त्रिक मूल्यों का सृजन करने वाला होता है।

पाठ्यचर्या क्रियान्वयन को प्रभावित करने वाले कारक

पारिस्थितिकी सिद्धांतों के दृष्टिकोण से पाठ्यचर्या क्रियान्वयन को प्रभावित करने वाले कारकों को निम्न तरीके से विभाजित किया जा सकता है–

सूक्ष्मनिकाय कारक (Microsystem factors):

पाठ्यचर्या क्रियान्वयन के ये कारक कक्षा स्तर से संबंधित है जैसे–कक्षा में क्या पढ़ाया जाता है (पाठ्यचर्या) और कैसे पढ़ाया जाता है(निर्देश)। किस तरह से विद्यार्थी पाठ्यचर्या से अंतःक्रिया करते हैं का निर्धारण, इस स्तर पर, किया जाता है, जो कि पाठ्यचर्या की विशेषताओं, शिक्षक उस पाठ्यचर्या को किस तरीके से समझते है और उसे लागू करने के लिए उनकी तैयारी (प्रेरणा) किस स्तर की है, पर निर्भर करता है। इस प्रकार इसमें मुख्यतः पाठ्यचर्या एवं शिक्षकों की विशेषताएं समाहित है। पाठ्यचर्या की विशेषताएँ या पाठ्यचर्या–संबंधित कारक या तो इसके सफल कार्यान्वयन में बाधा डाल सकते हैं या इसे बढ़ावा दे सकते हैं। इन विशेषताओं में पाठ्यचर्या की आवश्यकता, स्पष्टता, जटिलता और पाठ्यचर्या की गुणवत्ता या व्यावहारिकता शामिल हैं। शिक्षक की विशेषताएँ

कहलाने वाली विशेषताओं में शिक्षा का स्तर, लिंग, आयु और शिक्षण अनुभव के वर्षों जैसे गुण शामिल होते हैं जिनका प्रभाव शिक्षक द्वारा अपने कर्तव्यों को निभाने के तरीके पर पड़ता है। शिक्षकों को विद्यालयों में पाठ्यचर्या के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायक के रूप में देखा जाता है।

मध्य निकाय कारक (Mesosystem factors):

मेसोसिस्टम स्तर को संस्थागत स्तर भी कहा जाता है और यह उस क्षेत्र को दर्शाता है जिसमें पाठ्यचर्या कार्यान्वयन होता है। संस्थान की विशेषताएं जिनमें संस्थागत कर्मचारियों के बीच सहयोग, संस्थागत समर्थन का स्तर और उचित संसाधनों की पर्याप्तता जैसी विशेषताएं शामिल हैं, का विद्यालयों में पाठ्यचर्या के प्रभावी कार्यान्वयन पर सीधा प्रभाव पड़ता है। संस्थान–संबंधित कारकों को संस्थागत प्रभाव या संस्थान की विशेषताएं भी कहा जाता है जो पाठ्यचर्या कार्यान्वयन को प्रभावित करते हैं, उन्हें दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है, अर्थात् कार्यान्वयन प्रक्रिया के राजनीतिक और सांस्कृतिक आयाम। राजनीतिक आयाम शक्ति और प्रभाव से संबंधित है और संस्थानों में प्रशासनिक समर्थन, नेतृत्व, सहयोग, बातचीत और संघर्ष समाधान जैसे मुद्दों से संबंधित है।

एक्सोसिस्टम कारक (Exosystem factors):

इसके अंतर्गत बाहरी वातावरण संबंधी कारक आते हैं। यह उन बाहरी चरों को संदर्भित करता है जिसका पाठ्यचर्या कार्यान्वयन पर प्रभाव पड़ता है। इस तरह के चरों में उन नीतियों के मुद्दे शामिल हैं जो स्थानीय, प्रांतीय और राष्ट्रीय शिक्षा एजेंसियों के साथ–साथ नियामक अधिकारियों के उन प्रयासों को बढ़ावा देती हैं जो संभावित रूप से पाठ्यचर्या विकास, कर्मचारियों की भर्ती, प्रशिक्षण, सीखने के समय, संसाधन जुटाने जैसे मुद्दों को प्रभावित करते हैं जो अंततः पाठ्यचर्या को लागू करने के तरीके को प्रभावित करते हैं। बाहरी वातावरण से संबंधित कारक नियामक अधिकारियों और उनके द्वारा प्रख्यापित शैक्षिक नीतियों से संबंधित हैं जो विद्यालयमें पाठ्यचर्या को लागू करने के तरीके को प्रभावित करते हैं।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 9:– पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन से क्या तात्पर्य है ?

....
....
....

प्रश्न 10:– सफल कार्यान्वयन उसके सफल नियोजन पर निर्भर करता है। (सत्य/असत्य)

....
....
....

3.07 सारांश

शैक्षिक प्रक्रिया में पाठ्यचर्या का केन्द्रीय स्थान है। पाठ्यचर्या की योजना और प्रबंधन में अनिवार्य रूप से चार प्रमुख चरण शामिल हैं:

- पाठ्यचर्या के उद्देश्य, सीमा, और लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करना;
- व्यापक अर्थों में प्रासंगिकता को देखते हुए निर्देशित पाठ्यचर्या सामग्री की पहचान करना;
- वांछित सीखने के परिणामों के उन्नयन के जोर को दर्शाते हुए एक विशिष्ट क्रम में चयन के आधार और इसकी व्यवस्था सहित पाठ्यचर्या इनपुट का निर्धारण। साथ ही, लेन–देन की प्रक्रिया पर ठोस योजना बनाना, और

- पाठ्यचर्या की प्रक्रिया की योजना बनाना और विभिन्न एजेंसियों की भूमिका, जो इसका हिस्सा हैं, जिनमें शिक्षक भी शामिल हैं।

पाठ्यचर्या नियोजन शब्द एक व्यापक धारणा को संदर्भित करता है जिसमें पाठ्यचर्या विकास और निर्देशात्मक डिजाइन दोनों शामिल हैं, जिसमें निर्देशनात्मक डिजाईन शिक्षण और अधिगम के तरीकों पर केंद्रित एक अति विशिष्ट गतिविधि को निर्दिष्ट किया गया है।

पाठचर्या की सफलता इस बात पर निर्भर करती है इसे विद्यालय में कितनी अच्छी तरह लागू/क्रियान्वित किया गया है। पाठचर्या के क्रियान्वयन से तात्पर्य है कि किसी भी संस्था में निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप विषय वस्तु एवं अधिगम अनुभवों के माध्यम से पाठ्यचर्या का विकास करते हुए उसे कार्य रूप में परिणित करना तथा विद्यार्थियों को अर्जित उपलब्धियों का मूल्यांकन करना है। पाठ्यचर्या का सफल क्रियान्वयन बहुत सारे कारकों पर निर्भर करता है।

3.08 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. पाठ्यचर्या नियोजन एक सतत प्रक्रिया है जिसमें प्रतिभागी शिक्षण–अधिगम के उद्देश्यों के बारे में निर्णय लेने के लिए विभिन्न स्तरों पर योगदान करते हैं तथा यह भी विचार करते हैं कि उस उद्देश्य को कैसे पूरा किया जा सकता है अर्थात किन शिक्षण–अधिगम स्थितियों और वातावरण का सृजन कर शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है।
2. पाठ्यचर्या योजना को विकसित करने हेतु निम्न पांच मूलभूत मुद्दों पर विचार किया जाना चाहिएः
   - शैक्षिक उद्देश्य
   - शैक्षिक अनुभव जो इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रदान करने की आवश्यकता है
   - इन शैक्षिक अनुभवों का प्रभावी संगठन
   - प्रभावी कार्यान्वयन और
   - मूल्यांकन
3. नये पाठ्यचर्या की आवश्यकता क्यों हैं और पुराने में क्या परिवर्तन किया जाना है इस हेतु आवश्यकता का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है।
4. सत्य
5. सत्य
6. असत्य
7. शिक्षक स्तर नियोजन
8. सत्य
9. पाठ्यचर्या के क्रियान्वयन से तात्पर्य है कि किसी भी संस्था में निर्धारित उद्देश्यों के अनुरूप विषय वस्तु एवं अधिगम अनुभवों के माध्यम से पाठ्यचर्या का विकास करते हुए उसे कार्य रूप में परिणित करना तथा विद्यार्थियों को अर्जित उपलब्धियों का मूल्यांकन करना है।
10. सत्य

3.09 अभ्यास प्रश्न

- पाठ्यचर्या योजना के विभिन्न घटकों की चर्चा कीजिए।
- पाठ्यचर्या नियोजन की विविध चरणों की व्याख्या कीजिए।

- पाठ्यचर्या नियोजन की आवश्यकता एवं महत्व का विश्लेषण कीजिए।
- पाठ्यचर्या कार्यान्वयन से क्या समझते हैं? वर्णन कीजिए।
- पाठ्यचर्या नियोजन में किन किन हितधारकों की भूमिका है? उनका वर्णन कीजिए।
- पाठ्यचर्या कार्यान्वयन को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा कीजिए।

3.10 चर्चा के बिंदु

पाठ्यचर्या नियोजन एवं कार्यान्वयन में शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।

3.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Bediaco, A. (2039), Models and Concepts of Curriculum Implementation, Some Definitions and Influence of Implementation, available at: https://www.researchgate.net/project/curriculum-researchers (accessed 23 March 2020).
- Carl, A.E. (2032), Teacher Empowerment Through Curriculum Development: Theory into Practice, Junta & Company, Cape Town.
- Carr, W. (3995) For Education: Towards Critical Educational Enquiry, Buckingham and Philadelphia: Open University Press.
- Rudhumbu, N. & Plessis, E.D. (2020) Factors influencing curriculum implementation in accredited private universities in Botswana, https://www.researchgate.net/publication/350807946_Factors_influencing_curriculum_implementation_in_accredited_private_universities_in_Botswana30.3308/JARHE-04-2020-0083

खंड–2

इकाई 4 शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनीक

इकाई संरचना

4.1 परिचय

4.2 उद्देश्य

4.3 शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनीकों की उपयोगिता

4.4 शिक्षण पद्धतियाँ

4.4.1 व्याख्यान विधि (Lecture Method)

4.4.2 प्रदर्शन विधि (Demonstration Method)

4.4.3 सहयोग विधि (Collaboration Method)

4.4.4 कक्षा–कक्ष चर्चा विधि (Class Room Discussions Method)

4.4.5 कक्षा–कक्षक्रिया– शोध (Class Room Action Research)

4.4.6 डीब्रीफिंग विधि (Debriefing Method)

4.4.7 सूचना एवं जनसंचार तकनीक (Information Communication Technology)

4.4.8 पूछताछ आधारित अधिगम विधि (Inquiry& Based Learning Method)

4.4.9 विभेदित निर्देश विधि (Differentiated Instructions Method)

4.4.10गतिज़ अधिगम विधि (Kinesthetic Learning Method)

4.4.11त्वरित शिक्षा विधि (Expeditionary Learning Method)

4.5 शिक्षण विधियों के लाभ

4.6 शिक्षण तकनीक

4.6.1 शिक्षण विधि और शिक्षण तकनीक में अंतर

4.7 कक्षा–कक्ष में प्रभावी शिक्षण तकनीकों का प्रयोग

4.8 आधुनिक शिक्षण तकनीकों में शामिल माध्यम

4.8.1 शिक्षण तकनीक के लाभ

4.9 इकाई सारांश

4.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.11 अभ्यास कार्य

4.12 चर्चा के बिंदु

4.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

एक टिकाऊ, सहज एवं उपयोगी अधिगम का सीधा सम्बन्ध प्रयुक्त उचित शिक्षण विधियाँ एवं तकनीकों से होता है। दरअसल एक सरस एवं प्रभावी शिक्षण कार्य का सम्बन्ध प्रयोग किये जा रहे विधियों तथा तकनीकों

से है। इनका आपस में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है. शिक्षण विधियाँ वस्तुतः शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षा–सिद्धांतों एवं अन्य दिशा–निर्देशों से है जो विद्यार्थियों को सीखने में सहायता प्रदान करता है। इसी प्रकार से शिक्षण तकनीकों का सही प्रयोग सीखने की रफ़्तार को त्रुटिमुक्त, प्रभावी, सरस एवं स्थायी बनाने में सहायत देती है। एक अच्छे शिक्षक को इन शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का उचित ज्ञान एव इसे सही स्थान पर उचित तरीके से प्रयोग करने में माहिर होना चाहिए। विभिन्न विद्वानों ने अपने शोधों के माध्यम से यह सिद्ध किया है कि एक समुचित शिक्षण विधि एवं तकनीक का प्रयोग शिक्षार्थियों में विषय की समझ पैदा कर सकती है और निःसंदेह इनका उचित प्रयोग अच्छे अधिगम के लिए समसामयिक है. हम यह जानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप में अद्भुत होता है एवं उनके अधिगम की रफ़्तार और उनकी आवश्यकताएं भी अलग–अलग होती हैं. दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए यह और भी अपेक्षित है कि उनकी परिस्थितिनुसार सही शिक्षण विधि एवं तकनीक का प्रयोग किया जाये. इस क्रम में आवश्यकतानुसार एक से अधिक विधियों एवं तकनीकों का प्रयोग भी किया जा सकता है. वस्तुतः, हमें अपने शिक्षण में इनके समुचित प्रयोग के लिए तैयार रहना चाहिए।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत के बाद आपः–

- शिक्षण विधियों एवं तकनीकों को समझ सकेंगे।
- विभिन्न शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के बारे में चर्चा कर सकेंगे।
- एक प्रभावी शिक्षण कार्य के लिए इनके समुचित प्रयोग से अवगत हों सकेंगे।
- शिक्षण कार्य में इनकी महत्ता को रेखांकित कर सकेंगे।
- शिक्षण कार्य से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर प्रकाश डाल सकेंगे।

4.3 शिक्षण पद्धतियाँ एवं तकनीकों की उपयोगिता

जैसा कि हमने अभी जाना कि एक अच्छे शिक्षण कार्य के लिए समुचित शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का ज्ञान एवं प्रयोग आवश्यक है। शिक्षण विधियाँ वस्तुतः शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षा–सिद्धांतों एवं अन्य दिशा–निर्देशों से है जो विद्यार्थियों के अधिगम में सहायता प्रदान करता है। शिक्षण विधियाँ एक शिक्षक के तरकश के वो विविध तीर है जो वह अपने विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार सही विधि/विधियों का प्रयोग कर शिक्षण कार्य को रोचक एवं प्रभावी बनाता है। एक शिक्षक/प्रशिक्षक के तौर पर हमें शिक्षण– विधियों एवं तकनीकों का सही ज्ञान एवं उन्हें समुचित तरीके से प्रयोग का लाना जाना चाहिए।

4.4 शिक्षण पद्धतियाँ

शिक्षा के सन्दर्भ में शिक्षण में विषयवस्तु को अच्छी तरीके से समझाना आवश्यक होता है। जो विद्यार्थियों की विषय को बढाता है एवं इसके प्रति उनमें रूचि उत्पन्न करता है। होवार्ड गार्डनर अपने 'बहु–बुद्धिमत्ता सिद्धांत' में विस्तृत श्रेणी के तौर–तरीकों के बारे में वर्णन किया है। महान मनोवैज्ञानिक कार्ल जंग के निष्कर्ष के आधार पर भी यह प्रतिपादित किया गया है कि किस प्रकार व्यक्ति के व्यक्तिगत तौर पर एक दूसरे के संपर्क में व्यक्तित्त्व पर प्रभाव पड़ता है एवं वह किस प्रकार एक अधिगम वातावरण में एक दूसरे की प्रतिक्रिया पर प्रभाव पड़ता है? अन्य शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने शोधों से इस बात को साबित किया है कि शिक्षण विधियों एवं शैक्षिक–तकनीकों के माध्यम से अधिगम को सरस, सहज, उपयोगी एवं टिकाऊ बनाया जा सकता है। आगे के पृष्ठों पर हम विभिन्न शिक्षण विधियों के बारे में जानने का प्रयास करेंगे।

4.4.1 व्याख्यान विधि (Lecture Method)

व्याख्यान विधि परंपरागत रूप से प्रयुक्त एक प्रमुख प्राथमिक विधि है जो आज भी काफी उपयुक्त विधि है। यह विधि संस्थानों के लिए बड़े कक्षा–कक्षों में प्रयुक्त एक सामान्य विधि है। यह सहज एवं कम खर्चीला है। काफी बड़े समूहों के लिए यह एक सहज विधि है। पाठ्य–योजना के अनुसार एक बड़े समूह को सूचनाओं को देने के लिए यह विधि एक आसान एवं किफ़ायती है। यह विधि अनुदेशक या शिक्षक को बिना किसी उपलब्ध

सामग्री के विद्यार्थियों को पढ़ने की आज़ादी देता है किन्तु इस क्रम में विद्यार्थी एक निष्क्रिय भूमिका में होते हैं जिसके कारण उनके सीखने की क्रिया बाधित हो सकती है। यद्यपि यह विधि एक बड़े समूह सम्प्रेषण को बढ़ता है तथापि अध्यापक को चाहिए कि वह लगातार विद्यार्थियों की समस्याओं को समझे और उनसे निरंतर मौखिक प्रतिक्रिया लेते रहे। यह विधि किसी विषय में रुचि उत्पन्न एवं बरक़रार रखने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। यदि अनुदेशक/शिक्षक प्रभावी लेखन एवं वाक् कौशल में सिद्धहस्त है। यह विधि सामान्य शिक्षार्थियों के लिए तो उपयोग किया जा सकता है किन्तु, श्रवण दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए यह उपयुक्त विधि नहीं है। हालाँकि, संकेत भाषा के माध्यम से इस कमी को पूरा किया जा सकता है।

4.4.2 प्रदर्शन विधि (Demonstration Method)

इसे कोचिंग शैली भी कहा जाता है जिसमें शिक्षण कार्य उदाहरणों या प्रयोगों के माध्यम से किया जाता है। अर्थात यह व्याख्यान– सह –प्रदर्शन विधि है। प्रदर्शन विधि दृश्य, प्रमाण एवं सम्बद्ध तर्क के माध्यम से तथ्य को सत्यापित करता है। यह विधि शिक्षार्थियों में रूचि को विकसित करता है तथा याददाश्त को मजबूती देता है। यह विधि गणित, विज्ञान, कला आदि विषयों के शिक्षण के लिए प्रभावी है किन्तु, विविध आवश्यकताओं वाले शिक्षार्थियों के कक्षा–कक्ष के लिए यह अप्रभावी साबित हो सकता है।

बोध प्रश्न :–

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न 1 . होवार्ड गार्डनर ने किस सिद्धांत का प्रतिपादन किया था ?

____

____

_____

प्रश्न 2 . व्याख्यान विधि पर टिपण्णी लिखें.

____

____

_____

प्रश्न 3 . एक शिक्षक को शिक्षण विधियों एवं तकनीकों का ज्ञान क्यों होना चाहिए?

____

____

_____

4.4.3 सहयोग विधि (Collaboration Method)

यह विधि शिक्षार्थियों को अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेने की स्वतंत्रता देता है। जिसमें वे एक दूसरे से बात कर दूसरों के विचारों को सुन सकते हैं.। इस विधि में शिक्षार्थियों एवं अध्ययन के विषय वस्तु के बीच एक व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर सकते है, जो उन्हें अल्प व्यक्तिगत पक्षपाती तौर से सोचने को प्रेरित करता है। यहाँ यह महत्तवपूर्ण है कि शिक्षक शिक्षार्थियों को आपसी सहयोग के लिए एक स्पष्ट दिशा–निर्देश दें जिससे कि पूरे पाठ्ययोजना सिलसिलेवार तरीके से संपन्न हो। इस क्रम में शिक्षक पाठ के अंत में एक संक्षिप्त प्रतिक्रिया देता है।.यह भी समूह अधिगम (Group Learning) का ही एक उदहारण है। सहयोग विधि के लिए कुछ प्रमुख सलाह एवं रणनीतियाँ निम्न हैं :–

- विश्वास – निर्माण
- समूह परस्पर– क्रिया की स्थापना
- आलोचनाओं का ध्यान रखना

- विभिन्न प्रकार के अधिगम प्रकारों को सम्मिलित करना
- वास्तविक जीवन की समस्याओं का प्रयोग
- आकलन का विचार करना
- पूर्व–परीक्षण एवं परा–परीक्षण निर्माण
- विभिन्न रणनीतियों का प्रयोग
- शिक्षार्थियों को अनुसन्धान में सहायता करना
- सरल अधिगम के लिए तकनीकों को समुचित प्रयोग

4.4.4 चर्चा विधि (Discussions Method)

कक्षा–कक्षा में प्रयुक्त सबसे आम सहयोग विधि कक्षा–कक्ष चर्चा है। यह भी समूह अधिगम (Group Learning) का ही एक उदहारण है। यह वास्तविक में एक लोकतान्त्रिक शिक्षण–विधि है जिसमें शिक्षार्थियों को पारस्परिक संपर्क और अपने विचारों को सामने रखने का समान अवसर देता है। शिक्षार्थी या शिक्षक कक्षा–कक्ष में चर्चा का आरम्भ कर सकते हैं। कक्षा–कक्ष चर्चा के बाद प्रस्तुति एवं प्रदर्शन भी किया जा सकता है। यह एक बहुत ही प्रभावी विधि है जो दृष्टि–बाधित व्यक्तियों की निम्नवत सहायता करता है–

- शिक्षार्थियों की समझ को बढ़ता है।
- अकादमिक अन्तर्निहित वस्तु में सन्दर्भ जोड़ता है।
- शिक्षार्थियों के परिप्रेक्ष्य को बढ़ता है।
- विरोधी दृष्टिकोण को प्रमुखता से प्रदर्शित करता है।
- ज्ञान को मजबूती प्रदान करता है।।
- आत्मविश्वास में वृद्धि करता है.
- समुदाय में अधिगम को सहयोग देता है

4.4.5 कक्षा–कक्षक्रिया–शोध (Class Room Action Research)

कक्षा–कक्षक्रिया–शोध, कक्षा–कक्ष में प्रयोग किये जाने वाले सबसे सटीक विधि का निर्धारण करने में सहायक होता है। यह शिक्षार्थियों के अधिगम में सुधार करने में सहायक सिद्ध होता है। हर शिक्षक के पास अपने विशेष कौशल होते हैं ,किन्तु, प्रत्येक शिक्षण परिस्थिति विभिन्न कारणों से अपने आप में अलग होती है। अतः, शिक्षार्थियों के स्तर को ध्यान में रखते हुए उस परिस्थिति में उचित विधियों का सफल प्रयोग किया जाना चाहिए, जो शिक्षार्थियों के अधिगम स्तर को बढ़ने में सहायक हो। विद्यालयी स्तर पर अनुसन्धान विधि को आसान किया जाता है, ताकि शिक्षार्थी अपने स्तरानुसार उनका आकलन कर सकें।

4.4.6 डीब्रीफिंग विधि (Debriefing Method)

डीब्रीफिंग किसी विशिष्ट घटना के बाद के उस वार्तालाप सत्रों को कहते हैं, जिसमें घटना से संबंधित सूचनाओं का आदान–प्रदान एवं उसका परीक्षण किया जाता है। स्थिति के अनुसार डीब्रीफिंग विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों को पूरा कर सकता है जो भविष्य में अपने प्रदर्शन में सुधर करने की अनुमति देता है। अर्थात् डीब्रीफिंग अनुभवात्मक शिक्षा चक्र में सुगम या निर्देशित प्रतिबिम्ब की प्रक्रिया है। डीब्रीफिंग दैनिक क्रियाकलाप में अधिकतर पेशा , मनोविज्ञान, स्वास्थ्य, राजनीति या व्यवसाय में प्रयुक्त विधि है।

4.4.7 सूचना एवं जनसंचार तकनीक (Information Communication Technology)

आधुनिक काल में इस विधि की महत्ता सर्वविदित है। आप सभी को कोरोना महामारी के समय में होने वाली असुविधाओं का अवश्य अनुभव होगा. शिक्षण संस्थाओं को भी इस दौरान बंद कर दिया गया था फलस्व़रूपः, विद्यार्थियों की शिक्षा बुरी तरह से प्रभावित हुई थी।इस समय इसकी भरपाई करने में आधुनिक तकनीकी तथा सूचना एवं जनसंचार तकनीकों का अहम् योगदान रहा। संगणक और टेबलेट्स की सहायता से शिक्षार्थी सुगम्यता के साथ अपनी पढ़ाई कर सकते हैं.,साथ ही वह अनुसन्धान एवं अन्य शैक्षिक कार्य का निष्पादन बड़ी ही सहजता से कर सकते हैं। क्लाउड कंप्यूटिंग के माध्यम से वो विभिन्न दस्तावेजों व पाठ्य–सामग्रियों को घर बैठे अपनी सुविधानुसार पढ़ सकते है। इसके कुछ प्रमुख लाभों को निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता हैः–

- कम समय में अधिक लोगों तक सूचनाओं को पहुँचाया जा सकता है।
- मूल उपकरणों एवं सुविधाओं (संगणक/टेबलेट एवं इन्टरनेट) के साथ शिक्षा बहुत ही सहजता एवं सुगम्यता के साथ प्राप्त की जा सकती है।
- विशेष योग्यता वाले शिक्षार्थियों के लिए यह बहुत ही सुविधाजनक माध्यम है।
- दूरस्थ स्थानों में भी इसके माध्यम से शिक्षा एवं सूचना का पचार–प्रसार संभव है।
- विभिन्न विशेषज्ञों से चर्चा एवं अध्ययन संभव है।

4.4.8 पूछताछ आधारित अधिगम विधि (Inquiry& Based Learning)

पूछताछ आधारित अधिगम विधि अन्वेषण के माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया में सहायता देता है। इस विधि में शिक्षार्थी परियोजनाओं को संपन्न कर सकते हैं, और उससे संबंधित प्रश्नों का स्वयं से समाधान ढूढ़ सकते हैं। इस माध्यम से शिक्षार्थी अधिगम प्रक्रिया में एक सक्रीय भूमिका में होते हैं,जो उनके बेहतर अधिगम एवं याददाश्त में सहायक होता है। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक का कार्य एक संसाधन एवं मार्गदर्शक का होता है।

4.4.9 विभेदित निर्देश विधि (Differentiated Instructions Method)

इस विधि में शिक्षार्थियों के विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनके अनुरूप शिक्षण योजना का विचार किया जाता है। हम यह जानते हैं कि शिक्षार्थियों की अपनी मेधा एवं योग्यता होती है अतः इस विधि में शिक्षक उनके अनुसार अपनी शिक्षण विधि में अनुकूलन करते हैं। विशेष योग्यता वाले शिक्षार्थियों के लिए भी यह एक उपयोगी विधि है ,क्योंकि उन्हें कक्षा–कक्ष में आरामदायक अकादमिक वातावरण एवं सहजता की अनुभूति होती है।

4.4.10 गतिज़ अधिगम (Kinesthetic Learning)

गतिज़ अधिगम विधि संचलन के माध्यम से अधिगम की एक अवधारणा है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में इधर–उधर चलते हुए प्रसन्न हाव–भाव करते हुए शिक्षार्थियों को दृश्य एवं गतिज़ रूप से संलग्न रखते हैं। शिक्षार्थियों को भी घूमते हुए विभिन्न शारीरिक क्रियाओं के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि वो अपने रचनात्मकता का प्रदर्शन कर सकें।

4.4.11 त्वरित अधिगम विधि (Expeditionary Learning Method)

त्वरित अधिगम विधि में शामिल किया जाता है, कहते हैं परियोजना, केस–अध्ययन, प्रयोगशाला परीक्षण, अध्ययन यात्रा आदि के माध्यम त्वरित अधिगम प्रदान की जाती है। इसे व्यावहारिक अनावृत्ति (Hands-on-exposure) भी कहा जाता है।

बोध प्रश्न :–

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न 4 .सूचना एवं जनसंचार तकनीक के लाभों की सूची बनाइएँ। .

____

____

प्रश्न 5 कक्षा–कक्ष चर्चा एक बहुत ही प्रभावी विधि है, वर्णन किजिए।

____

____

प्रश्न 6 .गतिज़ अधिगम क्या है?

____

____

4.5 शिक्षण विधियों के लाभ

शिक्षण विधियों के कुछ प्रमुख लाभ :–

- शिक्षार्थियों को प्रभावी तौर पर शिक्षण प्रदान करना।
- शैक्षिक विषय–सन्दर्भों की उचित योजना का निर्धारण।
- शिक्षार्थियों से जुड़ने के लिए सबसे उचित माध्यम की खोज।

4.6 शिक्षण तकनीको

शिक्षण तकनीकी का अभिप्राय सामग्रियों का सेट, उपकरण एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के समावेशन से है, जिसका प्रयोग शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया में बेहतर शिक्षण के लिए करता है। एक सफल शैक्षिक तकनीक अच्छी शिक्षण प्रक्रिया के लिए आवश्यक अंग है।

4.6.1 शिक्षण विधि और शिक्षण तकनीको में अंतर

शिक्षण विधि और शिक्षण तकनीक आपस में घनिष्टता से जुड़े हुए हैं।शिक्षण तकनीक शिक्षण विधि के संकल्पनाओं से उत्पन्न हुई शिक्षण विधि है।

शिक्षण विधि

- शिक्षण विधियॉ सिद्धांतों व दृष्टिकोणों पर ध्यान केन्द्रित करती हैं जिनका उपयोग शिक्षार्थी तक विषय–वस्तु पहुँचाने में किया जाता है।
- शिक्षण विधियॉ का अभिप्राय विभिन्न पद्वतियों,टू का अभिप्राय विभिन्न पद्वतियों,टूल्स और समुचित उपकरणों से है जिससे शिक्षार्थियों के शैक्षिक लक्ष्य तक पहॅुचा जा सकें। यह शिखा सिद्वांतों पर आधारित होता है।

शिक्षण तकनीक

- शिक्षण तकनीक उन दृष्टिकोणों पर ध्यान केन्द्रित करती हैं जिनका उपयोग शिक्षकों द्वारा लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है।
- शिक्षण तकनीक का अभिप्राय सामग्रियों का सेट, उपकरण एवं शैक्षिक अभिवृत्ति के समावेशन से है जिसका प्रयोग शिक्षक शैक्षिक प्रक्रिया में बेहतर शिक्षण के लिए करता है।

4.7 कक्षा–कक्ष में प्रभावी शिक्षण तकनीकों का प्रयोग

यह बहुत ही आवश्यक है कि शिक्षण तकनीकों को काफी सोच समझ कर शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए प्रयोग किया जाये। यद्यपि तो प्रत्येक तकनीकों का अपना महत्त्व है किन्तु, शिक्षार्थी एवं विषय–वास्तु के अनुसार इनका चयन किया जाना चाहिए। समुचित तकनीकों के चयन के लिए निम्नलिखित बिन्दुओं का अवश्य ध्यान रखा जाना चाहिए:–

- शिक्षार्थी प्रतिभाग
- प्रतिबिम्ब हेतु अवसर का निर्माण
- पूछताछ आधारित अधिगम को शामिल करना
- कक्षा–कक्ष में मल्टीमीडिया का प्रयोग
- कक्षा–कक्ष में शिक्षण कार्य में विविधता
- सभी को अपनी बात कहने की स्वतंत्रता (शिक्षार्थी एवं अभिभावक)
- सेमिनार एवं कार्यशाला का आयोजन

4.8 आधुनिक शिक्षण तकनीकों में शामिल माध्यम

- **शिक्षण विधि से सम्बद्ध तकनीक**

क– विचार–मंथन (Brain&Storming)–

यह एक समूह रचनात्मकता तकनीकी है, जिससे एक बड़ी संख्या में विचारों को उनके समाधान के साथ लाया जाता है। यह शिक्षार्थियों को एक दूसरे के विचारों को जानने एवं परस्पर सहयोग के लिए प्रेरित करते हैं।

ख– सूक्ष्म शिक्षण तकनीक (Micro Teaching Technique)–

एक शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह विभिन्न शिक्षण कौशलों का अभ्यास करे। यह उन्हें एक बेहतर और प्रभावी शिक्षण में सहयोग प्रदान करेगा। एलन एवं रयान (AllenandRyan) ने (1966) में 20 शिक्षण कौशलों के बारे में बताया था. हालाँकि अब यह बढ़ कर 37 हो चुका है। किसी भी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में इन सभी शैक्षिक कौशलों में प्रशिक्षित करना संभव नहीं है। इस कारण कुछ अति उपयोगी कौशलों की एक सूची बनाई गयी है जो प्रत्येक शिक्षकों के लिए बहुत ही प्रभावी साबित हुए हैं :–

- प्रश्न पूछने एवं उसके तह में जाने का कौशल
- व्याख्या करने का कौशल
- उदाहरणों के साथ उद्धृत करने का कौशल
- सुदृढ़िकरण का कौशल
- उद्दीपन विविधता का कौशल
- कक्षा–कक्ष प्रबंधन का कौशल
- श्यामपट्ट प्रयोग का कौशल

ग– कार्यक्रमबद्ध अधिगम (Programmed Learning)– यह अनुसन्धान–आधारित प्रणाली है जो शिक्षार्थियों को सफलतापूर्वक कार्य करने में सहायक होता है। अधिगम सामग्री में पाठ्य पुस्तक , शिक्षण मशीन या संगणक कुछ भी हो सकता है।

घ– पूछताछ आधारित अधिगम (Inquiry&Based Learning)– इसमें स्थापित तथ्यों एवं ज्ञान के आसान रस्ते की ज़गह समस्या, प्रश्न या परिस्थिति सामने रख कर अधिगम प्रकिया की शुरुआत की जाती है। यह प्रक्रिया चिंतन–कौशल के विकास एवं अभ्यास से सैद्धांतिक तौर पर करीबी रूप से जुड़ा है।

ङ.– मस्तिष्क आलेख्य (Mind Map)– टोनी बुज़ान (TonyBuzan) के द्वारा 1960 में विकसित यह अभिनव तकनीक अधिगम एवं शिक्षण तकनीकी के रूप में प्रयोग किया जाता है। मस्तिष्क आलेख्य संकल्पनाओं एवं विचारों को दृश्य माध्यम से दृष्टान्त देता है। यह बेहतर अधिगम एवं प्रभावी उपलब्धि में सहायक होता है।

च– सहायक अधिगम (Cooperative Learning)– विभिन्न बौद्धिक स्तरों के शिक्षार्थियों के छोटे समूह के साथ प्रयुक्त एक बेहद प्रभावी तकनीकी है, जिसमें किसी विषय की समझ के लिए विभिन्न प्रकार के अधिगम क्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।

झ– नाट्य रूपांतर (Dramatization)– इस तकनीक के माध्यम से शिक्षार्थियों को विभिन्न परिस्थितियों में रहते हुए बर्ताव का शिक्षण प्रदान ाकिया जात हैं। इसके माध्यम से शिक्षार्थियों की रचनात्मकता का विकास होता है। इसके कुछ उदहारण हैं:–

- अनौपचारिक अभिनय
- रोल प्ले
- औपचारिक अभिनय
- कठपुतली
- मूक अभिनय
- उँगलियों का खेल

आधुनिक शिक्षण तकनीकों में शामिल साधन

ज– श्रव्य उपकरण (Audio Aids)–

- स्वर विज्ञान (Phonetics), उच्चारण (Pronunciation) एवं मौखिक भाषा सिखाने में प्रभावी होते हैं.। कैसेट, रिकॉर्डर इसके उदाहण हैं।
- दृश्य उपकरण (Visual Aids)– पारंपरिक दृश्य एड्स (चार्ट, चित्र, मॉडल आदि) के साथ अन्य आधुनिक एड्स जैसे चित्र–स्लाइड्स, चल–चित्र, ई–पुस्तक आदि का प्रयोग दृश्य उपकरणों के तौर पर किया जा रहा है।
- श्रव्य सह दृश्य उपकरण (Audio&visual Aids)– आजकल इसकी प्रासंगिकता काफी बढ़ गयी है एवं बड़े शैक्षिक संस्थाओं में अलग से श्रव्य सह दृश्य लैब बनाये गए हैं। शिक्षार्थी संगणक आधारित अधिगम जैसे पॉवर पॉइंट प्रदर्शन में काफी रूचि लेते हैं। परियोजना आधारित अधिगम के संपादन में शिक्षार्थियों के अन्दर टीम–भावना का विकास होता है।
- इंटरैक्टिव इलेक्ट्रॉनिक श्वेत पट्ट (Interactive Electronic White Board)– यह एक अत्याधुनिक माध्यम है, जिसके द्वारा शिक्षार्थी बड़े ही आसानी से विभिन्न शैक्षिक संकल्पनाओं को सीख सकते हैं। समस्त श्वेत पट्ट Touch Screen की तरह कार्य करता है। दरअसल डिजिटल प्रोजेक्टर के माध्यम से यह जुड़ा होता है, जो श्वेत पट्ट के संगणक को अध्ययन सामग्री भेजता है।
- एम्–लर्निंग (M-Learning)– इस तकनीक में अधिगम, विभिन्न सन्दर्भों में सामाजिक एवं प्रकरण परस्पर–क्रिया के माध्यम से उत्पन्न होता है।यह कहीं भी कभी भी प्रयोग करने में बहुत आसान है। इनमें छोटे संगणक, लैपटॉप, टेबलेट, MP3 प्लेयर, नोटबुक, मोबाइल फ़ोन आदि शामिल हैं।
- ई–लर्निंग (E-Learning)– इलेक्ट्रॉनिक माध्यम निर्देशात्मक प्रकरण या अधिगम अनुभवों प्रस्तुत किया जा सकता है। ई–व्याख्यान,ई–चर्चा, ई–निगरानी, ई– ट्यूटोरिअल, आदि इसमें शामिल हैं।

4.8.1 शिक्षण तकनीको के लाभ

शिक्षण तकनीक के निम्न लाभ हैः–

- अधिगम प्रक्रिया को सुगम, सहज एवं प्रभावी बनाता है।
- आधुनिक तकनीकों के माध्यम से कहीं भी, कभी भी अधिगम संभव है।

- गुणात्मक डाटा का अन्वेषण एवं समीक्षा करना।
- पूछताछ अधिगम आदत का विकास।
- शिक्षक द्वारा सीखने की ज़गह शिक्षक के साथ सीखना।
- सही उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सही सूचना को सही समय पर एवं सही स्थान पर प्रयोग करना।
- अपनी रफ़्तार और समय के अनुसार स्वाध्याय आदत का विकास।
- सहयोगी एवं सहयोगात्मक अधिगम के लिए समूह में कार्य करने की भावना का विकास।
- वास्तविक परिस्थिति में अपनी क्षमता एवं कॉशलों का प्रयोग।

बोध प्रश्न :—

नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न 7उँगलियों का खेल किस तकनीक में सम्मिलित है?

(क) विभेदित निर्देश, (ख) श्रृंगार (ग) नाट्य प्रस्तुति (घ) सहायक अधिगम

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

प्रश्न 8 मष्तिष्क आलेख्य किसके द्वारा विकसित किया गया ?

(क) वांग

(ख) सांडर्स

(ग) कार्ल जंग

(घ) टोनी बुज़ान

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

प्रश्न 9 कक्षा—कक्ष प्रबंधन किस तकनीक में शामिल है?

(क) कक्षा—कक्ष चर्चा (ख) विचार—मंथन (ग) व्याख्यान

(घ) उपरोक्त सभी

———————————————————————————————————————

———————————————————————————————————————

—————

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से कौन सा आधुनिक शिक्षण तकनीक के अंतर्गत आता है?

(क) एम्—लर्निंग

(ख) इंटरैक्टिव इलेक्ट्रॉनिक श्वेत पट्ट

(ग) दृश्य सहायक उपकरण

(घ) उपरोक्तसभी

———————————————————————————————————————

4.9 इकाई सारांश

शिक्षण कार्य एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं अद्वितीय कार्य है। प्रत्येक शिक्षार्थी अपने आप में अलग होता है। उनके अधिगम की क्षमता एवं रफ़्तार भी अलग–अलग होती है। प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए एक विधि एवं तकनीक प्रयोग में नहीं लाई जा सकती है। एक अच्छे शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने शिक्षार्थियों की क्षमता को ध्यान में रख कर अपनी शिक्षण रणनीतियाँ बनाये. एक शिक्षक के पास कई विधियों का तकनीकों का विकल्प होता है। शिक्षण विधियाँ शैक्षिक मनोविज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों पर आधारित है जो हमने यह बताता है, कि अमुक परिस्थिति में किस विधि का प्रयोग उचित है। शिक्षण विधियाँ का अभिप्राय विभिन्न पद्धतियों, टूल्स और समुचित उपकरणों से है जिससे शिक्षार्थियों के शैक्षिक लक्ष्य तक पहुंचा जा सके। यह शिक्षा सिद्धांतों पर आधारित होता है। वहीं शिक्षण तकनीक उन दृष्टिकोणों पर ध्यान केन्द्रित करती हैं ,जिनका उपयोग शिक्षकों द्वारा लक्ष्यों एवं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है।

बोध प्रश्न (क)

उत्तर 1: होवार्ड गार्डनर ने बहु–बुद्धिमत्ता सिद्धांतका प्रतिपादन किया था

उत्तर 2.व्याख्यान विधि परंपरागत रूप से प्रयुक्त एक प्रमुख प्राथमिक विधि है जो आज भी काफी प्रयुक्त विधि है।यह विधि संस्थानों के लिए बड़े कक्षा–कक्षों में प्रयुक्त एक सामान्य विधि है सहज एवं कम खर्चीला है। काफी बड़े समूहों के लिए यह एक सहज विधि है। पाठ्य–योजना के अनुसार एक बड़े समूह को सूचनाओं को देने के लिए यह विधि एक आसान एवं किफ़ायती है। यह विधि अनुदेशक या शिक्षक को बिना किसी उपलब्ध सामग्री के विद्यार्थियों को पढ़ने की आज़ादी देता है किन्तु इस क्रम में विद्यार्थी एक निष्क्रिय भूमिका में होते हैं। जिसके कारण उनके सीखने की क्रिया बाधित होती है। यद्यपि यह विधि एक बड़े समूह सम्प्रेषण को बढ़ता है, तथापि अध्यापक को चाहिए कि वह लगातार विद्यार्थियों की समस्याओं को समझे और उनसे निरंतर मौखिक प्रतिक्रिया लेते रहे। यह विधि किसी विषय में रुचि उत्पन्न एवं बरक़रार रखने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। यदि अनुदेशक / शिक्षक प्रभावी लेखन एवं वाक् कौशल में सिद्धहस्त है। यह विधि अन्य शिक्षार्थियों के लिए तो उपयोग किया जा सकता है, किन्तु, श्रवण दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए यह उपयुक्त विधि नहीं है।हालाँकि ,संकेत भाषा के माध्यम से इस कमी को पूरा किया जा सकता है।

उत्तर 3: प्रभावी, स्थायी एवं सुदृढ़ शिक्षण कार्य के लिए इनका ज्ञान आवश्यक है.

उत्तर 4: कम समय में अधिक लोगों तक सूचनाओं को पहुँचाया जा सकता है.

- मूल उपकरणों एवं सुविधाओं (संगणक/टेबलेट एवं इन्टरनेट) के साथ शिक्षा बहुत ही सहजता एवं सुगम्यता के साथ प्राप्त की जा सकती है।
- विशेष योग्यता वाले शिक्षार्थियों के लिए यह बहुत ही सुविधाजनक माध्यम है।
- दूरस्थ स्थानों में भी इसके माध्यम से शिक्षा एवं सूचना का पचार–प्रसार संभव है।
- विभिन्न विशेषज्ञों से चर्चा एवं अध्ययन संभव है.

उत्तर 5: शिक्षार्थियों की समझ को बढ़ता है

- अकादमिक अन्तर्निहित वस्तु में सन्दर्भ जोड़ता है।
- शिक्षार्थियों के परिप्रेक्ष्य को बढ़ता है।
- विरोधी दृष्टिकोण को प्रमुखता से प्रदर्शित करता है।
- ज्ञान को मजबूती प्रदान करता है।
- आत्मविश्वास में वृद्धि करता है।
- समुदाय में अधिगम को सहयोग देता है।

उत्तर 6: गतिज़ अधिगम संचलन के माध्यम से अधिगम की एक अवधारणा है। शिक्षक कक्षा–कक्ष में इधर–उधर चलते हुए हस्त हाव–भाव करते हुए शिक्षार्थियों को दृश्य एवं गतिज़ रूप से संलग्न रखते हैं। शिक्षार्थियों को भी घूमते हुए विभिन्न शारीरिक क्रियाओं के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, ताकि वो अपने रचनात्मकता का प्रदर्शन कर सकें।

उत्तर 7: . (ग) उत्तर 8: (घ) उत्तर 9: (क) उत्तर 10: (घ)

4.11 अभ्यास कार्य

प्रश्न 1. शिक्षण विधि एवं शिक्षण तकनीक से आप क्या समझते हैं ? विवेचना किजिए।

प्रश्न 2. आधुनिक शिक्षण तकनीकों की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 3. शिक्षण विधि एवं शिक्षण तकनीक की उपयोगिता पर प्रकाश डालें। इनके अंतरों को स्पष्ट किजिए।

4.12 चर्चा के बिंदु/स्पष्टीकरण

- शिक्षण विधियों एवं तकनीकों की उपयोगिता पर संगोष्ठी का आयोजन करें.
- परंपरागत एवं आधुनिक तकनीकों की तुलना करें.

4.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Zaidi S- F- ¼2013½ ICT in Education] APH Publishing Corporation] New Delhi
- Nagarajan K-] Natrajan S- and Manivasagan C- R- ¼2013½] Educational Innovations & Curriculum Development] Sriram Publishers] New Delhi.
- Mishra] P- & Khan S- A- ¼2020½(Prajna& A compendium in Disability Rehabilitation (Kanishka Publishers] New Delhi
- https%@@teach-com@what@teachers&know@teaching&methods@
- https%@@www-indeed-com @ career &advice @career&development @teaching &methods@
- https%@@en-wikipedia-org@wiki@Teaching&method
- https%@@goconqr-com@en@eÛamtime@blog@teaching&techniques@
- https%@@www-researchgate-net@publication@331071559&Modern&Teaching&Techniques&in&Education

इकाई–5 ब्रेल शिक्षण एवं शिक्षण विधियाँ

इकाई संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 ब्रेल लिपि का परिचय

5.4 ब्रेल लेखन के उपकरण

5.5 ब्रेल सीखने–सिखाने से पूर्व की क्रियाएँ

5.6 ब्रेल पठन

5.6.1 ब्रेल पठन शिक्षण

5.7 ब्रेल लेखन

5.7.1 ब्रेल लेखन शिक्षण

5.8 ब्रेल शिक्षण की विधियाँ

5.9 सारांश

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.11 अभ्यास कार्य

5.12 चर्चा के बिन्दु

5.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

समान्यतः एक दृष्टिवान व्यक्ति अपने ज्ञान एवं सूचनाओं का लगभग 80% से 90% अपनी दृश्य ज्ञानेंद्रि के माध्यम से प्राप्त करता है। परंतु दृष्टि के अभाव में दृष्टिदिव्यांग, दृष्टि से प्राप्त होने वाले सभी सूचनाओं तथा अनुभवों से वंचित हो जाता है। अतः दृष्टि दिव्यांगजन बच्चे एवं व्यक्ति शिक्षण कार्यों को पूर्ण करने के लिए अपनी दूसरी ज्ञानेंद्रियों मुख्यतः स्पर्श तथा श्रवण पर निर्भर हो जाते हैं। वर्तमान समय में दृष्टि दिव्यांजनों हेतु अनेक ऐसे माध्यम एवं उपकरण हैं जिनके माध्यम से वे अपनी शिक्षा–दीक्षा एवं अन्य ज्ञानार्जन के कार्य करते हैं। इनमें से ब्रेल सबसे महत्वपूर्ण माध्यम है। ब्रेल एक लिपि है जिसका विकास 19वीं शताब्दी में लुई ब्रेल (1809–1852) द्वारा किया गया। ब्रेल लिपि स्पर्श के माध्यम से पढ़ी जाने वाली एक लिपि है। जिसका विकास दृष्टि दिव्यांगजनों के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। वर्तमान में ब्रेल का उपयोग दृष्टि दिव्यांगजनों द्वारा बहुतायत में किया जाता है। प्रस्तुत इकाई में हम ब्रेल पठन–लेखन से पूर्व की तैयारियां, विधियाँ ब्रेल शिक्षण प्रक्रिया के विषय में पढ़ेंगे।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप समझ सकेंगेः–

- विद्यार्थी ब्रेल शिक्षण के विषय में जान सकेंगे।
- विद्यार्थी हिन्दी–अंग्रेजी ब्रेल के लेखन–पठन की विधियों को समझ सकेंगे तथा कक्षा में उनका अनुप्रयोग कर सकेंगे।
- ब्रेल लेखन में उपयोग होने वाले उपकरणों के विषय में जान सकेंगे।
- ब्रेल सीखने–सिखने से पूर्व की दक्षताओं के विषय में जान सकेंगे।

- ब्रेल सीखने–सिखाने से संबन्धित आवश्यक बिन्दुओं को जान सकेंगे।

5.3 ब्रेल लिपि का परिचय

ब्रेल एक 6 उभरी हुई बिंदुओ से निर्मित लिपि है। जिससे किसी भी भाषा में लेखन–पठन कार्य किया जा सकता है। ब्रेल लिपि उभरे हुए बिन्दुओं पर आधारित होने पर दृष्टिदिव्यांग व्यक्तियों के लिए उपयुक्त हो जाती है। प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत ब्रेल लिपि दृष्टि दिव्यांगजनों द्वारा स्पर्श के माध्यम से पढ़ने–लिखने में प्रयोग की जाने वाली एक लिपि है। जिसका विकास 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक दशकों में फ्रांस में हुआ। ब्रेल का विकास लुई ब्रेल ने किया। लुई ब्रेल स्वयं भी एक दृष्टि दिव्यांग थे। 6 बिन्दुओं वाली इस ब्रेल लिपि में क्रमसंचय संयोजन (permutation combinations) के आधार पर 7 पंक्तियों में 63 संयोजन बनते हैं, जिनसे अनेक भाषाओं के सभी अक्षर लिखे जा सकते हैं। दृष्टिबाधित व्यक्ति स्पर्श के माध्यम से ही अपना पढ़ने एवं लिखने से संबंधित कार्य कर पाते हैं अतः ब्रेल एक स्पर्श लिपि के रूप में दृष्टिदिव्यांगजनों हेतु सर्वदा ही उपयुक्त है। अंग्रेजी भाषा में ब्रेल लेखन के लिए अनेक संक्षिप्त रूपों (contractions) का भी उपयोग किया जाता है जबकि हिन्दी ब्रेल लेखन में वर्तमान में संक्षिप्त रूपों का उपयोग बहुत कम होता है। संक्षिप्त रूपों का उपयोग करने से लेखन कार्य करने में समय तथा स्थान की भी बचत होती है।

5.4 ब्रेल लेखन के उपकरण

ब्रेल एक लिपि है तथा इसके माध्यम से अनेक भाषाओं को लिखा जा सकता है एवं सभी भाषाओं के लिये ब्रेल लेखन की प्रक्रिया समान रहती है। व्यक्तिगत उपयोग हेतु ब्रेल लेखन के लिए विशेष उपकरण उपयोग में लाये जाते है। प्रारंभ में ब्रेल लिखने हेतु लकड़ी की एक स्लेट, गाइड तथा स्टाइलस का प्रयोग किया जाता था। स्लेट से ब्रेल लिखने में लगने वाले समय और श्रम को कम करने के लिए 1893 में फ्रैंक एच. हॉल ने अमेरिका में एक यांत्रिक ब्रेलराइटर (ब्रेलर) का आविष्कार किया जो ब्रेल लिखने के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। इसके बाद ब्रेल लिखने के ऐसे यांत्रिक उपकरणों के कई अन्य मॉडल सामने आए। पर्किन्स ब्रेल राइटर इनमें सर्वाधिक प्रचलित है। ब्रेलर की सहायता से एक समय में एक से अधिक बिंदुओं को उभारा जा सकता है जबकि ब्रेल स्लेट (लकड़ी/प्लास्टिक) की सहायता से एक समय में केवल एक ही बिंदु उभारा जा सकता है। ब्रेल स्लेट पर जहां एक ओर ब्रेल लिखने के साथ–साथ उसे पढ़ना संभव नहीं होता, वहीं ब्रेलर पर लिखते समय ब्रेल के उभरे बिंदुओं को पढ़ना भी संभव हो जाता है। समय की गति के साथ–साथ ब्रेलर के स्वरूप में भी सुधार हुआ जो आज स्मार्ट ब्रेलर के रूप में अधिक सुविधाओं के साथ प्रयोग में लाया जा रहा है। यह ब्रेलर उन्नत प्रौद्योगिकी से परिपूर्ण है तथा एक ही समय में दृश्य, श्रव्य तथा स्पर्श आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ है। इस उपकरण में ब्रेल पेपर पर ब्रेल लिखने के साथ–साथ इस पर लगी स्क्रीन पर तत्क्षण लिखे हुए अक्षर/शब्द को प्रिंट के रूप में रोमन लिपि में पढ़ा भी जा सकता है। साथ ही यह लिखे हुए शब्द/अक्षर को बोलकर भी बताता है।

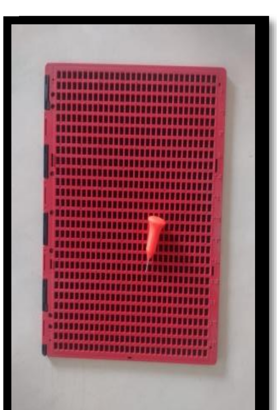

(ब्रेलस्लेट)

(ब्रेलर)

स्मार्टब्रेलर

5.5 ब्रेल सीखने–सिखाने से पूर्व के कौशल

शिक्षक को चाहिए कि ब्रेल पठन के लिए स्पर्श शक्ति के महत्व को समझते हुए इसको विकसित करने के उद्देश्य से कक्षा में निम्नलिखित गतिविधियों पर ध्यान दें–

- विभिन्न प्रकार के स्पर्श (खुरदरा–चिकना, मुलायम– सख्त, कपड़ों और धागे के विभिन्न प्रकार इत्यादि) से विद्यार्थी को अवगत करना।
- विभिन्न आकार की वस्तुओं के संग्रह में से एक जैसी चीजों को अलग करना।
- माला में मोती पिरोना।
- दाल, चावल, चीनी, जीरा इत्यादि को अलग करना।
- विद्यार्थियों हेतु क्ले से संबन्धित गतिविधियों का आयोजन करना।
- विभिन्न लंबाई की नाप वाली स्पर्शीय पंक्तियों में से छोटी–बड़ी पंक्ति को बताना।
- अनेक ब्रेल लिखित या स्पर्शीय पंक्तियों का अनुकरण करना।
- ब्रेल बिन्दुओं को किसी प्रकार बड़े आकार में प्रस्तुत कर ब्रेल बिन्दुओं की अवधारणा का विकसित करना।
- समान आकार वाली विभिन्न स्पर्शीय वस्तुओं में अंतर खोजना।
- विद्यार्थी के फ़ाइन मोटर कौशल को विकसित करने के लिए प्रयास करना।
- पुस्तक को सीधा पकड़ना।
- पुस्तकों के पृष्ठ पलटना सीखाना।
- ऊपर–नीचे, आगे–पीछे के अंतर से अवगत करना।
- ब्रेल लेखन के उपकारणों के विषय में बताना तथा विद्यार्थियों को स्पर्श कर समझने हेतु देना।
- ब्रेल बिन्दुओं के अलग–अलग संयोजन बनाकर विद्यार्थियों को स्पर्श करने के लिए देना।

5.6 ब्रेल पठन

ब्रेल लिपि स्पर्श के माध्यम से वायीं से दायीं ओर ही पढ़ी जाने वाली एक लिपि है जिसके लिए विद्यार्थियों की स्पर्श ज्ञानेंद्रि का प्रशिक्षण अनिवार्य है। स्पर्श शक्ति के सही कार्य करने पर ही विद्यार्थी सही से ब्रेल पठन कर पाने में सक्षम हो पाते हैं। इसलिए उनकी स्पर्श शक्ति को विकसित करने के लिए अनेक संबन्धित क्रियाएँ करवाई जानी चाहिए जिससे वे ब्रेल के बिन्दुओं को स्पर्श के माध्यम से महसूस कर सकें।

5.6.1 ब्रेल पठन शिक्षण

ब्रेल पढ़ना सिखाने के लिए शिक्षक को अपनी रचनात्मकता का उपयोग कर ब्रेल पठन को अधिक से अधिक रुचिपुर्ण बनाने का प्रयास करना चाहिए ताकि ब्रेल पठन की यह क्रिया बच्चों के लिए बोझिल न हों। ब्रेल पठन की प्रक्रिया में पहले बिन्दुओं की संख्या, बिन्दुओं की स्थिति, कोष्ठक (बमसस) की चौड़ाई तथा दो कोष्ठकों के बीच के अंतर का ज्ञान तथा पढ़ने के सही तरीके के बारे में बताया जाना चाहिए। कागज के छोटे–छोटे टुकड़ों (फ्लेश कार्ड) पर अनेक ब्रेल बिन्दु उभारकर बच्चों को समान बिन्दुओं वाले काड्र्स के जोड़े बनाने को दिये जा सकते हैं। बिन्दुओं की संख्या व स्थिति जानने के बाद विद्यार्थी को शब्दों में अक्षरों को (फ्लेश काड्र्स) स्पर्श कर पहचानने के अवसर देने चाहिए। जितना संभव हो सके विद्यार्थियों के परिचित शब्दों को प्रस्तुत करें जैसेरू फलों के नाम, जानवरों के नाम, घर के सदस्यों के नाम इत्यादि। साथ ही शिक्षक को स्वयं पढ़कर विद्यार्थियों को स्पर्श करते हुए शब्दों को बोल कर दोहराने को कहना चाहिए। जब विद्यार्थी छोटे–छोटे शब्दों को पढ़ना शुरू

कर दें तो उसके उपरांत उन्हें कहानी इत्यादि रुचिकर पुस्तक से ब्रेल पठन का अभ्यास करवाना चाहिए। ब्रेल पठन करवाते समय शिक्षक को निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिएः–

- पुस्तक या पाठ्य सामग्री को सीधा पकड़ना सीखना।
- पृष्ठ पलटना सीखाना।
- विद्यार्थी आराम से खड़ा या बैठा हो तथा पढ़ने की सामग्री रखने की जगह उपयुक्त हो।
- शिक्षक को डेस्क या मेज के दूसरी ओर अर्थात सामने खड़े होना चाहिए ताकि विद्यार्थियों की उँगलियों की स्थिति को देख उनको निर्देश या सहायता दे सके।
- पढ़ने की सामग्री या पुस्तक समतल जगह पर रखी होनी चाहिए।
- प्रारम्भ में शिक्षक को यह सीखना चाहिए कि किस प्रकार उँगलियाँ धीरे–धीरे वाएं से दायें ओर ले जानी है।
- विद्यार्थी को दोनों हाथों की तर्जनी उंगली का उपयोग साथ–साथ करने हेतु प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- वाएं हाथ की तर्जनी उंगली को आधी पंक्ति तक साथ जाने तथा उसके बाद अगली पंक्ति के प्रारम्भ में ले जाने का अभ्यास करवाएँ।
- विद्यार्थी को दोनों हाथों का उपयोग तब तक करने को बोलते रहें जब तक यह स्वाभाविक आदत न जाए।
- शुरुआती दौर में परिचित शब्दों से छोटी–छोटी कहानियाँ बनाकर विद्यार्थियों को पढ़ने के लिए दी जानी चाहिए।

बोध प्रश्नः–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न1ः– प्रश्न1. ब्रेल लिपि का विकास किसने किया?

(क) लुई पाश्चर, (ख) साइमंड ब्रेल, (ग) लुई ब्रेल,(घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

....

....

प्रश्न 2. ब्रेल लिपि में बिन्दुओं के विभिन्न कितने संयोजन बनते हैं?

(क) 60 (ख) 63 (ग) 66 (घ) 70

....

....

प्रश्न 3. ब्रेल यांत्रिक टाइपराइटर का आविष्कार कब हुआ?

(क) 1880 (ख) 1883 (ग) 1893 (घ) 1896

....

....

प्रश्न 4. ब्रेल लेखन का परंपरागत उपकरण कौन सा है?

(क)ब्रेल स्लेट,गाइड और स्टाइलस (ख) ब्रेलर (ग) स्मार्टब्रेलर (घ)उपरोक्त में से कोई नहीं

....

....

प्रश्न 5. ब्रेल के एक प्रकोष्ठ (cell) में कितने बिन्दु होते हैं?

(क) 5 (ख) 6 (ग) 7 (घ) 10

....

....

5.7 ब्रेल लेखन

ब्रेल लेखन का प्रशिक्षण पूर्व में प्राप्त ब्रेल पठन के अनुभव पर आधारित होता है। साथ ही विद्यार्थियों को यह भी समझाना आवश्यक हो जाता है कि ब्रेल लेखन तथा पठन mirror image पर आधारित होता है अर्थात जिस ओर से लिखा जाता है उसके अभरे हुए बिन्दु कागज के दूसरी ओर उभरते हैं अतः उनको लिखने के विपरीत पढ़ा जाता है। दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लेखन शिक्षण शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि लेखन कार्य किस अवस्था में शुरू करवाया जाए? लेखन के लिए कौन से उपकरण उपयोग में लाये जाए? तथा लेखन सीखने की प्रक्रिया क्या हों? लेखन शिक्षण बच्चे के ब्रेल पठन आरंभ करने के उपरांत ही शुरू किया जाना चाहिए। यह विद्यालय प्रवेश के दूसरे या तीसरे वर्ष में आरंभ करवाया जाना चाहिए (मित्तल 2011)। निझावन (2004) ने भी ब्रेल शिक्षण आरंभ करने की आयु 7–8 वर्ष मानी है। ब्रेल लेखन शिक्षण कार्य के लिए विद्यार्थी कि क्षमता, रुचि तथा मांसपेशीय परिपक्वता को ध्यान में रखा जाना चाहिए। लेखन के उपकरणों के चुनाव सावधानी से किए जाने कि आवश्यकता है। शुरुआती दौर में बच्चों को अक्सर ब्रेल स्लेट, स्टाइलस तथा गाइड कि सहायता से ब्रेल लेखन करवाया जाता है किन्तु वर्तमान में पार्किंस ब्रेलर तथा स्मार्ट ब्रेलर लेखन हेतु अधिक सुगम है क्योंकि इनके उपयोग के लिए मांसपेशीय क्षमता की आवश्यकता तुलनात्मक रूप से कम होती है। इनकी कीमत अधिक होने के कारण सभी विद्यार्थियों हेतु इन्हें उपलब्ध करना संभव नहीं हो पाता। इसके अलावा ब्रेल स्लेट, गाइड तथा स्टाइलस एक ओर जहां कम कीमत व आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं वहीं इन्हें अपने साथ रखना, लाना ले जाना भी आसान होता है।

5.7.1 ब्रेल लेखन शिक्षण

ब्रेल स्लेट की सहायता से ब्रेल लेखन शिक्षण करने के लिए कुछ बिन्दुओं को ध्यान में रखने की आवशयकता होती है जो निम्नलिखित हैः–

1. इंटर लाइन, इंटर प्वाइंट स्लेट तथा ब्रेलर के बारे में जानकारी देना।
2. विद्यार्थियों को लेखन उपकरणों के विभिन्न हिस्सों से परिचित कराना।
3. ब्रेल स्लेट, स्टाइलस तथा गाइड को सही से व्यवस्थित करना।
4. ब्रेल स्लेट पर कागज लगाने का अभ्यास करवाना।
5. शुरुआती दौर में इंटर लाइन स्लेट का ही उपयोग करवाना चाहिए।
6. ब्रेल लेखन से संबन्धित किसी भी कार्य को करवाने के लिए विद्यार्थियों को एक बार हाथ पकड़कर करवाएँ तथा उसके बाद निर्देश देते हुए उन्हें स्वयं करने दें।
7. आरंभ में Hand over hand विधि का उपयोग करें अर्थात स्वयं ब्रेल लिखें तथा बच्चे का हाथ अपने हाथ के ऊपर रखकर विद्यार्थी को समझने/महसूस करने का अवसर दें।
8. कागज की दूसरी ओर उभारे गए बिन्दुओं को विघार्थी को स्पर्श करने का अवसर दें।
11. यह समझाएँ कि स्लेट से ब्रेल लेखन दायें से वाएँ किया जाता है जबकि बिन्दु कागज की दूसरी ओर उभरते हैं अतः पढ़ते समय वाएँ से दायें पढ़ा जाता है।
10. ब्रेल प्रकोष्ठ में सभी छः बिन्दुओं की स्थिति तथा क्रम से अवगत करना तथा सभी छः

बिन्दुओं को उभारने का प्रयास करवाना।

11. बिन्दु उभारते समय होने वाली आवाज पर ध्यान देने को कहना।
12. विद्यार्थी द्वारा बिन्दुओं को पृष्ठ पर अच्छी तरह उभारने के बाद उसे अक्षर और शब्द लिखने का अभ्यास करवाएँ और यह साधारण एवं पहचाने हुए शब्द लिखने से शुरू करवाना चाहिए।
13. शब्द लेखन प्रशिक्षण के बाद धीरे–धीरे साधारण और छोटे वाक्य लिखना सिखाए जाने चाहिए।
14. विराम चिन्हों के बारे में बताएं तथा उपयुक्त चिन्हों का उपयोग करने का अभ्यास करवाएँ।

5.8 ब्रेल पठन शिक्षण की विधियाँ

दृष्टि दिव्यांग एवं दृष्टिवान विद्यार्थियों के लिए लेखन तथा पठन की विधियाँ लगभग समान ही होती है। अंतर केवल ब्रेल लिपि का होता है। मित्तल (2011) ने ब्रेल लेखन तथा पठन की तीन विधियों का वर्णन किया है जिनके माध्यम से दृष्टि दिव्यां्ग बच्चों को ब्रेल शिक्षण करवाया जा सकता है। ये विधियाँ हैं; अक्षर विधि, शब्द विधि तथा वाक्य विधि। ब्रेल पठन तथा शिक्षण की तीनों विधियों का वर्णन आगे दिया जा रहा हैः–

1. **अक्षर विधि**– ब्रेल पठन–लेखन का कार्य ब्रेल सीखने से पूर्व की क्रियाओं के पर्याप्त अभ्यास के बाद करवाया जाता है। ब्रेल सीखने हेतु आवश्यक क्रियाओं को पूरा कर लेने के बाद विद्यार्थी की स्पर्श की ज्ञानेंद्रि ब्रेल पढ़ने हेतु पूरी तरह से तैयार हो जाती है। ब्रेल शिक्षण के लिए अक्षर विधि को पारंपरिक विधि माना जाता है। इस विधि में सबसे पहले सभी छः बिन्दु तथा उसके बाद अक्षरों की पहचान पर ज़ोर दिया जाता है। अक्षरों की पहचान के बाद उन्हें जोड़ कर शब्द बनाना सिखाया जाता है तथा शब्दों के मेल से वाक्य बनाना सिखाए जाते हैं।

2. **शब्द विधि**– ब्रेल शिक्षण की शब्द विधि अधिक वैज्ञानिक, आसान तथा रुचिकर मानी जाती है। इस विधि में शब्दों के माध्यम से पढ़ना सिखाया जाता है। प्रारम्भ में विद्यार्थी से सांबन्धित सभी वस्तुओं, खिलौने, आदि पर ब्रेल के लेबल लगा दिये जाते हैं तथा विद्यार्थी अपनी पसंद की वस्तु का नाम पढ़ने की कोशिश करता है जिसमें अध्यापक द्वारा उसकी मदद की जाती है। अनेक वस्तुओं और खिलौनों के नाम पढ़ लेने के बाद वह खेल–खेल में अक्षरों को पहचानने का प्रयास करता है । साथ ही विद्यार्थियों के समक्ष छोटे–छोटे अर्थपूर्ण शब्द प्रस्तुत किए जा सकते हैं तथा फिर उन शब्दों को अक्षरों में विभाजित करना भी सिखाया जा सकता है। जब बच्चे कुछ शब्द पढ़ना–लिखना सीख लेते हैं तब उन्हें शब्दों को जोड़ कर वाक्य पढ़ना–लिखना सिखाया जा सकता है।

3. **वाक्य विधि**– वाक्य विधि में शिक्षण छोटे–छोटे पूर्ण वाक्यों से शुरू किया जाता है। उसके पश्चात उन्हें शब्दों तथा फिर अक्षरों में विभक्त किया जाता है।

   उपरोक्त तीनों विधियों के विषय में पढ़ लेने के बाद यह प्रश्न स्वाभाविक है कि हमारे लिए कौन सी विधि सबसे उपयुक्त है? अधिकतर शिक्षक परंपरागत अक्षर विधि तथा शब्द विधि के संयोग को ही उपयुक्त मानते हैं (मित्तल 2011)। यहाँ यह बात समझ लेना अति आवश्यक है कि दृष्टि की तुलना में स्पर्श द्वारा जानने की शक्ति काफी कम है अर्थात जहां हम एक पूरा वाक्य एक नजर में देख सकते हैं वहीं स्पर्श के माध्यम से केवल जहां तक स्पर्श का दायरा है वहीं तक जान सकते हैं। अतः दृष्टिवान विद्यार्थी एक छोटे वाक्य के लगभग सभी शब्दों को एक नजर में समझ लेता है कि वाक्य में अनेक शब्द हैं जबकि दृष्टि दिव्याङ्ग बच्चे को ऐसा करने में तुलनात्मक ज्यादा समय लगता है। यही कारण है कि दृष्टि दिव्याङ्ग विद्यार्थियों के शिक्षकों को यह सलाह दी जाती है कि आरंभ से ही अक्षर तथा शब्द विधि के संयोग से विद्यार्थियों को ब्रेल का शिक्षण करवाया जाए।

बोध प्रश्न—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 6. ब्रेल लेखन सीखने—सिखाने के लिए उपयुक्त आयु क्या मनी गई है?

(क) 3 से 4 वर्ष (ख)4 से 5 वर्ष (ग)2 से 3 वर्ष (घ) 7 से 8 वर्ष

....

....

प्रश्न 7. ब्रेल शिक्षण की विधि कौन सी है?

(क) अक्षर विधि (ख) वाक्य विधि (ग) शब्द विधि (घ) उपरोक्त सभी

....

....

प्रश्न 8. ब्रेल लिपि पढ़ी जाती है?

(क) ऊपर से नीचे (ख) वाएं से दायें (ग) दायें से वाएं (घ)उपरोक्त में से कोईनहीं

....

....

5.9 सारांश

ब्रेल दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु उतना ही महत्व रखती है जितना दृष्टिवानों के लिए प्रिंट। विद्यालय प्रवेश के शुरुआती वर्षों में दृष्टि दिव्यांग बच्चों को अपनी दिवयांगता के प्रभावों की पूर्ति करने के लिए तथा अपने दृष्टिवान समकक्षों की तुलना में अपना औपचारिक अध्ययन प्रारम्भ करने के लिए अनेक क्रियाओं में दक्षता हासिल करनी होती है।जो उनके अध्ययन के लिए अति आवशयक होती है। इन सभी क्रियाओं को विस्तारित मूल पाठ्यचर्या के रूप में संकलित किया गया है जिनके नौ अंग है। इसमें ज्ञानेन्द्रिय प्रशिक्षण तथा प्रतिपूरक कौशल ब्रेल सीखने—सिखाने के लिए सहायक है। विस्तारित मूल पाठ्यचर्या का सही प्रशिक्षण होने के परिणामस्वरूप ब्रेल सीखना—सिखाना अपेक्षाकृत सरल हो जाता है। ब्रेल सीखने—सिखाने हेतु विद्यार्थी के लिए उनकी फ़ाइन मोटर का विकसित होना आवश्यक होता है जिसे ब्रेल लेखन—पठन पूर्व क्रियाओं के माध्यम से किया जा सकता है। ब्रेल शिक्षण करने के लिए ब्रेल लेखन से पूर्व ब्रेल पठन आरंभ करवाया जाना चाहिए। ब्रेल लेखन विद्यालय प्रवेश के दूसरे या तीसरे वर्ष शुरू किया जाना चाहिए। ब्रेल सीखने के उपरांत ही दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थी आसानी से अपने सहपाठियों के साथ पाठ्यक्रम को पूरा कर पाते हैं उनके साथ अकादमिक प्रतियोगिता करने में भी सक्षम हो पाते हैं। अतः शिक्षक को विद्यार्थी के विद्यालय प्रवेश होने के साथ ही विस्तारित मूल पाठ्यचर्या तथा ब्रेल शिक्षण पूर्व क्रियाओं का प्रशिक्षण आरभ कर देना चाहिए ताकि विद्यार्थी सही समय पर ब्रेल में पारंगत हो जाए अतः इसके लिए शिक्षक का क्रियाशील होना अति आवशयक है।

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 1. (ग)

उत्तर 2. (ख)

उत्तर 3. (ग)

उत्तर 4. (क)

उत्तर 5. (ख)

उत्तर 6. (घ)

उत्तर 7. (घ)

उत्तर 8. (ख)

5.11 अभ्यास कार्य

प्रश्न 1. ब्रेल लिपि के बारे में आप क्या जानते हैं?

प्रश्न 2. ब्रेल शिक्षण से पूर्व की क्रियाओं की आवश्यकता और महत्व के बारे में बताइये।

प्रश्न 3. ब्रेल पठन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को समझाइए।

5.12 चर्चा के बिन्दु

प्रश्न 01:–आप अपने सहपाठियों के साथ ब्रेल पठन सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को विकसित कीजिए।

5.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- NIVH. (2015). Drishti viklangta (adhyapkon hetu ek sansadhan pustak, Dehradun. India.
- AICB. (2004). Shikshak prashikshan lekhmala. Delhi, India.
- AICB. (2011). Drishti Badha Sikshan. Delhi, india.
- Kumar, P. & Das, H. (2022). Vistarit Mool Pathyacharya- NIEPVD. Dehradun, India.
- Mishra, V. (2017). Serve Shiksha Abhiyaan. Lucknow,UP. India.

इकाई– 6 दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु पढ़ने और लिखने के उपकरण

इकाई संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 अल्प दृष्टि दिव्यांगजनों हेतु उपकरण

6.3.1 प्रकाशीय उपकरण

6.3.2 अप्रकाशीय उपकरण

6.3.3 प्रक्षेपक उपकरण

6.3.4 कंप्यूटर आधारित उपकरण

6.4 दृष्टि दिव्यागजनों द्वारा ब्रेल का उपयोग

6.5 ब्रेल लेखन के उपकरण

6.5.1 इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट

6.5.2 इंटर लाइन ब्रेल स्लेट

6.5.3 पॉकेट फ्रेम

6.5.4 ब्रेलर और स्मार्ट ब्रेलर

6.6 ब्रेल मुद्रण तकनीकी

6.7 रेफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले (त्ठक)

6.8 स्क्रीन रीडिंग तकनीकी

6.9 इंस्टेंट रीडिंग तकनीकी

6.10 सारांश

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.12 अभ्यास प्रश्न

6.13 चर्चा के बिन्दु

6.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

दृष्टिबाधिता एक समावेशी संप्रत्यय हैं, जो दृष्टिहीनता तथा अल्प दृष्टि, दोनों परिस्थितियों को समाहित करता है। दृष्टिबाधित बच्चों के शिक्षा हेतु सहायक उपकरणों से सम्बंधित विशेष आवश्यकताएं होती है, जो कि एक व्यापक श्रेणी में होती हैं। दृष्टिहीनता से प्रभावित बच्चे या व्यक्ति ब्रेल या स्पर्शीय माध्यम से अपने समझ को विकसित करते हैं, जब कि अल्प–दृष्टि वाले बच्चे विभिन्न रंगों पर आधारित बड़े चित्रों की सहायता से शिक्षा प्राप्त करते है। अल्प–दृष्टि वाले बच्चे कई उपयुक्त साधनों द्वारा अपनी बची हुयी दृष्टि का अधिकतम उपयोग कर सकते हैं। किन्तु इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि कोई भी एक उपकरण या साधन सभी

अल्प–दृष्टि वाले बच्चों के लिए सटीक नहीं हो सकता। साथ ही, उस उपकरण या साधन के प्रति प्रशिक्षण की आवश्यकता भी इसके चुनाव को प्रभावित करती है।

प्रस्तुत इकाई में अल्प दृष्टि बच्चों के शिक्षार्थ उपकरणों के सन्दर्भ में भी चर्चा प्रस्तुत की गई है। इन उपकरणों को विभिन्न श्रेणियों (जैसे कि प्रकाशीय, अप्रकाशीय उपकरण) में वर्गीकृत कर के प्रस्तुत किया गया है। पूर्व में भी इस बात की चर्चा की गयी है कि दृष्टिबाधा विभिन्न दृष्टि आधारित परिस्थितियों की श्रृंखला है। दृ ष्टिबाधित व्यक्ति किसी भी श्रेणी का हो सकता है। यदि बच्चे दृष्टि का क्रियात्मक उपयोग नहीं कर पा रहें हैं या उनकी क्रियात्मक दृष्टि प्रिंट पढने हेतु प्रर्याप्त नहीं है तो इस प्रकार के प्रभावित बच्चों के लिए ब्रेल तथा स्पर्शीय आधारित सामग्री ही अर्थपूर्ण होंगी। इस इकाई में उभरे हुए पेपर संबंधी तकनीकी या स्पर्शीय ग्राफिक्स संबंधी विषयों पर भी चर्चा प्रस्तुत की गयी हैं। शिक्षकों को इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि कोई भी एक ही उपकरण या साधन सभी दृष्टिबाधित बच्चों के लिए उपयुक्त या प्रयाप्त नहीं हो सकता है।

6.2 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप–

- दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा पढ़ने–लिखने में उपयोग किए जाने वाले उपकरणों के बारे में जान सकेंगे।
- विभिन्न अल्प दृष्टि उपकरणों संबंधी जानकारी प्राप्त करें सकेंगे।
- प्रकाशीय, अप्रकाशीय तथा अन्य अल्प दृष्टि उपकरण में भेद को समझ सकेंगे।
- उभरे पेपर संबंधी तकनीकी से परिचित होंगे।

6.3 अल्प दृष्टि दिव्यांगजनों हेतु उपकरण

अल्प–दृष्टि वाले बच्चे कई उपयुक्त साधनों द्वारा अपनी बची हुयी दृष्टि का अधिकतम प्रयोग कर सकते हैं। किन्तु इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि कोई भी एक उपकरण या साधन सभी अल्प–दृष्टि वाले बच्चों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता। साथ ही उस उपकरण या साधन के प्रति प्रशिक्षण की आवश्यकता भी इसके चुनाव को प्रभावित करती है। अल्प दृष्टि बच्चों के लिए शिक्षक अनेक प्रकार के शिक्षण सहायक उपकरणों का उपयोग करते है। ज्यादातर उपयोग किये जाने वाले उपकरणों को निम्न रूप में विभक्त कर समझा जा सकता हैः–

1 प्रकाशीय उपकरण

2 अप्रकाशीय उपकरण

3 प्रक्षेपक उपकरण

4 इलेक्ट्रॉनिक तथा कंप्यूटर आधारित उपकरण

आइए हम बारी–बारी से इन वर्गों के अंतर्गत आने वाले विभिन्न उपकरणों के बारे में जानने का प्रयास करते हैं।

6.3.1 प्रकाशीय उपकरण

इस श्रेणी के उपकरण में अल्प दृष्टि वाले बच्चे हेतु कई उपकरण या सहायक सामग्री का उपयोग करते हैं जिससे अल्प दृष्टि वाले बच्चों की सीखने की प्रक्रिया अनुसमर्थित होती है। प्रकाशीय उपकरण को हम ऑप्टिकल उपकरण (optical device) भी कहते हैं। इस श्रेणी के उपकरण लेंस आवर्धन (magnification) पर आधारित होते हैं। लेंस के आवर्धन क्षमता का मापक डायोप्टरहै। अल्प दृष्टि वाले बच्चों के आवश्यकता के अनुसार ही उचित डायोप्टर का लेंस उपलब्ध कराया जाना चाहिए। जैसे, यदि किसी बच्चे को 18क की क्षमता वाले लेंस की आवश्यकता है तो उस बच्चे को हम 14D का

मैग्नीफायर नहीं दे सकते हैं। ठीक उसके उलट भी 14D आवश्यकता वाले बच्चे को 18D का लेंस नहीं दे सकते हैं। ऑप्टिकल उपकरण विभिन्न प्रकार के हो सकते है।

- **हैण्डहेल्ड मैग्नीफायर**— यह मुख्यतः पढ़ने में मदद करने वाला प्रकाशीय उपकरण है। जिसे एक हाथ से पकड़ कर इस्तेमाल किया जाता है। यह मैग्नीफायर प्रकाश स्त्रोत युक्त भी हो सकता है।

- **स्टैंड मैग्नीफायर**— इस उपकरण का उपयोग भी अल्प दृष्टि वाले बच्चों द्वारा पुस्तकों को पढ़ने के लिए किया जाता है। यह एक स्टैंडनुमाँ होता है। यह मैग्नीफायर भी प्रकाश स्त्रोत युक्त हो सकता है।

टेलिस्कोप— यह उपकरण दूर —दृष्टि की वस्तुओं को देखने हेतु प्रयोग में लाये जाने वाला प्रकाशीय उपकरण है। इससे बच्चों को ब्लैकबोर्ड पर पढ़ने, चलाने—फिरने आदि दैनिक के कार्यों में मदद मिलती है।

6.3.2 अप्रकाशीय उपकरण

अप्रकाशीय उपकरणों को हम नॉन—ऑप्टिकल उपकरण (Non Optical device) भी कहते हैं। अप्रकाशीय उपकरण द्वारा ग्लेयर, चमक, प्रकाश की तीव्रता, आदि प्रकाशीय स्थितियों को नियंत्रित किया जाता है। किन्तु इस प्रकार के उपकरण आवर्धन (magnification) पर आधारित नहीं होते हैं। इस श्रेणी में हम कई प्रकार के उपकरणों या सहायक सामग्रियों का उपयोग करते हैं, जो निम्नलिखित हैं:—

- **लार्ज प्रिंट सामग्री** — लार्ज प्रिंट (बड़े छापे), एक पुस्तक या अन्य पाठ दस्तावेज के स्वरूप को संदर्भित करता है। इसमें टाइपफेस (या फॉन्ट) सामान्य की तुलना में काफी बड़े होते हैं। यह अल्प—दृष्टि वाले बच्चे या व्यक्तियों को शैक्षिक व्यवस्थाओं में समायोजित होने का माध्यम भी है। अक्सर सार्वजनिक विशेष जरूरतों के पुस्तकालयों में पुस्तकों के बड़े प्रिंट संस्करण उपलब्ध होते हैं। भारत में राष्ट्रीय दृष्टि दिव्यांगजन सशक्तिकरण संस्थान, देहरादून (पूर्व में NIVH) में एक लार्ज प्रिंट प्रकोष्ठ है जहाँ से इस प्रकार की

पुस्तकों का मुद्रण किया जाता है।

- **बोल्डमार्कर** — इससे लिखे जाने वाला हर अक्षर बड़ा लिखा जाता है। इसका रंग भी गाढा होता है, जिससे लिखने तथा बाद में पढ़ने में आसानी हो सके। मोटा होने की वजह से इसकी ग्रिप भी बेहतर होती है। यह अल्पदृष्टि या गामक अक्षमता वाले बच्चों द्वारा प्रयोग में लाया जा सकता है।

- **रीडिंगलैंप** — कुछ अल्प—दृष्टि वाले बच्चे बेहतर प्रकाशीय स्थिति में पढ़ लेते हैं। ऐसे बच्चों के लिए पढ़ते समय रीडिंगलैंप का प्रयोग काफी मददगार होता है। जिससे प्रकाश की तीक्ष्णता उनके किताबों पर अधिक होती है और वे आसानी से पढ़ सकते है।

- **रीडिंगस्टैंड** – यह एक प्रकार का अप्रकाशीय उपकरण है, जिसकी साहयता से अल्प–दृष्टि वाले बच्चे अपनी आवश्यकता अनुसार पुस्तक ऊपर–नीचे करके पढ़ सकते हैं। सामान्यतः इसका प्रयोग कक्षा–कक्ष में होता है। इसके द्वारा अल्प दृष्टि वाले बच्चे किताबों को अपनी सुविधा के आधार पर समायोजित कर सकते है।

- **डार्कग्लास या अवशोषीग्लास**– इसका उपयोग ऐल्बिनिस्म से प्रभावित बच्चों के लिए विशेषकर किया जाता है। अन्य बच्चों में भी इसका प्रयोग ग्लेयर(चमक) को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है।

- **राइटिंग गाइड** – यह अल्प–दृष्टि बच्चों के लेखन कार्य में मदद करने वाला उपकरण या सहायक सामग्री है। इसमें बड़ी–बड़ी पंक्तियों हेतु रबर स्ट्रिंग(धागे) लगे होते हैं। इसकी मदद से अल्पदृष्टि बच्चे आसानी से लिख सकते हैं।

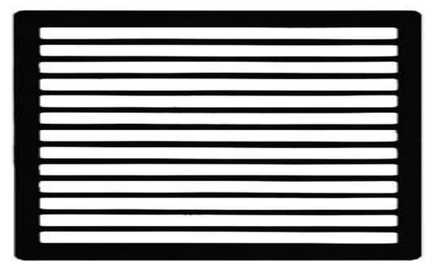

- **टाइपोस्कोप** – यह पढने में मदद करने वाला अप्रकाशीय उपकरण है। यह पंक्तियों के बीच की सघनता से होने वाले दृष्टि निर्धारण को कम करता है। जिससे अल्पदृष्टि वाले बच्चे सुगमता से पढ़ पाते है। यह एक काले रंग के प्लास्टिक या मोटे कागज से बना होता है, तथा इसमें एक खाना कटा होता है। इस कटे हुए खाने से एक बार में सिर्फ एक ही पंक्ति पढ़ी जा सकती है। यह पृष्ठ की चमक को भी कम करने में मदद करता है।

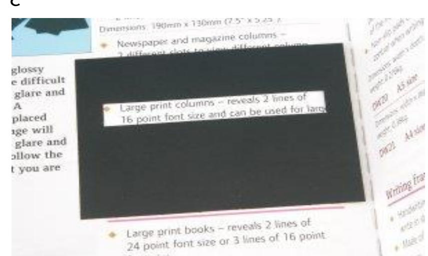

6.3.3 प्रक्षेपक उपकरण

प्रक्षेपक उपकरणों के अंतर्गत ऐसे उपकरण या साधन आते हैं, जो किसी संसाधन (पिंट, विडियो, एनीमेशन आदि) को मूल स्थान से दूसरे स्थान पर सामान्यतः बड़े आकर या स्वरुप में प्रक्षेपित करते हैं। प्रक्षेपक उपकरण के तहत कई अल्प–दृष्टि उपकरण या साधन आ सकते है। कुछ साधनों की चर्चा निम्न प्रस्तुत हैः–

क्लोज्डसर्किट टेलीविजन (CCTV)– क्लोज्डसर्किट टेलीविजन एक अल्प–दृष्टि सहायक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है। इसकी सहायता से बच्चे सुगमता से पढ़ सकते हैं। इसके द्वारा बच्चे अपनी आवश्यकता अनुरूप आवर्धन या मैग्नीफिकेशन को घटा या बढा सकते हैं। यहाँ तक की इस उपकरण से कंट्रास्ट तथा पृष्ठभूमि आदि को भी नियंत्रित किया जा सकता है।

प्रोजेक्टर (Projector)- वर्तमान में कई प्रकार के प्रोजेक्टर बाजार में उपलब्ध हैं जिनके द्वारा किसी भी विडियो, तस्वीर या अन्य दृश्य सामग्री को काफी बड़े स्वरूप में प्रक्षेपित कर के देखा जा सकता है। इसके प्रयोग द्वारा शिक्षक अपनी आवश्यकतर अनुरूप पाठ्य दृश्य सामग्री को घटा या बढा का प्रक्षेपित कर सकते हैं।

6.3.4 कंप्यूटर आधारित उपकरण

इस श्रेणी के उपकरण में उच्च तकनीकी वाले उपकरणों या सहायक सामग्रियों को रखा जाता है। इस श्रेणी के कुछ उपकरण निम्न हैं:–

स्क्रीन मैग्निफायर–स्क्रीनमैग्निफायर एक कंप्यूटर आधारित सहायक उपकरण है। यह स्क्न पर दिखाई जाने वाली टेक्स्ट, आकृति आदि को बड़ा बना देता है। यह यूजर या उपयोगकर्ता के आवश्यकता अनुरूप स्क्रीन को बदलने में सक्षम होता है। प्रमुख स्क्रीनमैग्निफायर में डॉलफिन, मैजिक (MAGIC) जूमटेक्स्ट आदि हैं।

- **डॉक्यूमेंट रीडर** – डाक्यूमेंट रीडर एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक आधारित उपकरण होता ळे, जो छपे अक्षरों को पढ़ने में सहायक होता है। चूंकि इस उपकरण में दृष्टि का प्रयोग नहीं होता है। इसे सामान्यतः बुक रीडर भी कहा जाता है।

- **डेजीप्लेयर**– डेजी या DAISY (Digital Accessible Information System) डिजिटल ऑडियो पुस्तकों, पत्रिकाओं और कम्प्यूटरीकृत पाठ के लिए एक तकनीकी मानक है। डेजीफॉर्मेट मुद्रित सामग्री के लिए एक पूरा ऑडियो विकल्प है, जिसे विशेष रूप से दृष्टिबाधित और डिस्लेक्सिया सहित कई लोगों द्वारा उपयोग के लिए बनाया गया है। डेजीप्लेयर पर इसी प्रारूप के ऑडियो बुक को उन्नत सुविधाओं के साथ सुना जा सकता है।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दिजिएः–

प्रश्न1- अप्रकाशीय उपकरण आधारित नहीं होते हैः–

(क) आवार्धन नियंत्रण पर (ख) चमक नियंत्रण पर (ग) ग्लयेर नियंत्रण पर

(घ) प्रकाश की तीव्रता नियंत्रण पर

....

....

....

प्रश्न .2 निम्न में से कौन सा अप्रकाशीय उपकरण नहीं हैः–

(क) रीडिंग लैंप (ख) स्टैंड मैग्निफायर (ग) लार्ज प्रिंट सामग्री (घ) टाइपोस्कोप

....

....

....

प्रश्न 3- प्रकाशीय उपकरण आधारित होते हैः–

(क) प्रकाशीय स्थितियों पर (ख) आवर्धन (ग) ग्लयेर पर (घ) प्रकाश की तीव्रता पर

....
....
....

प्रश्न 4- निम्न में से कौन सा प्रकाशीय उपकरण नहीं हैः–

(क) स्टैंड मैग्निफायर (ख) हैण्डहेल्ड मैग्निफायर (ग) लार्ज प्रिंट सामग्री (घ) सीट मग्निफायर

....
....
....

प्रश्न 5- क्लोज्ड सर्किट टेलीविजन हैः–

(क) ब्रेल उपकरण (ख) अल्प–दृष्टि सहायक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण

(ग) प्रकाशीय उपकरण (घ) अप्रकाशीय उपकरण

....
....
....

प्रश्न 6- क्लोज्ड सर्किट टेलीविजन में नियंत्रित किया जाता हैः–

(क) कंट्रास्ट को (ख) आवाज को (ग) रंग को (घ) उपरोक्त सभी

....
....
....

6.4 दृष्टि दिव्यांगजनों द्वारा ब्रेल का उपयोग

दृष्टि दिव्यांगजनों द्वारा शिक्षा प्राप्त करने के लिए ब्रेल लिपि का उपयोग किया जाता है। अतः इनके द्वारा लिखने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों के विषय में जानने के लिए ब्रेल लेखन प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। ब्रेल लेखन ब्रेल स्लेट, गाइड तथा स्टाइलस की सहायता से किया जाता है। लकड़ी की ब्रेल स्लेट में लगे क्लैम्प पर पेपर लगाया जाता है ताकि लिखते समय पेपर अपनी जगह पर ही रहे। पेपर लगाने के बाद गाइड के हिन्ज वाली साइड को वायीं ओर रखते हुए गाइड को ब्रेल स्लेट पर बने समांतर छिद्रों में सबसे ऊपर वाले छिद्रों में लगाया जाता है। गाइड को ब्रेल स्लेट के सबसे ऊपर के समांतर छिद्रों मे लगाकर गाइड का एक भाग पेपर के नीचे तथा दूसरा पेपर के ऊपर रखा जाता है। इसके उपरांत गाइड पर बने प्रकोष्ठों में स्टाइलस की सहायता से पेपर पर दायीं से वायीं ओर ब्रेल बिन्दुओं को लगाया जाता है तथा पंक्ति पूरी होने के बाद पुनः दायीं ओर से लिखना शुरू किया जाता है। ज्ञातव्य हो कि प्वाइंट ब्रेल स्लेट पर लेखन कार्य करने के लिए गाइड की आवश्यकता नहीं होती। ब्रेल लेखन में यह रुचिकर है कि लिखते समय ब्रेल बिन्दुओं को दबाने पर ये बिन्दु पेपर की दूसरी ओर उभर आते हैं अतः पेपर लिख लेने के बाद उसे निकाल कर वायीं ओर से दायीं ओर स्पर्श करके पढ़ा जाता है। ऐसा होने से 6 बिन्दुओं से 3–3 बिन्दुओं की बनी दो पंक्तियों में जहां लिखते समय 1,2 तथा 3 दायीं ओर होते हैं तथा 4,5 तथा 6 वायीं ओर होते हैं वहीं पढ़ते समय 1,2 तथा 3 वायीं ओर और 4,5 तथा 6 दायीं ओर हो जाते हैं। ब्रेल सीखते समय दृष्टिदिव्यांग बच्चों या व्यक्ति को इस उल्टी प्रक्रिया को समझने में प्रारंभ में थोड़ी कठिनाई तो अवश्य होती है किंतु प्रयास तथा अभ्यास के पश्चात लिखने और पढ़ने की इस विपरीत क्रिया के होने पर भी यह एक आदत सी बन जाती है। लकड़ी की ब्रेल स्लेट पर गाइड की

सहायता से लिखते समय ब्रेल की प्रत्येक दो पंक्तियों के बीच में एक ब्रेल पंक्ति के बराबर का खाली स्थान रह जाता है अतः इस स्लेट पर पेपर को पलट कर लगाने से दूसरी तरफ भी आसानी से ब्रेल लिखी जा सकती है।

6.5 ब्रेल लेखन के उपकरण

ब्रेल लेखन के लिए वर्तमान समय में अनेक उपकरों का उपयोग किया जाता है। ब्रेल लेखन उपकरणों का चुनाव बच्चे की क्षमता, सीखने के इच्छा तथा उपलब्धता पर निर्भर हो सकता है है। ब्रेल लेखन के उपकरणों का विवरण निम्नलिखित प्रकार से है'–

इंटर लाइन ब्रेल स्लेट–

इंटर लाइन ब्रेल स्लेट

वर्तमान में ब्रेल लेखन हेतु अनेक उपकरणों का उपयोग किया जाता है। प्रारम्भिक स्तर पर ब्रेल सीखने के लिए लकड़ी की एक स्लेट का उपयोग किया जाता है। इस स्लेट को इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट भी कहते है इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट से अभिप्राय ऐसी ब्रेल स्लेट से है जिसकी सहायता से कागज के दोनों तरफ ब्रेल लिखी जा सके। लकड़ी की इस स्लेट के साथ ब्रेल लिखने के लिए, गाइड तथा

स्टाइलस का प्रयोग किया जाता है। इस स्लेट पर पेपर लगाने हेतु एक क्लैम्प लगा होता है तथा ऊपर से नीचे तक दोनों ओर समांतर एवं समान दूरी पर छिद्र बने होते हैं। इन छिद्रों की सहायता से ब्रेल स्लेट पर गाइड लगाया जाता है।

6.5.1 गाइड–

एल्युमिनियम धातु का बना हुआ एक उपकरण हैं जिसके दो भाग होते हैं एवं दोनों भाग एक सिरे पर हिन्ज की सहायता से जुड़े होते हैं। गाइड के ऊपर वाले भाग में समान दूरी पर 6 बिन्दुओं के लिए प्रकोष्ठों की दो पंक्तियाँ बनी होती है तथा नीचे वाले भाग पर दो पंक्तियों में 6 बिन्दुओं के लिए स्लॉट बने होते हैं। गाइड के निचले हिस्से के पिछ्ली ओर दो मोटी पिन होतीं हैं जो लकड़ी की स्लेट पर बने समांतर छिद्रों की दूरी के समान दूरी पर होती है ताकि गाइड को स्लेट पर लगाया जा सके।

- **स्टाइलस**– स्टाइलस अथवा कलम ब्रेल लिखने में उपयोग होने वाला एक छोटा सा उपकरण है जिसके एक सिरे पर एक छोटा सा तार लगा होता है तथा दूसरा सीरा हाथ में पकड़ने के हिसाब से प्लास्टिक या एल्यूमिनियम का बना हो सकता है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है प्लास्टिक या एल्यूमिनियम का यह सिरा छोटा, बड़ा या तर्जनी उंगली को रखने के लिए बनी जगह वाला भी हो सकता है।

स्टाइल्स

6.5.2 इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट–

इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट को प्लास्टिक की स्लेट या जर्मन स्लेट भी कहा जाता है। इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट से अभिप्राय ऐसी ब्रेल स्लेट से है जिसमें पेपर के एक ही तरफ लिखा जाता है क्योंकि इसमें बने हुए ब्रेल के प्रकोष्ठों की पंक्तियों के बीच कोई खाली स्थान नहीं होता। यह स्लेट प्लास्टिक की बनी होती है तथा इसमें एक

पंक्ति में 30 प्रकोष्ठ होते हैं और कुल पंक्तियों की संख्या 27 होती है। आज—कल छोटे आकार की इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट भी उपलब्ध है। इंटर प्वाइंट ब्रेल स्लेट दो भागों से मिलकर बनी होती है जो हिन्ज की सहायता से आपस में जुड़े होते हैं। इस स्लेट के ऊपर वाले भाग में 6 डॉट्स के आकार के प्रकोष्ठ बने होते हैं तथा नीचे वाले भाग में 6 डॉट्स के लिए स्लॉट बने होते हैं। पेपर को स्थिर रखने हेतु अंदर की तरफ कुछ पिन लगी होती हैं जो पेपर को अपनी जगह से हिलने नहीं देतीं। इस स्लेट पर पेपर में एक ही तरफ से लिखा जा सकता है क्योंकि लिखते समय इसमें पेपर पर कोई खाली जगह नहीं रह जातीं। ब्रेल स्लेट में लिखते समय दाएं से बाएं लिखा जाता है तथा पढ़ते समय बाएं से दाएं की ओर प्रिंट के समान ही पढ़ा जाता है।

6.5.2 पॉकेट फ्रेम–

पॉकेट फ्रेम भी ब्रेल स्लेट का ही एक छोटा एवं सुविधाजनक रूप है जिसे दृष्टि दिव्यांगजन अपने साथ या अपनी पॉकेट में आसानी से रख सकता है। यह प्लास्टिक या एल्युमिनियम का बना हुआ होता है जिसमें 3, 5 या 7 पंक्तियां हो सकती है। इसमें छोटा सा पेपर लगाकर दृष्टि दिव्यांगजन अपनी आवशयकता के अनुसार कोई भी आवश्यक सूचना लिख सकता है। पॉकेट फ्रेम का उपयोग दृष्टि दिव्यांगजन द्वारा किसी का पता लिखने, फोन नंबर, छोटी सूचनाओं या दूसरी कोई आवश्यक बातें लिखने के लिए किया जा सकता है इसका आकार छोटा होने के कारण दृष्टि दिव्यांगजन इसे हर समय अपने साथ रख सकता है।

Braller

6.5.4 ब्रेलर और स्मार्ट ब्रेलररू प्रारंभ में ब्रेल लिखने हेतु लकड़ी की एक स्लेट, गाइड तथा स्टाइलस का प्रयोग किया जाता था। स्लेट से ब्रेल लिखने में लगने वाले समय और श्रम को कम करने के लिए 1893 में फ्रैंक एच. हॉल ने अमेरिका में एक यांत्रिक ब्रेल राइटर का आविष्कार किया जो ब्रेल लिखने के क्षेत्र में मील का पत्थर सिद्ध हुआ। इसके बाद ब्रेल लिखने के ऐसे यांत्रिक उपकरणों के कई अन्य मॉडल सामने आए। पर्किन्स ब्रेल राइटर इनमें सर्वाधिक प्रचलित है। ब्रेलर की सहायता से एक समय में एक से अधिक बिंदुओं को उभारा जा सकता है जबकि ब्रेल स्लेट (लकड़ी/प्लास्टिक) में एक समय में केवल एक ही बिंदु उभारा जा सकता है। ब्रेल स्लेट पर जहां एक ओर ब्रेल लिखने के साथ—साथ उसे पढ़ना संभव नहीं होता, वहीं ब्रेलर

स्मार्ट ब्रेलर

पर लिखते समय ब्रेल के उभरे बिंदुओं को पढ़ना भी संभव हो जाता है। समय की गति के साथ—साथ ब्रेलर के स्वरूप में भी सुधार हुआ जो आज स्मार्ट ब्रेलर के रूप में अधिक सुविधाओं के साथ प्रयोग में लाया जा रहा है। यह ब्रेलर उन्नत प्रौद्योगिकी से परिपूर्ण है तथा एक ही समय में दृश्य, श्रव्य तथा स्पर्श आवश्यकताओं की पूर्ति करने में समर्थ है। इस उपकरण में ब्रेल पेपर पर ब्रेल लिखने के साथ—साथ इस पर लगी स्क्रीन पर तत्क्षण लिखे हुए अक्षर शब्द को/ प्रिंट के रूप में रोमन लिपि में पढ़ा भी जा सकता है। साथ ही यह लिखे हुए अक्षर को बोलकर भी बताता है।

बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिएः—

प्रश्न 7 दृष्टि दिवयांगजन पढ़ने—लिखने के लिए कौन सी लिपि का उपयोग कराते हैं?

(क) देवनागरी (ख) रोमन (ग) ब्रेल (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

....

प्रश्न 8 ब्रेल लिपि कितने बिन्दुओं पर आधारित है?

(क) 4 (ख) 5 (ग) 6 (घ) 10

....

प्रश्न 9 ब्रेल स्लेट में लिखने का कार्य किस ओर से किया जाता है?

(क) बायीं ओर से (ख) दायीं ओर से (ग) दोनों तरफ से (घ) कहीं से भी

....

प्रश्न 10 ब्रेल टाइपराइटर का आविष्कार कब हुआ?

(क) 1890 (ख) 1880 (ग) 1893 (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

....

6.6 ब्रेल मुद्रण तकनीकी

दृष्टि दिव्यांगजन बच्चों/व्यक्तियों के लिए ब्रेल लिपि में पठन सामाग्री उपलब्ध करवाने के लिए ब्रेल मुद्रण की अनेक मशीनों का विकास हुआ है। इन मशीनों में प्रिंट की सामग्री को ब्रेल में परिवर्तित करने वाले विभिन्न सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जाता है। इसी कड़ी में डग्सबरी सॉफ्टवेयर का विकास हुआ जो अपने सुगम एवं सटीक लिप्यंकन के लिए जाना जाता है। यह एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसकी सहायता से किसी भी इलेक्ट्रॉनिक टेक्स्ट को ब्रेल में परिवर्तित किया जा सकता है। यह सॉफ्टवेयर आज विश्व की अधिकतर ब्रेल प्रेसेस द्वारा प्रयोग किया जा रहा है। ब्रेल प्रिंटिंग तकनीकी में डग्जबरी सॉफ्टवेयर के पूरक के रूप में ब्रेल एंबॉसर/प्रिंटर का भी विकास हुआ। यह एक विशेष प्रकार का उपकरण है जो डग्जबरी सॉफ्टवेयर की सहायता से लिप्यांकित ब्रेल टेक्स्ट को ब्रेल (हार्ड कॉपी) में बदलकर दृष्टिबाधित व्यक्तियों हेतु सुगम बनाता है। वर्तमान तकनीकी से परिपूर्ण इन मशीनों की सहायता से दृष्टि दिव्यांगजनों के लिए पठन सामग्री उपलब्ध हो पाती है।

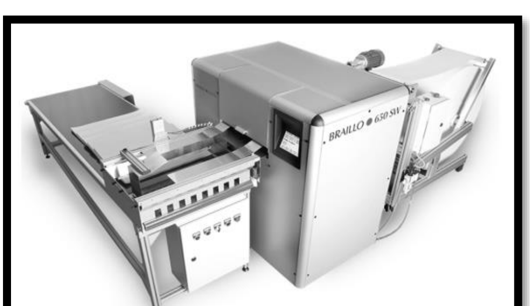

ब्रेल्लो

(Source: Viewplus.com) ब्रेल प्रिंटर (Wikimedia.com)

- रेफ्रेशेबल ब्रेल डिस्प्ले (त्ठक्)– रिफ्रैशेबल ब्रेल डिस्प्ले दृष्टिबाधित व्यक्तियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला एक आधुनिक उपकरण है जिसमें बिना कागज के प्रयोग से ब्रेल पढ़ी जा सकती है। इस उपकरण को कंप्यूटर के साथ यूएसबी केबल या वायरलेस ब्लूटूथ द्वारा जोड़ा जाता है तथा कंप्यूटर में उपस्थित प्रिंट सामग्री ब्रेल में परिवर्तित होकर इस उपकरण पर उपस्थित 40 करैक्टरस की एक पंक्ति में ब्रेल में रूपांतरित करके पढ़ी जा सकती है। जैसे ही दृष्टिबाधित व्यक्ति इन 40 ब्रेल अक्षरों को पढ़ लेते हैं, तभी एक बटन दबाने पर अगले 40 अक्षर रेफ्रेशेबल डिस्प्ले पर आ जाते हैं। इसके प्रयोग से दृष्टिदिव्यांगजनों को ध्वनिध्आवाज पर निर्भर नहीं रहना पड़ता तथा बिना स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर के प्रयोग से कंप्यूटर या अन्य डिवाइस में उपस्थित प्रिंट की सामग्री को अपने अनुरूप ब्रेल में परिवर्तित कर पढ़ पाते हैं। RBD (Source: Visionip.org)

- ब्रेल नोट टेकर– यह एक ऐसा उपकरण है जिसमें ब्रेल या टाइपराइटर की–बोर्ड की सहायता से सूचनाओं को संग्रहित किया जा सकता है तथा इन सूचनाओं को स्पीच सिंथेसाइजर की सहायता से उपयोग में लाया जा सकता है। ब्रेल नोट टेकर में किसी कंप्यूटर या स्मार्टफोन में उपलब्ध सामग्री को स्थानांतरित भी किया जा सकता है। दृष्टिदिव्यांगजन रिफ्रैशेबल ब्रेल डिस्पले द्वारा इसका प्रयोग ब्रेल टंकण व पठन के लिए भी कर सकते हैं। यह उपकरण विभिन्न कार्यों जैसे फोन नंबर, नाम और पता, सामान्य ज्ञान एवं नोटस आदि के संग्रहण के लिए उपयोगी हो सकता है। इसके अलावा उन्नत इलेक्ट्रॉनिक ब्रेल नोट टेकर एडवांस वर्ड प्रोसेसिंग, ब्राउजिंग आदि सुविधाओं से भी परिपूर्ण है। Braille Note Taker (Source: Gwilkins.co.uk)

6.8 स्क्रीन रीडिंग तकनीकी

स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर कंप्यूटर, लैपटॉप, स्मार्टफोन तथा टेबलेट के उन उपयोगकर्ताओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है जो दृष्टिबाधित हैं या स्क्रीन पर उपस्थित सामग्री को ठीक से नहीं देख पाते। ये सॉफ्टवेयर, टेक्स्ट टू स्पीच इंजन के उपलब्ध होने पर स्क्रीन पर प्रकट होने वाली टेक्स्ट सामग्री को पढ़कर सुनाते है। इस प्रकार इन के प्रयोग द्वारा एक दृष्टिदिव्यांगजन कंप्यूटर पर लिख सकता है, पढ़ सकता है तथा किसी प्रपत्र को संपादित भी कर सकता है। अतः यह उन लोगों के लिए अति महत्वपूर्ण हो जाता है जो आउटपुट के रूप में आवाज ध्वनि पर निर्भर होते है। इसके प्रयोग से दृष्टिबाधित व्यक्ति की दूसरों पर निर्भरता भी कम हो जाती है। वर्तमान में आई. ओ. एस. तथा एंड्रॉइड दोनों ही प्रकार के प्लेटफार्म वाले उपकरणों में पहले से ही सशक्त स्क्रीन रीडर उपलब्ध होते हैं। JAWS तथा NVDA आदि ऐसे स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर्स हैं जो विण्डो प्लेटफॉर्म में बहुतायत में प्रयोग किये जाते है।

6-9 इंस्टेंट रीडिंग तकनीकी

दृष्टिदिव्यांगजन पूर्ण रूप से ब्रेल पर निर्भर न रहकर अन्य प्रिंट में छपी सामग्री को भी सुगमता पूर्वक पढ़ सकें। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इंस्टेंट रीडिंग तकनीकी का विकास किया गया। इसके लिये ओसीआर तकनीकी (Optical Character Reader) को उपयोग में लाया जाता है। ओसीआर एक Software है, जो optical character recognition तकनीक पर काम करता है। यह एक ऐसी तकनीक है, जिसके माध्यम से विभिन्न तरह की सामग्री को कम्प्यूटर के समझने योग्य डेटा में बदला जा सकता है। यह हाथ से लिखे या टाइप

कर प्रिंट किए कागज, बुक या न्यूजपेपर के किसी भी पेज को स्कैन कर उसे इलेक्ट्रॉनिक टेक्स्ट में बदल देता है, जिससे उसे एडिट करना संभव हो जाता है। इसमें उस सामग्री के सभी भाग चाहे वह विराम चिन्ह हो या संख्याएं सभी शामिल होते है। अतः यह भी कह सकते है कि यह तकनीकी कागज पर लिखित सामग्री को सॉफ्ट कॉपी में तब्दील कर देती है। उसके अतिरिक्त इंस्टेंट रीडिंग मशीन स्कैनर्स के माध्यम से भी किसी प्रिंट की सामग्री को तत्क्षण स्कैन करके उसे इलेक्ट्रॉनिक, पढ़ने योग्य टेक्स्ट में बदला जा सकता है। जिससे इसे स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर की सहायता से एक दृष्टिदिव्यांगजन आसानी से पढ़ सके। इस मशीन की सहायता से दृष्टिदिव्यांगजनों की प्रिंट सामग्री तक पहुंच सुगम हो जाती है एवं उन्हें ब्रेल, बड़े छापे वाली पुस्तकों या अन्य किसी परंपरागत साधन पर निर्भर नहीं रहना पड़ता।

बोध प्रश्नो के उत्तर दीजिएः—

प्रश्न 11- RBD में एक पंक्ति में कितने करेक्टर होते हैं?

(क) 30 (ख) 40 (ग) 50 (घ) 35

....

....

प्रश्न 12 नेशनल फेडरेशन ऑफ द ब्लाइंड के एक सर्वे के अनुसार दृष्टिबाधितों की कुल संख्या का कितना : भाग ब्रेल पढ़ना या लिखना जानता हैं।

(क) 5 (ख) 10 (ग) 15 (घ) 20

प्रश्न 13- विण्डो प्लेटफॉर्म में बहुतायत में प्रयोग किये जाने वाले स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर्स कौन से हैं?

(क) JAWS (ख) NVDA (ग) उपरोक्त दोनों (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

....

....

प्रश्न 14- प्रिंट को ब्रेल में बदलने वाले सॉफ्टवेयर का नाम क्या हैः—

(क) JAWS (ख) NVDA (ग) Duxbary (घ) उपरोक्त सभी

....

....

6.10 सारांश

दृष्टि की क्षति के कारण दृष्टि दिव्याaग बच्चे अनेक दृष्टि मूलक अनुभवों से वंचित रह जाते है। दृष्टि के अभाव में उन्हें अनेक अपने कार्यों के लिए अन्यों पर निर्भर होना पढ़ता है। दृष्टि के अभाव में बच्चे सामान्य प्रिंट में मुद्रित अध्ययन सामाग्री को नहीं पढ़ पाते हैं। अतः उनके लिए ब्रेल लिपि या बड़े छापे वाली पुस्तकें शिक्षा का माध्यम बनती है। ब्रेल या बड़े छापे वाली पुस्तकों का चुनाव दृष्टि की क्षति की मात्रा पर निर्भर करता है। दृष्टि दिव्यांग बच्चों में अलग—अलग मात्रा में अवशिष्ट दृष्टि पाई जाती है। अवशिष्ट दृष्टि का उपयोग उपयुक्त मार्गदर्शन तथा सही समय पर सही सहायक उपकरण की उपलब्धता पर निर्भर करता है। किन्तु इस बात को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए कि कोई भी एक उपकरण या साधन सभी अल्प—दृष्टि वाले बच्चों के लिए सटीक नहीं हो सकता। साथ ही उस उपकरण या साधन के प्रशिक्षण की आवश्यकता भी इसके चुनाव को प्रभावित

करती है। वर्तमान में आरबीडी, इंसटेंट रीडिंग तकनीकी तथा स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर आदि के उपलब्ध होने से दृष्टि दिव्याग बच्चों की पहुँच का दायरा बढ़ा है जिससे वे अपने अधिकतर कार्य स्वतन्त्रता पूर्वक तथा बिना किसी की सहायता के करने में सफल हो पाए हैं। अतः दृष्टि क्षति की मात्रा के आधार पर बच्चों को सहायक उपकरण उपलब्ध करवाए जाने चाहिए जिससे सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को अधिक सरल, सुलभ तथा मनोरंजक बनाया जा सके।

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क)
2. (ख)
3. (ख)
4. (ग)
5. (ख)
6. (घ)
7. (ग)
8. (ग)
9. (ख)
10. (ग)
11. (ख)
12. (ख)
13. (ग)
14. (ग)

6.12 आदर्श कार्य

प्रश्न 01ः– अल्प–दृष्टि उपकरण से आप क्या समझते हैं? विभिन्न प्रकार के अल्प–दृष्टि उपकरणों को वर्गीकृत कर के समझाएं।

प्रश्न 02ः– ब्रेल लेखन के उपकरण कौन कौन से है? विस्तार सहित व्याख्या भी लिखिए।

प्रश्न 03ः– आरबीडी, स्क्रीन रीडिंग सॉफ्टवेयर तथा इंस्टेंट रीडिंग तकनीकी के बारे में आप क्या जानते हैं?

प्रश्न 04ः– ब्रेल स्लेट तथा ब्रेलर से ब्रेल लेखन की तुलना कीजिए।

प्रश्न 05ः– स्मार्ट ब्रेलर के बारे में आप क्या जानते हैं।

6.13 चर्चा के विन्दु

प्रश्न 01– आप अपने सहपाठियों के साथ ब्रेल मुद्रण तकनीकी पर चर्चा कीजिए।

6.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Willings,C.(2017).Tactile Graphics Technology.teachingvisuallyimpaired.com.Retrieved from https://www.teachingvisuallyimpaired.com/tactile-graphics-technology.html

- Geem, P. V. TSBVI (2017). Tactile Graphics Resources: Computer Generated Tactile Graphics. TVI, TSBVI Outreach Department. Texas School for the Blind and Visually Impaired. Retrieved from http://www.tsbvi.edu/math/3189-tactile-graphics-resources
- RNIB (2015). Making tactile graphs and diagrams. Retrieved from http://www.rnib.org.uk/insight-online/making-tactile-graphs-and-diagrams
- ए.आई.सी.बी. (2004). शिक्षक प्रशिक्षण लेखमाला, आल इंडिया कन्फेडरेशनएऑफ दी ब्लाइंड, रोहिणी, दिल्ली
- ए.आई.सी.बी. (2012). दृष्टिबाधा–शिक्षण, आल इंडिया कन्फेडरेशनएऑफ दी ब्लाइंड, रोहिणी, दिल्ली
- Mittal, S. R. .(2008)Education of Children with Low Vision, Kanishka Publication, New Delhi
- TSBVI (2016). Principles of Assistive technology for students with visual impairment. TexasSchool for the Blind and Visually Impaired. USA
- Punanai, B. (1990). Visually Impairment Handbook. Blind People's Association, Ahmadabad
- कुमार, पी. (2016). अल्प दृष्टि बच्चे. एस. आर. पब्लिशिंग हाउस. नई दिल्ली.
- AICB. (2004). Shikshak-prashikshan lekhmala. Delhi, India.
- AICB. (2011). Drishti badha sikshan. Delhi, india.
- Hemlata. (2014). Technology for the inclusion of persons with disabilities. Kanishka Publishers, New Delhi, India.
- NIVH. (2014). Equip your world. Dehradun, India.
- NIVH. (2015). Drishti viklangta; adhyapkon hetu ek sansadhan pustak. Dehradun, India.
- Singh, J.P. (2003). Technology for the blind; concept and context. Kanishka Publishers, New Delhi, India.

खंड 3 (Block3)

इकाई–7 स्वतंत्र जीवन कौशल

इकाई संरचना

7.1 परिचय

7.2 उद्देश्य

7.3 स्वतंत्र जीवन कौशल एवं घटक

7.3.1 स्वच्छता

7.3.2 श्रृंगार

7.3.3 पोशाक उपयोग एवं देखभाल

7.3.4 भोजन पकाना

7.3.5 स्वयं भोजन लेना वह खाना

7.3.6 गृह व्यवस्था

7.3.7 समय प्रबंधन

7.3.8 वित्तीय प्रबंधन

7.3.9 आत्मनिर्भरता तथा उत्तरदायित्व

7.4 ध्यान देने योग्य बातें

7.5 इकाई सारांश

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.7 अभ्यास प्रश्न

7.8 चर्चा के बिन्दु

7.10 कुछ उपयोगी पुस्तक

7.1 परिचय

जैसा कि हमें ज्ञात है की स्वतंत्रता अमूल्य है चाहे वह जीवन के किसी भी स्टार या मोड पर हो। यह हमें किसी और पर आश्रित रहने की जगह हमें स्वतंत्रता पूर्वक रहना सीखना है। इसी प्रकार से स्वतंत्र जीवन कौशल की महत्ता अविवादित है क्योंकि जीवन यापन के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण है। पशु–पंछी हों या मनुष्य सभी के लिए स्वतंत्र जीवन यापन एक मूल आवश्यकता है। हमें यह भी विदित है कि शरीर में किसी भी प्रकार से क्षति या दिव्यांगता (चाहे वह तात्कालिक ही क्यों न हो) के कारण हमें अपने दैनिक क्रियो को संपादित करने में परेशानियों का सामना करना पड़ता है। आप सभी ने इसे स्वयं भी कभी न कभी तो अवश्य अनुभव किया होगा। अब हम समझने का प्रयास करते हैं कि दिव्यांगता से प्रभावित एक व्यक्ति किस प्रकार स्वतंत्र जीवन यापन करते होंगे?

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत हम–

- स्वतंत्र जीवन कौशल के प्रत्यय को समझ सकेंगे।

- जीवन कौशल में सम्मिलित विभिन्न कौशलों/घटकों को समझ सकेंगे।
- दैनिक जीवन में इसकी महत्ता को रेखांकित कर सकेंगे।

7.3 स्वतंत्र जीवन कौशल एवं इसमें शामिल कौशल/घटक

जैसा कि हम यह जानते हैं कि स्वतंत्र जीवन कौशल हमारी जिंदगी का अमूल्य अंश है।हमारे जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। सुबह बिस्तर छोड़ने से लेकर रात में पुनःसोने जाते समय तक हमें विभिन्न कौशलों की आवश्यकता पड़ती है। इन सारे कौशलों के समन्वय में एक स्वतंत्र जीवन यापन संपन्न हो पाता है। किसी भी कौशल में किसी भी प्रकार का व्यवधान हमारी जिंदगी की गुणवत्ता एवं क्रियाशीलता को प्रभावित करता है। बाल्यावस्था से वृद्धावस्था तक हम विभिन्न कौशलों के माध्यम से अपने समस्त कार्य संपादित कर पाते है। अतः यह आवश्यक है कि हमें सभी आवश्यक कौशलों को अवश्य सीखना चाहिए,ताकि हम इसे अपने दैनिक जीवन में प्रयोग कर सफलतापूर्वक जीवन यापन कर सकें। इसमें सम्मिलित विभिन्न कौशल/घटक निम्न हैः–

- स्वच्छता
- श्रंगार
- पोशाक उपयोग तथा देखभाल
- भोजन पकाना
- स्वयं भोजन लेना वह खाना
- गृह व्यवस्था
- समय प्रबंधन
- वित्तीय प्रबंधन
- आत्मनिर्भरता तथा उत्तरदायित्व

7.3.1 स्वच्छता–

हमें अपने जीवन में स्वच्छता का सदैव प्रयोग करना चाहिए। एक स्वच्छ परिवेश में ही स्वच्छ विचार का विकास हो सकता है। यह एक ऐसा विषय है जिसके पालन एवं शिक्षण में हमें सदैव संजीदा रहना चाहिए। किसी भी अवस्था में किसी भी निजता का उल्लंघन नहीं होना चाहिए।

इसके अंतर्गत निम्न क्रियाएं शामिल हो सकती हैः–

- हाथ –मुँह धोना
- शौच कार्य
- छांत एवं जिव्हा की सफाई
- नाखून काटना
- नहाना
- बालों की सफाई
- माहवारी के समय स्वयं एवं वस्त्र का ध्यान रखना (लड़कियों के लिए)
- दाढ़ी बनाना (लड़कों के लिए)

इस प्रकार के क्रियाकलापों एवं कौशलों के प्रशिक्षण के समय तथा प्रशिक्षण उपरांत भी निम्न बातों का अवश्य ध्यान रखना चाहिएः–

- ❖ सभी संबंधित वस्तुओं को अपने सुनिश्चित स्थान पर रखे जाएँ एवं उपयोगोपरान्त अपनी नियत स्थान पर रखें।
- ❖ वस्तुओं पर स्पर्शीय संकेत एव ंचटक रंग का प्रयोग किया जाना चाहिए ताकि इन की पहचान आसानी से की जा सके।
- ❖ सरलतापूर्वक प्रयोग की जाने वाली समुचित आकार की वस्तुएं प्रयुक्त की जा सकती है।
- ❖ स्नानागार में यथोचित अनुकूलन तथा समुचित प्रकाश की व्यवस्था, विशेष प्रकार के टेक्सचर/ रंग युक्त कार्ड का प्रयोग, ब्रेल एवं अन्य संकेतों का प्रयोग करना।
- ❖ खतरनाक वस्तुओं से यथोचित बचाव के उपाय।
- ❖ निजता के पालन के समय आवश्यक है की सुरक्षा हेतु स्पर्शीय बड़े आकार की कुण्डी लगाई जाये ताकि इसका प्रयोग सुगम हो।
- ❖ आपातकालीन परिस्थिति में सुरक्षित निकास एवं सूचना हेतु अलार्म की व्यवस्था।

नोटः युवतियों में माहवारी का आना एक सामान्य प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसमें स्वच्छता का ध्यान रखना आवश्यक है। यह आवश्यक है कि श्रृंखलाबद्व तौर पर इन्हें समुचित प्रशिक्षण प्रदान किया जाये। इसके अंतर्गत निम्न बिंदुओं का प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक हैः–

- ❖ माहवारी–चक्र के बारे में ज्ञान प्रदान करना ताकि किसी भी प्रकार के पूर्वाग्रह से बचा जा सकें।
- ❖ इससे संबंधित विभिन्न लक्षणों एवं पहचान के बारे में बताना।
- ❖ उस समय रखी जाने वाली सावधानियों के बारे में प्रशिक्षित करना।
- ❖ अपनी निजता एवं अपने वस्त्र की स्वच्छता का ध्यान रखना ताकि संक्रमण को रोका जा सके।

7.3.2 श्रृंगार

हर व्यक्ति अपने को सुंदर और आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करना चाहता है। और इसके लिए वह विभिन्न क्रियाओं का निर्वहन करता है। वस्तुतः यह समाज में अपने आपको अच्छे तरीकें से प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करता है तथा आत्मविश्वास का विकास होता है। इस कौशल के अंतर्गत व्यक्ति अन्य शैक्षिक कौशलों को भी सिखाते हैं। कई सूक्ष्म एवं स्थूल गामक क्रियाओं का भी विकास होता है। संवेदीय संकल्पना का ज्ञान भी साथ–साथ मजबूत होता है। इसके अंतर्गत निम्न कौशलों को सम्मिलित किया जा सकता हैः–

- सिर के बाल में तेल लगाना एवं कंघी करना।
- चेहरे की सफाई
- क्रीम, पाउडर एवं अन्य सौन्दर्य– प्रसाधन का प्रयोग करना।
- दाढ़ी एवं मूंछ की समुचित देखभाल (लड़कों के लिए)
- मासिक धर्म के समय समुचित देखभाल (लड़कियों के लिए)

7.3.3 पोशाक उपयोग एवं देखभाल

इसके अंतर्गत मौसम के अनुसार समुचित एवं समसामयिक वस्त्रो का चयन और उन्हें सही प्रकार से पहनना एवं उतरना आता है। इस क्रम में कई अन्य संकल्पनाओं एवं कौशलों का ज्ञान एवं विकास होता है। इनको निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता हैः–

- उपयोगानुसार समुचित वस्त्र का चयन एवं प्रयोग (अन्तःवस्त्र ,पायजामा– कुर्ता, आदि)
- मौसमानुसार समुचित वस्त्र का चयन एवं प्रयोग (स्वेटर ,जैकेट, सूती वस्त्र, बरसाती आदी)।
- एक वस्त्र के रंग के अनुसार दूसरे वस्त्र के रंग का समुाचत मिलान
- बनावट एवं स्पर्श के आधार पर वस्त्रो का चयन

7.3.4 भोजन पकाना

यह एक ऐसा कौशल है जिसका ज्ञान हर वयस्क के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। हमने बचपन से सुना है की रोटी, कपड़ा और मकान हर व्यक्ति की एक मूलभूत आवश्यकता है। एक वयस्क से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे खाना बनाने का मौलिक ज्ञान होना चाहिए। इस कार्य के संपादन के लिए रसोई घर की आवश्यकता होती है। अतः इसमें प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों, सामग्रियों एवं अन्य प्रक्रियाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। उपकरणों एवं बर्तनों का प्रयोग करना एवं सुरक्षा से संबंधित जानकारियों का होना भी एक आवश्यक शर्त है। रसोई घर की सफाई एवं खाद्य–पदार्थों की बेहतर रख–रखाव का प्रशिक्षण होना भी नितांत आवश्यक है। इस बात का प्रशिक्षण भी आवश्यक है कि सुरक्षित प्रक्रियाओं एवं सुरक्षा मानकों का पालन किया जाये ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना, संक्रमण या अप्रिय घटनाओं से बचा जा सकें।

7.3.5 स्वयं भोजन लेना वह खाना

भोजन का उपभोग के समय भी हमें आत्मनिर्भर होना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि बच्चों की उम्र एवं उसके बौद्धिक व शारीरिक स्तरों को ध्यान में रखकर प्रशिक्षित किया जाये। कुछ विभिन्न अवधारणाओं जिनका प्रशिक्षण समयानुसार आवश्यक है उन्हें निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता हैः–

- रोटी / पराठा / ब्रेड जैसे खाद्य– पदार्थों को स्वयं अपने हाथों से लेकर छोटे–छोटे टुकड़े करके सब्जी / मक्खन / जैम लगाकर खाना।
- हाथ या चम्मच का समुचित प्रयोग करना।
- खाते समय खाद्य पदार्थों की बर्बादी को रोकना।
- हाथ या चम्मच के प्रयोग से खाद्य पदार्थों का सही तरीके से मिश्रण करना।

7.6 गृह व्यवस्था

हम सभी प्रत्येक दिन एक बड़ा हिस्सा अपने घर में बिताते है अतः यह बहुत ही आवश्यक है कि गृह–सज्जा एवं व्यवस्था उचित तरीके से हो। समुचित तरीके से की गई गृह व्यवस्था हमें एक आराम देह सुरक्षित एवं पवित्र वातावरण का अनुभव देती है। गृह व्यवस्था हेतु कुछ प्रमुख गृह व्यवस्था हेत कुछ प्रमुख कौशलों को नीचे प्रस्तुत किया गया हैः–

- साफ–सफाई का ध्यान रखना।
- विभिन्न वस्तुओं को सही तरीके से व्यवस्थित एवं साफ सुथरा रखना।
- गृह सज्जा करना आदि।

7.3.7 समय प्रबंधन–हमारे जीवन के प्रत्येक सफलता के पीछे समय प्रबंधन का अपना महत्व है। प्रत्येक काम का संपादन निश्चित समय सीमा में करने का प्रयास होना चाहिए। इसके प्रशिक्षण के लिए निम्न क्रियाओं एवं कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिएः–

- समय का ज्ञान एवं घड़ी से समय देखना सीखना।
- दैनिक, साप्ताहिक एवं मासिक समय सारणी का निर्धारण है उसका पालन करना।

- कार्यों का नियत समयानुसार संपादन करना आदि।

7.3.8 वित्तीय प्रबंधन

एक व्यक्ति को वित्तीय प्रबंधन का भी मूल सिद्धांत का ज्ञान होना चाहिए। रूपयों एवं सिक्कों की पहचान, उनका सही मूल्य एवं लेन–देन का सही ज्ञान बहुत ही आवश्यक है। एक दृष्टिबाधित व्यक्ति को स्पर्शीय माध्यम से इसका प्रशिक्षण दिया जा सकता है। संवेदी समस्याओं से ग्रसित व्यक्तियों के लिए कैलकुलेटर का प्रयोग भी सिखाया जा सकता है।

7.3.9 आत्मनिर्भरता तथा उत्तरदायित्व

प्रत्येक व्यक्ति से अपेक्षा की जाती है कि समय के साथ उसमें उत्तरदायित्व का भाव आये तथा वह आत्मनिर्भर हो सके। यह उन्हें उनकी जिम्मेदारियों के सही तरीके से निर्वहन करने में सहायता प्रदान करता है। आत्मनिर्भरता का संबंध दैनिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र तथा सामाजिक कौशल, सामुदायिक क्रियाएं, शैक्षिक व्यावसायिक आदि से संबंधित है। इसका सटीक प्रशिक्षण भी उतना ही आवश्यक है जितना की अन्य कौशलों का क्योंकि यह एक युवा को समाज में समुचित प्रकार से जीवन यापन करने में सक्षम बनाता है।

7.4 ध्यान देने योग्य बातें

हमारा संविधान प्रत्येक व्यक्ति को समाज में इज्जत के साथ जीवन–यापन का अधिकार देता है। एक दिव्यांग व्यक्ति को भी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समानता का अधिकार है। हम सभी विभिन्न ज्ञानेंद्रिय के माध्यम से सीखते हैं। हमें यह भी विदित है कि दिव्यांगता के कारण प्रभावित व्यक्ति में अधिगम ग्रहण की कुछ न कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसके बावजूद भी इन्हें स्वतंत्र जीवन कौशलों का समुचित प्रशिक्षण दिया जाना बहुत ही आवश्यक है। प्रशिक्षण के दौरान हमें निम्न बातों को अवश्य ध्यान में रखना चाहिएः–

- प्रशिक्षक को काफी सावधान एवं संवेदनशील रहना चाहिए।
- दिव्यांग व्यक्ति मनोवैज्ञानिक समस्याओं से प्रभावित हो सकते हैं। अतः यह आवश्यक है कि उनकी समस्याओं को ध्यान में रख कर प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। उनके आत्मविश्वास को बनाये रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना चाहिए।
- प्रशिक्षण के समय उनकी दिव्यांगता, परिस्थितियों एवं विद्यमान बल को ध्यान में रखना चाहिए।
- उनकी निजता का भी ध्यान रखना अत्यावश्यक है।
- प्रशिक्षण के दौरान उपयुक्त शिक्षण पद्धतियों एवं प्रविधियां का प्रयोग किया जाना चाहिए।
- प्रशिक्षण के दौरान उनकी सुरक्षा एवं संभावित परेशानियों पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।
- आवश्यकतानुसार उन्हें प्रायोगिक ज्ञान भी अवश्य प्रदान करना चाहिए।

बोध प्रश्न–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः–

प्रश्न01– स्वतंत्र जीवन कौशल से आप क्या समझते है?

....

....

प्रश्न02– स्वतंत्र जीवन कौशल के अंतर्गत शामिल क्रियाओं की सूची बनाइयें।

....

....

प्रश्न03–स्नानागार के अनुकूलन से आपका क्या अभिप्राय है?

....

....

7.5 इकाई सारांश

प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह आवश्यक है कि वह जीवन यापन हेतु आवश्यक कौशलों में पारंगत हो क्योंकि यह वह विधा है जो उसे जीवन के हर कदम पर सफलता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है। वैसे भी वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रतियोगिता बहुत अधिक है एवं यह कहना कदापि अनुचित नहीं होगा कि हममें से प्रत्येक को जीवन यापन कौशलों में समुचित प्रशिक्षण प्राप्त हो। यह हमें समाज में गर्व से जीना सिखाता है। इन कौशलों में प्रशिक्षित होने के बाद हम समाज में उत्तरदायित्व का निर्वहन करते हुए आत्मनिर्भर हो सकते हैं। एक गैर–दिव्यांग व्यक्ति के साथ–साथ दिव्यांगों के लिए भी यह उतना ही आवश्यक है। उचित प्रशिक्षण उन्हें समाज में अन्य लोगों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में सहायता प्रदान करता है एवं समाज में समावेशित होने में सहायता प्रदान करता है।

7.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

उत्तर 01– जीवन के वे विभिन्न कौशल जो हमें दैनिक जीवन में आवश्यक होता है।

उत्तर 02–

- स्वच्छता
- श्रंगार
- पोशाक उपयोग तथा देखभाल
- भोजन पकाना
- स्वयं भोजन लेना वह खाना
- गृह व्यवस्था
- समय प्रबंधन
- वित्तीय प्रबंधन

उत्तर 03– स्नानागर को दिव्यांगजनों,वृद्धों एवं घर के प्रत्येक व्यक्ति के अनुसार ढालना ताकि घर का कोई सदस्य उसका प्रयोग आसानी से कर सकें।

7.7 अभ्यास कार्य

प्रश्न 01–स्वतंत्र जीवन यापन कौशलों से आप क्या समझते हैं विवेचना कीजिए।

प्रश्न 02–स्पष्ट कीजिए स्वतंत्र जीवन यापन कौशलों के प्रशिक्षण के लिए किन क्रियाओं एवं कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

प्रश्न 03–स्वतंत्र जीवन यापन कौशल की महत्ता पर प्रकाश डालिए। स्पष्ट करें कि इसका समुचित प्रशिक्षण क्यों आवश्यक है?

7.8 चर्चा /स्पष्टीकरण के बिन्दु

प्रष्न 01–अपने घर आसपास एवं कक्षा कक्षा के लोगों के स्वतंत्र जीवन कौशलों का अध्ययन करें और विश्लेषण आत्मक व्याख्य कीजिए।

प्रष्न 02–दिव्यांगजन के व्यवहार और उनके स्वतंत्र जीवन यापन कौशलों को समझें और चर्चा करें।

7.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- kumar,P.DAS,H.(2022). Vistarit Mool Pathyacharya.NIEPVD,Dehradun,India.
- Mishra,P.Khan S.A,(2020): PRAJNA-A compendium in Disability Rehabilitation:Kanishka Publishers,New Delhi.
- Wilings,C.(2015):Tactile Graphic Resources.Retrieved from https://teachingvisuallyimpaired.
- Mohit A,Jacob N,Mittal A.K. Mittal S.R. (2019): Visual Disability-AResource Book for Teachers,Vol.2:NIEPVD,Dehradun.

इकाई–8 दैनिक जीवन कौशल और संवेदी दक्षता

इकाई सरंचना

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मुख्य दैनिक कौशल

8.3.1 अनुस्थिति एवं चलुष्णिता

8.3.2 प्रबंधकीय कौशल

8.3.2.1 वैचारिक कौशल

8.3.2.2 तकनीकी कौशल

8.3.2.3 मानव संबंध कौशल

8.3.3 प्रतिपूरक कौशल

8.3.4 समय प्रबंधन

8.3.5 मनोरंजन

8.3.6 गृह प्रबंधन

8.3.7 आत्म–निर्णय

8.3.8 सामाजिक अंतःक्रिया कौशल

8.4 संवेदी दक्षता

8.4.1 दृष्टि

8.4.2 श्रवण

8.4.3 गंध एवं स्वाद

8.4.4 काइनेस्थेटिक, प्रोप्रियोसेप्टिव और वेस्टिबुलर इंद्रियां

8.4.5 संवेदी एकीकरण

8.5 सारांश

8.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.7 अभ्यास कार्य

8.7 चर्चा के बिंदु/स्पष्टीकरण

8.7 कुछ उपयोगी पुस्**तकें**

8.1 प्रस्तावना

अपने जीवन को और सरल एवं सहज बनाना ही जीवन कौशल है। अनुकूल तथा सकारात्मक व्यवहार की वे योग्यताएँ हैं जो व्यक्तियों को दैनिक जीवन की माँगों और चुनौतियों से प्रभावी तरीके से निपटने के लिए सक्षम बनाती हैं। ये जीवन कौशल सीखे जा सकते हैं तथा उनमें सुधार भी किया जा सकता है। आग्रहिता, समय प्रबंधन,सात्विक चिंतन, संबंधों में सुधार, स्वयं की देखभाल के साथ–साथ ऐसी असहायक आदतों, जैसे – पूर्णतावादी

होना, विलंबन या टालना इत्यादि से मुक्ति, कुछ ऐसे जीवन कौशल हैं, जिनसे जीवन की चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलेगी।

दैनिक कौशल में वे कार्य शामिल हैं जो लोग अपनी स्वतंत्रता बढ़ाने और पारिवारिक संरचना में योगदान करने के लिए दैनिक जीवन में करते हैं। इन कौशलों में व्यक्तिगत स्वच्छता, खाने का कौशल, भोजन तैयार करना, समय और धन प्रबंधन, कपड़ों की देखभाल और घरेलू कार्य शामिल हैं। दृष्टिवान लोग आम तौर पर अवलोकन के माध्यम से ऐसी दैनिक दिनचर्या सीखते हैं, जबकि दृष्टिबाधित व्यक्तियों को अक्सर इन दैनिक कार्यों में व्यवस्थित निर्देश और लगातार अभ्यास की आवश्यकता होती है।

8.2 उद्देश्य

इस अध्ययन के उपरांत आप सक्षम हो पायेंगेः—

- छात्र दैनिक जीवन कौशलों के बारे में जान पाएंगे।
- छात्र मुख्य दैनिक जीवन कौशलों के महत्व को समझ पाएंगे।
- छात्र संवेदी दक्षता के बारे में जान पाएंगे।
- छात्र संवेदी दक्षता के प्रकारों के बारे में समझ पाएंगे।
- छात्र दैनिक जीवन कौशल और संवेदी दक्षता को समझकर समाज में आत्मसम्मान पूर्वक सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम होंगे।

8.3 कुछ मुख्य दैनिक कौशल

8.3.1 अनुस्थिति एवं चलुष्णिता

अनुस्थिति एवं चलुष्णिता निर्देश सभी उम्र और मोटर क्षमताओं के छात्रों को अपने परिवेश के प्रति उन्मुख होने और यथा संभव स्वतंत्र और सुरक्षित रूप से आगे बढ़ने में सक्षम बनाता है। छात्र अपने और अपने वातावरण के बारे में सीखते हैं, जिसमें घर, स्कूल और समुदाय शामिल हैं। अनुस्थिति एवं चलुष्णिता पाठों में बुनियादी शरीर की छवि, स्थानिक संबंधों, छड़ी के उपयोग, यात्रा और सार्वजनिक परिवहन के उपयोग तक के कौशल शामिल हैं। अनुस्थिति एवं चलुष्णिता कौशल होने से छात्र अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर अधिकतम संभव सीमा तक स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।

8.3.2 प्रबंधकीय कौशल

एक कौशल एक व्यक्ति के ज्ञान को क्रियाओं में रूपांतरण करने की क्षमता बढ़ता है। जरूरी नहीं कि कौशल जन्मजात हो। इसे अभ्यास के माध्यम से और अपने स्वयं के व्यक्तिगत अनुभव और पृष्ठभूमि से संबंधित शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। अपनी भूमिकाओं का सफलतापूर्वक निर्वहन करने में सक्षम होने के लिए, एक प्रबंधक के पास तीन प्रमुख कौशल होने चाहिए,ये वैचारिक कौशल, मानव संबंध कौशल और तकनीकी कौशल हैं। वैचारिक कौशल विचारों से संबंधित है, चीजों के साथ तकनीकी कौशल और लोगों के साथ मानवीय कौशल। जबकि अच्छे निर्णय लेने के लिए वैचारिक और तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है। इसके निम्न तीन प्रकार होते हैं—

8.3.2.1 वैचारिक कौशल

पर्यावरण और उसमें होने वाले परिवर्तनों का आकलन करने के लिए एक प्रबंधक की क्षमता को संगठन और उसके भविष्य के बारे में एक व्यापक और दूरदर्शी दृष्टिकोण, सार में सोचने की क्षमता, एक स्थिति में काम करने वाली ताकतों का विश्लेषण करने की उनकी क्षमता, उनकी रचनात्मक और अभिनव क्षमता और उनकी क्षमता को संदर्भित करता है। संक्षेप में, यह पर्यावरण, संगठन और अपनी नौकरी की अवधारणा करने की उसकी क्षमता है, ताकि वह अपने संगठन के लिए, अपने लिए और अपनी टीम के लिए उचित लक्ष्य निर्धारित कर सके। संगठन में जिम्मेदारी के उच्च पदों तक पहुंचने के बाद यह कौशल महत्व में वृद्धि करने लगता है।

8.3.2.2 तकनीकी कौशल

तकनीकी कौशल से तात्पर्य है व्यक्ति के आसपास जितने भी तकनीक है उसका इस्तेमाल करना, अपने जीवन में उसका सुचारू ढंग से उपयोग करना ताकि तकनीकी कौशल को वह अपने जीवन में सम्मिलित कर सकें। यदि हम दृष्टिबाधितो के लिए तकनीकी कौशल की बात करें तो सहायक प्रौद्योगिकी एक व्यापक संकल्पना है जिसमें सहायक और अनुकूली उपकरणों के साथ–साथ निर्देशात्मक सेवाएं शामिल हैं जो संचार एवं अधिगम के द्वारा उनको समाज में समावेशित करने में सहायक हो सकें। इसमें आधुनिक उपकरण जैसे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण जैसे– मोबाइल उपकरण और पोर्टेबल नोटटेकर शामिल हो सकते हैं; कंप्यूटर एक्सेस जैसे आवर्धन सॉफ्टवेयर, स्क्रीन रीडर और कीबोर्ड परंपरागत तकनीक उपकरण जैसे एबेकस, एक ब्रेलर, सक्रिय शिक्षण सामग्री (म.ह., लिटिल रूमो) और ऑप्टिकल उपकरण शामिल है।

8.3.2.3 मानव संबंध कौशल

मानव संबंध कौशल से तात्पर्य है कि ,समाज के साथ उचित व्यवहार स्थापित करना। यह कौशल प्रबंधक की पर्याप्त क्षमता को विकसित करता है। सार्थक व्यावसायिक और व्यक्तिगत संबंधों के विकास के लिए मानव संबंधों की क्षमता और कौशल आवश्यक हैं। ये कौशल कर्मचारियों को सकारात्मक वातावरण बनाने, सहयोग बढ़ाने और उत्पादकता में सुधार करने में मदद कर सकते हैं। आप अपने मानवीय संबंध कौशल को विकसित करके अपने व्यवसाय, नेतृत्व शैली और संचार में सुधार कर सकते हैं।

8.3.3 प्रतिपूरक कौशल

प्रतिपूरक कौशलों का होना एक दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिए अत्यंत ही आवश्यक है। प्रतिपूरक कौशल में अवधारणा विकास सहित मुख्य पाठ्यक्रम तक पहुँचने के लिए आवश्यक कौशल शामिल हैं। संचार मोड, संगठन और अध्ययन कौशल, प्रिंट सामग्री तक पहुँच और ब्रेल, स्पर्श ग्राफिक्स, वस्तु और/या स्पर्श प्रतीकों, संकेत भाषा, और ऑडियो सामग्री का उपयोग।

8.3.4 व्यक्तिगत स्वच्छता कौशल

महान दार्शनिक अरस्तु का कथन है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निवास होता है। अतः हर व्यक्ति को अपनी स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए और दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिए यह बहुत जरूरी होता है। व्यक्तिगत स्वच्छता स्वास्थ्य और कल्याण को बनाए रखने के लिए अपने शरीर और कपड़ों की स्वच्छता बनाए रखने को संदर्भित करती है। इसमें आत्म–देखभाल के सामान्य क्षेत्रों से संबंधित कई अलग–अलग गतिविधियाँ शामिल हैं जैसे– धोना या स्नान करना, जिसमें शौचालय का उपयोग करने के बाद खुद को साफ करना, मुंह की उचित सफाई करना, संवारना और कपड़े पहनना, और कपड़ों को साफ रखना शामिल है। नहाना, कपड़े पहनना शौचालय का उपयोग करना दैनिक जीवन की गतिविधियाँ (ए. डी. एल.) मानी जाती हैं। स्वच्छता गतिविधियों को वर्गीकृत किया जा सकता है जैसे– घर और रोजमर्रा की स्वच्छता, व्यक्तिगत स्वच्छता, चिकित्सा स्वच्छता, खाद्य स्वच्छता। घर और हर दिन की स्वच्छता में हाथ धोना, घर की स्वच्छता शामिल हैं। स्वच्छता एक व्यापक शब्द है। इसमें ऐसी व्यक्तिगत आदतें शामिल हैं जैसे कि स्नान करना, हाथ धोना, नाखून काटना, कपड़े धोना आदि। इसमें बाथरूम सुविधाओं सहित घर और कार्यस्थल को साफ रखने पर भी ध्यान देना शामिल है। नियमित स्वच्छता प्रथाओं के पालन को अक्सर सामाजिक रूप से जिम्मेदार और सम्मानजनक व्यवहार के रूप में माना जाता है।

8.3.5 समय प्रबंधन कौशल

समय प्रबंधन दिव्यांग छात्र के लिए बहुत ही जरूरी है। उसे यह ज्ञात होना चाहिए कि वह किस समय क्या काम करें। समय प्रबंधन का महत्व समय को अर्थ निर्धारित करने की क्षमता से है, जिससे लोग अपने समय का अधिकतम लाभ उठा सकते हो। अच्छा समय प्रबंधन कौशल विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण कार्य करने और अपने लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने में मदद करता है। समय प्रबंधन छात्रों को यह समझने में भी मदद करता है कि वे अपनी दिनचर्या के सभी काम समय पर समाप्त करें। जो उनके सामाजिक विकास में सहायक हो सकते है।

8.3.6 मनोरंजन कौशल

मनोरंजन और आराम का एक व्यक्ति के जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक व्यक्ति के जीवन को रोचक बनाता है। व्यक्ति अपना मनोरंजन कई प्रकार से करता है। मनोरंजन एक व्यक्ति को खाली समय का सदुपयोग करने में मदद करता है जिससे उनकी सोच सकारात्मक रहती है। एक व्यक्ति अपना मनोरंजन विभिन्न प्रकार से कर सकता है जैसे–खेल कर, किताब पढ़कर कर या अन्य किसी साधन का उपयोग करके। दूसरों को देखने में असमर्थ होने से मनोरंजन के विकल्पों के बारे में जागरूकता कम हो जाती है। मनोरंजन कौशल में निर्देश यह सुनिश्चित करता है कि दृष्टिबाधित छात्रों को संगठित और व्यक्तिगत दोनों तरह की शारीरिक और अवकाश–समय गतिविधियों का पता लगाने, अनुभव करने और चुनने के अवसर मिलेंगे, जिनका वे आनंद लेते हैं। इस निर्देश को जीवन भर कौशल के विकास पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

8.3.6 गृह प्रबंधन कौशल

गृह प्रबंधन, गृह की देखरेख, गृह से संबंधित विभिन्न कार्यों और जिम्मेदारियों के आयोजन की प्रक्रिया है। घर का प्रबंधक घर के समग्र प्रबंधन के लिए जिम्मेदार होता है। इसमें बजट, समय निर्धारण, सफाई, खाना जैसे कार्य शामिल हो सकते हैं। इस भूमिका में सफल होने के लिए, संगठन, समय प्रबंधन और बहु–कार्य सहित विभिन्न प्रकार के कौशल होना महत्वपूर्ण है। घर के प्रबंधन का उद्देश्य इसमें शामिल सभी लोगों के लिए जीवन को आसान और कम तनावपूर्ण बनाना है। दृष्टिबाधितो के लिए यह बहुत ही आवश्यक कौशल है इसके बिना वे अपना जीवन यापन करना कठिन हो सकता है।

8.3.7 आत्म निर्णय कौशल

आत्म निर्णय दिव्यांग ही नहीं अपितु सकलांग व्यक्ति के लिए भी जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यदि कोई व्यक्ति आत्म निर्णय लेने में सक्षम नहीं है तो वह अपनी सफलता की पहली सीढ़ी ही नहीं चढ़ सकेगा। आत्म निर्णय में चुनाव करना, निर्णय लेना, समस्या समाधान, व्यक्तिगत वकालत और लक्ष्य निर्धारण शामिल हैं। दृष्टिबाधित छात्रों के पास अक्सर उन विशिष्ट कौशलों को विकसित करने और अभ्यास करने के कम अवसर होते हैं जो आत्म निर्णय की ओर ले जाते हैं। जिन छात्रों के पास आत्म निर्णय कौशल है, वे अपने जीवन को अधिक नियंत्रित कर सकते हैं।

8.3.8 सामाजिक अंतःक्रिया कौशल

महान दार्शनिक अरस्तु के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। कोई भी व्यक्ति अकेला नहीं रह सकता, क्योंकि अकेला रहना एक बहुत बड़ी साधना है। जो लोग समाज या परिवार में रहते हैं वे इसलिए रहते हैं कि उन्हें एक दूसरे की सहायता की आवश्यकता होती समाज में उचित सामंजस्य बैठाने के लिए हमें कुछ कौशलों की आवश्यकता होती है सामाजिक कौशल उनमें से एक कौशल है। सामाजिक कौशल में शरीर की भाषा, हाव–भाव, चेहरे के भाव और व्यक्तिगत स्थान के बारे में जागरूकता शामिल है। निर्देश में पारस्परिक संबंधों, आत्म–नियंत्रण और मानव कामुकता के बारे में सीखना भी शामिल है। लगभग सभी सामाजिक कौशल अन्य लोगों द्वारा दृष्टि का उपयोग करके सीखे जाते हैं। विद्यालय, कार्य और मनोरंजक परिवेश में सामाजिक संपर्क कौशल में निर्देश महत्वपूर्ण है। उचित सामाजिक कौशल हमें एक परिपूर्ण जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

बोध प्रश्न– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अंत में दिए गए बोध उत्तरों से कीजिए।

प्रश्न 01– समाज में उचित सामंजस्य बैठाने के लिए किस कौशल की आवश्यकता होती है ?

क) वैचारिक कौशल (ख) समय प्रबंधन कौशल ग) प्रतिपूरक कौशल घ) सामाजिक अंतःक्रिया कौशल

....

....

प्रश्न 02– स्वतंत्र रूप से जीने के लिए आवश्यक कौशलों के संग्रह का नाम क्या है?

क) कार्यक्षमता कौशल (ख) कार्यात्मक उपाय ग) दैनिक जीवन की गतिविधियाँ घ) कौशल उपाय

....

....

प्रश्न 03– कौन सा शब्द किराने की खरीदारी और खाना पकाने जैसे कौशल का वर्णन करता है, जो आमतौर पर सीखा जाता है, जिसे स्वतंत्र रूप से जीवन जीने के लिए आवश्यक माना जाता है?

क) व्यक्तिगत स्वच्छता कौशल(ख) वैचारिक कौशल ग) गृह प्रबंधन कौशल घ) आत्मनिर्णय कौशल

....

....

8.4 संवेदी दक्षता

संवेदी दक्षता किसी व्यक्ति को अपनी इंद्रियों का उपयोग करके पर्यावरण तक पहुँचने की क्षमता का विकास करता है। जो व्यक्ति देख सकता है, उसके लिए दृश्य बोध उस जानकारी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसे अवशोषित और संसाधित किया जाता है। दृष्टिबाधित व्यक्तियों को पर्यावरण से कुछ अलग तरीके से जानकारी प्राप्त करना सीखना चाहिए। अल्प दृष्टि वाला छात्र अपने पसंदीदा रेस्तरां में मेनू तक पहुँचने के लिए हाथ में पकड़े जाने वाले आवर्धक का उपयोग करके अपने उद्देश्य को पूर्ण कर सकता है। एक व्यक्ति जो दृष्टिबाधित है, वह चलिष्णुता की आवाज़ों को पहचानना सीख सकता है ताकि यह समझ सके कि एक चौराहे से यातायात कैसे आगे बढ़ रहा है। अन्य छात्र जो बधिर है, दिन का समय निर्धारित करने के लिए घड़ी पर कंपन पैटर्न को पहचानना सीख सकता है। संवेदी दक्षता में सभी पाँच इंद्रियों का उपयोग करने के लिए विशिष्ट रणनीतियों को सीखना शामिल है। अनुस्थिति और चलिष्णुता प्रशिक्षक और दृष्टिबाधित छात्रों के शिक्षक दोनों ही छात्रों को संवेदी दक्षता स्थापित करने के लिए आवश्यक कौशल सीखने के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

8.4.1 दृष्टि

संवेदी दक्षता में एक छात्र अवशिष्ट दृष्टि का प्रभावी ढंग से उपयोग करना सीखना शामिल है। इसमें विशिष्ट रणनीतियों को सीखना शामिल हो सकता है, जैसे कि किसी प्रकाश की उत्पत्ति को कैसे निर्धारित किया जाए या किसी वस्तु की गति को कैसे ट्रैक किया जाए। इसमें छात्र को शेष दृष्टि की कार्यक्षमता को अधिकतम करने के लिए विशिष्ट अनुकूलन भी शामिल हो सकता है। उदाहरणों में सड़क के संकेतों को देखने के लिए एक मोनोकुलर उपकरण का उपयोग करना या सीढ़ियों पर उच्च कंट्रास्ट चिह्न लगाना शामिल हो सकता है।

8.4.2 श्रवण

श्रवण की कुशलतापूर्वक और प्रभावी ढंग से उपयोग करने में पाठ्यपुस्तक के ऑडियो संस्करण से सामग्री को सुनना और अवशोषित करके सीखना, एक व्यस्त चौराहे पर यातायात के पैटर्न को सुनना,या हल्के से मध्यम बहरेपन वाले व्यक्ति में अवशिष्ट श्रवण को अधिकतम करने के लिए श्रवण यंत्र का उपयोग करना शामिल हो सकता है।

8.4.3 गंध एवं स्वाद

गंध और स्वाद के माध्यम से संवेदी दक्षता की जा सकती है जैसे–भोजन की पहचान और यह सीखना शामिल कि क्या भोजन ताजा है या खराब है। यात्रा करते समय पर्यावरणीय संकेतों जैसे–गंध का उपयोग करना, या उन कपड़ों की पहचान करना जिन्हें धोने की आवश्यकता है।

8.4.4 काइनेस्थेटिक, प्रोप्रियोसेप्टिव और वेस्टिबुलर इंद्रियां

ये इंद्रियां किसी व्यक्ति के संतुलन और जागरूकता की भावना को संदर्भित करती हैं कि उसके शरीर के अंग एक–दूसरे के संबंध में कहाँ हैं। इस क्षेत्र में संवेदी दक्षता, स्वतंत्र यात्रा, खेल और अन्य शारीरिक गतिविधियों

और सामाजिक स्थितियों में उपयुक्त शारीरिक भाषा प्रदर्शित करने के लिए सीखने के लिए फायदेमंद हो सकती है।

8.4.5 संवेदी एकीकरण

अल्प दृष्टि वाले छात्रों को यह भी सीखना चाहिए कि कार्यात्मक उद्देश्यों के लिए अपनी इंद्रियों के उपयोग को कैसे एकीकृत किया जाए, उदाहरण के लिए, एक छात्र अपने पसंदीदा शिक्षक को उसकी आवाज़ और उसके द्वारा हमेशा पहने जाने वाले चमकीले, गहरे रंग के वस्त्र से पहचानना सीख सकता है। एक अन्य छात्र जोर की गपशप की आवाज़ और उस दिन परोसे जा रहे खाने की गंध से यह बता सकता है कि वह अपने स्कूल के कैफेटेरिया में कब आया है।

बोध प्रश्नः–निम्न बोध प्रश्नों के उत्तर दीजिए। अपने उत्तरों के मिलान इकाई के अंत में दिए गए आदर्श उत्तरों से कीजिए।

प्रश्न 04 किसी व्यक्ति को अपनी इंद्रियों का उपयोग कर के पर्यावरण तक पहुँचने की क्षमता को क्या कहते हैं?

....

....

प्रश्न 05– कौन सी इंद्रिय द्वारा सुनकर जानकारी इकट्ठा कर सकते हैं ?

....

....

8.5 इकाई सारांश

किसी व्यक्ति के जीवन के सभी घटकों में संवेदी दक्षता आवश्यक है, और यह वयस्क जीवन में परिवर्तन के लिए भी आवश्यक है। संवेदी कौशल सीखने को विस्तारित मूल पाठ्यक्रम के कई अन्य घटकों के साथ एकीकृत किया जा सकता है, जैसे कि स्वतंत्र जीवन कौशल और प्रतिपूरक कौशल, ताकि परिवर्तन के लिए तैयार किया जा सके। एक छात्र जो स्कूल में अपने वस्तु को खोजने के लिए स्पर्श इंद्रि का उपयोग करना सीखता है, वह संगठनात्मक कौशल के घटकों और अपने व्यक्तिगत सामानों पर नज़र रखने के तरीकों को भी सीख रहा है। मूंगफली का मक्खन और जेली सैंडविच बनाना सीखने वाली एक छात्रा जेली और मूंगफली के मक्खन के बीच अंतर करने के लिए संवेदी कौशल का उपयोग कर सकता है, और ये संवेदी कौशल उसके भोजन की तैयारी और दैनिक जीवन कौशल में योगदान दे सकते हैं। कपड़ों के विभिन्न प्रकारों का स्पर्श सीखने वाला एक छात्र सीखने का कौशल है जो नौकरी के साक्षात्कार के लिए एक पोशाक का चयन करने में मदद करेगा। संवेदी कौशल सभी क्षमता स्तरों के छात्रों के लिए प्रासंगिक हैं, वे जीवन कौशल हर व्यक्ति के लिए समान रूप से आवश्यक हैं। संवेदी कौशल एक छात्र को शरीर और पर्यावरण के प्रति जागरूकता के साथ जीवन में आगे बढ़ने में मदद करेगा, जो दुनिया में अधिक स्वतंत्रता और आत्मविश्वास विकसित करने की कुंजी है। ये कौशल दृष्टिबाधित व्यक्तियों को अपने आसपास की दुनिया से जुड़ने और बातचीत करने में मदद करते हैं। बच्चों और वयस्कों को सक्रिय शिक्षार्थी बनने के लिए ,सुरक्षा, आत्मविश्वास और भावना की समझ की आवश्यकता है।

8.6 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

उत्तर 01- घ) सामाजिक अंतःक्रिया कौशल

उत्तर 02- ग)दैनिक जीवन की गतिविधियाँ

उत्तर 03- ग) गृह प्रबंधन कौशल

उत्तर 04- संवेदी दक्षता

उत्तर 05- श्रवण इंद्रिय

8.7 अभ्यास कार्य

प्रश्न 01-कुछ मुख्य दैनिक जीवन कौशल के बारे में चर्चा कीजिए।

प्रश्न 02-संवेदी दक्षता क्या होती है और इसका आपके जीवन में क्या महत्व है?

प्रश्न 03-प्रतिपूरक कौशल से आप क्या समझते हैं और दृष्टिबाधित छात्र के जीवन में इसका क्या महत्व है इस पर चर्चा कीजिए ?

प्रश्न 04-प्रबंधकीय कौशल के तीन प्रकारों के नाम लिखिए।

8.8 चर्चा के बिंदु/स्पष्टीकरण

प्रश्न 01—छात्राध्यापक आपस में दैनिक जीवन कौशल के बारे में चर्चा करेंगे।

प्रश्न 02—छात्राध्यापक संवेदी एकीकरण की महत्वता पर चर्चा करेंगे।

प्रश्न 03—छात्राध्यापक दृष्टिबाधित छात्र के जीवन में संवेदी दक्षता का क्या महत्व है? उसके बारे में चर्चा करें दृष्टिबाधित के बारे में चर्चा करेंगे।

प्रश्न 04—छात्राध्यापक दृष्टिबाधित छात्र के जीवन में दैनिक जीवन कौशल का क्या महत्व ह? उसके बारे में चर्चा करें करेंगे।

8.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Mishra,P.Khan S.A,(2020): PRAJNA-A compendium in Disability Rehabilitation:Kanishka Publishers,New Delhi.
- Wilings,C.(2015):Tactile Graphic Resources.Retrieved from https://teachingvisuallyimpaired.
- Mohit A,Jacob N,Mittal A.K. Mittal S.R. (2019): Visual Disability-AResource Book for Teachers,Vol.2:NIEPVD,Dehradun.

इकाई–9 सामाजिक संपर्क कौशल शिक्षण की तकनीकें

इकाई संरचना

9.1 परिचय
9.2 उद्देश्य
9.3 सामाजिक संपर्क कौशल एवं इसका महत्व
9.4 सामाजिक संपर्क कौशल शिक्षण के तरीके
9.5 कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सीखने के तरीके
9.5.1 कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सिखाने के चरण
9.6 कुछ ध्यान देने योग्य बातें
9.7 इकाई सारांश
9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर
9.9 अभ्यास कार्य
9.10 चर्चा के बिंदु/ स्पष्टीकरण
9.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 परिचय

हमने यह पढ़ा और सुना है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्यों को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समाज पर ही आश्रित रहना होता है। जीवन की मूल आवश्यकताओं –रोटी, कपड़ा व मकान के अलावा भी तमाम तरह की आवश्यकताएं हैं जो समाज के माध्यम से ही हमें प्राप्त होता है। आपने यह भी अवश्य अनुभव किया होगा कि कुछ व्यक्ति कम क्षमता के बावजूद भी सामाजिक तौर पर काफी सफ़ल होते हैं पर वहीं अन्य व्यक्ति अधिक क्षमतावान होने के बाद भी उतना सफल नहीं हो पाते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा क्यों होता है? दरअसल यह आपका सामाजिक कौशल है जो आपको जीवन के मार्ग पर सफलताएँ देता है। हम सभी के लिए यह आवश्यक है कि हमें सामाजिक संपर्क कौशलों को सीखना चाहिए एवं उनका अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करना चाहिए। इस ईकाई में हम दिव्यांगजनों के सामाजिक कौशल के विकास के विभिन्न पहलूओं पर चर्चा करेगें।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत छात्र

- सामाजिक कौशलों की पुनरावृत्ति करना सीख जायेंगे।
- विभिन्न सामाजिक संपर्क कौशल शिक्षण के तरीके के बारे में जान जायेंगे।
- कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सिखाने की तकनीकों को समझ सकेंगे।

9.3 सामाजिक संपर्क कौशल एवं इसका महत्व

जैसा कि हमने अभी जाना कि सामाजिक संपर्क कौशलों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ये वे कौशल हैं जो हमें अन्य सामाजिक प्राणियों एवं अपने पारिस्थितिकी के साथ परस्पर संपर्क एवं संवाद स्थापित करने में सहायता प्रदान करते हैं। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संगठन (APA) के अनुसार 'सामाजिक कौशल सीखी हुई क्षमताएँ हैं जो एक व्यक्ति को सामाजिक सन्दर्भ में सक्षम और समुचित तरीके से परस्पर क्रिया में सहायक होता है'। सकारात्मक आत्मसम्मान विकसित करने, आपसी समन्वय और सामाजिक स्वीकृति के लिए प्रभावी संपर्क कौशल

अति महत्वपूर्ण है। सामाजिक संपर्क कौशल मौखिक व अमौखिक दोनों प्रकार के हो सकते हैं। एक दिव्यांग व्यक्ति को यद्यपि उनकी दिव्यांगता के कारण सामाजिक संपर्क कौशलों के प्रशिक्षण एवं अभ्यास में परेशानी होती है किन्तु, उचित शिक्षण विधियों एवं तकनीकों के माध्यम से हम प्रभावी ढंग से प्रशिक्षण में उनकी सहायता कर सकते हैं। उचित माध्यमों के प्रयोग से हम दिव्यांग व्यक्तियों को भी प्रशिक्षित कर सकते हैं, ताकि उनके जीवन की समस्याओं को कम से कम किया जा सके और वे भी समाज में पूर्ण रूप से सहभागी बन सकें। सामाजिक संपर्क कौशल उम्र और वातावरण के अनुसार अलग हो सकते हैं। बच्चों के लिए प्रमुख सामाजिक संपर्क कौशलों को इन कौशलों में सूचीबद्ध किया जा सकता है:–

- सहभाजन (Sharing)
- सहयोग (Cooperation)
- श्रवण करना (Listening)
- निर्देशों का पालन (Following Directions)
- व्यक्तिगत स्थान (Personal Space)
- आँखों से संपर्क (Eye Contact)
- शिष्टाचार (Manner)
- आत्म–जागरूकता (Self& Awareness)
- स्व–प्रबंधन (Self& Management)
- सामाजिक जागरूकता (Social Awareness)
- सहसम्बन्ध कौशल (Relationship Skills)
- निर्णय लेने की क्षमता (Decision Making Ability)

9.4 सामाजिक संपर्क कौशल शिक्षण के तरीके

जिस प्रकार से अन्य क्षेत्रों में अधिगम की प्रक्रिया जन्म के उपरांत ही शुरू हो जाती है ठीक उसी प्रकार से सामाजिक संपर्क कौशलों को सीखने की प्रक्रिया भी शुरू हो जाती है। हमें शुरू से ही इन कौशलों के शिक्षण पर ध्यान देना चाहिए। यद्यपि दिव्यांगता के प्रभाव या किन्हीं अन्य कारणों से होने वाली विलंबता को ध्यान में रखते हुए हमें अविलम्ब इन कौशलों के शिक्षण/प्रशिक्षण पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए ताकि उन्हें अतिशीघ्र समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके। सामाजिक संपर्क कौशलों के शिक्षण/प्रशिक्षण के लिए हम निम्नलिखित बिन्दुओं का अनुसरण कर सकते हैं :–

सामाजिक परस्पर क्रियाओं की व्याख्या

- विभिन्न कौशलों एवं परिस्थितियों को समझाने के लिए सामाजिक कथाओं का प्रयोग
- परिस्थिति के अदृश्य नियमों का प्रारूपण
- कौशलों को छोटे–छोटे टुकड़ों में तोड़ना (कार्य–विश्लेषण)
- शिक्षार्थी को प्रत्यक्ष तौर पर परिस्थिति के बारे में मौखिक रूप से बताना
- परिस्थिति के अनुसार इससे संबंधित विभिन्न चरणों का दृश्य संकेत काड्र्स के द्वारा सहायता करना।
- कौशल शिक्षण के दौरान बनाये गए वीडियो का विश्लेषण करना।
- विशिष्ट कौशल से संबंधित चित्र–पूर्ण पुस्तक का साथ में पठन करना।

- अपने स्वयं के सामाजिक कौशलों को शिक्षार्थी को बताना (उदाहरणः क्या मुझे भी मेरी बारी मिलेगी?)
- शिक्षार्थी की भाषा में लिखित संवाद प्रदान करना जिसे वे सामाजिक परस्पर क्रिया के दौरान प्रयोग कर सकें।

धैर्य रखना– प्रत्येक व्यक्ति में सामाजिक संपर्क कौशलों का विकास तुरंत नहीं होता है। परिस्थिति वश इसमें समय लग सकता है। इन कौशलों के अदृश्य नियमों को इन्हें बार–बार याद दिलाने एवं अभ्यास करने के कहना होगा। समय के साथ इन कौशलों में सुघरता आएगी। इस पूरी अवधि में दोनों का धैर्य रखना आवश्यक है.

लगातार अभ्यास– 'करतकरत अभ्यास ते जड़ मति होत सुजान, रसरी आवत जात ते सिल पर पड़त निशान '– हमने यह दोहा अवश्य पढ़ा है। इसका अभिप्राय है कि लगातार अभ्यास से हम अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि शिक्षार्थी को अभ्यास के अवसर लगातार प्रदान किये जाएँ। साथ ही साथ कुछ तरीके जो इसके लिए उपयोग में लाये जा सकते हैं वे निम्नवत हैः–

- सामाजिक परिदृश्य से संबंधित नुक्कड़ नाटक इत्यादि।
- रुचि के अनुरूप विभिन्न शिविरों (विज्ञान शिविर, सामाजिक कौशल शिविर,खेल आदि) में शामिल होना।
- विविध प्रकार के सामाजिक कौशल क्रियाओं को करना।
- जिस कार्य में कौशल की ज्यादा और अभी आवश्यकता है, उनका विशेष अभ्यास करना।
- विभिन्न वातावरण, व्यक्ति एवं परिस्थिति से परस्पर क्रिया का अवसर प्रदान करना ताकि अभ्यास किया जा सके।

मॉडलिंग का प्रयोग–

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि हम सब के लिए पहला विद्यालय हमारा परिवार होता है। बच्चे सबसे पहले अपने घर में चीज़ों को सीखना प्रारंभ करते हैं। अतः यह आवश्यक है कि हम किसी कौशल के प्रशिक्षण के दौरान एक सफल मॉडल का कार्य करें। हम जब किसी चीज़ को करेंगे तो निःसंदेह शिक्षार्थी उसी अनुरूप उसे दुहराने की कोशिश करेंगे।इस कार्य के लिए हम वीडियो का प्रयोग भी कर सकते हैं।

आवश्यकतानुसार सहयोग (Prompt) –

शिक्षण के क्रम में कई सारे चरण शामिल होते हैं, कई अदृश्य नियम भी होते है। हर के लिए एक बार में किसी कौशल में पारंगत होना सम्भव नहीं है। अतः, यह आवश्यक है कि आवश्यकतानुसार शिक्षार्थी को उचित सहयोग प्रदान किया जाए।

प्रतिक्रिया प्रदान करें एवं प्रोत्साहन व प्रशंसा – कौशल प्रशिक्षण के अंत में प्रतिक्रिया देना भी आवश्यक है, ताकि भविष्य में उसमें सुधार किया जा सके। शिक्षार्थी के प्रयास को, चाहे उसमें कमियां रह गयी हों, प्रोत्साहित करना नहीं भूलना चाहिए। उनके हर प्रयास के लिए वे प्रशंसा के पात्र हैं।

अगर इन बातों पर ध्यान दिया गया तो निःसंदेह हम उचित कौशल को सही तरीके से सिखाने में सक्षम होंगे।

बोध प्रश्न :–

नीचं दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. सामाजिक संपर्क कौशल से आप क्या समझते हैं ?

....

....

प्रश्न 2. किन्हीं 4 सामाजिक कौशलों की सूची बनायें.

....

....

प्रश्न 3.अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संगठन (APA) के अनुसार सामाजिक संपर्क कौशल की व्याख्या कीजिए।

....
....

9.5 कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सीखने के तरीके

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि अब हम पूर्ण समावेशन की और बढ़ चुके हैं। संविधान के अलावा लागू किये गए विभिन्न अधिनियमों (शिक्षा का अधिकार अधिनियम – 2009 , दिव्यांग जन अधिकार अधिनियम–2016, आदि) के कारण अब यथार्थ में हर बच्चों को शिक्षा का समान अवसर उपलब्ध है। एक समावेशी वातावरण वाले कक्षा–कक्ष में शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ बढ़ जाती है, इसके लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों को इसके लिए समुचित तौर पर शिक्षण–कौशलों से सुसज्जित होना चाहिए। कक्षा–कक्ष में भी विद्यार्थियों को सामाजिक संपर्क कौशलों को विभिन्न क्रियाओं के माध्यम से सिखाया जा सकता है। इनको निम्न बिन्दुओं से समझा जा सकता हैः–

मॉडल का प्रयोग (Modelling)– अगर हम चाहते हैं कि बच्चे किसी अपेक्षित कौशल को सीखें तो यह आवश्यक है कि हम पहले स्वयं उसे करें। हमें देख कर बच्चे उसे सीखेंगे। इस क्रम में एक दूसरे के सम्मान का भाव भी उत्पन्न होगा और अपेक्षित परस्पर सम्पर्क कौशल का विकास होगा।मॉडलिंग के लिए संबंधित वीडियो का भी प्रयोग किया जा सकता है। शिक्षण क्रिया के दौरान उसका वीडियो बना कर भी छात्रों को दिखाया जा सकता है। इसके प्रदर्शन से संबंधित छात्र को अपनी त्रुटि का अहसास होगा एवं वो उसमें सुधार कर सकते है। अन्य छात्रों को भी ऐसी त्रुटि न करने की शिक्षा मिलेगी।

कक्षा–कक्ष कार्य सौंपना (Assigning Classroom jobs) – कक्षा–कक्ष कार्यों को विद्यार्थियों को सौंपने से उनके अन्दर ज़िम्मेदारी, आत्म–विश्वास, मिल कर काम करना एवं नेतृत्व कौशल का विकास होता है।

रोल–प्ले सामाजिक स्थिति (**Role &play social situations**)– किसी भी संकल्पना को सीखने के बाद विभिन्न माध्यमों से उसका वास्तविक जीवन/ प्रायोगिक तौर पर अभ्यास किया जाता है। सामाजिक संपर्क कौशलों के अधिगम के लिए भी यह उतना ही सटीक है। हमें अपने शिक्षार्थियों को सामाजिक संपर्क कौशल सीखने एवं अभ्यास करने का अवसर प्रदान करना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए रोल–प्ले एक प्रभावी माध्यम है।

पेन–मित्र (Pen&pals)– इस माध्यम द्वारा शिक्षार्थी अपने सामाजिक संपर्क कौशलों को लिखित सम्प्रेषण के रूप में व्यक्त कर सकते हैं। विशेष तौर पर अंतर्मुखी शिक्षार्थियों के लिए अपनी भावनाओं एवं विचारों की अभिव्यक्ति का यह एक प्रभावी तरीका है। विशेष बच्चों (जो बोल कर व सामने से अपनी बात को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं हैं) के लिए भी यह एक प्रभावी तरीका है।

बड़े व छोटे समूह क्रियाकलाप (Large and small group activities)– बड़े एवं छोटे समूहों के विभिन्न क्रियाकलापों से अकादमिक लाभ के अतिरिक्त अन्य कई कौशलों यथा सम्मिलित कार्रवाई (Teamwork), लक्ष्य–निर्धारण तथा उत्तरदायित्व का विकास होता है। चुनिंदा तौर पर समूह कार्य शांत एवं अंतर्मुखी शिक्षार्थियों को बहिर्मुखी शिक्षार्थियों के साथ घुलने–मिलने का अवसर प्रदान करते हैं और इस क्रम में सम्मानजनक व्यवहार मज़बूत होता है। सामूहिक चर्चा , समूह परियोजना व खेलकूद बड़े समूह क्रियाओं के उदाहरण है। छोटे समूह क्रियाओं को अधिक विस्तृत कार्यों एवं क्रियाकलापों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

बड़े मित्र (BigBuddies) एवं समकक्ष उपदेशक (PeerMentors)— अपने समकक्षों से परस्पर संपर्क एक अति महत्वपूर्ण सामाजिक संपर्क कौशल है। अपने से बड़े , बराबर वालों और छोटों से परस्पर संपर्क करने के संपर्क कौशल को सीखना बहुत आवश्यक है। इस प्रणाली से विभिन्न आयु—समूह के शिक्षार्थियों से सम्प्रेषण एवं उनका सम्मान करने के कौशल को बड़े ही सुविधाज़नक तौर पर सिखाया जा सकता है। विभिन्न क्रियाकलापों के लिए दो या अधिक शिक्षार्थियों को साथ में जोड़ा जाता है। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस समूह को बनाने में शिक्षार्थियों की क्षमताओं व रुचियों को ध्यान में रखा जाना चाहिए एवं अपेक्षित कार्य, परिणाम आवश्यक दिशा—निर्देश को पहले ही तय कर लिया जाये।

कक्षा कहानियाँ (Class stories)— अनगिनत कहानियाँ हमारे सामने हैं जो प्रत्यक्ष एवं परोक्ष तरीके से सामाजिक संपर्क कौशलों की शिक्षा प्रदान करते है। हमारे यहाँ दादियों व नानियों की कहानियों की भरमार हैं। हमारे पौराणिक ग्रंथों में मूल्य शिक्षा वर्धन की अनंत कहानियाँ उपलब्ध हैं। इन कहानियों को कक्षा—कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशलों की शिक्षा प्रदान करने में प्रयोग किया जा सकता है।

कक्षा संगोष्ठी (Class meeting)— कूटनीति, नेतृत्व क्षमता ,समस्याओं का समाधान व उत्तरदायित्व शिक्षण के लिए कक्षा संगोष्ठी एक बेहतर तरीका है। इसे साप्ताहिक, मासिक या आवश्यकतानुसार आयोजित किया जा सकता है जिसमें शिक्षार्थियों को कक्षा—कक्ष के समसामयिक घटनाओं एवं मुद्दों पर चर्चा करने को कहा जाता है। इसकी शुरुआत से पहले आवश्यक दिशा—निर्देश दिए जाने चाहिए। इस प्रक्रिया में कक्षा—कक्ष से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए न कि व्यक्तिगत मुद्दों पर जिससे वे अपना समायोजन कर सकें।

नियमित संयुक्त किया कार्यक्रम (Joint Action Routines)— यह शिक्षार्थियों के द्वारा पुनरावृत्ति वाले कौशलों के लिए सम्भावित पैटर्न को स्थापित करते हैं। यह सामाजिक स्थिति में किये जाने वाले वास्तविक व्यवहारों का प्रदर्शन करते हैं ,जिससे कि इन कौशलों की इन्हें आदत पड़ जाये। एक कौशल को सिखाते समय यह दुविधा एवं विकर्षण को कम कर सकते हैं।

सुस्पष्ट निर्देश (Implicit Instructions)— शिक्षक अपने पाठ्यक्रम प्रत्यक्ष रूप से सामाजिक संपर्क कौशल सिखाने के अलग से समय सुरक्षित कर सकते हैं। अनुसंधान आधारित विभिन्न सुस्पष्ट पाठ सामाजिक विकास के लिए प्रयुक्त हो सकते है। ये कार्यक्रम विद्यालय व कक्षा—कक्ष के लिए एक सामान्य भाषा, अपेक्षित व्यवहार व भविष्य के लक्ष्यों का संग्रह प्रदान करते हैं।

9.5.1 कक्षा—कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सिखाने के चरण

शिक्षकों को भी सामाजिक संपर्क कौशलों को सिखाने के लिए समस्त उपयुक्त कौशलों के बारे में उनके पाठ्यक्रम में नहीं पढ़ाया जाता है। वे भी समय के साथ अन्य सहयोगी एवं अपने अनुभवों से अपने कौशलों को सीखते एवं सुदृढ़ करते हैं। अतः, निम्न त्वरित बिन्दुओं को हम समझ सकते हैं जिसके माध्यम से कक्षा—कक्ष में सकारात्मक सामाजिक संपर्क कौशल के शिक्षण की शुरुआत की जा सकती हैः—

- सुधार वाले उपयुक्त कौशलों का चयन
- लक्ष्य निर्धारण
- सामाजिक कौशलों का शिक्षण
- कौशलों का अभ्यास
- पुनरावृत्ति एवं परावर्तन

बोध प्रश्न :–

नीचं दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 4. बड़े व छोटे समूह क्रियाकलाप से आपका क्या अभिप्राय है?

....

....

प्रश्न 5. 'कक्षा–कक्ष कार्य सौंपना' के लाभ पर प्रकाश डालिए।

....

....

प्रश्न 6. कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सिखाने के 5 चरणों को सूचीबद्ध कीजिए।

....

9.7 इकाई सारांश

हमारे लिए सामाजिक संपर्क कौशलों का ज्ञान अपेक्षित है क्योंकि हमारी सफलता का इससे सीधा सम्बन्ध है। अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संगठन (APA) के अनुसार 'सामाजिक कौशल वे सीखी हुई क्षमताएँ हैं जो एक व्यक्ति को सामाजिक सन्दर्भ में सक्षम और समुचित तरीके से परस्पर क्रिया में सहायक करती है'। इसमें किसी प्रकार की कमी हमारी सफलता को अवरुद्ध कर सकता है। शोधों ने यह सत्यापित किया है कि सामाजिक व भावनात्मक कौशलों का विकास शिक्षार्थियों के अकादमिक व सामाजिक उपलब्धि एवं सफलता को सकारात्मक तरीके से प्रभावित करती हैं। एक समावेशी वातावरण वाले कक्षा–कक्ष में शिक्षकों के लिए चुनौतियाँ बढ़ जाती है। सामाजिक संपर्क कौशलों का शिक्षण हमेशा आसान नहीं होता है। इनके समुचित प्रशिक्षण के लिए हमें धैर्य रहना चाहिए एवं सकारात्मक रूप से विभिन्न उचित तरीकों का प्रयोग करके शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

9.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सामाजिक संपर्क कौशल से आप क्या समझते हैं ?

   उत्तरः ये वे कौशल हैं जो हमें अन्य सामाजिक प्राणियों एवं अपने पारिस्थितिकी के साथ परस्पर संपर्क एवं संवाद स्थापित करने में सहायता करते हैं।

2. किन्हीं 4 सामाजिक कौशलों की सूची बनायें।

   उत्तरः कोई चार

- सहभाजन
- सहयोग
- श्रवण करना
- निर्देशों का पालन
- व्यक्तिगत फ़ासला
- आँखों का संपर्क
- शिष्टाचार
- आत्म–जागरूकता

- स्व–प्रबंधन
- सामाजिक जागरूकता
- सम्बन्ध कौशल
- निर्णय लेने की क्षमता

3. अमेरिकन मनोवैज्ञानिक संगठन (APA) के अनुसार सामाजिक संपर्क कौशल की व्याख्या कीजिए।

उत्तरः 'सामाजिक कौशल सीखी हुई क्षमताएँ हैं जो एक व्यक्ति को सामाजिक सन्दर्भ में सक्षम और समुचित तरीके से परस्पर क्रिया में सहायक होता है।

4. बड़े व छोटे समूह क्रियाकलाप से आपका क्या अभिप्राय है?

उत्तरः बड़े एवं छोटे समूहों के विभिन्न क्रियाकलापों से अकादमिक लाभ के अतिरिक्त अन्य कई कौशलों यथा सम्मिलित कार्रवाई (Teamwork),लक्ष्य–निर्धारण तथा उत्तरदायित्व का विकास होता है. चुनिंदा तौर पर समूह कार्य शांत एवं अंतर्मुखी शिक्षार्थियों को बहिर्मुखी शिक्षार्थियों के साथ घुलने–मिलने का अवसर प्रदान करते हैं और इस क्रम में सम्मानजनक व्यवहार मज़बूत होता है. सामूहिक चर्चा , समूह परियोजना व खेलकूद बड़े समूह क्रियाओं के उदाहरण है। छोटे समूह क्रियाओं को अधिक विस्तृत कार्यों एवं क्रियाकलापों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

5. 'कक्षा–कक्ष कार्य सौंपना' के लाभ पर प्रकाश डालिए।

उत्तरः शिक्षार्थियों में ज़िम्मेदारी, आत्म–विश्वास,मिल कर काम करना एवं नेतृत्व कौशल का विकास होता है।

6. कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशल सिखाने के 5 चरणों को सूचीबद्ध कीजिए।

उत्तरः

- सुधार वाले उपयुक्त कौशलों का चयन
- लक्ष्य निर्धारण
- सामाजिक कौशलों का शिक्षण
- कौशलों का अभ्यास
- पुनरावृत्ति एवं परावर्तन

9.9 अभ्यास कार्य

प्रश्न 1. सामाजिक संपर्क कौशलों से आप क्या समझते हैं ?विवेचना कीजिए।

प्रश्न 2. कक्षा–कक्ष में सामाजिक संपर्क कौशलों के प्रभावी तरीकों की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 3.दिव्यांग जनों के लिए सामाजिक संपर्क कौशलों की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।

9.10 चर्चा के बिंदु/ स्पष्टीकरण

प्रश्न 01–दिव्यांग जनों के लिए सामाजिक संपर्क कौशलों की महत्ता पर विस्तार से लिखिए।

प्रश्न 02–जीवन में सफलता के लिए सामाजिक संपर्क कौशलों को परिभाषित काजिए।

9.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Mishra] P- & Khan S- A- ¼2020½(Prajna& A compendium in Disability Rehabilitation(Kanishka Publishers] New Delhi

- Kumar] P- & Das] H- ¼2022½- VistaritMoolPathyacharya- NIEPVD] Dehradun] India-
- Nanjwan] J- D- (2001) Attitude of the society towards the disabled persons in Nigeria] West African Journal of Research and Development (WAJRAD 8 1] 66 &71,
- https%@@www-readingrockets-org@article@9&ways&teach&social&skills&your&classroom
- https%@@pce-sandiego edu@how &to& teach& social& skills &in&the&classroom&list&of&top&12&social&skills@https%@@www
- smilefoundationindiaorg@blog@how&to&teach&social&skills&in&the&classroom@https%@@www-andneÛtcomesl-com@2019@05@how&to&teach&social&skills-html@

खण्ड–4

इकाई–10 पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन

संरचना

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन का अर्थ

10.4 पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन की आवश्यकता

10.5 पाठ्यचर्या अनुकूलन : विभिन्न प्रविधियाँ

10.6 सारांश

10.7 अभ्यास कार्य

10.8 चर्चा के बिंदु/स्पष्टीकरण

10.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.01 प्रस्तावना

प्रत्येक बच्चा अपने आप में अनूठा और अद्वितीय होता हैं। दिव्यांग बच्चों के लिए भी यह सत्य है। इन बच्चों की विशिष्टता, उनके सीखने और अभिव्यक्त करने के तरीके में भी निहित है। किसी भी प्रकार की अक्षमता विशिष्ट है और वह इन बच्चों को शिक्षकों द्वारा आमतौर पर कक्षा में पढ़ाये जाने वाली पाठ्यचर्या, सीखने के तरीकों, शिक्षण विधियों और वातावरण को को प्रभावित करती है। हम सभी इस बात से भिज्ञ है कि शिक्षा का उद्देश्य है व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देना चाहे बच्चे किसी भी श्रेणी के क्यों नहीं हो। अतः सभी के लिए शिक्षा अनिवार्य है।

समावेशी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण रणनीतियाँ विविध प्रकार के शिक्षण उपागमों दृष्टिकोणों को संदर्भित करती हैं जो विभिन्न पृष्ठभूमि, सीखने की शैली और क्षमताओं वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। ये रणनीतियाँ समग्र समावेशी सीखने के माहौल में योगदान करती हैं, जिसमें सभी विद्यार्थी समान रूप से मूल्यवान महसूस करते हैं। एक समावेशी कक्षा के वातावरण में, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कई कारकों पर निर्भर करती है । इनमें से महत्वपूर्ण हैं शिक्षार्थियों की विशेष आवश्यकताओं की समझ, अवसंरचनात्मक सुविधाएं, संशोधित वातावरण जो स्वागत योग्य और समावेशी हो, प्रशिक्षित प्रेरित शिक्षक, लचीली शैक्षिक सामग्री, शिक्षण और मूल्यांकन के लिए रणनीतियाँ जो सभी बच्चों की आवश्यकताओं को पूरा करती हो तथा उनके लिए अर्थपूर्ण हो। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु सामान्य विद्यार्थियों के लिए निर्मित पाठ्यचर्या में कुछ अनुकुलन और समायोजन करने की आवश्यकता होती हैं।इसी की विस्तारपूर्वक चर्चा हम इस इकाई में करेंगे।

10.02 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत के बाद आपः–

1. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन की संकल्पना तथा उसका अर्थ समझ सकेंगे।
2. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन के उद्देश्यों को जान पाएंगे।
3. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन के विभिन्न प्रविधियों के प्रति अपनी समझ विकसित करेंगे।
4. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन की उपरोक्त प्रविधियों को अपनी कक्षाओं में प्रयोग में लायेंगे।

5. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन की आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे।

6. पाठ्यचर्या अनुकूलन और पाठ्यचर्या समायोजन के मध्य अंतर कर सकेंगे।

10.03 पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन का अर्थ

समावेशी परिवेश में सभी विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करना दार्शनिक, समाजिक और मनोवैज्ञानिक रूप से आवश्यक होने के साथ ही अब उनका संवैधानिक अधिकार भी है। समावेशी शिक्षा को संभव बनाने और विभिन्न सीखने की क्षमता वाले विद्यार्थियों को बेहतर ढंग से समायोजित करने के लिए, वर्तमान शिक्षा प्रणाली, संरचना और प्रथाओं को और अधिक लचीला, समावेशी और अधिक सहयोगी बनाने की आवश्यकता है।

पाठ्यचर्या, विद्यालयों में होने वाले शिक्षण और अधिगम का केंद्र है। यदि सभी विद्यार्थियों तक इसकी पहुँच को सुनिश्चित नहीं किया जाए तो यह सीखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण बाधाओं में से एक बन सकता है। और परिणामस्वरूप विविध आवश्यकता वाले दिव्यांग विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया से बाहर हो जायेंगे। सीखने की इस बाधा को दूर करने के लिए पाठ्यचर्या को सभी विद्यार्थियों के अनुरूप करना होगा जिससे सभी विद्यार्थी शिक्षा और अन्य कार्यात्मक क्षेत्रों में अपनी क्षमता तक पहुंच सकें। तथा एक स्वतंत्र जीवन के लिए तैयार हो सकें। अतः उनके लिए समस्त अनुभवों जिसे तकनीकी भाषा में पाठ्यचर्या कहते हैं, इस प्रकार से उसकी व्यवस्था करने की आवश्यकता है जिससे सभी विद्यार्थियों तक उसकी पहुँच सुनिश्चित की जा सकेद्य अतः यह विद्यालय का उत्तरदायित्व है कि वह एक लचीली पाठ्यचर्या प्रदान करे जिससे विद्यार्थियों का अधिगम सुगम्यता हो सकेद्य यह महत्वपूर्ण है कि विद्यालय सक्षम अनुभव प्रदान करे ताकि बच्चे अपनी क्षमता तक सीखने और उपलब्धि में सफलता का अनुभव करें। यह तभी संभव है जब शिक्षक पाठ्यचर्या अनुकूलन के माध्यम से एक समावेशी कक्षा में मौजूद विविधताओं का प्रत्युत्तर दें।

विद्यार्थियों के सीखने में विविधता को समायोजित करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों में समायोजन करना पाठ्यचर्या अनुकूलन कहलाता है। पाठ्यचर्या अनुकूलन को पाठ्यचर्या के एक आवश्यक घटक के रूप में देखा जाना चाहिए जो सभी सामान्य, संशोधित और वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रमों में पूरे पाठ्यचर्या और निर्देश में किया जाता है। इसका उपयोग विद्यार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकतों को पूरा करने और उनके अधिकतम सीखने के प्रयास के लिए होना चाहिए। कुछ विद्यार्थियों की जरूरतों को व्यक्तिगत निर्देश के माध्यम से सबसे अच्छी तरह से पूरा किया जा सकता है जहां शिक्षक– एक विद्यार्थी के साथ काम करता है जबकि कुछ विद्यार्थी के लिए समूह निर्देश अधिक उपयुक्त हो सकता है।

पाठ्यचर्या में अनुकूलन विभिन्न प्रकार के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को संबोधित करता है,क्योंकि प्रत्येक कक्षा अपने शिक्षक, शिक्षार्थी और गतिशीलता के संदर्भ में अद्वितीय होती है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए आवश्यक अनुकूलन अलग–अलग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अनुकूलन सूचना की कमी की भरपाई के लिए अध्ययन सामग्री में संशोधन के रूप में भी हो सकता है या व्यक्तिगत या छोटे समूह में विद्यार्थियों की अभिरुचि बढ़ाने हेतु संवर्धन गतिविधि के रूप में भी हो सकता है। पाठ्यचर्या अनुकूलन, सभी शिक्षार्थियों को समायोजित करने के उद्देश्य से आयोजित की जाती है। ताकि वह सभी अनुभव है जिसमें यह निर्णय लिया जाता है कि विद्यार्थियों को क्या पढ़ाया जाए, शिक्षण के क्या तरीके अपनाये जाय और शिक्षा की संरचना में क्या सुधार और संशोधन किया जाए की ताकि सभी विद्यार्थी उससे लाभान्वित हो सकें, को संदर्भित करता है। हम जानते हैं कि अनुकूलन का संबंध अनुकूलित होने या रूपांतरित होने की प्रक्रिया से है। इसका तात्पर्य उपयोग के अनुरूप वस्तु तथा स्थिति में वांछित परिवर्तन लाना है। पाठ्यचर्या अनुकूलन 'विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुकूल शिक्षण रणनीति को पूरा करने की प्रक्रिया' है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है, जो विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के निर्धारित कार्यक्रम को उनकी सीखने की जरूरतों के अनुरूप संशोधित और रूपांतरित करता है। यह सभी क्षमताओं के शिक्षार्थियों के स्वागत के लिए शिक्षण–अधिगम व्यवस्था को सक्षम बनाता है ।

एक विद्यार्थी सामान्य शिक्षण के तरीकों से कुछ उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है, जबकि अन्य उद्देश्यों तक पहुंचने के लिए पाठ्यचर्या सामग्री, निर्देशात्मक अभ्यासों और/या अधिगम वातावरण में अनुकूलन की आवश्यकता होती है। किसी अन्य विद्यार्थी को सभी विषय वस्तुओं में उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए किसी ना किसी प्रकार के अनुकूलन की आवश्यकता हो सकती है। इसके अलावा, एक व्यक्तिगत विद्यार्थी को कुशलतापूर्वक

सीखने के लिए पाठ्यचर्या के कुछ हिस्सों में अनुकूलन की आवश्कता होगी, कुछ को संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम के लिए आवश्यक हो सकती है।

इस प्रकार अनुकूलन पाठ्यचर्या के उद्देश्य, सामग्री, पद्धति और मूल्यांकन को प्रभावित करती है। विद्यार्थियों के लिए उनकी आवश्यकताओं, उनकी व्यक्तिगत सीखने की शैलियों और रुचियों के आधार पर अनुकूलन को वैयक्तिकृत करने की आवश्यकता है। यह विद्यार्थियों को सामान्य पाठ्यचर्या और अन्य शिक्षण सामग्री और गतिविधियों तक पहुंचने और उन्होंने जो सीखा है उसे प्रदर्शित करने की अनुमति देता है। जैसे–जैसे वे कक्षा में सफलता का अनुभव करते हैं, प्रेरणा और सीखने में वृद्धि होती है, और विद्यार्थी के समग्र प्राप्त परिणामों में सुधार होता है।

समायोजन तथा संशोधन (Accommodation and Modification)

पाठ्यचर्या अनुकूलन के दो दृष्टिकोण हो सकते हैंः–

1.समायोजन/एक्कोमोडेशन /Accommodation– समायोजन अनुदेशन, कक्षा वातावरण, मूल्यांकन, या/तथा सामग्री को बदलकर, एक बच्चे के लिए एक व्यक्तिगत शिक्षण वातावरण बनाता है। समायोजन अनुकूलन, जो मूल रूप से अध्ययन के पाठ्यचर्या के निर्देशात्मक या मूल्यांकन चरणों में सभी कार्य मानकों या कम अपेक्षाओं को नहीं बदलते हैं। समायोजन, मौलिक रूप से पाठ्यचर्या में परिवर्तन नहीं करते हैं या शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के किसी अन्य मानदंड में अपेक्षाओं या मानकों को कम नहीं करते हैं। जैसेः–प्रिंट आकार को बड़ा करना, मूल्यांकन हेतु वैकल्पिक संस्करण, ब्रेल उपकरण का इस्तेमाल इत्यादि।

2. संसोधन/मॉडिफिकेशन /Modification– संसोधन अनुकूलन का एक दृष्टिकोण है जो मौलिक अधिगम अपेक्षाओं या मानक को बदल कर या कम कर पाठ्य सामग्री, अनुदेशन, या मूल्यांकन में परिवर्तनों की बात करता है। अतः यह एक ऐसा अनुकूलन है जिसमें अधिगम के मानकों को कम करते हैं। यह विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं के आधार पर सार्थक और उत्पादक सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं तथा विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए निर्देशात्मक स्तर, सामग्री या प्रदर्शन मानदंड में या मूल रूप से पाठ्यचर्या को कम अपेक्षाओं या मानकों से बदल देते हैं। उदहारणःसामग्री की मात्रा या जटिलता को कम करना, वैकल्पिक या रूपांतरित पाठ्यचर्या ,रूपांतरित मूल्यांकन के मानक नियम।

किसी पाठ्य सामग्री को दृष्टिबाधित बच्चों के अनुरूप बदलने के लिए चार क्रमिक सोपानों में किसी एक के अनुरूप अनुकूलन की बात की गयी हैः–

D Duplication	M Modification	S Substitution	O Omission

→→ →→ →→ →→

यथासंभव पाठ्य–वस्तु अनुकूलित स्वरुप का रूपांतरण (duplication) किया जाना चाहिए। यदि किसी विषय–वस्तु का रूपांतरण संभव नहीं हो सकता है तो उसमें उचित परिवर्तन (Modification) लाते हैं। यदि यह भी संभव ना हो तो उस विषय–वस्तु को प्रतिस्थापित (Substitution) करते हैं। सबसे अंतिम विकल्प के रूप में जिस विषय–वस्तु का उपरोक्त में से कुछ भी संभव ना हो तो वहां उस खंड को हटा (Omission) भी देते हैं।

पाठ्यचर्या अनुकूलन में समायोजन, संशोधन और समर्थन शामिल हैं जो दिव्यांग विद्यार्थियों को सामान्य पाठ्यचर्या और आकलन तक पहुंच प्रदान करते हैं शिक्षण रणनीतियों में अनुकूलन को अपनाने के पीछे का उद्देश्य सीखने की सुविधा प्रदान करना है न कि दिव्यांग विद्यार्थियों के सीखने को समायोजित करने के लिए मानकों को कम करना। ऐसी कई रणनीतियाँ हैं जो दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए लाभकर हैं और ये सभी को एक समावेशी कक्षा में सीखने में सहायता कर सकती हैं। उपयुक्त अनुकूलन के पीछे का विचार मानकों को कम करना नहीं है, बल्कि सीखने का एक उचित अवसर प्रदान करना और उन्होंने जो सीखा है उसे प्रदर्शित करना है। सफल कक्षा शिक्षण तीन कारकों पर निर्भर करता हैः इनपुट, प्रक्रिया और आउटपुट। इनमें से प्रत्येक कारक को अनुकूलन की आवश्यकता है।

पाठ्यचर्या अनुकूलन एक सतत प्रक्रिया है जो दिव्यांग विद्यार्थियों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सामग्री या निर्देश के वितरण के संदर्भ में इसे संशोधित या अनुकूलित करके नियमित निर्धारित पाठ्यचर्या को बदलता है।सामग्री, शिक्षण प्रक्रिया, आकलन और मूल्यांकन, और भौतिक वातावरण को संशोधित या अनुकूलित किया जा सकता हैद्य गतिविधियाँ लचीली होनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों को कक्षा में लाभ और सफलता प्राप्त हो सके।शिक्षकों को समानता प्रदान करने और विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को अनुकूलित करना चाहिए ताकि सभी शिक्षार्थी लाभान्वित हों और कक्षा की गतिविधियों में पूरी तरह से भाग ले सकें। पाठ्यचर्या अनुकूलन शैक्षिक मानकों को कम करने का इरादा नहीं है। पाठ्यचर्या को सबसे पहले शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए अनुकूलित किया गया हैं।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 01—पाठ्यचर्या अनुकूलन से क्या तात्पर्य है?

....

....

प्रश्न 02— पाठ्यचर्या अनुकूलन में किन घटकों को अनुकूलित किया जाता है?

....

....

प्रश्न 03—..समायोजन एवं संशोधन के मध्य अंतर बताईये।

....

....

प्रश्न 04—पाठ्यचर्या अनुकूलन शैक्षिक मानकों को कम करने के उद्देश्य से किया जाता है।(सत्य/असत्य)

10.04 पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन की आवश्यकता

सामान्यतः पाठ्यचर्या की रचना सामान्य विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर किया जाता है इसलिए विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को सामान्य पाठ्यचर्या तक पहुँचने में समस्या हो सकती है। इसलिए इन विद्यार्थियों के प्रदर्शन और उनके साथियों के प्रदर्शन के बीच अंतर होता है। विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों में कक्षा के अन्य विद्यार्थियों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए आवश्यक कौशलों का अभाव होता है। प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्यकता अलग—अलग होती है।

कुछ विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी बिना किसी या मामूली अनुकूलन के अपने साथियों के समान स्तर पर प्रदर्शन करते हैं, जबकि कुछ को पाठ, या विषय की सामग्री में अनुकूलन की आवश्यकता होती है। इसलिए, पाठ्यक्रम अनुकूलन वह तरीका है जिसके द्वारा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थी मुख्यधारा की कक्षा में भाग ले सकता है और सीखने के परिणाम प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है।

बच्चे अद्वितीय होते हैं और अद्वितीय चुनौतियाँ पेश कर सकते हैं इसलिए प्रत्येक शिक्षक को शिक्षार्थी और उसके सीखने और अभिव्यक्त करने की शैली को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीति बनाने की आवश्यकता है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के परिणामस्वरूप, कक्षाओं की संरचना बदली है। क्षमताओं के विभिन्न स्तरों वाले विद्यार्थियों को एक ही तरह से नहीं पढ़ाया जा सकता है और न ही पढ़ाया जाना चाहिए। शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (एनसीटीई, 2009) में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षक शिक्षा संस्थानों को समावेशी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य, अवधारणा और रणनीतियों को शामिल करने के लिए अपने कार्यक्रम पाठ्यक्रमों को फिर से तैयार करने की आवश्यकता होगी। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को शामिल करना प्रमुख चिंता का विषय है।

विभिन्न नीतियों ने सिफारिश की है कि, विशेष आवश्यकता की प्रकृति और प्रकार के आधार पर पाठ्यचर्या को अनुकूलित करने की आवश्यकता है। समावेशी कक्षाओं में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए समान पाठ्यचर्या का पालन किया जाता है। अनुकूलन, सीखने को अधिकतम करने के लिए हर संभव तरीके से सीखने की सुविधा देने या इस तरह से विकल्प प्रदान करने का साधन है जिससे की सभी बच्चे सीख सकें।

अनुकूलन/संशोधन के बिना, आपकी कक्षा में कुछ बच्चों को उनकी क्षमता तक प्रदर्शन करना सम्भव नहीं हो सकेगा और कई गंभीर दिव्यांगता वाले बच्चे तो कभी भी सफलता का अनुभव नहीं कर पाएंगे।पाठ्यचर्या अनुकूलन में कक्षा में प्रभावी शिक्षण शामिल हैं जो दिव्यांग विद्यार्थियों को सीखने की कठिनाइयों सहित सभी बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखता है। यह भी देखा गया है कि यदि अनुकूलन प्रभावी ढंग से किया जाता है तो यह कक्षा की गतिविधियों में शैक्षणिक और सामाजिक दोनों तरह की भागीदारी को सुगम बनाता है। बिन्दुवार इसके कुछ लाभ निम्नवत हैं:-

1. पाठ्यचर्या अनुकूलन, जो मुख्यधारा की कक्षा में सीखने हेतु सभी विद्यार्थियों के शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाता है।
2. वे जो सीख रहे हैं उसमें लगे रहने और रुचि रखने का अवसर मिलता है।
3. साथियों और शिक्षकों के साथ सामाजिक-भावनात्मक कौशल विकसित करने के अवसरों में वृद्धि अवसर मिलता है।
4. अनुकूलित सामग्री प्राप्त होने पर उसमें महारथ हासिल करने के अवसर मिलता है जिससे आत्मविश्वास और सफलता की भावना पैदा होती है।
5. पाठ्यचर्या अनुकूलन, सामग्री को सरल करने के लिए किया जाता है ताकि दिव्यांग शिक्षार्थी पाठ्यचर्या के महत्वपूर्ण हिस्सों को सीख सकें।
6. पाठ्यचर्या का अनुकूलन यह सुनिश्चित करता है कि सभी शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण और अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव प्राप्त हों।
7. दिव्यांग विद्यार्थी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में स्वयं को अलग-थलग महसूस नहीं करते हैं।
8. अनुकूलन, साझेदारी बनाने में भी मदद कर सकते हैं जहां माता-पिता और शिक्षक अनुकूलन के मूल्यांकनध्कार्यान्वयन के लिए मिलकर काम कर सकते हैं।

बोध प्रश्नः- नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 05- विशेष आवश्यकता की प्रकृति और प्रकार के आधार पर पाठ्यचर्या को अनुकूलित करने की आवश्यकता है। (सत्य/असत्य)

....

....

प्रश्न 06- पाठ्यचर्या का अनुकूलन, सभी शिक्षार्थियों को गुणवत्तापूर्ण और अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव सुनिश्चित नहीं करता है। (सत्य/असत्य)

....

....

प्रश्न 07- पाठ्यचर्या अनुकूलन में कक्षा में प्रभावी शिक्षण शामिल है। (सत्य/असत्य)

....

....

10.05 पाठ्यचर्या अनुकूलन : विभिन्न प्रविधियाँ

पाठ्यचर्या अनुकूलन को एक बच्चे के सक्रिय रूप से भाग लेने तथा अवधारणाओं की समझ का प्रदर्शन करने में सभी बच्चों की भागीदारी को अनुसमर्थित करने के स्थान के रूप में देखा जाना चाहिए। अनुकूलन, अध्यापक–विद्यार्थी के बीच अन्तः–संबंधों के विभिन्न क्षेत्रों में लाया जा सकता है। उचित रूप से सफलता के लिए सीखने के माहौल के साथ पाठ्यचर्या अनुकूलन को नौ प्रकार से विभाजित कर के समझा जा सकता हैः–

1. अदा (Input)

इसमें अधिगमकर्ता के समक्ष प्रस्तुत विभिन्न अनुदेशन प्रारूपों या शिक्षण में रूपांतरण 'अदा अनुकूलन प्राविधि' के अंतर्गत आते हैं। उदहारण के लिए शिक्षण में मल्टी–मीडिया, टॉकिंग बुक्स का, अन्य गणितीय उपकरण का प्रयोग, आदि दृष्टिबाधित बच्चों के लिए अनुकुलित अनुदेशन का कार्य कर सकता है।

2. प्रदा (Output)

अधिगमकर्ता कक्षा या अन्य अकादमिक परिवेश में अपनी बात को व्यक्त करने या किसी बात को समझाने के लिए किसी अनुकूलन सामग्री या विधि का प्रयोग करना 'प्रदा अनुकूलन प्रविधि' के अन्तर्गत आता है। यह इस अवधारणा को संपोषित करता है कि प्रत्येक बच्चे अपनी सीमाओं और क्षमताओं के अनुसार अधिगम की गयी विषयवस्तु को प्रस्तुत अथवा प्रतिक्रिया करते हैं। उदहारण के लिए मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का प्रावधान, संपेषण हेतु सहायक उपकरण का इस्तेमाल करना, ब्रेल में उत्तर लिखने की अनुमति तथा सुविधा देना इत्यादि।

3. समय (Time)

विद्यार्थियों में किसी संप्रत्यय को आत्मसात एवं अनुप्रयोग करने में लगने वाले समय में भिन्नता होती है इस सीखने के समय, कार्य निष्पादन तथा मूल्यांकन के समय में रूपांतरण या अनुकूलन आवश्यक है। कुछ विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अतिरिक्त समय देना, इसके अंतर्गत आता है। उदहारणः विद्यार्थी प्रतिक्रिया के समय में वृद्धि ।

4. कठिनाई स्तर (Difficulty)

कुछ विद्यार्थियों के लिए संप्रत्यय को आसान यानि की उसकी कठिनाई के स्तर को कम करने की आवश्यकता होती है तथा कुछ के लिए कठिनाई के स्तर को बढ़ाने की आवश्कता होती है। कठिनाई कौशल स्तर, समस्या प्रकार, या शिक्षार्थी के सीखने संबंधी दृष्टिकोण आदि का रूपांतरण या अनुकूलन इस क्षेत्र के अंतर्गत आता है। उदहारणः सहायक उपकरणों का प्रयोग, अनुदेशन गुणात्मक सुधार

5. सहायता का स्तर (Level of Support)

विशिष्ट शिक्षार्थी के लिए व्यक्तिगत सहायता की मात्रा या स्तर में वृद्धि या परिवर्तन आवश्यक है, जिससे उनकी सीखने में रूचि बनी रहे तथा उनमें उचित समझ का विकास हो सके। किसी भी मानचित्र को देख कर संप्रत्यय को आत्मसात करने या फिर उसके स्पर्शीय मैप को स्पर्श द्वारा समझने में अलग अलग सहायता की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी की आवश्यकता के अनुसार उसे सहायता उपलब्ध कराना इसके अंतर्गत आता है। उदहारणः विशेष शिक्षक की साझेदारी, विशेष विद्यार्थी के लिए पीयर ट्यूटर की नियुक्ति, बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन (सहयोगी अधिगम)।

6. आकार (विषय–वस्तु) (Size)

विद्यार्थियों के किसी विषय वस्तु को समझने या किसी गतिविधि को करने में आवश्यक अवधान के स्तर में भिन्नता पायी जाती है। कोई विद्यार्थी एक साथ गणित के दस प्रश्न हल कर सकता है तथा कोई सात प्रश्न करने में ही थक जाता है। एक विद्यार्थी के अपेक्षित सीखने की विषय–वस्तुओं की संख्या या मात्रा को भी अनुकूलित करने की जरुरत पड़ सकती है। इस प्रकार का अनुकूलन आकार (विषय–वस्तु) अनुकूलन के अंतर्गत आता है। उदाहरणः गृह कार्य का बोझ कम करना।

7. भागीदारी का स्तर (Degree of Participation)

शिक्षण –अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता विद्यार्थियों की रूचि को बनाए रखने के साथ ही उनके अधिगम को सुगम बनती है। एक शिक्षार्थी के सक्रिय रूप से शामिल होने के स्तर में भी अनुकूलन होना चाहिए। उदहारणः सीखने की प्रक्रिया में भागीदारी को तय करना, नाटक या अन्य कार्यक्रम में विशिष्टताओं का ध्यान रखकर भागीदारी सुनिश्चित करना।

8. वैकल्पिक उद्देश्य (Alternate Goals)

एक ही सामग्री का उपयोग करते समय अलग–अलग लक्ष्यों या परिणाम अपेक्षाओं को अपनाया जा सकता है। कई बार हम दृष्टिबाधिता के साथ अन्य विकलांगता व्याप्त बच्चों के व्यक्तिगत शिक्षा योजना या कार्यक्रम में अलग लक्ष्य निर्धारित भी करते हैं। उदहारणः एक कोशिका के बारे में तथा उसके केन्द्रक संबंधी जानकारी (जबकि अन्य के लिए कोशिका तथा सभी महत्वपूर्ण भागों की जानकारी)।

9. विकल्प पाठ्यचर्या (Optional Curriculum)

शिक्षा के व्यापक लक्ष्य सभी विद्यार्थियों के लिए एक ही होते हैं परन्तु उनके व्यक्तिगत लक्ष्य भिन्न–भिन्न होते हैं जो की उनकी क्षमताओ और सीमितताओं पर निर्भर करती हैं। एक शिक्षार्थी के व्यक्तिगत लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अलग अलग विषयवस्तु और सामग्री प्रदान भी किया जा सकता है।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 08–. मूल्यांकन में मौखिक परीक्षा का प्रावधान किस अनुकूलन प्राविधि के अंतर्गत आता है?

....

....

प्रश्न 09 शिक्षार्थी के सक्रिय रूप से शामिल होने के स्तर में भी अनुकूलन होना चाहिए, कहलाता है?

....

....

प्रश्न 10 समय अनुकूलन प्राविधि से क्या तात्पर्य है?

....

....

प्रश्न 11–..एक शिक्षार्थी के व्यक्तिगत लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अलग अलग विषयवस्तु और सामग्री प्रदान करना वैकल्पिक लक्ष्य कहलाता है।(सत्य/असत्य)

....

....

10.06 सारांश

पाठ्यचर्या अनुकूलन एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो विविध आवश्यकताओं वाले सभी बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विषय, सामग्री या कार्यप्रणाली (शिक्षण और मूल्यांकन) को संशोधित और अनुकूलित करती है। यह सभी क्षमताओं के शिक्षार्थियों का स्वागत करता है और सुनिश्चित करता है कि हर बच्चा सीख रहा है। विशेष आवश्यकता वाले सभी बच्चों के लिए अनुकूलन अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। इसे अक्षमता वाले बच्चे की जरूरतों के अनुसार आंकलन किया जाना चाहिए। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए पाठ्यचर्या या शिक्षण रणनीतियों को अपनाने का कोई निर्धारित फॉर्मूला नहीं है। बच्चे अद्वितीय होते हैं और अद्वितीय चुनौतियाँ पेश कर सकते हैं, इसलिए प्रत्येक शिक्षक को शिक्षार्थी और उसकी सीखने और व्यक्त करने की शैली को ध्यान में रखते हुए उनकी आवश्यकता के अनुसार अनुकूलन किया जाता है।

10.07 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

उत्तर1. विद्यार्थियों के सीखने में विविधता को समायोजित करने के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों में समायोजन करना पाठ्यचर्या अनुकूलन कहलाता है।

उत्तर 2. पाठ्यचर्या अनुकूलन में पाठ्यचर्या से सम्बन्धित सभी घटकों को अनुकूलित किया जाता है जैसे सामग्री, शिक्षण प्रक्रिया, आकलन और मूल्यांकन, और भौतिक वातावरण इत्यादि को संशोधित या अनुकूलित किया जा सकता है।

उत्तर 3.संशोधन अनुकूलन जो मूल रूप से अध्ययन के पाठ्यचर्या के निर्देशात्मक या मूल्यांकन चरणों में सभी कार्य मानकों या कम अपेक्षाओं को नहीं बदलते हैं। समायोजन मौलिक रूप से पाठ्यचर्या में परिवर्तन नहीं करते हैं या शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के किसी अन्य मानदंड में अपेक्षाओं या मानकों को कम नहीं करते हैं। जबकि संसोधन मौलिक अधिगम अपेक्षाओं या मानक को बदल कर या कम कर पाठ्य सामग्री, अनुदेशन, या मूल्यांकन में परिवर्तनों की बात करता है। अतः यह एक ऐसा अनुकूलन है जिसमें अधिगम के मानकों को कम करते हैं।

उत्तर 4. असत्य

उत्तर 5. सत्य

उत्तर 6. असत्य

उत्तर 7. सत्य

उत्तर 8. प्रदा

उत्तर 9. भागीदारी का स्तर

उत्तर 10. कुछ विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अतिरिक्त समय देना इसके अंतर्गत आता उत्तर है।

उत्तर 11. असत्य?

10.08 अभ्यास कार्य

प्रश्न 1. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन का अर्थ बताईयेद्य

प्रश्न 2. किसी शिक्षक के अनुदेशन में किस प्रकार की अनुकूलन सहायता की सकती है?

प्रश्न 3. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन के उद्देश्यों की सूची बनाईये।

प्रश्न 4. पाठ्यचर्या अनुकूलन और समायोजन की उपरोक्त प्रविधियों को अपनी कक्षाओं में कैसे प्रयोग करेंगे उदाहरण सहित बताईये।

प्रश्न 5. विभिन्न पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रविधियों को सूचीबद्ध कीजिए और साथ ही उसके विशेषताओं को बताईए।

प्रश्न 6. पाठ्यचर्या अनुकूलन से संबंधित विभिन्न नौ प्रविधियों का वर्णन करें।

प्रश्न 7. पाठ्यचर्या अनुकूलन के अंतर्गत किन–किन क्षेत्रों में अनुकूलन होना चाहिए?

10.09 चर्चा के बिंदु/स्पश्टीकरण

प्रश्न 01–पाठ्यचर्या अनुकूलन में शिक्षक की भूमिका पर अपने तर्क प्रस्तुत कीजिए।

10.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Danielson, C. (2007). Enhancing professional practice: A framework for teaching, 2nd ed. Alexandra, VA: ASCD
- Hegarty, S. and M. Alur (eds) (2002). Education and Children with Special Needs. New Delhi: Sage.

- IGNOU (2011). Education of Children with Special Needs, Block 2, MESE-064, Special Needs Education, New Delhi, SOE, IGNOU
- IGNOU (2012). Curriculum: Alternative, Adjustment and Adaptation, Block 1, MMDE-062, Learning Disability: Curriculum and Intervention, New Delhi, NCDS, IGNOU.
- Ministry of Human Resource Development (2006), Confluence, Vol.28 Curricular Adaptations for Children with Special Needs https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/Confluence.pdf
- NCTE (2009) National Curriculum Framework for Teacher Education Towards Preparing Professional and Humane Teacher, New Delhi: NCTE.

इकाई–11 शिक्षण हेतु पाठ योजना और शिक्षण सहायक सामग्री

इकाई संरचना

11.01 प्रस्तावना

11.02 उद्देश्य

11.03 पाठ योजना का संप्रत्यय

11.04 पाठ योजना की आवश्यकता

11.05 दृष्टि दिव्यांग बच्चों हेतु पाठ–योजना प्रारूप

11.06 सारांश

11.07 अभ्यास कार्य

11.08 चर्चा के बिंदु / स्पष्टीकरण

11.09 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

11.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.01 प्रस्तावना

समस्त शैक्षिक क्रियाओं का आयोजन शिक्षार्थियों में अन्तर्निहित गुणों को परिलक्षित करने के उद्देश्य से किया जाता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक की प्रभावशीलता विद्यार्थी की उपलब्धि को बढ़ाती है। प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन में बदलाव लाते हैं। शिक्षक प्रभावशीलता का विद्यार्थियों के सीखने से सीधा संबंध होता है। प्रभावी शिक्षकों के गुणों को चार आयामों में विभाजित किया जा सकता है– निर्देश, विद्यार्थी मूल्यांकन, अधिगम वातावरण और उनके व्यक्तिगत गुण शिक्षक का दृष्टिकोण, सोच और योजना कक्षा शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पाठ योजना, शिक्षण गुणवत्ता विकसित करने में सहायता कर सकती है। विद्यार्थी, पाठ योजना–प्रेरित शैक्षणिक सत्र को अधिक रूचि के साथ पढ़ते हैं। प्रभावी कक्षा शिक्षण के लिए प्रत्येक शिक्षक को पाठ योजना का पालन करना आवश्यक है। यदि एक शिक्षक को पाठ योजना तैयार करने का कोई गहरा ज्ञान नहीं है एवं कक्षा शिक्षण में उसका उपयोग नहीं करता है तो वह कक्षा में बिना पतवार की नाव पर नाविक के रूप में माना जाता है। सामान्य तौर पर, कक्षा में लक्ष्यहीन भटकना, गैर–शैक्षणिक चर्चा, पिछले और वर्तमान पाठों के बीच विसंगतियां, पाठ योजना नहीं होने के अंतिम परिणाम हैं।

प्रभावी और आजीवन सीखने की क्षमता एक शिक्षक के लिए पाठ योजना होने का परिणाम है।

इस इकाई में हम पाठ योजना का अर्थ, शिक्षण– अधिगम प्रक्रिया में उसका महत्व तथा दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए पाठ योजना प्रारूप का विस्तृत अध्ययन करेंगे साथ ही शिक्षण–अधिगम सामग्री का संप्रत्यय और विशेषता के बारे में जानेंगे।

11.02 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप–

- पाठ योजना की संकल्पना तथा उसका अर्थ समझ सकेंगे।
- पाठ योजना को अपने शब्दों में परिभाषित कर सकेंगे।
- पाठ योजना की आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे।
- पाठ योजना किस प्रकार विद्यार्थी और शिक्षक हेतु लाभकर है,की समझ विकसित कर सकेंगे।
- दृष्टिदिव्यांग बच्चों हेतु पाठ–योजना में परिवर्तनों को समझ सकेंगे।

- दृष्टिदिव्यांग बच्चों के आवश्यकता अनुरूप पाठ–योजना विकसित कर सकेंगे।
- शिक्षण अधिगम सामग्री के संप्रत्यय को समझ सकेंगे।

11.03 पाठ योजना का संप्रत्यय

शिक्षक के निर्देशों में विद्यार्थी की उपलब्धि पर सीधे प्रभाव डालने की क्षमता होती है। ये निर्देश उपकरण, रणनीतियों, पाठों और गतिविधियों से बने होते है जिसे शिक्षक और शिक्षार्थी सीखने के लिए उपयोग करते हैं। पाठ योजना एक शिक्षक के काम का एक महत्वपूर्ण पहलू है जो विद्यार्थी आवश्यक सामग्री, और सीखने की क्षमता को सीधे प्रभावित करता है।

शिक्षक की योजना शैक्षिक अनुसंधान और नीति नियोजन के लिए भी महत्वपूर्ण है साथ ही यह निर्देश की गुणवत्ता, गतिविधियाँ कक्षा, मात्रा और प्रकृति को भी प्रभावित करती है इस प्रकार नियोजन/योजना निर्देश के सुधार के लिए एक संभावित शक्तिशाली उपकरण का प्रतिनिधित्व करता है। पाठ योजना को शिक्षक कार्रवाई का मार्गदर्शन करने के लिए, एक रूपरेखा तैयार करने की प्रक्रिया के रूप में जाना जा सकता है। पानासुक स्टोन और टॉड (2002) के अनुसार "पाठ योजना में शिक्षकों द्वारा गतिविधियों की एक सुसंगत प्रणाली जो विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक संरचनाओं के विकास को बढ़ावा देती है'' विकसित करने का एक सचेत प्रयास शामिल है। जालोंगो, रेग और हेल्टरब्रान (2007), "पाठ योजना एक पाठ के दौरान कक्षा में क्या होगा इसके बारे में चिंतन की संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।" इसमें कक्षा के कई पहलुओं पर विचार करना शामिल है, जिसमें विद्यार्थियों को सामग्री में संलग्न करने के तरीकों से लेकर विद्यार्थियों द्वारा प्रतिक्रिया करने के विभिन्न तरीके शामिल है। पाठ योजना एक शिक्षक को समय, संसाधनों, सामग्रियों और तकनीकों का इष्टतम स्तर पर उपयोग करने में मदद करती है। पाठ योजना में सामग्री का चयन करना, सामग्री को व्यवस्थित करना, मूल्यांकन का चयन करना और शिक्षणशास्त्र का निर्धारण करना शामिल है, लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है। योजना और तैयारी में अध्ययन सामग्री और शिक्षणशास्त्र का ज्ञान, विद्यार्थियों का ज्ञान, निर्देशात्मक परिणाम निर्धारित करना, संसाधनों के ज्ञान का प्रदर्शन करना, सुसंगत निर्देश डिजाइन करना और विद्यार्थी मूल्यांकन डिजाइन करना जैसे घटक शामिल हैं।

विद्यार्थियों को सार्थक अधिगम अनुभव देने के लिए निर्देशात्मक योजना किसी भी शिक्षक के काम का एक प्रमुख पहलू है। बर्डन और बर्ड (2003) के अनुसार, "योजना का लक्ष्य विद्यार्थियों के अधिगम को सुनिश्चित करना है। इसलिए, नियोजन अधिगम हेतु अनुदेशात्मक कार्यक्रम को बनाने, क्रमवार और व्यवस्थित करने में मदद करता है"। एक प्रभावी शिक्षक को इस तरह से योजना बनाने में सक्षम होना चाहिए कि वह सभी विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के कौशल और समझ का उपयोग करके शिक्षण और अधिगम की जटिलताओं को समझ सके। शिक्षक को जब कई अलग–अलग शिक्षण तकनीकों की समझ होती है तभी वह सुव्यवस्थित पाठ का नियोजन कर पाता है। प्रभावी शिक्षक प्रभावी योजनाकार होते हैं क्योंकि प्रभावी निर्देश के बिना प्रभावी पाठ योजना के लागू करना मुश्किल होगा। यह योजना विद्यार्थियों के बारे में, शिक्षक के ज्ञान, सामग्री, संसाधनों और उपलब्ध शिक्षण रणनीतियों पर आधारित होगी। उच्च गुणवत्ता वाले अधिगम अनुभवों का सृजन उचित शिक्षण तकनीकों के साथ प्रभावी नियोजन प्रक्रियाओं से ही संभव है। औपचारिक पाठ योजना एक वैध और आवश्यक शिक्षण गतिविधि है। पाठ योजना में कक्षा के कई पहलुओं पर विचार करना शामिल है, जिसमें विद्यार्थियों को सामग्री में संलग्न करने के तरीकों से लेकर विद्यार्थियों द्वारा प्रतिक्रिया करने के विभिन्न तरीके तक शामिल है।

अभ्यास में पाठ योजना के तत्व

- सीखने के स्पष्ट उद्देश्यों की पहचान करना
- गुणवत्तापूर्ण अधिन्यास की योजना बनाना, जो विद्यार्थियों की सामग्री में निपुणता को बढ़ाता है तार्किक रूप से संरचित पाठों की योजना बनाना।
- विभिन्न प्रकार की अनुदेशात्मक रणनीतियों की योजना बनाना।
- यह सुनिश्चित करना कि विद्यार्थी सीखने के कार्य में जितना समय व्यतीत करें वह अधिकतम हो।

- विद्यार्थियों के बीच सीखने के अंतर को ध्यान में रखना।
- ऐसी योजनाएं विकसित करना जो सामग्री को विकासात्मक रूप से उपयुक्त कौशल के साथ संरेखित करें।

सीखने की गतिविधियों की योजना, पाठ्यचर्या डिजाइन और रोजमर्रा के शिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वांछित सीखने के परिणामों को प्राप्त करने के लिए पाठ्यचर्या और पाठ डिजाइन को संरेखित किया जाना चाहिए। एक पाठ योजना प्रशिक्षक का रोड मैप है कि विद्यार्थियों को क्या सीखने की आवश्यकता है और कक्षा के दौरान इसे प्रभावी ढंग से कैसे किया जाएगा। पाठ योजना यह है कि शिक्षक पाठ्यचर्या के लक्ष्यों को शिक्षणशास्त्र और ज्ञान को उनके विशिष्ट शिक्षण संदर्भ के साथ कैसे समन्वित करते हैं।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1—पाठ योजना से क्या आशय है?

....
....
....

प्रश्न 2—.पाठ्योजना में किन पहलुओं पर विचार किया जाता है?

....
....
....

प्रश्न 3— पाठ योजना का शैक्षिक उद्देश्यों से कोई लेना देना नहीं होता है। (सत्य/असत्य)

....
....
....

प्रश्न4— एक अच्छी पाठ योजना में विभिन्न प्रकार की अनुदेशात्मक रणनीतियों के चुनाव का स्थान होता हैं। (सत्य/असत्य)

....
....
....

11.04 पाठ—योजना की आवश्यकता

गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के केन्द्र में बच्चों के साथ—साथ एक सजग, सक्रिय और प्रतिबद्ध शिक्षक का होना आवश्यक है। साथ ही यह भी जरूरी है कि वह शिक्षक स्कूली गतिविधि के विभिन्न आयामों को न सिर्फ समीक्षात्मक ढंग से समझे, बल्कि वह कुशलतापूर्वक इससे जुड़ी गतिविधियों को अंजाम भी दे सकें। पिछले दो—तीन दशकों में सिद्धांत और व्यवहार का अर्थपूर्ण संबंध स्थापित कर उन्हें एक दूसरे की कसौटी पर कसने की प्रक्रियायें लगातार बढ़ी हैं। अच्छे शिक्षण हेतु योजना बनाना आवश्यक है। पाठ का नियोजन शिक्षक के अध्यापन और विद्यार्थी के सीखने को स्पष्ट और समयबद्ध बनाने में मदद करता है। सक्रिय नियोजन द्वारा विद्यार्थी को सक्रिय रखा जा सकता है और साथ ही उनके सीखने की क्रिया को रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है। पाठ—योजनाओं को शिक्षा के सिद्धांतों, शिक्षण—शास्त्र व शिक्षायी चिंतन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। कोशिश यह होनी चाहिए कि पाठ—योजनाओं के विकास में ये सभी समीक्षात्मक आधार बनें।

प्रभावी पाठ योजना कई तरीकों से विद्यार्थियों के लिए सफल शिक्षण परिणामों में योगदान करती है। एक अच्छी तरह से डिजाइन की गई पाठ योजनाः—

- विद्यार्थियों और शिक्षकों को निर्देशात्मक मॉड्यूल के लक्ष्यों को समझने में मदद करता है।
- शिक्षक को पाठ्यचर्या को सीखने की गतिविधियों में परिवर्तित करने की अनुमति देता है।
- शिक्षण सामग्री को मूल्यांकन के साथ संरेखित करता है।
- मूल्यांकन को सीखने के लक्ष्य के साथ संरेखित करता है।
- यह आश्वस्त करने में मदद करता है कि आवश्यक शिक्षण सामग्री उपलब्ध है।
- शिक्षक को विद्यार्थियों के बीच व्यक्तिगत सीखने की जरूरतों को विचारपूर्वक संबोधित करने में सक्षम बनाता है।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5—एक अच्छी पाठ योजना की किन्हीं तीन विशेषताओं को बताईये।

....

....

....

प्रश्न 6—पाठ—योजनाओं को शिक्षा के सिद्धांतों, शिक्षण—शास्त्र व शिक्षायी चिंतन से अलग करके नहीं देखा जा सकता है। (सत्य / असत्य)

....

....

....

11.05 दृष्टि दिव्यांग बच्चों हेतु पाठ—योजना

नियोजन एक सतत प्रक्रिया है जो शिक्षक को प्रभावी शिक्षण करने में मदद करती है। पाठ योजना तैयार करते समय शिक्षक को निम्न बातें बिलकुल स्पष्ट होनी चाहिएः

- विद्यार्थियों को आप क्या सिखाना चाहते हैं?
- आप उस विषयवस्तु का परिचय कैसे देंगे?
- विद्यार्थियों को क्या करना होगा और क्यों?

योजना को प्रभावी बनाने की प्रक्रिया को लचीला रखना चाहिए जिससे अध्यापक पढ़ाते समय अपने विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर शिक्षण—प्रक्रिया में आवश्यक बदलाव भी कर सकें। पाठ—योजना विकसित करने हेतु विद्यार्थियों के पूर्व—ज्ञान का विश्लेषण करना और विद्यार्थियों को सीखने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम संसाधनों और गतिविधियों को चिन्हित करना आवश्यक होता है। विद्यार्थियों को सहज और जिज्ञासु बनाएं रखने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वो अधिगम प्रक्रिया को सक्रिय और रोचक बनाएं। शिक्षकों को इस बात पर विचार करना चाहिए कि पाठों में विद्यार्थियों से क्या करने को कहा जाएगा ताकि न केवल विविधता और रुचि बल्कि लचीलापन भी बना रहे । विभिन्न पाठों से गुजरते हुए विद्यार्थियों की प्रगति का आकलन करने की व्यवस्था योजना में होनी चाहिए। शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों की विषयवस्तु की समझ के प्रति प्रतिक्रिया के अनुसार योजना को बदलने के लिए शिक्षक को तैयार रहना चाहिए। पाठ की योजना के अंतर्गत यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक गतिविधि के लिए पर्याप्त समय हो तथा सभी संसाधन उपलब्ध हों।

विभिन्न पाठ्य सामग्रियों के बारे में पहले से तैयारी किये रहने से शिक्षक को खुद को सुव्यवस्थित करने में मदद मिलती है। प्रभावी शिक्षण हेतु पुस्तकों के अतिरिक्त कई अन्य प्रकार की सामग्रियों की भी आवश्यकता होती है। उन सामग्रियों के चयन में दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाना आवश्यक है। पाठ—योजना का प्रारूप सरल और व्यवहारिक होना चाहिए। साथ ही प्रत्येक बिंदु में लचीलापन होना चाहिए

जिससे उनमें आवश्यकता अनुरूप अपेक्षित बदलाव किया जा सके। पाठ–योजना को किसी कक्षा के आधार पर बनाया जाना चाहिए। साथ ही, उसमे कक्षा के अन्दर विशिष्टता धारण किए बच्चों के आवश्यकताओं के पूर्ति हेतु उचित समाधान भी होना चाहिए है।

कक्षा के व्यवस्थित संचालन एवं विद्यार्थियों के अधिकतम अधिगम हेतु, आइये,पाठ योजना प्रारूप के विभिन्न खण्डों को समझने का प्रयास करते हैः

क्रम संख्या	खंड / उपखंड	विवरण
1.	सामान्य विवरण	पाठ्योजना का प्रारम्भ पाठ की सामान्य विशिष्टताओं के बारे में जानकरी से किया जाता है। जैसे– कक्षा, कालांश, विषय, अध्याय, शिक्षक व विद्यालाय का विवरण, समय आदि का विवरण। बच्चों की संख्या तथा दृष्टि दिव्यांग बच्चों (विकलांगता से प्रभावित बच्चों) के पाठ हेतु सहायक सामग्री, समय आदि के नियोजन तथा प्रबंधन में मदद मिलती है। इससे शिक्षक को पाठ को विद्यार्थी की आवश्यकता अनुसार अनुकूलित करने में सहायता प्राप्त होती है। उसे संबोधित किये जाने वाले समूह के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
2.	विषय–वस्तु संबंधी समीक्षा	इसे पाठ योजना में दर्शाते नहीं है। इसमें शिक्षक द्वारा चिंतन किया जाता है जो की पाठ्यचर्या के लिए नींव का कार्य करती है। इसमें शिक्षक द्वारा पाठ से संबंधित बच्चों के पूर्व ज्ञान संबंधी आकलन तथा उद्देश्य निर्धारण किया जाता है।
3.	पूर्व–ज्ञान	पूर्व–ज्ञान से तात्पर्य बच्चों का प्रस्तुत पाठ से जुड़े आधारभूत प्रत्ययों की समझ, जो बच्चों में पूर्व से ही व्याप्त है। इसी पर नए संप्रत्ययों की रचना होती है।
4.	उद्देश्य निर्धारण	पाठ के सामान्य उद्देश्य विषय की समझ की ओर केन्द्रित होते हैं, जबकि विशिष्ट उद्देश्य निश्चित कालांश में प्रस्तुत पाठ के प्रस्तुति द्वारा समझ की ओर उद्देश्यित होते हैं।
5.	प्रस्तावना दृष्टि दिव्यांग	बच्चों से भी प्रस्तावना प्रश्न पूछे जाने चाहिए। प्रस्तावना हेतु उपयोग किए जा रहे सामग्री का उचित अनुकूलन किया जाना चाहिए।
6.	शिक्षण प्रविधियों का निर्धारण	पाठ के उद्देश्यों के अनुरूप विविध प्रविधियों का समावेशन किया जाना चाहिए।
7.	संसाधनों तथा विशिष्ट उपकरणों का चयन	पाठ के उद्देश्यों के अनुरूप सटीक तथा उत्साहवर्धक सहायक सामग्री का चयन आवश्यक है। दृष्टि दिव्यांग बच्चों के लिए विशेष उपकरणों या सहायक सामग्री का उपयोग किया जाना चाहिए। सामान्यतः स्थानीय संसाधनों या परिचित वस्तुओं का प्रयोग किया जाना चाहिए। सामग्री अनुकूलित होनी चाहिए जैसे– • किसी भी मानचित्र या सहायक सामग्री में लेबेलिंग हेतु लार्ज प्रिंट / ब्रेल का उपयोग किया जाना चाहिए। • सहायक सामग्री में आकर्षक चटकीले रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

		• उचित रंग–विभेद (कंट्रास्ट) का प्रयोग भी होना आवश्यक है। • समूहकार्य, समस्या–समाधान, खेल विधि आदि विविध प्रविधियों में दृष्टि दिव्यांग बच्चों की सहभागिता होनी चाहिए ।
8.	मुख्य कक्षागत अन्तःक्रिया (यह पाठ–योजना का मुख्य क्रियान्वयन हिस्सा है। पाठ योजना में प्रस्तुतिकरण शीर्षक के अंतर्गत लिखा जाता है)	यह खंड विषयवस्तु की प्रस्तुति से सम्बंधित है यह विषय–वस्तु की विशिष्टता के अनुरूप होता है। ध्यान देने योग्य तथ्यः • क्या दृष्टि दिव्यांग बच्चों के सन्दर्भ को ध्यान में रखा गया है? • विषयवस्तु को मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो को ध्यान में रख कर प्रस्तुत किया जा रहा है जैसे–सरल से जटिल, वैयक्तिक विभिन्नता इत्यादि • शिक्षक किस प्रकार के उदाहरण प्रस्तुत करेंगे? • बच्चो को स्वयं से सीखने का कितना अवसर है? • उन्हें सवाल पुछने का कितना अवसर है? • एक कालांश का कितना समय शिक्षक के सक्रिय निर्देशन में है? • कितना समय बच्चो को स्वतंत्र चिंतन व कार्य करने के लिए दिया गया है?
समीक्षात्मक क्रियाएं यह खंड पाठ प्रस्तुति तथा पाठ नियोजन दोनों क्रियायों की समीक्षा से संबंधित है।		
9.	अधिगम का मूल्यांकन	• यह उपखंड बच्चों में पाठ की समझ के आंकलन या निर्धारण से संदर्भित है। • अधिगम के मूल्यांकन में अनुकूलन विधियों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। • दृष्टि दिव्यांग बच्चों के अधिगम के आकलन हेतु विविध विधियों का समावेशन किया जाना चाहिए । • बच्चों की आवश्यकता अनुरूप प्रश्न प्रारूपों का चयन होना चाहिए।
10.	शिक्षक द्वारा पाठ का स्व–मूल्यांकन	शिक्षकों द्वारा पाठ का स्व–मूल्यांकन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है। शिक्षक सिर्फ पाठ को आयोजित ही नहीं करता है, बल्कि पूरे कालांश में वह एक अवलोकनकर्ता की भूमिका में भी होता है। अतः पाठ का सही स्व–मूल्यांकन सीखने की क्रिया को बहुत प्रभावी बना सकता है। इसमें निम्न प्रश्नों के उत्तर खोजे जाते हैं– • क्या विद्यार्थी ने विषयवस्तु संबंधी उन प्रत्ययों को समझा जिसके लिए यह पाठ उद्देश्यित था? • क्या इस विषयवस्तु को फिर से कक्षा में चर्चा करने की आवश्यकता है? • विद्यार्थी द्वारा पूछे गए प्रमुख सवाल क्या थे?

		• क्या विद्यार्थियों को सवालों को हल करने का पर्याप्त समय मिल पाया? • इस विषयवस्तु के सीखने–सिखाने में प्रयोग किए गए संसाधनों की क्या उपयोगिता रही? • इस विषयवस्तु को यदि दोबारा पढाना हो तो सीखने–सिखाने की योजना में क्या बदलाव किये जाने चाहिए? • विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (अल्प–दृष्टि बाधितों) के सन्दर्भ में क्या यह पाठ सटीक था?
11.	अगले पाठ हेतु नोट	यह उपखंड अगले शिक्षण–अधिगम कार्य को प्रभावी बनाने हेतु केन्द्रित है? इसमें निम्न प्रश्नों को सम्बोधित किया जाता हैः– • क्या सभी बच्चों ने सीखने की क्रिया में आनंद की अनुभूति की? • उनके परस्पर भागीदारी हेतु पाठ में समुचित व्यवस्था थी? • क्या चर्चा में समाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, संवैधानिक मूल्यों आदि मुद्दों को शामिल करने की सम्भावना थी? • क्या मूल्यांकन की प्रभावी प्रक्रिया भी साथ–साथ चल रही थी? • इस योजना के क्रियान्वयन में क्या–क्या चुनोतियाँ आयीं/आ सकती थी? • इस योजना में कितना लचीलापन था, अर्थात् कक्षा के अनुरूप इस योजना में बदलाव की कितनी सम्भावना थी।
12.	गृहकार्य	अधिगम का मूल्यांकन (पुनरावृत्ति प्रश्न) के बाद पढाये गए पाठ की समझ को और विस्तार देने हेतु गृह कार्य दिया जाता है। गृहकार्य विशिष्ट होना चाहिए और विद्यार्थियों के स्तर को ध्यान में रखकर दिया जाना चाहिए।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 7 पाठ योजना तैयार करते समय शिक्षक को किसे ध्यान में रखना चाहिए?

....
....
....

प्रश्न 8–. पूर्व ज्ञान से आपका क्या आशय है?

....
....
....

शिक्षण अधिगम सामग्री

शिक्षण अधिगम सामग्री का तात्पर्य शिक्षण के उन साधनों से है जिसका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली एवं विद्यार्थियों हेतु आसानी से ग्राह्य बनाता है। हम जानते हैं की मनुष्य की इन्द्रियां वातावरण के साथ अंतःक्रिया कर सूचनाओं को ग्रहण करती है। इसलिए जब शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में एक से

अधिक इन्द्रिय का उपयोग होता है तो सीखना सरल और लम्बे समय तक स्मृति में रहने वाला होता है। शिक्षण अधिगम सामग्री वही सामग्रियां है जिनके प्रयोग से विद्यार्थियों की ज्ञानेन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं और वे विषय वस्तु या कौशलों को सरलतापूर्वक समझ जाते हैं। इनके प्रयोग द्वारा शिक्षण को सरल, सुगम और आकर्षक बनाया जाता है। शिक्षण सामग्री न केवल शिक्षण को ही अपितु शिक्षण की प्रविधियों अथवा युक्तियों को भी प्रभावशाली बनाती हैं। यह अधिगम प्रक्रिया को स्थायी एवं रोचक बनाने का कार्य करता हैं। इसके प्रयोग से विद्यार्थियों को विविध प्रकार की गतिविधियाँ करने के अवसर प्राप्त होता हैं। इनके प्रयोग से विद्यार्थियों की एक से अधिक इन्द्रियाँ सीखने में प्रयोग में आती हैं जिनके परिणामस्वरूप उनकी पाठ में रुचि बनी रहती है और वे खेलते–खेलते कठिन–से–कठिन बातों को बिना किसी कठिनाई के स्वाभाविक रूप से सीख जाते हैं। इसके माध्यम से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य को रूचिपूर्ण एवं स्मरणीय बनाते हैं। इसके उपयोग से शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रहते हैं। शिक्षण सामग्री द्वारा विद्यार्थियों को जो पाठ स्थूल रूप से पढ़ाया जाता है उस संप्रत्यय को, वस्तु को देखकर, छूकर तथा पूछकर समझने का प्रयास करता है और सभी विद्यार्थी ज्ञान को प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण कर लेते हैं। चूकि विद्यार्थी, ज्ञान स्वयं क्रिया करके ग्रहण करते हैं। इससे सीखा हुआ ज्ञान निश्चित और स्थायी बन जाता है और उन्हें रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। श्रव्य–दृश्य सामग्री द्वारा शिक्षार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया जाता है और उपयोग शिक्षण की एकरसता को दूर करता है। विभिन्न विषयों में कई संकल्पनाएँ सूक्ष्म स्तर में, अमूर्त रूप में होती हैं इसके माध्यम से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया आसान हो जाती है ।

इन संकल्पनाओं को मूर्त रूप में प्रस्तुत करने से शिक्षार्थियों द्वारा प्राप्त ज्ञान स्पष्ट एवं स्थायी होगा जिसे शिक्षार्थी अधिक समय तक याद रख सकते हैं। इसके प्रयोग से विद्यार्थी को उसकी रूचियों, आवश्यकताओं आदि के अनुरूप शिक्षा दी जाती है। इसके द्वारा वह केवल श्रोता बनकर नहीं रहता, बल्कि अब वो जो कुछ भी सीखता है, वह क्रिया व निरीक्षण के द्वारा सीखता है। विद्यार्थी कक्षा में शिक्षण के दौरान क्रियाशील बना रहे, उसमें रूचि ले, उसके लिये शिक्षक अनेक प्रकार की सामग्रियों को इस्तेमाल करता हैं, जिससे उस पाठ को सरलता से पढ़ाया जा सके। इस प्रकार किसी पाठ्यवस्तु को सरलता से स्पष्ट करने या समझाने के लिये शिक्षक जिन साधनों/उपकरणों/यंत्रो का प्रयोग करता है उसे हम शिक्षण अधिगम सामग्री कहते हैं।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शिक्षण के दौरान शिक्षण अधिगम सामग्री की आवश्यकता और अधिक अनिवार्य हो जाती है क्योंकि दृष्टि क्षति के कारण उन्हें बाकी शेष इन्द्रियों का बेहतर प्रयोग कर शिक्षा ग्रहण करना होता है। शिक्षक को उन्हें पढ़ाने के लिये अनेकों सहायक सामग्री का इस्तेमाल करना होता है जो मुख्यतः स्पर्शीय व श्रव्य हो, कुछ शिक्षण अधिगम सामग्री को शिक्षक स्वयं तैयार कर सकते हैं जबकि कुछ बाजार में बने बनाए उपलब्ध होते हैं। दृश्य दिव्यांग बच्चों के लिए स्पर्श आधारित शिक्षण सामग्री सबसे प्रभावी है। स्पर्शात्मक आधारित अधिगम सामग्री की अवधारणा को समझने के लिए दृष्टिबाधित छात्रों को उसे स्पर्श करने या कुछ करने की आवश्यकता होती है। दृष्टि दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन एवं प्रयोग करने के लिए शेष गुणों और सावधानियों के अतिरिक्त कुछ अन्य विशिष्ट गुण एवं सावधानियां होनी चाहिए जिसकी चर्चा निम्नवत है।

दृष्टिबाधित बच्चों के लिये शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग करते समय निम्न तथ्यों का ध्यान रखना अनिवार्य है:

- यह स्पर्शीय होना चाहिए।
- आवश्यकता के अनुसार इस पर ब्रेल लिपि में लिखा होना चाहिए। (अल्पदृष्टिबाधित के लिये बड़े मुद्रण का इस्तेमाल होना चाहिए)
- नुकीली नहीं होनी चाहिए।
- यह जटिल नहीं होना चाहिए, एक समय मे इसमें एक या दो प्रत्ययों को प्रदर्शित करना चाहिए। उदाहरण के तौर पर मानचित्र में एक ही समय में उसके छोटी–छोटी प्रत्ययों को प्रदर्शित न करें, अगर आप नदियों को दर्शा रहे हैं तो उसके साथ पठार व पहाड़ न दर्शायें, इससे उन्हें समझने में अत्यंत कठिनाई हो सकती है।

- विद्यार्थी के पहुँच के अंदर हो अर्थात् अपनी हाथों को फैलाकर, स्पर्श के माध्यम से आसानी से छू सके।
- आसानी से क्षतिग्रस्त नहीं होना चाहिए।
- अल्पदृष्टिबाधित को ध्यान में रखते हुये हमें इन सामग्रियों में अच्छे गहरे रंग का प्रयोग करना चाहिए, बड़े मुद्रण का प्रयोग करना चाहिए, रंग–विभेद का ध्यान रखना चाहिए, चमक रहित होना चाहिए।
- अत्याधिक नाजुक नहीं होना चाहिए जो कि सिर्फ स्पर्श करते ही टूट जाये।
- वास्तविक वस्तुओं का अधिकाधिक प्रयोग होना चाहिए।
- इसके निर्माण में कभी भी ऐसी वस्तु का प्रयोग नहीं करेगें, जिसे स्पर्श करने से उन्हें कोई क्षति पहुँचे।
- चित्र/मॉडल/मानचित्र आदि बनाते समय उसके आकार पर विशेष ध्यान दें।
- मॉडल आदि वास्तविकता के नजदीक हो। (अगर संभव हो तो वास्तविक वस्तु ही दिखायें)
- एक ही साथ एक मानचित्र,चित्र, चार्ट पर अनेकों तथ्य प्रदर्शित न करें।
- इसे आसानी से एक–दूसरे स्थान पर लाया ले जाया जा सके।

इसके अतिरिक्त इनमें निम्न गुण भी होने चाहिए जो किसी भी शिक्षण अधिगम सामग्री हेतु आवश्यक है

- यह विद्यार्थियों की रूचि, आवश्यकता, योग्यता ,समझ, आयु, प्रकरण तथा विषय–वस्तु की प्रकृति के अनुसार होना चाहिए।
- यह आकर्षक होना चाहिए।
- यह वास्तविकता पर आधारित होना चाहिए।
- कक्षा के अधिगम लक्ष्यों की प्राप्ति में सहायक होनी चाहिए।
- प्रकरण का सही स्वरूप प्रस्तुत करने वाली होनी चाहिए।
- यह कम खर्चीला होना चाहिए।
- शिक्षण अधिगम सामग्री पाठ आधरित होना चाहिए।
- ज्ञान वर्धक और मनोरंजक होना चाहिए।
- यह सामग्री सूचनात्मक होना चाहिए।
- यह विद्यार्थी के पूर्वज्ञान पर आधारित होना चाहिए।
- यह आसानी से उपलब्ध होना चाहिए।
- यह सरल व स्पष्ट होना चाहिए।
- अधिकतर सस्ती व स्वनिर्मित सामग्रियों को प्रयोग में लाना चाहिए।
- इसके प्रयोग में विविधता होनी चाहिए, अथासंभव नयापन होना चाहिए।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 9– शिक्षण सामग्री से क्या तात्पर्य है?

....

....

प्रश्न 10–. शिक्षण अधिगम सामग्री के किन्ही तीन लाभों को बताईये।

....

....

11.06 सारांश

पाठ योजना को शिक्षक कार्रवाई का मार्गदर्शन करने के लिए एक रूपरेखा तैयार करने की प्रक्रिया के रूप में जाना जा सकता है। पाठ योजना गतिविधियों की एक सुसंगत प्रणाली है जो विद्यार्थियों को शिक्षण के दौरान पढायी जा रही विषयवस्तु की समझ को बढ़ावा देती है। एक पाठ के दौरान कक्षा में क्या होगा इसके बारे में चिंतन की संज्ञानात्मक प्रक्रिया – पाठ योजना में सामग्री का चयन करना, सामग्री को व्यवस्थित करना, मूल्यांकन का चयन करना और शिक्षा–शास्त्र का निर्धारण करना शामिल है, लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है। योजना और तैयारी में अध्ययन सामग्री और शिक्षणशास्त्र का ज्ञान, विद्यार्थियों का ज्ञान, निर्देशात्मक परिणाम निर्धारित करना, संसाधनों के ज्ञान का प्रदर्शन करना, सुसंगत निर्देश डिजाइन करना और विद्यार्थी मूल्यांकन डिजाइन करना जैसे घटक शामिल हैं। पाठ का नियोजन शिक्षक के अध्यापन और विद्यार्थी के सीखने को स्पष्ट और समयबद्ध बनाने में मदद करता है। सक्रिय नियोजन द्वारा विद्यार्थी को सक्रिय रखा जा सकता है और साथ ही उनके सीखने की क्रिया को रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है। योजना को प्रभावी बनाने की प्रक्रिया को लचीला रखना चाहिए जिससे अध्यापक पढ़ाते समय अपने विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर शिक्षण–प्रक्रिया में आवश्यक बदलाव भी कर सकें। पाठ–योजना विकसित करने हेतु विद्यार्थियों के पूर्व–ज्ञान का विश्लेषण करना और विद्यार्थियों को सीखने में मदद करने के लिए सर्वोत्तम संसाधनों और गतिविधियों को चिन्हित करना महत्त्वपूर्ण होता है। विद्यार्थियों को सहज और जिज्ञासु बनाएं रखने के लिए शिक्षकों को चाहिए कि वो अधिगम प्रक्रिया को सक्रिय और रोचक बनाएं।

11.07 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. पाठ योजना गतिविधियों की एक सुसंगत प्रणाली है जो विद्यार्थियों को शिक्षण के दौरान पढायी जा रही विषयवस्तु की समझ को बढ़ावा देती है। एक पाठ के दौरान कक्षा में क्या होगा इसके बारे में चिंतन की संज्ञानात्मक प्रक्रिया है।

2. पाठ योजना में कक्षा के कई पहलुओं पर विचार करना शामिल है, जिसमें उद्देश्य निर्धारण, विद्यार्थियों को सामग्री में संलग्न करने के तरीकों से लेकर विद्यार्थियों द्वारा प्रतिक्रिया करने के विभिन्न तरीके शामिल है। पाठ योजना एक शिक्षक को समय, संसाधनों, सामग्रियों और तकनीकों का इष्टतम स्तर पर उपयोग करने में मदद करती है।

3. असत्य

4. सत्य

5. अच्छी पाठ योजना की तीन विशेषताएं–

   - पाठ का नियोजन शिक्षक के अध्यापन और विद्यार्थी के सीखने को स्पष्ट और समयबद्ध बनाने में मदद करता है।
   - सक्रिय नियोजन द्वारा विद्यार्थी की सीखने की क्रिया को रुचिपूर्ण बनाया जा सकता है।
   - विद्यार्थियों और शिक्षकों को निर्देशात्मक मॉड्यूल के लक्ष्यों को समझने में मदद करता है

6. सत्य

7. पाठ योजना तैयार करते समय शिक्षक को निम्न बातें बिलकुल स्पष्ट होनी चाहिए:

   - विद्यार्थियों को आप क्या सिखाना चाहते हैं?
   - आप उस विषयवस्तु का परिचय कैसे देंगे?

- विद्यार्थियों को क्या करना होगा और क्यों?

8. पूर्व–ज्ञान से तात्पर्य बच्चों का प्रस्तुत पाठ से जुड़े आधारभूत प्रत्ययों के समझ, जो बच्चों में पूर्व से ही व्याप्त है

9. शिक्षण सामग्री का तात्पर्य शिक्षण के उन साधनों से है जिसका प्रयोग शिक्षक अपने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली एवं विद्यार्थियों के आसानी से ग्राह्य बनाता है

10. शिक्षण अधिगम सामग्री के तीन लाभ निम्नवत हैः

- इससे सीखा हुआ ज्ञान निश्चित और स्थायी बन जाता है और उन्हें रटने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- इसके द्वारा शिक्षार्थियों को प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान किया जाता है
- इसका उपयोग शिक्षण की एकरसता को दूर करता है।

11.08 अभ्यास कार्य

1. पाठ योजना के अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए ।
2. पाठ योजना की आवश्यकता को बताएं।
3. पाठ योजना की विभिन्न विशिष्टताओं को सूचीबद्ध करें।
4. पाठ योजना किस प्रकार विद्यार्थी और शिक्षक हेतु लाभकर है चर्चा कीजिए।
5. दृष्टिदिव्यांग बच्चों हेतु पाठ–योजना में परिवर्तनों का विश्लेषण कीजिए।
6. शिक्षण अधिगम सामग्री के संप्रत्यय की व्याख्या कीजिये।

11.09 चर्चा के बिंदु/स्पश्टीकरण

प्रश्न 01–"प्रभावी शिक्षण की आधारशीला एक प्रभावी एवं सुसंगत पाठ योजना है" अपने तर्क प्रस्तुत करते हुए व्याख्या कीजिए।

प्रश्न 02–"शिक्षण अधिगम सामग्री विद्यार्थियों के अधिगम को बढाती है तथा पाठ को रूचिकर बनाती है" इस तथ्य का विश्लेषण कीजिए।

11.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Baquer, A. and A. Sharma (1997). Disability: Challenges vs. Responses. New Delhi: CAN.
- Burden, P., & Byrd, D. (2003). Methods of effective teaching (3rd ed.). Boston: Allyn and Bacon.
- Danielson, C. (2007). Enhancing professional practice: A framework for teaching, 2nd ed. Alexandra, VA: ASCD
- Jalongo, R., Rieg, S. A., & Helterbran, V. R. (2007). Planning for learning: Collaborative approaches to lesson design and review. New York: Teachers College Press
- Ministry of Human Resource Development (2006), Confluence, Vol.28 Curricular Adaptations for Children with Special Needs https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/document-reports/Confluence.pdf
- Omstein, A. C. & Hunkins, F. P. (2009). Curriculum: Foundations, principles, and issues (5th ed.). Boston: Pearson.

- Omstein, A. C. & Lasley, T. J. (2004). Strategies for Effective Teaching (3rd ed.). Boston: McGraw Hill.
- Panasuk, R., Stone, W., & Todd, J. (2002). Lesson planning strategy for effective mathematics teaching. Education, 222(4), 808-827.

इकाई—12 शिक्षणशास्त्र नीतियाँ/शैलियाँ

संरचना

12.01 प्रस्तावना
12.02 उद्देश्य
12.03 दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के विशेष अधिगम लक्षण /गुण
12.04 दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त शिक्षणशास्त्र शैलियाँ
12.05 सारांश
12.06 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर
12.07 अभ्यास प्रश्न
12.08 चर्चा के बिंदु /स्पष्टीकरण
12.09 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.01 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आपने पाठ योजना एवं शिक्षण अधिगम सामग्रियों के बारे विस्तार से जाना। शिक्षण अधिगम सामग्रियों का उपयोग कर एक सफल पाठ योजना का क्रियान्वयन शिक्षक की शिक्षण शैलियों, विधियों एवं युक्तियों पर निर्भर करती हैं। वर्तमान की समावेशी शिक्षण प्रणाली सभी विद्यार्थियों को ध्यान में रख कर आयोजित की जाती है जिससे सभी विद्यार्थियों को आगे बढ़ने में सहायता मिलती है, लेकिन कुछ विशिष्ट शिक्षण रणनीतियाँ/शैलियाँ हैं जो एक समूह विशेष जैसे दृष्टि दिव्यांग, श्रवण दिव्यांग, बौधिक अक्षमता इत्यादि के लिए अधिक उपयोगी होती हैं। हमारे लिए (दृष्टिवान) अक्सर हर दिन प्राप्त होने वाली दृश्य जानकारी सहज होती है तथा हम उसे महत्व नहीं देते हैं। परन्तु एक दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थी के लिए अपने आस—पास की जानकरी अपनी आँखों के माध्यम से सहज प्राप्त नहीं होती। शिक्षण अधिगम के दौरान भी उन्हें अपनी अवशिष्ट दृष्टि या अन्य इन्द्रियों पर निर्भर होना पड़ता है। इसलिए इनके लिए शिक्षण करते समय कुछ विशिष्ट शिक्षण विधियों और युक्तियों का प्रयोग करना शिक्षक की नैतिक जिम्मेदारी के साथ ही उनकी व्यावसायिक दक्षता की श्रेणी में भी आता है। शिक्षक को इन विद्यार्थियों को समायोजित करने के लिए मानकों को कम करने की अपेक्षा नहीं की जाती है, बल्कि हमें उचित शिक्षण अधिगम विधियों और शैलियों के माध्यम से पाठ्यचर्या तक उनकी पहुँच सुनिश्चित करनी होगी तथा उन्हें यह प्रदर्शित करने का उचित अवसर देना होगा कि उन्होंने क्या सीखा है।

प्रस्तुत इकाई में हम दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के विशेष अधिगम लक्षण/गुण, अधिगम में आने वाली चुनौतियां तथा उनके प्रभावी शिक्षण हेतु शिक्षणशास्त्र युक्तियों या शैलियों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करेंगे।

12.02 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत के बाद आपः

1. शिक्षणशास्त्र युक्तियों, शैलियों की संकल्पना तथा उसका अर्थ समझ सकेंगे।
2. दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के विशेष अधिगम के लक्षणों की व्याख्या कर सकेंगे।
3. दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त शिक्षणशास्त्र युक्तियों के प्रकारों को चिन्हित कर सकेंगे।
4. दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त शिक्षणशास्त्र युक्तियों की विवेचना कर सकेंगे।
5. दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त विविध शिक्षणशास्त्र युक्तियों का अपने शिक्षण में प्रयोग कर सकेंगे।

12.03 दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों की विशेष अधिगम लक्षण/गुण

दृष्टि बाधित विद्यार्थियों को पढ़ाने से पहले, शिक्षकों के लिए यह जानकारी प्राप्त करना महत्वपूर्ण है कि दृष्टि हानि शिक्षण–अधिगम की प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित करती है। दृष्टि–बाधित विद्यार्थियों के लक्षण या उनकी स्थिति का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता। उनकी दृष्टिबाधिता कई स्थितियों का परिणाम हो सकती है और इसका प्रभाव दृष्टिबाधिता के प्रकार, सीमा और दृष्टि दिव्यान्गता से ग्रसित होने का समय इत्यादि कारकों पर निर्भर करता है। दृष्टिबाधिता की प्रकृति और सीमा के अनुसार उनके सीखने की क्षमता प्रभावित होती है। वैयक्तिक विभिन्नता के कारण सीखने पर दिव्यांगता का प्रभाव काफी भिन्न–भिन्न होता हैद्य कुछ विद्यार्थी जन्म से दृष्टि दिव्यांगता से प्रभावित होते हैं तो कुछ धीरे–धीरे दृष्टि क्षमता खोते हैं। कुछ के पास बिल्कुल भी दृष्टि नहीं होती, कुछ के पास कुछ दृष्टि होती है, कुछ प्रकाश–संवेदनशील होते है, या सीमित परिधीय दृष्टि होती है। यह भी संभव है कि दृष्टि और प्रकाश–संवेदनशीलता में दिन–प्रतिदिन उतार–चढ़ाव हो। कुछ ऐसे भी होते हैं जिनकी दृष्टि तीक्ष्णता समान होती है परन्तु क्रियात्मकता भिन्न –भिन्न होती है। अतः दृष्टिबाधिता एक व्यापक शब्द है जो दृष्टि की क्रियात्मकता में कमी की एक विस्तृत श्रृंखला को प्रदर्शित करती है।

दृष्टिबाधित शिक्षार्थी एक विजातीय समूह है जिसके भीतर विशेषताओं, क्षमता और आवश्यकताओं का एक विस्तृत स्पेक्ट्रम है। बचपन की दृष्टि हानि विशेष विकासात्मक और शैक्षिक आवश्यकताओं से जुड़ी होती है जो मुख्य रूप से सीखने के अवसरों में कम करती है जैसे कि अपने वातावरण का पता लगाने, आकस्मिक अनुभवों के माध्यम से सीखने और दूसरों को देखकर और उनकी नकल करके कौशल विकसित करने के सीमित अवसर। दृष्टि क्षमता में हानि सिखने, गतिशीलता, सामाजिक विकास और समायोजन में बाधा डाल सकती है। दृष्टि से प्राप्त जानकारी बच्चों को उनके वातावरण में क्या हो रहा है उसे देखने और व्याख्या करने में सहायता करती है। यह किसी विद्यार्थी के सीखने में संप्रत्यय विकास के लिए भी एक महत्वपूर्ण शर्त है इस कारण से, दृष्टि बाधित व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताएं अद्वितीय होती हैं जिन्हें जीवन के आरंभ में ही संबोधित करना सबसे अच्छा होता है। इन शैक्षिक आवश्यकताओं में अवधारणाओं का विकास, सुनने के कौशल में सुधार, और अध्ययन और अनुसंधान कौशल विकसित करना शामिल हैं।

दृष्टि, अधिकांश बच्चों के लिए प्राथमिक सीखने का तरीका और जानकारी का स्रोत है।अतः दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया बाकी विद्यार्थियों से भिन्न होती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थी विभिन्न तरीकों से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, उदाहरण के लिए ब्रेल, ऑडियो–टेप, या बड़े प्रिंट इत्यादि। ये विद्यार्थी सूचनाओं को टुकड़ों में एकत्र करते हैं। कई लोग मानक प्रिंट में परीक्षा प्रश्न और हैंडआउट पढ़ने में या परीक्षा प्रश्नों का उत्तर देते समय अपनी लिखावट पढ़ने में असमर्थ होंगे। वे अपने स्वयं के नोट्स लेने में भी असमर्थ हो सकते हैं। कुछ कार्यों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय की आवश्यकता होती है। कुछ विद्यार्थियों को वैकल्पिक प्रारूपों में जानकारी की आवश्यकता होती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थी सीखने के माहौल में अलग–थलग महसूस कर सकते हैं, जिसका असर उनके सीखने पर पड़ सकता है। सिरदर्द अक्सर आंखों पर तनाव के कारण होता है। इससे इन विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध अध्ययन समय में काफी कमी आ सकती है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में भागीदारी और बातचीत सीमित हो सकती है।

सामान्यतः पाठ्यचर्या की संरचना भी दृष्टि से युक्त विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर किया जाता है। परन्तु कोई भी अन्य इंद्रिय सीखने के प्रति जिज्ञासा को उस स्तर तक उत्तेजित नहीं कर सकती जितना की दृष्टि करती है। अन्य इन्द्रियां जानकारी को एकीकृत नहीं कर सकती है या अन्वेषण को उस तरह से या उतनी कुशलतापूर्वक और पूरी तरह से आमंत्रित नहीं कर सकती है, जितनी दृष्टि करती है। दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थी को किसी अवधारणा की पूरी तस्वीर एक साथ बनाने के लिए अन्य संवेदी अंगों के माध्यम से प्राप्त अधूरे संदेशों के माध्यम से अवधारणा का विकास करना पड़ता है। दृष्टिबाधित बच्चे को शिक्षण के दौरान यह निर्धारित करने में सहायता की आवश्यकता है कि इस अधूरी जानकारी को कैसे व्यवस्थित किया जाए।

दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थी दृश्य अनुकरण द्वारा काम करना नहीं सीख सकते है, जो प्रारंभिक विकास के दौरान सीखने का एक अभिन्न तरीका है। इस प्रकार, बुनियादी जीवन अवधारणाओं को समझने की उसकी क्षमता गंभीर रूप से प्रभावित होती है। केवल अनुभव–आधारित शिक्षा के माध्यम से ही दृष्टिबाधित बच्चे अपने आस पास की अवधारणाओं के बारे में जान पाते हैं। इसलिए शिक्षण के दौरान इन्हें व्यावहारिक अनुभवों हेतु बार–बार अवसरों को सुलभ कराने से ही अवधारणाओं को आंतरिक रूप से आत्मसात करना प्रारंभ करते हैं।

बोध प्रश्न:–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 01–दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया अन्य विद्यार्थियों से भिन्न होती है। (सत्य / असत्य)

....

....

प्रश्न 02– प्रारम्भिक जीवन काल में बच्चे अनुकरण के माध्यम से नहीं सीखते हैं। (सत्य / असत्य)

....

....

प्रश्न 03–दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को वैकल्पिक प्रारूपों में जानकारी की आवश्यकता होती है। (सत्य / असत्य)

....

....

प्रश्न 04– सभी दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आवश्यकता एक जैसी होती है।(सत्य / असत्य)

....

....

12.04 दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त शिक्षणशास्त्र युक्तियां

सामान्यतः शिक्षणशास्त्र को शिक्षण के सिद्धांत एवं अभ्यास के रूप में परिभाषित किया जाता है। शिक्षण शास्त्र उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है कि शिक्षक कैसे विशिष्ट लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए एक विशिष्ट पाठ्यचर्या का उपयोग करके शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को संचालित करता है। यह किसी विशेष वातावरण में, बच्चे किस शिक्षण विधि द्वारा सुगमता से सीखते हैं के विषय में, वैचारिक रूपरेखा को संदर्भित करता है। यह विद्यार्थियों पर ध्यान देते हुए उन्हें सक्षम बनाता है कि विद्यार्थियों में अधिगम कैसे प्रभावित होता है । वस्तुतः यह विद्यार्थियों को पढ़ाने के तरीकों को संदर्भित करता है। यह सीखने की संस्कृति और तकनीकों के बीच संबंध है। शिक्षण शास्त्र का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के सीखने का विकास करना है और शिक्षार्थियों के कौशल और दृष्टिकोण के विकास पर काम करना है। अध्यापन विद्यार्थियों में विषय की पूरी समझ विकसित करने में सक्षम बनाता है और उन्हें कक्षा के अंदर और बाहर अपने दैनिक जीवन में उपयोग करने में सहायता करता है। इस प्रकार शिक्षण–कार्य की प्रक्रिया का विधिवत अध्ययन शिक्षाशास्त्र या शिक्षणशास्त्र कहलाता है। इसमें अध्यापन की शैली या नीतियों का अध्ययन किया जाता है।

दृष्टिबाधिता किसी विद्यार्थी की सीखने में संलग्न होने की प्रेरणा को गंभीर रूप से बाधित करती है उदाहरण के लिए नकल और अवलोकन द्वारा सीखने की सीमित क्षमता और वस्तुओं, अवधारणाओं और विचारों को अर्थ देने में कठिनाइयों के कारण होती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में उपलब्ध संवेदी और अनुभवात्मक जानकारी की कमी की भरपाई करने हेतु विशेष रणनीतियों की आवश्यकता होती है। वातावरण तक पहुँचने के लिए श्रवण, घ्राण, स्पर्श और गतिज इंद्रियों के उपयोग में प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। प्राकृतिक परिवेश में विभिन्न प्रकार के वातावरणीय अनुभवों का ज्ञान जिससे बच्चे का नए परिवेश में सीखे गए कौशल को सामान्यीकरण करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है। वास्तविक वस्तुओं का उपयोग करके सार्थक दैनिक अनुभवों का विकास करने का अवसर इनके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अपने हमउम्र सहपाठियों के लिए बनी पाठ्यचर्या को वो आसानी से आत्मसात कर सके इसके लिए दो स्तरों पर पहुँच आवश्यक है। इन पहुंच आवश्यकताओं के लिए प्रमुख शैक्षिक प्रतिक्रियाएं बताती हैं कि शैक्षिक इनपुट दो पूरक रूपों में होती हैः

(1) **सीखने तक पहुंचः** यह पाठ्यचर्या, शैक्षणिक वातावरण एवं अन्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अनुकूलन एवं समायोजन से सम्बन्धित है। अर्थात यह शिक्षण के लिए सुलभध्सार्वभौमिक दृष्टिकोण पर जोर देती है।

(2) **पहुंच के लिए सीखनाः** यह दृष्टिदिव्यांग बच्चों की सामान्य पाठ्यचर्या एवं अन्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तक पहुँच सुनिश्चित करने हेतु विस्तारित मूल पाठ्यचर्या पर प्रशिक्षण से सम्बंधित है जैसे ब्रेल, गणितीय उपकरणों पर प्रशिक्षण, अनुस्थिति एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी तक पहुंच और कम दृष्टि विद्यार्थियों हेतु प्रशिक्षण, विशेषज्ञ, हस्तक्षेप इत्यादि शामिल है। यह लक्षित शिक्षण प्रावधानों तक इन विद्यार्थियों की पहुँच पर जोर देता है जो बच्चे या युवा व्यक्ति को स्वतंत्रता, कौशल सीखने और स्वतन्त्रापूर्वक सीखने और सामाजिक समावेशन हेतु व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से सहायता को विकसित करता है।

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के शिक्षकों की उनकी दृष्टिबाधिता से उत्पन्न बाधाओं को दूर करने में मदद करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अलावा, शिक्षक सुरक्षित और सुलभ शिक्षण वातावरण बनाने के लिए जिम्मेदार हैं जो छात्रों को सीखने के कार्यों में संलग्न होने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षक को अध्यापन कार्य करते समय इस बात को ध्यान रखना चाहिए कि अधिगमकर्ता अधिक से अधिक समझ विकसित कर सके। शिक्षकों को कई आकर्षक अनुभवों के माध्यम से दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को उचित रूप से पढ़ाने के लिए रचनात्मक रूप से सोचना चाहिए। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण विधियों और सामग्रियों पर पुनर्विचार करना और इन विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अच्छी तरह से विचार किए गए पाठ्यचर्या और कार्यप्रणाली को डिजाइन करना जरूरी है। दृष्टि बाधित विद्यार्थियों को यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष शैक्षणिक रणनीतियों की आवश्यकता होती है कि वे कक्षा में प्रदान की गई सभी जानकारियों एवं कौशलों को आत्मसात कर सकें। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों हेतु प्रयुक्त कुछ शिक्षण रणनीतियाँ/शैलियाँ निम्नलिखित हैं:–

सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना तथा छाप और नकारात्मक दृष्टिकोण हटाना – प्रभावी शिक्षण हेतु यह आवश्यक शर्त है कि शिक्षक को विद्यार्थी की क्षमता पर विश्वास होना चाहिए और यह मानना चाहिए की प्रत्येक विद्यार्थी सीख सकता है। सीखने और सीखने की प्रक्रिया का प्रारम्भ इसी सकारात्मक दृष्टिकोण से होता है। इसके साथ ही शिक्षक का दायित्व है विद्यार्थियों में भी सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करें जिससे वो क्या कर सकते हैं उस पर अपना ध्यान केन्द्रित करें ना की उस पर जिसे वो नहीं कर सकते। विद्यार्थियों की किसी भी प्रकार की छाप नहीं की जानी चाहिए । लेबलिंग/छाप और नकारात्मक दृष्टिकोण का विकास सीखने और शिक्षा प्राप्त करने के बाधक होता है। लेबलिंग या उनके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण के कारण, उनमें शैक्षणिक संस्थानों, विषयों, सामग्रियों, शिक्षण–सीखने के तरीकों और निर्देशात्मक रणनीतियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हो सकता है। कई बार अपने प्रति नकारात्मक रवैये के कारण, वे विद्यालय आना भी बंद कर सकते हैं।

प्रेरक/अनुकूल विद्यालयी वातावरण – एक प्रेरक अधिगम वातावरण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाती है। इसमें वातावरण के भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक दोनों वातावरण आते हैं। मनोवैज्ञानिक वातावरण कक्षा का ऐसा होना चाहिए जहाँ सभी विद्यार्थी उस वातावरण में सहज एवं भय मुक्त महसूस करें। जहाँ सभी बच्चों हेतु स्वीकृति का भाव हो। बच्चे सुरक्षित और आरामदायक वातावरण में दूसरों के साथ बातचीत करने में सहयोग करें। आनंददायक अनुभव और पारस्परिक आदान–प्रदान के साथ दूसरों के संपर्क में आने से संचार और सामाजिक विकास की नींव बनाने में मदद मिलती है।

भौतिक वातावरण– यह उस कक्षा में उपलब्ध भौतिक संसाधनों एवं उसके प्रबंधन से सम्बंधित होता है। कक्षा के भौतिक वातावरण को प्रायः व्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है ताकि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समायोजित किया जा सके। हालाँकि ये व्यवस्थाएँ आम तौर पर विद्यार्थियों की शारीरिक और तकनीकी आवश्यकताओं से प्रेरित होती हैं।

सहयोगात्मक शिक्षण को प्रोत्साहित करना – एक समावेशी कक्षा में विभिन्न सीखने की क्षमताओं और सीखने की आवश्यकताओं वाले विद्यार्थियों के बीच सहयोगात्मक सीखने को प्रोत्साहित करना, शैक्षणिक उपलब्धि, विषयों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और विद्यार्थियों के बीच सामाजिक संपर्क में सुधार करने में प्रभावी होता है। जब व्यक्ति एक–दूसरे के सहयोग से काम कर रहे होते हैं, तो वे अपनी समस्याओं का समाधान निकालने में सक्षम होते हैं और अपनी शिक्षा में सुधार करने में सक्षम होते हैं। टीम वर्क और सहयोग विद्यार्थियों को नवीन तकनीकों और विधियों के उपयोग के बारे में जागरूक बनाने में भी मदद करता है।

मौखिक/वर्णात्मकता को बढ़ावा देना– दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए आपकी शिक्षण शैली 'मौखिक' होनी चाहिए। इस बारे में सोचें कि उन विद्यार्थियों तक जानकारी कैसे पहुंचाई जाए जो यह नहीं देख सकते कि आप

क्या कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों में शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच मौखिक संचार को, सीखने का एक अनिवार्य साधन माना जाता है। क्योकिं ये बच्चे ज्यादातर सूचनाओं को श्रवण के माध्यम से ग्रहण करते है। अवधारणाओं की मौखिक व्याख्या प्रदान करने के बाद, शिक्षकों को, विद्यार्थियों को उनके संदेहों को दूर करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। जब आप दृष्टिबाधित या दृष्टिदिव्यांग बच्चों को पढ़ा रहे हो तो आपको उस सभी दृश्य सामग्रियों की व्याख्या करना महत्वपूर्ण हो जाता है, उदाहरण स्वरूप जब उसे आप कोई फोटो दिखा रहे हैं तो उसे एक–एक बिंदु को समझाएं, जो भी आप ब्लैक बोर्ड या सफेद बोर्ड पर लिख रहे हैं। आपको अपने अंदर उन्हें बोलकर समझाने की आदत भी विकसित करनी होगी। इस तरह से जो बच्चे देख नहीं सकते वह अपनी नोट्स सरलता से बना सकते हैं।

शिक्षण सामग्री का अनुकूलन– शिक्षण सामग्री को अनुकूलित करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए मुद्रित पाठ का आकार बढ़ाकर, मुद्रित सामग्री को बोल्ड करके, कंट्रास्ट बढ़ाकर, रंग जोड़कर, अक्षरों के बीच रिक्त स्थान को समायोजित करके अनुकूलित किया जा सकता है। ब्लैकबोर्ड या दृश्य सहायक उपकरणों पर बड़े लेखन का उपयोग किया जाना चाहिए। इन अनुकूलनों की सीमा का निर्धारण दृष्टि दिव्यान्गता की प्रकृति और विद्यार्थियों की आवश्यकताओं से निर्धारित होती है। इसलिए समावेशी कक्षा में शिक्षण से पहले सामग्री की तैयारी पर एक विशेषज्ञ शिक्षक से परामर्श करना महत्वपूर्ण है।

ऑडियो, प्रकाशीय और अप्रकाशीय उपकरणों का उपयोग – मौखिक शिक्षा दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए फायदेमंद साबित होती है। ऑडियो उपकरणों का समावेश मुख्य रूप से शिक्षण प्रक्रियाओं में सहायता करता है। इनमें ऑडियो कैसेट और कॉम्पैक्ट डिस्क शामिल हैं। प्रकाशीय उपकरण जैसे, चश्मा, मैग्निफायर और टेलीस्कोप, किसी व्यक्ति की अवशिष्ट दृष्टि को बढ़ाने के लिए लेंस का उपयोग करते हैं और आमतौर पर एक चिकित्सा विशेषज्ञ द्वारा निर्धारित किए जाते हैं। अप्रकाशीय उपकरणों के उदाहरणों में बड़े प्रिंट, ब्रेल और ब्रेल लेखक, टेप रिकॉर्डर, बुक स्टैंड, रिकॉर्डेड और टॉकिंग किताबें, कैलकुलेटर और कंप्यूटर शामिल हैं। प्रकाशीय और अप्रकाशीय दोनों उपकरणों की भूमिका अन्य इंद्रियों के उपयोग के माध्यम से विद्यार्थियों की दृष्टि में सुधार और कार्यक्षमता में वृद्धि करता है। एक शिक्षक की भूमिका इन विद्यार्थियों को दृश्य उपकरणों और सहायक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

स्पर्श सामग्रियों का उपयोग – जब आप कक्षा में दृष्टिबाधित या दृष्टिदिव्यांग बच्चों को पढ़ा रहे हो तो जहां भी संभव हो आपको स्पर्शीय शिक्षण निर्देश देने की कोशिश और सहयोग करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप सेब के बारे में बताएं ना कि उसकी फोटो दिखाएं भौतिक रूप से सेब कक्षा में रखें जिसे विद्यार्थी स्पर्श कर सके या हाथ में उठा सके। शिक्षकों को पता होना चाहिए, कि दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में दृश्य क्षमता न होने के कारण वैचारिक अनुभवों और समझ में कमी का अनुभव होता है। इसलिए, शिक्षण सामग्री का अनुकूलन प्रमुख हो जाता है, यदि उन्हें वे सभी चीजें सीखनी हैं जो दृश्य हानि के बिना अन्य विद्यार्थी कक्षा में सीखते हैं। इसकी सहायता के लिए, इन विद्यार्थियों को मूर्त अनुभवों का उपयोग करके सिखाया जाना चाहिए। छवियों और अवधारणाओं को समझने के लिए स्पर्श आरेख महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें शब्दों में समझाना और वर्णन करना मुश्किल है। इसलिए, उनका उपयोग स्पष्ट रूप से तब किया जाना चाहिए, जब अवधारणा को समझने के लिए आंकड़े और डिजाइन महत्वपूर्ण हों, लेकिन जब शिक्षण में सहायता के लिए वास्तविक वस्तुएं उपलब्ध न हों। एक विशेष स्लेट और लेखनी का उपयोग करके ब्रेल कागजों पर स्पर्शनीय चित्र या चित्र बनाए जा सकते हैं।

अतिरिक्त समय प्रदान करना – दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि में पढ़ना और लिखना तथा स्पर्श स्रोतों से जानकारी प्राप्त करना समय लेने वाला है। साथ ही, दृष्टिहीनता से पीड़ित विद्यार्थियों को सुनने के माध्यम से आने वाली जानकारी को एकीकृत करने के लिए बहुत समय की आवश्यकता होती है। इसलिए, उनके लिए अपना काम पूरा करने, दृश्य जानकारी को संसाधित करने और अपने लिखित कार्यों को पूरा करने के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना महत्वपूर्ण है। अल्प दृष्टि वाले विद्यार्थियों को सामान्य दृष्टि वाले विद्यार्थियों की तुलना में पाठ पढ़ने में अधिक समय लगता है। परीक्षाएं या अन्य मूल्याङ्कन प्रक्रिया में भी इनको अतिरिक्त समय प्रदान करना चाहिए हैं।

किसी भी दृश्य की व्याख्या– जब आप दृष्टिबाधित या दृष्टिदिव्यांग बच्चों को पढ़ा रहे हो तो आपको उस सभी दृश्य सामग्रियों की व्याख्या करना महत्वपूर्ण हो जाता है, उदाहरण स्वरूप जब उसे आप कोई फोटो दिखा रहे हैं या तो उसके एक–एक बिंदु को समझाएं। जो भी आप ब्लैक बोर्ड या सफेद बोर्ड पर लिख रहे हैं आपको अपने

अंदर उन्हें बोलकर समझाने की आदत भी विकसित करनी होगी इस तरह से जो बच्चे देख नहीं सकते वह अपनी नोट्स सरलता से बना सकते हैं।

सभी विद्यार्थियों को उनके नामों से संबोधन— सभी को अपने नाम से लगाव होता है क्योंकि नाम उसे विशिष्टता प्रदान करता है यह बात दृष्टि दिव्यांग बच्चों पर भी लागू होती है। नाम से संबोधित करने पर दृष्टिदिव्यांग बच्चों को पता चलता है कि कौन उनसे बात कर रहा है या नहीं। इसके लिए आप हमेशा विद्यार्थियों को उनके नाम से संबोधित करते हुए प्रश्न पूछे या उत्तर प्राप्त करें।

विषयवस्तु की प्रासंगिकता— विद्यार्थियों के अधिगम में विषय वस्तु का संदर्भ रहना आवश्यक है। विद्यार्थी वो पढने या सीखने में रूचि रखते है जो उनको उनके जीवन जीने के लिए अधिक वास्तविक और प्रासंगिक हो। विद्यार्थी प्रासंगिक विषय वस्तु को सीखना चाहते हैं। शिक्षक के रूप में, यह महत्वपूर्ण है कि हम इसे अपने दैनिक पाठों और गतिविधियों में प्रदान करें। बच्चे इस बात को समझे कि ''मैं इसका उपयोग कब करूंगा?'' या ''हमें इसे सीखने की आवश्यकता क्यों है?''। इससे वो उसे और रूचि और लगन से सीखने का प्रयास करेंगे। उम्र, क्षमता, लिंग, सामाजिक— आर्थिक स्थिति और रुचियों जैसी विविध विशेषताओं वाले व्यक्तियों के लिए विशिष्ट अवधारणाओं को प्रासंगिक बनाने के लिए कई उदाहरण और दृष्टिकोण को शिक्षण में शामिल करना चाहिए ।

लचीली पाठ्यचर्या— ऐसी पाठ्यपुस्तकें और अन्य पाठ्यचर्या सामग्री चुनें जो विविध क्षमताओं, रुचियों और सीखने की प्राथमिकताओं वाले विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान रखती हों। पाठ्यचर्या सुव्यवस्थित हो, महत्वपूर्ण बिंदुओं पर जोर दें, पृष्ठभूमि ज्ञान प्राप्त करने के लिए संदर्भ प्रदान करें, शब्दावलियाँ शामिल करें, और इसमें अध्याय की रूपरेखा, इत्यादि डिजिटल सामग्रियों के उपयोग करें जो विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं के आधार पर फीडबैक, पृष्ठभूमि जानकारी, शब्दावली और अन्य सहायता प्रदान करते हैं।

संज्ञानात्मक सहायता— विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम के दौरान संज्ञानात्मक रणनीतियों का प्रयोग कर प्रदान किया जा सकता है। संज्ञानात्मक सीखने की रणनीतियाँ ऐसी रणनीतियाँ हैं जो शिक्षार्थी की जानकारी को अधिक गहराई से संसाधित करने, नई स्थितियों में जानकारी स्थानांतरित करने और लागू करने की क्षमता में सुधार करती हैं और परिणामस्वरूप सीखने में वृद्धि होती है इसका उपयोग शिक्षार्थी अधिक सफलतापूर्वक सीखने के लिए करते हैं। इनमें दोहराव, अर्थ का सारांश बनाना, संदर्भ से अर्थ का अनुमान लगाना, याद रखने के लिए कल्पना का उपयोग करना इत्यादि कौशल शामिल है। शिक्षकों को चाहिए की शिक्षण के दौरान वे प्रमुख बिंदुओं का सारांश प्रस्तुत करें, पृष्ठभूमि और प्रासंगिक जानकारी दें और प्रभावी संकेत दें। विद्यार्थियों को सीखने में मदद करने के लिए रूपरेखा, सारांश, ग्राफिक आयोजक और अन्य उपकरण प्रदान करें। पाठ की शुरुआत में, एक या दो प्रश्न पूछने पर विचार करें और सत्र के अंत में विद्यार्थियों से उनका उत्तर देने को कहें।

अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प का प्रयोग— पिछले दशक से सबसे अधिक चर्चित शिक्षण दर्शन जिससे समावेशी शिक्षा व्यवस्था में सभी को शिक्षा प्रदान करने के लिए एक मात्र विकल्प के रूप में देखा जा रहा है। यह शिक्षण का एक ऐसा दृष्टिकोण है जिसका उद्देश्य लचीले अधिगम वातावरण का निर्माण करके सभी विद्यार्थियों के लिए समान सीखने के अवसर प्रदान करना है। यह कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी की आवश्कता की पूर्ति हेतु शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के सभी घटकों का अनुकूलन करता है। यह मानता है कि प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की जरूरतें और प्राथमिकताएँ अलग—अलग होती हैं। इसके द्वारा सीखने के एक ऐसे वातावरण का निर्माण कर सकते हैं जो विद्यार्थियों को पाठ्यचर्या तक पहुंचने और संलग्न करने की अनुमति देता है। इसमें शिक्षक विद्यार्थियों की विशिष्ट आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की पहचान कर, विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों, सामग्रियों और आकलनों का उपयोग करें जो लचीलेपन और पसंद की अनुमति देता हैं। यह सीखने के अनेक तरीके प्रदान करता है। इसके तीन प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं—

- **सहभागिता के अनेक साधन (Multiple means of engagement)**— उद्देश्यपूर्ण, प्रेरित शिक्षार्थियों के लिए, सीखने के लिए रुचि और प्रेरणा को प्रोत्साहित करता है। इसमें शिक्षक इस प्रश्न का उत्तर देने की कोशिश करता है कि मैं सभी विद्यार्थियों को कैसे शामिल कर सकता हूँ? यह विद्यार्थियों को विकल्प और स्वायत्तता देता है तथा सीखने को विद्यार्थियों की आवश्यकताओं और चाहतों के अनुरूप बनाता है।

- **प्रतिनिधित्व के अनेक साधन (Multiple means of Representation)**— शिक्षार्थियों के समक्ष सूचनाओं और सामग्रियों को अलग—अलग तरीकों से प्रस्तुत करता है। यह शिक्षकों शिक्षार्थियों तक सूचनाओं को

पहुँचाने हेतु अध्ययन सामग्री को विविध रूपों में प्रस्तुत करता है। जैसे प्रौद्योगिकी के माध्यम से विद्यार्थियों के लिए फॉन्ट आकार और पृष्ठभूमि रंगों को समायोजित करना। टेक्स्ट से जुड़ने के लिए विकल्प प्रदान करें, जैसे टेक्स्ट–टू–स्पीच, ऑडियोबुक, या पार्टनर रीडिंग।

- **क्रिया और अभिव्यक्ति के अनेक साधन (Multiple means of action and expression)** यह शिक्षार्थियों को उनके द्वारा सीखे गए ज्ञान और कौशल को व्यक्त करने के तरीकों में स्वतंत्रता देता है। अर्थात वे क्या जानते हैं? यह दिखाने के लिए उद्देश्यपूर्ण विकल्प कैसे प्रदान किया जाए? वे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रारूपों, जैसे पोस्टर प्रस्तुति या ग्राफिक, आडियो, ब्रेल इत्यादि के माध्यम से यह दिखाने की अनुमति देता है कि वे क्या जानते हैं।

इस प्रकार यू. डी.एल का प्रयोग सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए, प्रत्येक निर्देशात्मक पद्धति को लागू करते समय क्षमताओं, रुचियों, सीखने की शैलियों और अनुभवों की एक विस्तृत श्रृंखला पर विचार करता है जिससे की सभी विद्यार्थियों की उनकी आवश्यकता के अनुरूप अधिकतम अधिगम संभव हो सके।

बोध प्रश्नः–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 05 शिक्षण शास्त्र से क्या अभिप्राय है?

....

....

प्रश्न 06– "पहुंच के लिए सीखना" से क्या आशय है?

....

....

प्रश्न 07– अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के प्रमुख सिद्धांतों की सूची बनाईये।

....

....

प्रश्न 08– संज्ञानात्मक सहायता का क्या अर्थ है?

....

....

12.05 सारांश

दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लक्षण या उनकी स्थिति का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता। उनकी दृष्टिबाधिता कई स्थितियों का परिणाम हो सकती है और इसका प्रभाव दृष्टि हानि के प्रकार, सीमा और दृष्टि दिव्यान्गता से ग्रसित होने का समय इत्यादि कारकों पर निर्भर करता है। दृष्टिबाधिता किसी विद्यार्थी की सीखने में संलग्न होने की प्रेरणा को गंभीर रूप से बाधित करती है उदाहरण के लिए नकल और अवलोकन द्वारा सीखने की सीमित क्षमता और वस्तुओं, अवधारणाओं और विचारों को अर्थ देने में कठिनाइयों के कारण होती है। दृष्टिबाधित विद्यार्थियों में उपलब्ध संवेदी और अनुभवात्मक जानकारी की कमी की भरपाई करने हेतु विशेष रणनीतियों की आवश्यकता होती है। वातावरण तक पहुँचने के लिए श्रवण, घ्राण, स्पर्श और गतिज इंद्रियों के उपयोग में प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। प्राकृतिक परिवेश में विभिन्न प्रकार के वातावरणीय अनुभवों तक पहुँच जिससे बच्चे को नई परिवेश में सीखे गए कौशल को सामान्यीकरण करने की क्षमता का विकास किया जा सकता है। वास्तविक वस्तुओं का उपयोग करके सार्थक दैनिक अनुभवों का विकास करने का अवसर इनके लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना तथा लेबलिंग और नकारात्मक दृष्टिकोण हटाना , प्रेरक/अनुकूल विद्यालयी वातावरण का निर्माण, सहयोगात्मक शिक्षण को प्रोत्साहित करना, मौखिक/वर्णात्मकता को बढ़ावा देना, शिक्षण सामग्री का अनुकूलन, ऑडियो, प्रकाशीय और अप्रकाशीय उपकरणों का उपयोग, स्पर्श सामग्रियों का उपयोग, अतिरिक्त समय प्रदान करना, विषयवस्तु को प्रासंगिकता, लचीली पाठ्यचर्या, संज्ञानात्मक सहायता एवं

अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प का प्रयोग इत्यादि कुछ शिक्षण रणनीतियां/शैलियाँ हैं जिसका प्रयोग कर दृष्टिदिव्यांग विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सम्मिलित कर शिक्षा देकर समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है।

12.06 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. सत्य
2. असत्य
3. सत्य
4. असत्य
5. शिक्षण शास्त्र उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है कि शिक्षक कैसे विशिष्ट लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए एक विशिष्ट पाठ्यचर्या का उपयोग करके शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को संचालित करता हैं।
6. पहुंच के लिए सीखना का अर्थ है दृष्टिदिव्यांग बच्चों की सामान्य पाठ्यचर्या एवं अन्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तक पहुँच सुनिश्चित करने हेतु विस्तारित मूल पाठ्यचर्या पर प्रशिक्षण से सम्बंधित है, जैसे ब्रेल, गणितीय उपकरणों पर प्रशिक्षण, अनुस्थिति एवं चलिष्णुता प्रशिक्षण, प्रौद्योगिकी तक पहुंच और कम दृष्टि विद्यार्थियों हेतु प्रशिक्षण, विशेषज्ञ, हस्तक्षेप इत्यादि शामिल है।
7. अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प के प्रमुख सिद्धांत निम्नवत हैं।
   - सहभागिता के अनेक साधन
   - प्रतिनिधित्व के अनेक साधन
   - क्रिया और अभिव्यक्ति के अनेक साधन
8. संज्ञानात्मक सहायता ऐसी रणनीतियाँ हैं जो शिक्षार्थी की जानकारी को अधिक गहराई से संसाधित करने, नई स्थितियों में जानकारी स्थानांतरित करने और लागू करने की क्षमता में सुधार करती हैं और परिणामस्वरूप सीखने में वृद्धि होती है इसका उपयोग शिक्षार्थी अधिक सफलतापूर्वक सीखने के लिए करते हैं। इनमें दोहराव, अर्थ का सारांश बनाना, संदर्भ से अर्थ का अनुमान लगाना, याद रखने के लिए कल्पना का उपयोग करना इत्यादि कौशल शामिल है।

12.07 अभ्यास कार्य

प्रश्न1. शिक्षणशास्त्र युक्तियों की संकल्पना तथा उसका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 2. शिक्षणशास्त्र युक्तियों को परिभषित कीजिए।

प्रश्न 3. दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के विशेष अधिगम के लक्षणों की विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।

प्रश्न 4. दृष्टि दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए प्रयुक्त शिक्षणशास्त्र शैलियों का विश्लेषण कीजिए।

12.08 चर्चा के बिंदु/स्पशटीकरण

प्रश्न 01—अधिगम के सार्वभौमिक अभिकल्प से आप क्या समझते हैं? दृष्टिदिव्यांग बच्चों के शिक्षण में यह कैसे सहायक होगी, इसका विश्लेषण कीजिए।

12.09 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Agesa, L. (2014). Challenges faced by learners with visual impairments in inclusive setting in Trans-Nzoia country. Journal of Education and Practice, 5(29), 185-192. https://www.iiste.org/Journals/index.php/JEP/article/view/16203
- Asamoah, E., Ofori-Dua, K., Cudjoe, E., Abdullah, A., & Nyarko, J. A. (2018). Inclusive education: perception of visually impaired students, students without disability, and teachers in Ghana. SAGE Open, 8(4), 1-11. https://doi.org/10.1177/2158244018807791
- Athalekar, A.S. (2007) Early Preparation of the Visually Impaired Children. Mumbai: National Association for the Blind.
- Fernandez, G., Koening. C., Mani. M.N.G., & Tensi. S. (1999). See with the Blind. Books for Change, Banglalore.
- Mani, M.N.G. (1992). Concept Development of Blind Children. Coimbatore: SRK Vidyalaya.
- Mani, M. N. G. (1992). Techniques of Teaching Blind Children. New Delhi: Sterling publishers Pvt. Ltd.
- Srivastava, S. (2011). Education for the Visually Impaired Children. New Delhi: Sonali Publications.
- Vijayan, P. (2010) Instructional Methods and Strategies for Teaching Children with Visual Impairment. Tamil Nadu Open University.

खण्ड–5

इकाई–13 शारीरिक शिक्षा गतिविधियों का अनुकूलन

इकाई संरचना

13.01 प्रस्तावना

13.02 उद्देश्य

13.03 दृष्टिबाधित छात्रों के लिये अनुकूलित शारीरिक शिक्षा

13.04 शारीरिक शिक्षा, अनुस्थिति तथा चलिष्णुता कुशलता के मध्य सम्बंध

13.05 शारीरिक शिक्षा की क्रियायों को कराने के लिये विधियाँ

13.06 तनाव तथा स्वास्थ्य सम्बंधी समस्यायें एवं उनके समाधान

- 13.6.1 शारीरिक कारक
- 13.6.2 अचेतन कारक
- 13.6.3 सामाजिक कारक
- 13.6.4 दृष्टिबाधित बच्चों का समाज से अलगाव
- 13.6.5 उचित परामर्श और निर्देशन का अभाव

13.07 तनाव तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों से निपटने के लिये रणनीतियाँ

13.08 खेलकूद तथा मनोरंजन के साधन

- 13.8.1 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए ओउटडोर गेम
- 13.8.2 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए इनडोर गेम

13.09 सारांश

13.10 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

13.11 अभ्यास प्रश्न

13.12 चर्चा के विन्दु

13.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.01 प्रस्तावना

समानता के प्रत्यय की हम कई ढंग से व्याख्या कर सकते हैं। जहाँ तक दृष्टिबाधितों की शिक्षा का प्रश्न है समानता का अर्थ उन्हें आवश्यकता के अनुरूप अनुकूलित विधियों द्वारा सभी शैक्षिक अनुभव उपलब्ध करवाना है। अब यह माना जाने लगा है कि शारीरिक सीमाओं वाले छात्र समस्यात्मक न होकर विशेष आवश्यकता वाले होते हैं। ऐसे में स्वास्थ्य तथा जीवन के तनाव से दो चार होने में शारीरिक शिक्षा का विशेष महत्व है। आइये देखें कि कैसे समेकित शिक्षा तथा आवासीय विद्यालयों में दृष्टिबाधित छात्रों के लिये अनुकूलित शारीरिक शिक्षा का प्रारूप कैसा होना चाहिये।

13.02 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो जायेगें कि–

- दृष्टिबाधित छात्रों के लिये अनुकूलित शारीरिक शिक्षा को जान सकेंगे।

- तनाव तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों के समाधान के लिये रणनीतियाँ का प्रयोग कर सकेंगें।
- शारीरिक शिक्षा की क्रियायों को कराने के लिये विधियों का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।
- खेलकूद तथा मनोरंजन के साधन का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।

13.03 दृष्टिबाधित छात्रों के लिये अनुकूलित शारीरिक शिक्षा

शारीरिक शिक्षा को बच्चों की समग्र क्रियायों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शारीरिक शिक्षा से हमें शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक तथा नैतिक सभी क्षेत्रों में फिटनेस तथा संतुलन प्राप्त होता है। शारीरिक शिक्षा के विकास का न केवल शरीर पर किन्तु अन्य विविध शैक्षिक क्रियायों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यह एक अति महत्वपूर्ण पाठ्य सहगामी क्रिया है जो छात्रों के समग्र व्यक्तित्व विकास पर अपना प्रभाव डालती है। स्कूल स्तर पर शारीरिक शिक्षा के निम्न उद्देश्य होते हैं:

- माँसपेशी तंत्र का विकास करना तथा इसके विभिन्न शारीरिक क्रियायों से सम्बंध को समझना ।
- शरीर और मस्तिष्क के वद्धि एवं विकास के लिये अवसर प्रदान करना ।
- सामाजिक गुणों जैसे– सहायता की भावना , आज्ञाकारिता , खेल भावना , हार और जीत को समान भाव से लेना , ईमानदारी , साहस , तथा नेतृत्व आदि का विकास करना ।
- शारीरिक क्रियायों से व्यक्ति का कार्बनिक निकाय (Organic System) विकसित होता है । इसके अतिरिक्त शारीरिक शिक्षा से हमें गलत स्थिति (Posture) को सुधारने तथा शक्ति के विकास के लिये अवसर प्राप्त होते हैं।
- बीमारियों से बचाव तथा अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त होता है ।
- स्वच्छता सम्बंधी आदतों के विकास के अवसर प्राप्त होते हैं ।

दृष्टिबाधित अथवा शारीरिक रूप से अक्षम बच्चों की शारीरिक विकास की आवश्यकतायें सामान्य रूप से देखने वालों के समान ही होती हैं, किन्तु देख न पाने की वजह से उनकी खेलकूद की क्रियायें सीमित हो जाती हैं। अक्सर उनका शारीरिक विकास भी अवरुद्ध देखा गया है। चोट लगने का डर तथा विश्वास में कमी के कारण ऐसे बच्चों की न केवल शारीरिक शिक्षा की कक्षाओं में रुचि कम होती है अपितु उनका रोजाना एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाना भी काफी सीमा तक कम हो जाता है। परिणामस्वरूप ऐसे बच्चे दौड़ने, भागने, कूदने तथा चढ़ने आदि क्रियायों में भाग नहीं ले पाते जो सामान्य रूप से देखने वालों के बचपन की सहज क्रियायें हैं। पिछले लम्बे समय तक दृष्टिबाधित बच्चे शारीरिक शिक्षा से वंचित रहे हैं अतः ऐसे बच्चों के लिये उचित कार्यक्रम बनाकर शारीरिक शिक्षा के लाभ पहुँचाने का प्रयत्न करना चाहिये।

दृष्टिबाधितों के लिये अनुकूलित शारीरिक शिक्षा का ठीक वही उददेश्य होता है जो कि देखने वाले छात्रों के लिये होता है, अर्थात अपने शरीर की बनावट की समझ होना तथा शारीरिक क्रियायों सम्बंधी कुशलताओं का विकास। इससे हमें शरीर के विभिन्न अंगों के संचालन की जानकारी प्राप्त होती है।

अनुकूलित शारीरिक शिक्षा–

अनुकूलित शारीरिक शिक्षा को एक ऐसे कार्यक्रम की तरह समझा जा सकता है जिसमें उन दिव्यांग छात्रों की रुचि, योग्यताओं एवं सीमाओं के अनुसार खेलकूद एवं विकासात्मक क्रियायों का समावेश होता है जो सामान्य शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रम की कठिन क्रियायों में सफलतापूर्वक एवं सुरक्षित ढंग से हिस्सा नहीं ले पाते । ऐसे कार्यक्रम में उचित शारीरिक क्रियायें, आवश्यक सुविधायें एवं उपकरण, उचित शिक्षण विधि, कक्षाकक्ष प्रबंध एवं मूल्यांकन की विधियाँ होनी चाहिये। दृष्टिबाधितों के लिये शारीरिक गतिविधियों में विकासात्मक क्रियायों के साथ साथ कहानी तथा गानों के साथ वाले खेल, योग की क्रियायें, नृत्य, डम्बल, पोल वॉल्ट, जिमनास्ट, रस्सी पर की क्रियायें, ऐथिलैटिक्स की क्रियायें, कुश्ती, जल क्रीड़ा आदि हो सकती हैं।

जहाँ तक आवासीय विद्यालयों में दिव्यांग छात्रों के लिये शारीरिक शिक्षा का प्रश्न है, विशेष शारीरिक क्रियायें अभिकल्पित करने हैं। दृष्टिवानों के लिये आयोजित विभिन्न क्रियायों अथवा खेल के नियमों में थोड़े से अनुकूलन के साथ उन्हें दृष्टिबाधितों के लिये भी उपयोगी बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिये, वातावरणीय अनुकूलन तथा दृष्टिमूलक संकेतों के स्थान पर अदृष्टिमूलक अर्थात श्रवणीय संकेतों का प्रयोग करना। विशिष्ट आवासीय विद्यालयों में खेल कूद की क्रियायों को विशिष्ट उपकरणों, रणनीतियों तथा सुविधाओं के साथ आयोजित किया जा सकता है। यद्यपि अनुकूलित खेलों की गति मूल खेलों से फिर भी कम ही रहती है तथापि सिद्धांततः खेल प्रभावित नहीं होता क्योंकि आवासीय विद्यालय में केवल विकलांग छात्र ही खेल में भाग लेते हैं। दृष्टिबाधितों के लिये शारीरिक शिक्षा से सम्बंधित निम्न बिन्दु विचारणीय हैं:

- क्या नियमित स्कूलों में शारीरिक शिक्षा की कक्षाओं में दृष्टिबाधित छात्रों को नकारा जा सकता है?
- यदि नहीं तो किस सीमा तक वे इसमें भाग ले सकते हैं?
- यदि हाँ तो किन गतिविधियों में वे भाग नहीं ले सकते?
- छात्रों के प्रदर्शन के मापन का निर्धारण किस आधार पर होता है? क्या यह निर्धारण देखने वाले सहपाठियों के जैसा और उनके साथ ही होना चाहिये?
- अथवा क्या प्रदर्शन का निर्धारण केवल दृष्टिबाधितों के बीच होना चाहिये?

दृष्टिबाधितों के लिये शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम बनाते समय निम्न बिन्दु पर विचार करने से सहायता प्राप्त की जा सकती है :

- हम दृष्टिबाधित बच्चों को प्रत्येक गतिविधि में सम्मिलित नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे कई बार दृष्टिवान बच्चों के साथ तेजी से शारीरिक क्रियायें नहीं कर पाते, किन्तु कई खेलों में हम उन्हें सफलतापूर्वक सम्मिलित करवा सकते हैं।
- भारोत्तोलन तथा योग क्रियायें दृष्टिबाधित बच्चों को सिखाई जा सकती हैं । इसी तरह धीमी गति के खेलों को दृष्टिबाधितों के बीच करवाया जा सकता है।दृष्टिबाधितों के बीच प्रतियोगिता होने से प्रदर्शन का मूल्यांकन आसान होता है।
- शारीरिक शिक्षा का उददेश्य केवल खेलों में प्रवीणता हासिल करना नहीं होना चाहिये बल्कि शारीरिक क्षमता के विकास का भी ध्यान रखना चाहिये ।
- कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि खेल उपकरणों , विधियों तथा नियमों में अनुकूलन, जैसे– आवाज वाली बॉल से खेलकूद की गतिविधियों में दृष्टिबाधितों की रुचि को बढ़ाया जा सकता है। जहाँ ये सुविधायें उपलब्ध हैं, वहाँ दृष्टिबाधित बच्चे भी अन्य देखने वाले साथियों की तरह खेलों का आनंद उठाते हैं। कई प्रकार के अनुकूलन, जैसे – दौड़ने के रास्ते में लोहे की मजबूत पत्तियाँ लगाना, समेकित शिक्षा व्यवस्था में सम्भव नहीं होते क्योंकि केवल कुछ दृष्टिबाधित बच्चों के लिये खेल के मैदान को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप ढालने से शेष बहुसंख्य देखने वाले बच्चों का अहित होगा ।
- खेलों जैसे – क्रिकेट, फुटबॉल आदि में दृष्टिबाधित बच्चों के मध्य समूह बनाने चाहिये जबकि धीमी गति के खेलों– आसन, रस्सीकूद आदि में दृष्टिबाधित बच्चों को देखने वाले बच्चों के साथ समूह बना सकते हैं।
- जो खेल दृष्टिबाधित बच्चों के लिये ज्यादा उपयोगी नहीं हैं, उनका मौखिक वर्णन करना चाहिये। इससे वे दृष्टिवान बच्चों के साथ खेल का आनंद ले सकते हैं। यदि बच्चों को खेल के नियम पता हैं तो वे खेलों के बारे में सामान्य बहस अथवा प्रश्नोत्तरी (क्विज) में हिस्सा ले सकते हैं।

प्रश्न यह उठता है कि क्यों दृष्टिबाधित बच्चे खेलों में उतनी रुचि नहीं लेते जितना कि देखने वाले बच्चे। बच्चे प्रायः अपनी दृष्टि को सूचना प्राप्ति का प्रमुख स्रोत मानते हैं तथा खेल की तीव्र क्रियायों में उसका उपयोग भी

करते हैं। प्रथम, दृष्टिबाधित बच्चे चूंकि अपनी श्रवण क्षमता का प्रयोग करते हैं और इसकी गति दृष्टि के माध्यम से सूचना प्राप्ति से कम रहती है अतः देखने वाले बच्चे दृष्टिबाधित बच्चों के साथ खेल खेलने में ज्यादा रुचि नहीं लेते। यहाँ ध्यान रखने योग्य बात यह है कि बच्चों में पारस्परिक अलगाव दृष्टिबाधिता के कारण नहीं होता अपितु खेल की आवश्यकता के कारण होता है।

द्वितीय, बच्चों के संदर्भ में उनकी दृष्टिबाधा के रहते जिज्ञासा, खोज तथा परिस्थितियों को अपने अनुसार ढालने की योग्यताओं की कमी पाई जाती है। यह स्थिति मुख्यतः दृष्टिबाधा के प्राथमिक प्रभावों– अनुभवों के विस्तार एवं प्रकार में कमी, वातावरण पर नियंत्रण कर पाने में कमी तथा चलने फिरने में कमी – के कारण बनती है ।

खेलों में भागेदारी की कम रुचि का तीसरा कारण खेलों में टीम क्रिया की प्रमुखता है। प्रत्येक खिलाड़ी को हर समय परिस्थिति के अनुसार सक्रिय रहना होता है। समन्वय के साथ टीम भावना सफलता प्राप्त करने के लिये बहुत आवश्यक हैं। दृष्टिवान बच्चों के संग दृष्टिबाधित बच्चों की टीम बनाना कठिन होता है तथा स्वाभाविक रूप से खेल की क्रियायें प्रभावित होती हैं। ऐसे में पूर्णतः एकीकरण सम्भव नहीं होने पाता।

बोध प्रश्नः–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 01– स्कूल स्तर पर शारीरिक शिक्षा के किन्हीं दो उद्देश्य बताइएँ।

....

....

प्रश्न 02–दृष्टिबाधितों के लिये शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम बनाते समय किन बिन्दु पर विचार करने से सहायता प्राप्त की जा सकती है।

....

....

13.04 शारीरिक शिक्षा, अनुस्थिति तथा चलिष्णुता के मध्य सम्बंध

शारीरिक शिक्षा एवं अनुस्थिति तथा चलिष्णुता कुशलता के मध्य सम्बंध को कई अनुसंधानों के माध्यम से सिद्ध किया गया है। दोंनो में यह सम्बंध इतना अंर्तगुथित है कि एक दूसरे को अलग नहीं किया जा सकता। चलिष्णुता कुशलतायें – दिशा लेना या बदलना (Squaring Off), घड़ी का प्रत्यय, सीधे चल पाने के बजाय दायें अथवा बायें चलने लगना (Veering) तथा इन्द्रिय ज्ञान और मौखिक वर्णन के मेल से वातावरण के बारे में मानसिक चित्र खींचना (Visualisation) – सीधे तौर पर दृष्टिबाधित बच्चों के लिये शारीरिक शिक्षा की क्रियायों में सहायता करतीं हैं।

13.05 शारीरिक शिक्षा की क्रियायों को कराने की विधियाँ

चूँकि दृष्टिबाधित बच्चे मुख्यतः श्रवण तथा स्पर्श क्षमताओं पर निर्भर करते हैं। अतः शारीरिक शिक्षक को सावधानीपूर्वक बच्चों के लिये श्रवण तथा स्पर्श कुशलताओं के विकास की क्रमबद्ध योजना बनानी होगी। ज्यादातर दृष्टिबाधित छात्रों को ऐकिक (One to one) शिक्षण प्रणाली पर निर्भर रहना पड़ता है तथा उन्हें शारीरिक शिक्षा की क्रियायों को छोटे छोटे पदक्रमों में सीखना होता है। इन छात्रों के साथ शारीरिक शिक्षा में गति संवेदना (Kinesthetic sense) का बहुत प्रयोग किया जा सकता है। इस गति संवेदना से शिक्षण में शरीर की विभिन्न मासपेशियों की गतिशीलता की सक्रिय भूमिका होती है। गति संवेदना के प्रयोग से दृष्टिबाधित बच्चे भी अपरिचित वातावरण में अपने शरीर के गति की दिशा का पता लगा लेता है। शारीरिक शिक्षा की क्रियायों के संपादन में यह अति महत्वपूर्ण है। शरीर के विभिन्न अंगों, हड्डियों, जोड़ों तथा मासपेशियों की गति की जानकारी उपयोगी होती है। इस विषय में प्राथमिक स्तर के छात्रों के लिये खेल विधि सर्वोत्तम है। अध्यापकों को छात्रों की श्रवण तथा स्पर्श क्षमता के विकास के लिये निरंतर प्रयास करते रहना चाहिये।

13.06 तनाव तथा स्वास्थ्य सम्बंधी समस्यायें एवं उनके समाधान

दृष्टिबाधित व्यक्ति भी उन्हीं संवेगात्मक जटिलताओं से गुजरते हैं जिनसे सामान्य व्यक्ति। ज्यादातर परिस्थितियों में अपरिचित वातावरण से सामंजस्य बैठाने में दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिये अतिरिक्त तनाव पैदा होता है जो सामान्य जीवन के तनाव के साथ मिलकर व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर डालता है। इसमें माता–पिता की दृष्टिबाधा के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति, सीखने के अपर्याप्त अवसर तथा व्यवहार में दोहरे मापदण्ड सम्मिलित होते हैं। इस कारण दृष्टिबाधित बच्चों में हताशा बढ़ती है। किशोरावस्था में जब सैक्स के प्रति रुझान बढ़ता है, किशोरावस्था के अनुकूल व्यवहारों, जैसे– मोटर साइकिल चलाना तथा भविष्य में रोजगार, विवाह आदि के बारे में चिंतायें बढ़ जाती हैं ।

दृष्टिबाधा के साथ मानसिक स्वास्थ्य की समस्या होने के कारण व्यक्ति को उन परिस्थितियों के साथ सामंजस्य बैठाने में अधिक परेशानी आती है जिनमें संवेगात्मक मजबूती और स्थायित्व की आवश्यकता पड़ती है। उसे जीने के नये एवं अपरिचित तकनीकों को सीखने, मित्रों और व्यावसायिक साथियों के साथ सम्बंध बनाने, दिये गये कार्य को करने में हताशा तथा दूसरों पर निर्भरता का अनुभव करना पड़ता है।

दृष्टिबाधित बच्चों में स्वास्थ्य, तनाव तथा हताशा के मुख्य कारकों को निम्नलिखित ढंग से समझा जा सकता है:

13.06.01 शारीरिक कारक–

दृष्टिवान बच्चों के विपरीत दृष्टिबाधित बच्चों के व्यवहार दृष्टिमूलक उद्दीपनों के प्रति स्वाभाविक क्रिया न होकर स्पर्शीय तथा श्रवणीय उद्दीपनों के प्रति क्रियायों द्वारा निर्धारित होती हैं। ऐसा करते समय कई बार हताशा तथा तनाव का अनुभव होता है।

13.06.02 अचेतन कारक–

दृष्टिबाधित बच्चों में कई बार उनकी दृष्टिबाधा के कारणों को लेकर भ्रांतियाँ व्याप्त होती हैं। ऐसी गलत धारणा भी पाई जा सकती है कि दृष्टिबाधा उनके पूर्व जन्म के पापों का फल है। ये धारणायें व्यक्ति के अचेतन मन में होने के कारण कई बार उसका व्यवहार नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकता है।

13.06.03 सामाजिक कारक–

सामान्य दैनिक क्रियायों, जैसे– खाना, चलना तथा दूसरों से व्यवहार करना आदि में भी दृष्टिबाधित बच्चों को दृष्टिवान बच्चों के समान प्रदर्शन करने का दबाव होता है। दुर्भाग्यवश ऐसा सम्भव है कि जिस व्यवहार को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त हो वह दृष्टिबाधित व्यक्ति को स्वीकार न हो। ऐसा भी सम्भव है कि दृष्टिवान समाज जो सामान्य व्यवहार के नियम निर्धारित करे वे दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिये अनुचित अथवा कभी कभी खतरनाक साबित हों, जैसे खुश होने पर ताली बजाना, अथवा उछलना– कूदना। ऐसा करने पर सभ्य समाज दृष्टिबाधित व्यक्ति पर रूढ़िवादी व्यवहार (Blindism) प्रदर्शित करने का आरोप भी लगा सकता है।

लम्बे समय से सामान्य लोगों में दृष्टिबाधा के प्रति रूढ़िवादी अभिवृत्ति रही है कि अतिरिक्त ज्ञानेन्द्रिय के कारण या तो वह ज्यादा सावधानी से कार्य करता है अथवा ज्यादा होशियार होता है। परिणामस्वरूप या तो दृष्टिबाधित व्यक्ति की क्षमताओं को कम करके आंका जाता है अथवा ज्यादा। स्वाभाविक रूप से यह स्थिति उन दृष्टिबाधित लोगों के लिये तनाव पैदा करने वाली होती हे जो इन सामाजिक अपेक्षाओं पर खरे नहीं उतर पाते। अपरिचित वातावरण में इस तरह के तनाव वाली परिस्थितियाँ दृष्टिबाधित व्यक्ति में कटुता पैदा करती हैं जिसके कारण दृष्टिबाधित व्यक्ति का मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

13.06.04दृष्टिबाधित बच्चों का समाज से अलगाव–

किसी भी व्यक्ति के व्यवहार के निर्धारण में सामाजिक मानदण्डों का महत्वपूर्ण योगदान होता है । किसी समूह के प्रति झुकाव तथा समूह में स्वीकार्यता दो ऐसे कारक हो सकते हैं जिनसे व्यक्ति का व्यवहार निर्धारित होता है । ज्यादातर परिस्थितियों में उपर्युक्त दोंनो कारक ही व्यक्ति के कार्यों को निर्धारित करते हैं । समूह के प्रति झुकाव तथा मित्रता करना न केवल व्यक्ति की अपितु समाज की भी आवश्यकता है । जब दृष्टिबाधित व्यक्तियों को समाज की मुख्य धारा में सम्मिलित नहीं किया जाता है तो निश्चित रूप से इसका नकारात्मक प्रभाव

उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है तथा वह तनाव का शिकार हो जाता है । यह तनाव उसके व्यवहार में झलकने लगता है तथा परिणामस्वरूप वह दृष्टिबाधित व्यक्ति अन्य दृष्टिवान समाज के साथ तालमेल नहीं बिठा पाता ।

बोध प्रश्न–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 03––दृष्टिबाधित बच्चों के शारीरिक तनाव के कारक क्या है?

....

....

प्रश्न 04 –दृष्टिबाधित बच्चों के सामाजिक तनाव के कारक क्या है?

....

....

13.06.05 उचित परामर्श और निर्देशन का अभाव

बहुत बार दृष्टिबाधित बच्चों को परामर्श और निर्देशन देने वाला व्यक्ति दृष्टिवान होता है तथा वह अपने नजरिये से संसार को देखता है। माता पिता भी दृष्टिबाधा के प्रभावों को नहीं समझते तथा उन्हें इस बात की जानकारी नहीं होती कि क्या करना है और कैसे करना है। ऐसे में माता पिता की अज्ञानता के कारण दृष्टिबाधित बच्चों को या तो अति संरक्षण प्राप्त होने लगता है या फिर वह उपेक्षित हो जाते है। इस कारण से दृष्टिबाधित बच्चे का किसी कार्य में मन नहीं लगता और वह तनाव से घिर जाते है। माता पिता, या अन्य ऐसे व्यक्तियों को जो दृष्टिबाधित बच्चों के साथ कार्य करते हैं, दृष्टिबाधिता के विषय तथा उसके प्रभावों की अच्छी जानकारी लेनी चाहिये।

13.07 तनाव तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों से निपटने के लिये रणनीतियाँ

तनाव तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों से निबटने के लिये परिस्थितियों से सामंजस्य बैठाना होगा। इस विषय में Minnesota Multiphasic Personality Inventory (1958) का संदर्भ लेना उचित होगा जिसके अनुसार , दृष्टिबाधित व्यक्तियों में संवेगात्मक सामंजस्य को निर्धारित करने के व्यक्तिगत कारक ज्यादा महत्वपूर्ण हैं अतः सामूहिक सामंजस्य का दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिये अधिक महत्व नहीं होता है। तनाव तथा स्वास्थ्य की समस्यायों से निपटने के लिये कुछ कारगर रणनीतियों को निम्न बिन्दुवार समझा जा सकता है :

- शिक्षा तथा पुनर्वास के कार्यक्रमों में एकरूपता तथा समन्वय होना चाहिये।
- शिक्षा तथा स्वास्थ्य के कार्यक्रमों में समन्वय, जैसे – शीघ्र हस्तक्षेप कार्यक्रम (Early Intervention Programme) तथा Eye Camps का आयोजन शैक्षिक संस्थाओं में करवाया जाय ताकि समाज के साथ साथ दृष्टिबाधित व्यक्ति भी व्यक्तिगत स्तर पर जागरूक हो सकें।
- कम से कम ऐसे दष्टिबाधित छात्रों को, जो शैक्षिक ऐकेडेमिक रूप से अच्छे हैं, सामान्य विद्यालयों में अवसर प्रदान करना चाहिये।
- दृष्टिबाधित बच्चों को अति संरक्षण वाली अभिवृत्ति (Over Protection) से घर तथा स्कूल दोंनो जगहों पर छुटकारा मिलना चाहिये।
- दृष्टिबाधित बच्चों को केवल पुस्तकीय ज्ञान न करवाकर उन्हें जहाँ तक सम्भव हो अधिक से अधिक अनुभव कराये जायें ताकि वे समाज की मुख्य धारा में शामिल हो सकें।
- दृष्टिबाधित बच्चों के लिये पाठ्यक्रम की विविधता के माध्यम से समान शैक्षिक अवसरों को उपलब्ध कराने चाहिये।
- दृष्टिबाधित बच्चों की आवश्यकतायें दृष्टिवान बच्चों के समान ही होती हैं। हमें दृष्टिबाधित बच्चों के लिये बाधा मुक्त वातावरण प्रदान करना चाहिये ताकि वे समाज के विकास में बराबर का योगदान दे सकें।

- दृष्टिबाधित छात्रों के लिए दया की आवश्यकता नहीं है अपितु तथा किये गये कार्यों उनके प्रति ध्यान देना, लगाव रखना तथा किये गये कार्यों की सराहना करनी चाहिए।
- दृष्टिबाधित बच्चों तथा व्यक्तियों के साथ कार्य करने वालों को दृष्टिबाधा तथा दृष्टिबाधित व्यक्तियों के बारे में प्रशिक्षित करना चाहिये।
- दृष्टिबाधित बच्चों के लिये चलाये जा रहे प्रत्येक कार्यक्रम में प्रशिक्षित परामर्शदाता होना चाहिये ताकि दृष्टिबाधित बच्चों का सही मार्गदर्शन हो सके।

बोध प्रश्न—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 05——दृष्टिबाधित बच्चों के तनाव तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों से निपटने के लिये किन्ही दो रणनीतियों को स्पष्ट कीजिए।

....

....

13.08 खेलकूद तथा मनोरंजन के साधन

बाल्यावस्था किसी भी व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था होती है । इस अवस्था में बच्चों का विकास अत्यंत तेजी से होता है। बच्चों के पूर्ण विकास लिये जहाँ एक ओर शिक्षा का महत्व है, वहीं खेलकूद, मनोरंजन तथा व्यायाम का भी अपना महत्व है। खेलते कूदते और प्रसन्नचित्त रहने वाले बच्चों का शारीरिक तथा मानसिक विकास अच्छा होता है। खेलों का सीधा असर बच्चों के स्वास्थ्य तथा उनकी जीवन शैली पर पड़ता है। बच्चों में अच्छी आदतों, जैसे अनुशासन, परस्पर सहयोग तथा समय पालन आदि, का विकास बड़े ही सहज ढंग से किया जा सकता।

खेल एवं बचपन का आपस में बहुत गहरा सम्बंध है। शायद ही कोई बच्चा ऐसा हो जिसे खेल पसंद न हो, फिर चाहे बच्चा पूर्णतः दृष्टिबाधित ही क्यों न हो। खेलना बच्चों का अधिकार है अतः विद्यालय स्तर पर खेलकूद की पर्याप्त सुविधायें होनी चाहिये। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी खेलना बहुत महत्वपूर्ण होता है। क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि किसी रोते हुए बच्चे को कोई खिलौना देने से वह चुप हो जाता है और खेलने लगता है। अतः हम बड़ों को यह समझना होगा कि खेलना समय की बर्बादी नहीं है अपितु सीखने का अवसर है। विद्यालय में पढ़ाई के साथ साथ यदि खेलों पर पर्याप्त ध्यान दिया जाय तो काफी हद तक बच्चों द्वारा विद्यालय छोड़ देने की समस्या (drop out) से भी छुटकारा पाया जा सकता है ।

मनोरंजक क्रियायें

मनोरंजक क्रियायों की व्यापकता तथा उनकी उपियोगिता के बारे में गम्भीरता से समझना होगा । इन क्रियायों के प्रति लोगों की सामान्य अभिवृत्ति को भी बदलने की आवश्यकता है। सामान्यतया लोग इन्हें समय की बर्बादी समझते हैं जबकि इनकी शिक्षा में उपियोगिता को भूल जाते हैं। इन्हें हम कक्षा के स्तर से स्कूल तथा उच्च स्तर तक ले जा सकते हैं। कक्षा स्तर पर संगीत , कला तथा पेंटिंग की क्रियायें करवाई जा सकती हैं। आंशिक रूप से दृष्टिबाधित बच्चों के लिये रंगों का प्रयोग करना हमेशा अच्छा होता हैं। खेलकूद का क्रियायें भी अच्छा विकल्प हो सकती हैं। स्कूल के स्तर पर पिकनिक का आयोजन, सांस्कृतिक तथा राष्ट्रीय त्यौहारों को मनाना एवं संगीत, कला तथा खेलों की प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाना चाहिये। जनपद तथा उच्चतर स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेना। यहाँ तक कि विशेष बच्चों के लिये आयोजित ओलम्पिक खेलों में भाग लेना।

दृष्टिबाधित बच्चों के बीच खेलकूद की क्रियायें अपेक्षाकृत कम हो पाती हैं। इस कारण इन बच्चों का शारीरिक तथा मानसिक विकास कम हो पाता है। खेलों में रुचि बढ़ाने के लिए बच्चों को विभिन्न प्रकार के खेल खिलाए जा सकते हैं। जैसे– आवाज वाली गेंद के पीछे दौड़ना, शतरंज का खेल खेलना तथा बच्चों की दौड़ आदि। ऐसा देखा गया है कि दृष्टिबाधा के बावजूद बच्चों में खेल की भावनाएं प्रबल होती हैं और वे अवसर मिलने पर ठीक वैसे ही खेलकूद में भाग लेते हैं जैसे अन्य दृष्टिवान बच्चे।

मनोरंजक क्रियायें टेलीविजन देखने से लेकर माउंट एवरेस्ट पर चढ़ने तक कुछ भी हो सकती हैं। मई 2001 में Erik Weihenmeyer ऐसे पहले दृष्टिबाधित व्यक्ति बने जिन्होंने दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ाई की । आर्ट क्रॉफ्ट, रेडियो, कम्प्यूटर, इंटरनेट, लकड़ी पर कटाई, कुश्ती, भारोत्तोलन, जूडो, पानी के खेल, दौड़ भाग, साइकिल चलाना आदि क्रियायें मनोरंजन के साथ साथ खेलकूद के अवसर भी प्रदान करती हैं। भारतीय परिस्थितियों में दृष्टिबाधित छात्रों के लिये उपयोगी कुछ खेलों के नियमों के अनुकूलन की चर्चा करना यहाँ प्रासंगिक होगा।

13.8.1दृष्टिबाधित बच्चों के लिए घर के बाहर खेले जाने वाले खेल (outdoor game)

आप दृष्टिबाधित बच्चों के लिए क्रिकेट, जिमनास्टिक्स, मार्शल आट्र्स, टग–ऑफ–वॉर दौड़ना आदि सहित कई खेल उपलब्ध करा सकते हैं।

हॉकी

- हॉकी भारत का राष्ट्रीय खेल है। इसे भी दृष्टिबाधित छात्र खेल सकते हैं। इसके लिये हमें नियमों में कुछ अनुकूलन करना होगा।
- गोल होना केवल नैट के निचले आधे हिस्से में माना जाता है। इसका कारण यह है कि गोल रक्षक दृ ष्टिबाधित है तथा गेंद हवा में कोई आवाज नहीं करती।
- आक्रमणकारी क्षेत्र में गेंद हिट करने के पहले पास के खिलाड़ी को गेंद देनी (pass) होती है। इसका कारण यह है कि गोल रक्षक को पता होना चाहिये कि बॉल कहाँ से आ रही है। ऐसा करने से न केवल सुरक्षा रहती है अपितु खेल ज्यादा समावेशित हो जाता है।
- यदि गोल करते समय खिलाड़ी गोल रक्षक के पास खिंची सीमा रेखा (D) तक आ जाय तो उसे ऑफसाइड घोषित कर खेल रोक दिया जाता है । इसका कारण भी खिलाड़ियों की सुरक्षा है क्योंकि खिलाड़ी और गोल रक्षक दोंनो ही एक दूसरे को देख नहीं पा रहे है ।
- हॉकी स्टिक को बहुत ऊपर उठाकर मारना मना है ताकि अन्य खिलाड़ियों को चोट न लगे।
- सभी खिलाड़ियों को सुरक्षा कारणों से चेहरे तथा गर्दन आदि शरीर के अंगों के लिये कवच अनिवार्य रूप से पहनने होते हैं।
- खिलाड़ियों को उनके ऑफ साइड में 3 फीट की अनुवात गमन के लिये गुंजाइश (leeway) दी जाती है। इसका कारण यह है कि दृष्टिबाधित खिलाड़ियों को तेजी से दौड़ते समय कई बार नीली रेखा पता लगाना कठिन होता है।

क्रिकेट

- भारत में क्रिकेट बहुत लोकप्रिय है, और इस देश में नेत्रहीन लोग कोई अपवाद नहीं हैं। दृष्टिबाधित लोग भी क्रिकेट के प्रति उतने ही जुनूनी हैं। ब्लाइंड क्रिकेट नेत्रहीन और आंशिक दृष्टि वाले खिलाड़ियों के लिए अनुकूलित क्रिकेट के खेल का एक संस्करण है। वह खेल जो 1920 के दशक से खेला जा रहा है।
- दृष्टिबाधित क्रिकेट के नियम कुछ आवश्यक संशोधनों के साथ क्रिकेट के मानक कानूनों पर आधारित हैं। खेलने के उपकरण के संदर्भ में, प्रमुख अनुकूलन गेंद है।
- नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर द विजुअली हैंडीकैप्ड (NIVH), देहरादून ने ऑडियो बॉल विकसित की जिसे अब अंतर्राष्ट्रीय मानक के रूप में स्वीकार किया गया है।
- यह बॉल हार्ड प्लास्टिक से बनी होती है जिसके अंदर बॉल बेयरिंग होते हैं। स्टंप एक सेट में वेल्डेड खोखले स्टील पाइप से बने होते हैं, ताकि बल्लेबाजी या गेंदबाजी करते समय खुद को सही ढंग से

संरेखित करने के लिए पूरी तरह से दृष्टिहीन खिलाड़ी इसे छू सकें और गेंद लगने पर ध्वनि उत्पन्न हो सके।

- क्रिकेट खेल आजकल बहुत लोकप्रिय हो रहा है। इसके लिये दृष्टिबाधित बच्चे आवाज वाली गेंद का प्रयोग करते हैं। आवाज वाली गेंद बनाने के लिये एक सामान्य रबड़ अथवा प्लास्टिक की गेंद में छेद करके लोहे के छर्रे डाले जाते हैं तथा फिर छेद को सील कर दिया जाता है ।
- क्रिकेट दो टीमों के बीच खेला जाता है तथा प्रत्येक टीम में ग्यारह ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। एक टीम में कम से कम चार पूर्णतः दृष्टिबाधित (B1) तीन आंशिक दृष्टिबाधित (B2) तथा अधिक से अधिक चार आंशिक दृष्टिवान (B3) खिलाड़ी हो सकते हैं।
- B1 श्रेणी में वे खिलाड़ी आते हैं जिन्हें अंधेरे अथवा उजाले का भी पता नहीं चलता अथवा यदि पता चलता भी है तो कितनी भी पास अथवा दूरी से और किसी भी दिशा में वे किसी अन्य व्यक्ति के हाथ की आकृति को पहचान नहीं सकते। खेलते समय पहचान के लिये ये खिलाड़ी सीधी कलाई पर सफेद बाजूबंध लगाते हैं।
- B2 श्रेणी में जो खिलाड़ी आते हैं उनकी दृष्टि तीक्ष्णता की स्थिति किसी अन्य व्यक्ति के हाथ की आकृति को पहचानने से लेकर 2/60 के बीच अथवा उनके दृष्टि क्षेत्र की माप बेहतर आँख में तमाम सुधारों के साथ पाँच डिग्री से कम होती है । खेलते समय पहचान के लिये ये खिलाड़ी सीधी कलाई पर लाल बाजूबंध लगाते हैं ।
- B3 श्रेणी में जो खिलाड़ी आते हैं उनकी दृष्टि तीक्ष्णता की स्थिति 2/60 से लेकर 6/60 के बीच अथवा उनके दृष्टि क्षेत्र की माप बेहतर आँख में तमाम सुधारों के साथ बीस डिग्री से कम होती है। खेलते समय पहचान के लिये ये खिलाड़ी सीधी कलाई पर नीली बाजूबंध लगाते हैं।
- यद्यपि आउट होने के नियम सामान्य क्रिकेट की तरह ही हैं किन्तु B1 क्षेत्र रक्षक द्वारा एक टिप्पा के बाद कैच लेने से भी बल्लेबाज को आउट दिया जाता है।
- खेलने की पिच सामान्यतया 22 गज लम्बी तथा 3 गज चौड़ी होती हैं।
- सीमा रेखा सामान्यतया 45 से 55 गज की होती है।

फुटबॉल

- अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार दृष्टिबाधितों के लिये फुटबॉल के मैदान की लम्बाई 38 से 42 मीटर तथा चौड़ाई 18 से 22 मीटर होती है।
- बॉल गोलाकार 510 से 540 ग्राम वजनी तथा 60 से 62 सेमी परिधि वाली सामान्यतया चमड़े की बनी होती है। हवा का दबाव 400 से 600 ग्राम/वर्गसेमी होना चाहिये । बॉल में हवा तथा अपने अक्ष पर घूमते समय आवाज करने की व्यवस्था होनी चाहिये ताकि दृष्टिबाधित खिलाड़ियों को खेलने में कोई असुविधा न हो।
- एक टीम में अधिक्तम 5 खिलाड़ी होते है जिसमें 4 पूर्णतः दृष्टिबाधित B1 तथा एक गोल रक्षक B2, B3 आंशिक दृष्टिबाधित भी हो सकता है।
- खिलाड़ियों को उनकी सुरक्षा हेतु उपकरण तथा आँखों पर पट्टी बाँधकर खेलना होता है।
- कुल खेल में 25 & 25 मिनट के दो भाग होते हैं । किसी भी स्थिति में बीच में 10 मिनट से ज्यादा मध्यांतर नहीं होगा।
- नियमों की विस्तृत जानकारी के लिये IBSA Futsal Rulebook 2009 –13 को संदर्भित किया जा सकता है ।

कबड्डी

- दृष्टिबाधितों के लिये कबड्डी के मैदान की लम्बाई 13 मीटर तथा चौड़ाई 10 मीटर होती है ।
- खिलाड़ियों को एक साँस में कबड्डी कबड्डी शब्द उच्चरित करना होता है ।
- एक टीम में 7 खिलाड़ी एक साथ खेल खेल सकते हैं। इनमें 4 खिलाड़ी B1, 2 खिलाड़ी B2 तथा 1 खिलाड़ी B3 हो सकता है।
- B1 खिलाड़ी को लाल , B2 खिलाड़ी को नीला तथा B3 खिलाड़ी को पीला बाजूबंद पहनना होता है।
- कुल खेल में 20–20 मिनट के दो भाग होते हैं। प्रत्येक स्थिति में बीच में 7 मिनट का मध्यांतर होता है।
- शेष नियम सामान्य कबड्डी की भाँति होते हैं तथा Indian Blind Sports Association से इनके लिये सम्पर्क किया जा सकता है।

एथेलेटिक्स

- एथेलेटिक्स प्रतियोगिताएं , जैसे – दौड़ , कूद , फैंक आदि के नियमों में थोड़े अनुकूलन के साथ दृष्टिबाधित बच्चे इनका आनंद ले सकते है।
- दौड़ की प्रतियोगिता की शुरूआत करने के लिये सीटी का प्रयोग या बंदूक की आवाज का प्रयोग करते हैं ताकि धावकों को पर्याप्त सुनने लायक आवाज दी जा सके।
- दृष्टिबाधित धावकों को प्रायः दो वर्गों– पूर्णतः दृष्टिबाधित तथा आशिक दृष्टि वाले– में रखा जाता है । धावकों की अलग अलग दृष्टिमूलक क्षमता को ध्यान में रखते हुये सभी की आँखों पर पट्टी बाँध (Blind fold) देते हैं।
- दौड़ प्रतियोगिता की समाप्ति रेखा पर एक ऐसी आवाज का प्रबंध करना आवश्यक होता है जिससे दृष्टिबाधित धावक सीधी रेखा में दौड़ पायें।

अन्य खेल

- बास्केट बॉल में बैटरी से चलने वाली इलैक्ट्रॉनिक बीपर इस ढंग से लगी होती है कि ऑन/ऑफ बटन खिलाड़ियों की पहुँच में रहे।
- टेबिल टैनिस की मेज पर नेट तथा किनारों पर थोड़े अनुकूलन के साथ दृष्टिबाधित बच्चे आसानी से इसे महसूस कर सकते हैं। आजकल यह खेल विशेषकर दक्षिण पूर्व एशिया में दृष्टिबाधित बच्चों के बीच लोकप्रिय हो रहा है।
- तैराकी भी दृष्टिबाधित बच्चों के बीच एक खेल के रूप में तेजी से लोकप्रिय हो रहा है । एक सामान्य तरणताल , जिसके किनारों पर कंधों की ऊँचाई के संकेत हों, का प्रयोग

दृष्टिबाधित बच्चों को तैरने का प्रशिक्षण देने के लिये किया जा सकता है।

13.8.2 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए इनडोर गेम–दृष्टिबाधित बच्चों के लिए कई इनडोर गेम उपलब्ध हैं जिनमें शतरंज, ताश खेलना, म्यूजिकल टॉयज कंप्यूटर गेम्स आदि शामिल हैं।

शतरंज (Chess)– शतरंज दिमाग का खेल है। यह दृष्टिबाधित व्यक्तियों के आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाने के बारे में है। शतरंज की बिसात और टुकड़ों में कुछ भौतिक संशोधनों के साथ शतरंज उपलब्ध है। सफेद वर्गों की तुलना में सभी काले वर्ग ऊपर (लगभग 3–4 मिमी) ऊपर उठाए गए हैं। शतरंज के प्रत्येक टुकड़े के आधार पर एक नीचे की ओर प्रक्षेपण होता है ताकि प्रत्येक वर्ग के केंद्र में एक छेद वाले बोर्ड पर वर्गों में फिट हो सके। सभी काले मोहरों के सिर पर एक पिन लगी होती है। टुकड़ों पर पिन के स्पर्श से खिलाड़ी को

एक सफेद टुकड़े को एक काले से अलग करने में मदद मिलती है। इसलिए खिलाड़ी बोर्ड पर स्थिति के बारे में अपने दिमाग में स्पष्ट तस्वीर रखते हुए शतरंज खेलने में सक्षम होता है।

ताश (Playing Cards)– ताश खेलना दुनिया भर में एक बहुत लोकप्रिय इनडोर गेम है। मामूली अनुकूलन के साथ दृष्टिबाधित व्यक्ति ताश का आनंद ले सकते हैं। विशिष्ट कोड प्रत्येक कार्ड के ऊपरी बाएँ कोने में ब्रेल में बनाया जा सकता है। किसी भी अन्य व्यक्ति के समान तीव्रता के साथ ताश खेलने का आनंद लिया जा सकता है।

कंप्यूटर गेम (Computer Games)– ऐसे कई कंप्यूटर गेम हैं जिनका स्क्रीन रीडर की मदद से दृष्टिबाधित बच्चे आनंद ले सकते हैं। इन बच्चों के लिए मनोरंजन के साथ सीखने की सुविधा प्रदान करने वाले कई मनोरंजक उपकरण भी उपलब्ध हैं।

बोध प्रश्नः–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 05––दृष्टिबाधित बच्चों द्वारा खेले जाने वाले कुछ आउटडोर. गेम के नाम लिखिए।

....

....

प्रश्न 06––दृष्टिबाधित बच्चों द्वारा खेले जाने वाले कुछ इनडोर. गेम के नाम लिखिए।

....

....

13.09 सारांश

निष्कर्ष में, उपयुक्त उपकरणों का उपयोग करने वाली अच्छी तरह से नियोजित शारीरिक गतिविधियाँ किसी व्यक्ति की क्षमताओं को अधिकतम करती हैं और उनके सामने आने वाली किसी भी विशेष चुनौती को कम करती हैं। किसी खेल या गतिविधि को अपनाने से मनोरंजन, कौशल विकास और आत्मविश्वास के अवसर बढ़ जाते हैं। एक नया खेल या मनोरंजक गतिविधि सीखने से दृष्टिबाधित व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होता है और कल्याण और क्षमता की सामान्य भावना पैदा होती है।

13.10 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

उत्तर 01– स्कूल स्तर पर शारीरिक शिक्षा के दो उद्देश्यः–

- माँसपेशी तंत्र का विकास करना तथा इसके विभिन्न शारीरिक क्रियायों से सम्बंध को समझना ।
- शरीर और मस्तिष्क के वद्धि एवं विकास के लिये अवसर प्रदान करना ।

उत्तर 02–दृष्टिबाधितों के लिये शारीरिक शिक्षा का कार्यक्रम बनाते समय निम्न बिन्दु पर विचार करने से सहायता प्राप्त की जा सकती है **:**

- हम दृष्टिबाधित बच्चों को प्रत्येक गतिविधि में सम्मिलित नहीं कर सकते हैं क्योंकि वे कई बार दृष्टिवान बच्चों के साथ तेजी से शारीरिक क्रियायें नहीं कर पाते, किन्तु कई खेलों में हम उन्हें सफलतापूर्वक सम्मिलित करवा सकते हैं।
- भारोत्तोलन तथा योग क्रियायें दृष्टिबाधित बच्चों को सिखाई जा सकती हैं । इसी तरह धीमी गति के खेलों को दृष्टिबाधितों के बीच करवाया जा सकता है।दृष्टिबाधितों के बीच प्रतियोगिता होने से प्रदर्शन का मूल्यांकन आसान होता है।

- शारीरिक शिक्षा का उददेश्य केवल खेलों में प्रवीणता हासिल करना नहीं होना चाहिये बल्कि शारीरिक क्षमता के विकास का भी ध्यान रखना चाहिये ।

उत्तर 03– तनाव तथा स्वास्थ्य की समस्यायों से निपटने के लिये कुछ कारगर रणनीतियॉ निम्नवत् हैः–

- शिक्षा तथा पुनर्वास के कार्यक्रमों में एकरूपता तथा समन्वय होना चाहिये।
- शिक्षा तथा स्वास्थ्य के कार्यक्रमों में समन्वय, जैसे – शीघ्र हस्तक्षेप कार्यक्रम (Early Intervention Programme) तथा Eye Camps का आयोजन शैक्षिक संस्थाओं में करवाया जाय ताकि समाज के साथ साथ दृष्टिबाधित व्यक्ति भी व्यक्तिगत स्तर पर जागरूक हो सकें।

उत्तर 04– दृष्टि बाधित बच्चों के तनाव के सामाजिक कारण

सामान्य दैनिक क्रियायों, जैसे– खाना, चलना तथा दूसरों से व्यवहार करना आदि में भी दृष्टिबाधित बच्चों को दृष्टिवान बच्चों के समान प्रदर्शन करने का दबाव होता है। दुर्भाग्यवश ऐसा सम्भव है कि जिस व्यवहार को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त हो वह दृष्टिबाधित व्यक्ति को स्वीकार न हो । ऐसा भी सम्भव है कि दृष्टिवान समाज जो सामान्य व्यवहार के नियम निर्धारित करे वे दृष्टिबाधित व्यक्ति के लिये अनुचित अथवा कभी कभी खतरनाक साबित हों, जैसे खुश होने पर ताली बजाना, अथवा उछलना– कूदना। ऐसा करने पर सभ्य समाज दृष्टिबाधित व्यक्ति पर रूढ़िवादी व्यवहार (Blindism) प्रदर्शित करने का आरोप भी लगा सकता है।

उत्तर 05–दृष्टिबाधित बच्चों द्वारा खेले जाने वाले कुछ आउटडोर गेम–हॉकी,क्रिकेट,फुटबॉल,कबड्डी,बास्केअ बाल,टेबिल टेनिस इत्यादि।

उत्तर 06–दृष्टिबाधित बच्चों द्वारा खेले जाने वाले कुछ इनडोर गेम– शतरंज,ताश,कंप्यूटर इत्यादि।

13.11 अभ्यास प्रश्न

1. दृष्टिबाधित छात्रों के लिये अनुकूलित शारीरिक शिक्षा का वर्णन कीजिए।
2. तनाव तथा मानसिक स्वास्थ्य की समस्यायों से निबटने के लिये रणनीतियाँ पर प्रकाश डालिए।
3. शारीरिक शिक्षा की क्रियायों को कराने के लिये विधियाँ का विस्तार से उल्लेख कीजिए।
4. दृष्टिबाधित छात्रों **में** तनाव तथा स्वास्थ्य सम्बंधी समस्यायें एवं उनके समाधान को बताइए।
5. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए विभिन्न इनडोर और आउटडोर खेलों की सूची बनाएं।
6. दृष्टिबाधितों के लिए क्रिकेट में क्या अनुकूलन किए गए हैं?
7. दृष्टिबाधित बच्चों के लिये इनडोर गेम का मनोरंजन के साधनों के रूप में विस्तार पूर्वक उल्लेख कीजिये।
8. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए एक नया खेल अपनाने की योजना बनाएं।

13.12 चर्चा के बिन्दु/स्पष्टीकरण

1. छात्राध्यापक आपस में शारीरिक शिक्षा एवं अनुस्थिति तथा चलिष्णुता कुशलता मध्य सम्बंध पर चर्चा करेगें।
2. छात्राध्यापक आपस में दृष्टिबाधित बच्चों के लिये खेलकूद तथा मनोरंजन के अन्य साधनों के अनुकूलन के सन्दर्भ में चर्चा करेंगें।

13.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सन्दर्भ सूची:

- Dignan, K. C. (2012). Expanded Core Curriculum. Texas School for the Blind and Visually Impaired Retrieved from http://www.tsbvi.edu/tb-ecc

- Expanded Core Curriculum Advocacy (2016). Recreation, Fitness, and Leisure and the Expanded Core Curriculum. American Foundation for the Blind and Perkins School for the Blind. Retrieved from http://www.eccadvocacy.org
- Letcher, K. (2006). Overbrook School for the Blind website. Overbrook School for the Blind website, Retrieved from http://www.sl18134197.onlinehome.us/page.php?/TEM=39
- Lieberman, L. J. (1996), Adapting games, sports, and recreation for children and adults. Deaf-Blind Perspectives, 3(3), 5-8. http://www.tr.wou.edu/tr/dbp/pdf/may96.pdf
- Mincemoyer, C. C. (2016). Art - An Opportunity to Develop Children's Skills. Penn State Extension. The Pennsylvania State University.
- Ministry of Ayush, (2015). Common Yoga Protocol. Government of India. Ministry ofAyurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH).
- NCERT (2006). National Curriculum Framework 2005. Position paper National focus group in Education of Children with Special needs. New Delhi: NCERT 278
- WHO (2008). School policy framework: implementation of the WHO global strategy on diet, physical activity and health. World Health Organization, Geneva.
- MMPI-2, Pearson Website (http://www.pearsonassessments.com/mmpi2.aspx)
- MMPI-A (Minnesota Multiphasic Personality Inventory-Adolescent) (http://www.pearsonassessments.com/tests/mmpia.htm)
- MMPI Research Project (http://www.umn.edu/mmpi/) Retrieved from http://en.wikipedia.org/w/index.php?title=Minnesota_Multiphasic_Personality_Inventory&oldid=640667324
- IBSA Futsal Rulebook 2009-2013 Retrieved from https://docplayer.net/9278836-Ibsa-futsal-rulebook-2009-2013-1

इकाई—14 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला

संरचना

14.01 प्रस्तावना

14.02 उद्देश्य

14.03 दृश्य हानि को समझना

14.04 रचनात्मक कला अनुकूलन

14.05 कम दृष्टि वाले छात्रों के लिए अनुकूलन

14.06 न्यूनतम या अनुउपयोगी दृष्टि वाले छात्रों के लिए अनुकूलन

14.07 संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने की कला

14.08 क्रियात्मक /गामक कौशल विकसित करने की कला

14.09 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला के लाभ

14.10 दृष्टिबाधित बच्चों के साथ रचनात्मक कला के लिए विचार

14.11 दृष्टिबाधित बच्चों के साथ रचनात्मक कला के लिए रणनीतियाँ

14.12 कला सामग्री और तकनीकों को अपनाना

14.13 दृश्य हानि वाले बच्चों के लिए रचनात्मक कला के उदाहरण

14.14 कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना

14.15 सारांश

14.16 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

14.17 अभ्यास प्रश्न

14.18 चर्चा के विन्दु/स्पष्टीकरण

14.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.01 प्रस्तावना

कला अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम है जो व्यक्तियों को संवाद करने उनकी कल्पना का पता लगाने और आवश्यक कौशल विकसित करने की अनुमति देता है। यह बच्चों के समग्र विकास, रचनात्मकता, आत्म—अभिव्यक्ति और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रचनात्मक कला गतिविधियों में संलग्न होना दृष्टिबाधित बच्चों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उनके संवेदी अनुभवों को बढ़ाता है और आत्म—अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है। हालांकि, दृश्य कला में संलग्न होने पर दृष्टिबाधित बच्चों को अद्वितीय चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। दृश्य उत्तेजनाओं को देखने और उनकी सराहना करने की उनकी सीमित या कोई क्षमता नहीं होने के कारण उनकी कलात्मक क्षमता को उजागर करने के लिए एक अलग दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। यह अध्याय दृश्य हानि वाले बच्चों के लिए रचनात्मक कला को बढ़ावा देने के लिए लाभों, विचारों, रणनीतियों और तकनीकों का पता लगाएगा, उन्हें खुद को अभिव्यक्त करने और कलात्मक अन्वेषण की खुशी का अनुभव करने के लिए सशक्त करेगा।

14.02 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो जायेगें कि–

- दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला अनुकूलन के विषय में जान सकेंगे।
- दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला से मिलने वाले लाभों का वर्णन कर सकेंगे।
- दृष्टिबाधित बच्चों में संज्ञानात्मक एवं गामक कौशल विकसित करने की कला को समझ सकेंगे।
- दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला के उदाहरण प्रस्तुत कर सकेंगे।
- दृष्टिबाधित बच्चों में कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियों का प्रयोग कर सकेंगे।

14.03 दृष्टि हानि को समझना

दृष्टि हानि में दृष्टि की आंशिक से लेकर पूर्ण हानि तक की स्थितियों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। यह पहचानना महत्वपूर्ण है कि दृश्य हानि बच्चे की कलात्मक क्षमताओं को परिभाषित नहीं करती है। इसके बजाय, उन्हें वैकल्पिक तरीकों और उपकरणों की आवश्यकता होती है जो उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। दृश्य हानि जन्मजात या अधिग्रहित हो सकती है, और हानि की डिग्री एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में काफी भिन्न हो सकती है। कुछ बच्चों में प्रकाश की धारणा हो सकती है, जबकि अन्य अपने परिवेश को नेविगेट करने के लिए स्पर्श या श्रवण संकेतों पर भरोसा कर सकते हैं। रचनात्मक कला के लिए एक समावेशी और प्रभावी दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रत्येक बच्चे की अनूठी जरूरतों को समझना आवश्यक है।

14.04 रचनात्मक कला अनुकूलन

रचनात्मक कला गतिविधियों को बदलकर उन्हें दृष्टिबाधित छात्रों के लिए सुलभ बनाना बहुत कठिन नहीं है। छोटे छात्र आमतौर पर अपनी कक्षा में रचनात्मक कलाएँ करते हैं, लेकिन बड़े छात्र और वयस्क इसे सामुदायिक कक्षाओं में या केवल मनोरंजन के लिए भी कर सकते हैं।चाहे कला गतिविधियाँ आपकी कक्षा में हों, एक समर्पित कला कक्ष में, या घर पर, रचनात्मक कला क्षेत्र एक ऐसा स्थान है जहाँ छात्र विभिन्न प्रकार की रोचक सामग्रियों का पता लगा सकते हैं। यदि आपके कमरे में रचनात्मक कला गतिविधियाँ हैं, तो गतिविधियों को अधिक स्पर्शपूर्ण बनाने के लिए सामग्री शामिल करें। यह व्यक्तियों को आत्म–अभिव्यक्ति और मौलिकता का साधन प्रदान करता है। व्यक्ति विभिन्न प्रकार की सामग्री, बनावट और रंगों का पता लगा सकते हैं और उचित मोटर कौशल विकसित कर सकते हैं। आप इस समय को उन व्यक्तियों के लिए अधिक सार्थक बना सकते हैं जिनको कम दृष्टि या पूर्णदृष्टिबाधित है, सुगंध और बनावट जोड़कर और विभिन्न प्रकार की आयामी सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

कक्षा में, छात्रों को गतिविधि के सभी भागों के बारे में मौखिक निर्देश प्रदान करें। जब छात्र सुनता है कि अन्य छात्रों को परियोजना के लिए निर्देशित विवरण प्राप्त होते हैं, तो वे न केवल अपने स्वयं के सुदृढीकरण के लिए संचार सुनने का लाभ प्राप्त करेंगे, बल्कि छात्र यह भी महसूस करेंगे कि अन्य छात्रों को भी निर्देशित निर्देशों की आवश्यकता है।

जब तक एक दृष्टिबाधित छात्र को कला का पिछला अनुभव नहीं होता है, तब तक वे यह नहीं जान सकते हैं कि एक रचनात्मक परियोजना कहाँ से शुरू की जाए जब तक कि उन्हें एक उदाहरण के साथ प्रस्तुत नहीं किया जाता है। इस बात से अवगत रहें कि एक उदाहरण की संभावना उन्हें कुछ हद तक पुनः पेश करने के लिए लुभाएगी, बजाय इसके कि वह वास्तव में मौलिक हो – और इस तरह उनकी अपनी कल्पना को सीमित कर दे। याद रखें कि कला अक्सर दृश्य छापों का एक अमूर्त प्रतिनिधित्व है (क्यों कपास बर्फ का प्रतिनिधित्व करता है?) छात्र को अवधारणा समझने में मदद करें। जब संभव हो, वास्तविक वस्तुओं को प्रदान करें जो कि शिल्प का प्रतिनिधित्व करता है। यदि समय और प्रोत्साहन उन्हें वह प्रेरणा नहीं देते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता है, तो एक उदाहरण का उपयोग किया जा सकता है। यदि आप एक शिल्प को जोड़ रहे हैं जिसका एक

विशिष्ट अंतिम परिणाम माना जाता है, तो पहले छात्र को तैयार शिल्प के एक मॉडल से परिचित कराएं। छात्र के हाथों का मार्गदर्शन करें और स्थलों और संधों को इंगित करें।

14.05 कम दृष्टि वाले छात्रों के लिए अनुकूलन

कम दृष्टि वाले छात्रों द्वारा निम्नलिखित रूप से रचनात्मक कला का अनुकूलन किया जा सकता है:

- एक समायोज्य फ्लेक्स–आर्म लैंप का उपयोग करें। एक अंतर्निर्मित आवर्धक के साथ एक का उपयोग करने पर विचार करें।
- विषम रंग की ट्रे पर सामग्री प्रस्तुत करें और ऐसी सामग्री का उपयोग करें जिसमें सामान्य रूप से अच्छा कंट्रास्ट हो।
- सामग्री रखने के लिए नॉनस्किड शेल्फ लाइनर या मैट लगाएं।
- काले रंग के फेल्ट टिप पेन से चित्रों की रूपरेखाओं को हाइलाइट करें, या रंग दें जिसे रंगीन माना जाना चाहिए या छात्र को रूपरेखा का पता लगाने और परियोजना में महत्वपूर्ण विशेषताओं का पता लगाने में मदद करें।
- कागज़ पर वस्तुओं को चिपकाते समय, जैसे जैक–ओ–लालटेन की त्रिभुज आँखें, पहले छात्र को एक तैयार मॉडल दिखाना मददगार हो सकता है, ताकि छात्र अंतिम परिणाम देख सके।
- छात्रों को क्रेयॉन / मार्कर और वर्कशीट पर रंगीन शब्दों की पहचान करने के लिए अपने कम दृष्टि वाले उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

14.06 न्यूनतम या अनुउपयोगी दृष्टि वाले छात्रों के लिए अनुकूलन

न्यूनतम दृष्टि वाले छात्रों के लिए निम्नलिखित रूप से रचनात्मक कला का अनुकूलन किया जा सकता है:

- शुरू में छात्र को अपने हाथों और उंगलियों से "देखने" में मदद करके चित्र या प्रोजेक्ट के प्रतिनिधित्व और सामग्री के स्थान को समझने में मदद करें।
- मौखिक रूप से जुड़े वर्णनकर्ताओं के साथ "लैंडमार्क" का पता लगाने के लिए छात्र के हाथों का मार्गदर्शन करें।
- यदि छात्र को किसी क्षेत्र को रंगना है, तो कागज को मेश स्क्रीनिंग या सैंडपेपर के ऊपर रखें ताकि जब वे रंग करें तो उन्हें व्यवहारिक प्रतिक्रिया मिले।
- उस क्षेत्र की एक वास्तविक रूपरेखा या सीमा बनाएं जिसमें उन्हें रंग भरने की आवश्यकता है।
- स्पर्शात्मक बॉर्डर बनाने के लिए, रेखाओं की स्पर्शात्मक जानकारी प्रदान करने के लिए डायमेंशनल ग्लू या पेंट, ग्लू गन, विकी स्टिक या नीचे से पोक किए गए सिलाई पैटर्न व्हील का उपयोग करें।
- गोंद, आकार या सामग्री को कहां लगाना है, इसके लिए स्पर्श सूचक प्रदान करें।

बोध प्रश्नः–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न01– कम दृष्टि वाले छात्रों द्वारा किस प्रकार रचनात्मक कला का अनुकूलन किया जा सकता है?

....

....

प्रश्न02— न्यूनतम दृष्टि वाले छात्रों द्वारा किस प्रकार रचनात्मक कला का अनुकूलन किया जा सकता है?

....

....

14.07 संज्ञानात्मक कौशल विकसित करने की कला

रचनात्मक कला क्षेत्र एक और आधार है जो शिक्षण अवधारणाओं को स्वयं में स्थापित कर देता है।

- उपलब्ध कला सामग्री की बनावट और दिखावट में पसंद और अंतर पर चर्चा करें;
- पेंट, गोंद, आदि के अंदर और बाहर सामग्री रखने पर चर्चा करें;
- चर्चा करें कि सामग्री कितनी मोटी और पतली है;
- एक ही बनावट की कला सामग्री का मिलान करें;
- चर्चा करें कि कला सामग्री सख्त है या मुलायम;
- चर्चा करें कि क्या सामग्री खुरदरी या चिकनी है;
- सामग्री के आकार पर चर्चा करें; और
- पेंट जार या गोंद की बोतल के खाली या भरे होने पर चर्चा करें।

14.08 क्रियात्मक/गामक कौशल विकसित करने की कला

कला गतिविधियों में भाग लेना क्रियात्मक /गामक कौशल विकसित करने का एक शानदार तरीका है। इसके लिए संभावित गतिविधियों में शामिल हैं:

- उंगली की संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए फिंगर पेंट, शेविंग क्रीम, या पुडिंग के साथ फिंगर पेंटिंग।
- ऐसी सामग्री प्रदान करें जो स्पर्श संबंधी भेदभाव को बढ़ावा देने के लिए हाथों में दृढ़ स्पर्शीय अनुभव प्रदान करती है (पानी या बीन्स में खेलना, इलास्टिक बैंड पर खींचना आदि)।
- हाथ की ताकत विकसित करने के लिए मिट्टी या आटे को निचोड़ें और ढालें।
- कुशल हाथों को विकसित करने के लिए कला और शिल्प गतिविधियों के लिए कागज को फाड़ने और काटने का अभ्यास करें।

14.09 दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला के लाभ

कला बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है, खासकर उनके प्रारंभिक विकास के दौरान। अनुसंधान से पता चलता है कि कला गतिविधियों से बचपन में मस्तिष्क, क्षमता का विकास होता है। जैसे–जैसे बच्चे प्राथमिक विद्यालय और उससे आगे बढ़ते हैं, कला मस्तिष्क के विकास, निपुणता, आत्म–सम्मान और रचनात्मकता के अवसर प्रदान करती रहती है। रचनात्मकता अपने स्वयं के विचारों को व्यक्त कर रही है, नई चीजों की कोशिश कर रही है और बदलती सामग्री के साथ प्रयोग कर रही है। रचनात्मकता को विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका है विभिन्न प्रकार की सामग्री प्रदान करना और बच्चों को अपने दम पर स्वय बनाने के लिए समय देना।

बच्चों के लिए कला गतिविधियाँ उन्हें नए उपकरणों और सामग्रियों और उनके उपयोग के संभावित तरीकों से परिचित कराती हैं। लोग सोचते हैं कि कला का निर्माण विशुद्ध रूप से दृश्य प्रक्रिया है। वहीं, नेत्रहीन या नेत्रहीन बच्चे अपने दृष्टिबाधित सहपाठियों के साथ समान शर्तों पर कला वर्ग में भाग लेते हैं।

बच्चे अपनी कला के माध्यम से व्यक्त करते हैं कि वे कैसा महसूस करते हैं और दुनिया के बारे में कैसा सोचते हैं, जो उन्हें भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का एक तरीका देता है जिसके बारे में बात करने के लिए उनके पास शब्द नहीं हैं। कला बच्चों को अपने स्वयं के व्यक्तित्व की भावना, आत्म–सम्मान की भावना और दूसरों के काम के लिए प्रशंसा विकसित करने में मदद करती है।

जैसे–जैसे बच्चे चित्र बनाते, रंगते और कोलाज बनाते हैं, वे दुनिया (वस्तुओं के रंग और आकार) के बारे में सीखते हैं। जब वे पेंट, गोंद और मार्कर का उपयोग करते हैं, तो बच्चे योजना बना रहे होते हैं, प्रयोग कर रहे होते हैं और समस्या का समाधान कर रहे होते हैं। जैसे–जैसे बच्चे रंग मिलाते हैं, वे कारण और प्रभाव को समझना सीखते हैं। कला बच्चों को निर्णय लेने का मौका देती है और अपनी कलाकृति के बारे में चुनाव करने के अनुभव से सीखने का मौका देती है (मिन्समॉयर, 2016)।

रचनात्मक कला गतिविधियों में संलग्न होने से दृष्टिबाधित बच्चों को कई लाभ मिलते हैं। इसमे शामिल है–

संवेदी उत्तेजना– कला दृष्टिबाधित बच्चों को उनकी शेष इंद्रियों, जैसे स्पर्श, श्रवण और गंध को संलग्न करने का अवसर प्रदान करती है। स्पर्शनीय सामग्री, श्रवण संकेतों और सुगंधों के माध्यम से, वे दुनिया को एक अद्वितीय और बहुआयामी तरीके से सीखने और अनुभव कर सकते हैं।

आत्म–अभिव्यक्ति– कलात्मक गतिविधियाँ बच्चों को अपने विचारों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की अनुमति देती हैं, आत्म–जागरूकता और आत्मविश्वास को बढ़ावा देती हैं। विभिन्न माध्यमों से वे अपनी आंतरिक दुनिया को संप्रेषित कर सकते हैं और अपने दृष्टिकोण को दूसरों के साथ साझा कर सकते हैं।

ललित मोटर कौशल विकास– कला में विभिन्न उपकरणों और सामग्रियों का उपयोग करना शामिल है जो ठीक मोटर कौशल विकास को बढ़ावा देते हैं। ब्रश में हेरफेर करना, मिट्टी को तराशना या कागज काटना बच्चों को अपने हाथ–आंख के समन्वय और निपुणता को निखारने में मदद करता है।

संज्ञानात्मक विकास– कला में संलग्नता समस्या–समाधान, निर्णय लेने और महत्वपूर्ण सोच जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को उत्तेजित करती है। बच्चे पसंद करना सीखते हैं, अपनी कलाकृति की योजना बनाते हैं, और परिणामों का विश्लेषण करते हैं, संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा देते हैं और उनकी समग्र सीखने की क्षमता को बढ़ाते हैं।

सामाजिक संपर्क– कला गतिविधियाँ सहयोग, संचार और समाजीकरण के अवसर प्रदान करती हैं। समूह परियोजनाओं पर काम करना, कला कक्षाओं में भाग लेना, या प्रदर्शनियों में कलाकृति प्रदर्शित करना बच्चों को अपने साथियों, शिक्षकों और व्यापक समुदाय से जुड़ने की अनुमति देता है।

14.10 दृष्टिबाधित बच्चों के साथ रचनात्मक कला के लिए विचार

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला गतिविधियों की योजना बनाते और उन्हें लागू करते समय, कई बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए:

अभिगम्यता– सुनिश्चित करें कि कला सामग्री, उपकरण और स्थान सुलभ हैं और दृष्टिबाधित बच्चों की विशिष्ट आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए अनुकूलित हैं। पहुंच बढ़ाने के लिए स्पर्शनीय सामग्री, विपरीत रंग, बड़े प्रिंट लेबल और श्रवण संकेतों के उपयोग पर विचार करें।

बहु–संवेदी दृष्टिकोण– बनावट, गंध और ध्वनि जैसे तत्वों को कला गतिविधियों में शामिल करके कई इंद्रियों के उपयोग को प्रोत्साहित करें। यह बच्चों को समग्र और बहुसंवेदी तरीके से कला का पता लगाने और संलग्न करने की अनुमति देता है।

व्यक्तिगत निर्देश: पहचानें कि प्रत्येक बच्चे की अद्वितीय ज़रूरतें और क्षमताएँ होती हैं। व्यक्तिगत निर्देश प्रदान करें, उनकी प्राथमिकताओं के आधार पर गतिविधियों को अनुकूलित करें, और किसी भी चुनौती का सामना करते समय उनकी ताकत पर ध्यान केंद्रित करें।

शिक्षकों और विशेषज्ञों के साथ सहयोग– उचित कला गतिविधियों और तकनीकों को विकसित करने के लिए शिक्षकों, कला चिकित्सक और दृश्य हानि के विशेषज्ञों के साथ सहयोग करें। उनकी विशेषज्ञता दृष्टिबाधित बच्चों के लिए एक सहायक और समावेशी वातावरण बनाने में आपका मार्गदर्शन कर सकती है।

14.11 दृष्टिबाधित बच्चों के साथ रचनात्मक कला के लिए रणनीतियाँ

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला गतिविधियों को लागू करने के लिए विचारशील योजना और विशिष्ट रणनीतियों के उपयोग की आवश्यकता होती है। यहाँ कुछ प्रभावी दृष्टिकोणों पर विचार किया गया है:

स्पर्श कला– मिट्टी, बनावट वाले कागज, कपड़े और प्राकृतिक वस्तुओं जैसी सामग्री देकर बच्चों को स्पर्श कला के अनुभवों से परिचित कराएँ। उन्हें स्पर्श की भावना का उपयोग करके बनावट, आकार और रूपों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करें।

श्रवण कला– दिलचस्प शोर उत्पन्न करने वाली सामग्री का उपयोग करके ध्वनि को कला गतिविधियों में शामिल करें। उदाहरण के लिए, घंटियों, झंकार या संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग दृष्टिबाधित बच्चों के लिए कलात्मक अनुभव में एक नया आयाम जोड़ सकता है।

अनुकूलित उपकरण– उन्हें और अधिक सुलभ बनाने के लिए पारंपरिक कला उपकरणों को संशोधित करें। उदाहरण के लिए, आप एक तूलिका के लिए एक बड़ा हैंडल संलग्न कर सकते हैं या पफी का उपयोग करके एक रंग पुस्तक पर एक उभरी हुई रूपरेखा बना सकते हैं।

14.12 कला सामग्री और तकनीकों को अपनाना

दृष्टिबाधित बच्चों को कला का परिचय देते समय, सामग्री और तकनीकों को अपनाना सर्वोपरि हो जाता है। उनके कलात्मक अनुभव को बढ़ाने के लिए यहां कुछ व्यावहारिक विचार दिए गए हैं:

स्पर्शनीय सामग्री– विभिन्न प्रकार की स्पर्शनीय सामग्री जैसे कि बनावट वाले कागज, कपड़े, मिट्टी और प्राकृतिक वस्तुओं को शामिल करें। ये सामग्रियां बच्चों को स्पर्श के माध्यम से कला का पता लगाने और दुनिया की स्पर्शनीय समझ विकसित करने की अनुमति देती हैं।

श्रवण संकेत– बच्चों को उनके कलात्मक प्रयासों में मार्गदर्शन करने के लिए श्रवण संकेतों का उपयोग करें। उदाहरण के लिए, ध्वनि प्रभाव या ऑडियो विवरण शामिल करने से उन्हें अपनी कलाकृति के आयाम और संरचना को समझने में मदद मिल सकती है।

टैक्टाइल टूल्स–अनुकूलित उपकरण जैसे टैक्टाइल मार्कर्स, एम्बॉसिंग टूल्स और रेज़्ड–लाइन ड्रॉइंग किट के उपयोग का अन्वेषण करें। ये उपकरण बच्चों को स्पर्शनीय चित्र बनाने और उनकी कलाकृति की बनावट और आकार का अनुभव करने में सक्षम बनाते हैं।

उच्च कंट्रास्ट– दृश्य तत्वों को प्रस्तुत करते समय उच्च कंट्रास्ट रंगों का उपयोग करें। दृष्टिबाधित बच्चों के लिए बोल्ड और कॉन्ट्रास्टिंग रंगों में अंतर करना आसान होता है, जिससे उन्हें अपने द्वारा बनाई गई कला की समझ में आसानी होती है।

बहुसंवेदी दृष्टिकोण– कला गतिविधियों में स्पर्श, श्रवण और घ्राण तत्वों के संयोजन से कई इंद्रियों को संलग्न करें। उदाहरण के लिए, अलग–अलग ध्वनियों के साथ सुगंधित पेंट या बनावट वाली सामग्री को शामिल करने से कला–निर्माण प्रक्रिया में गहराई और समृद्धि आती है।

14.13 दृश्य हानि वाले बच्चों के लिए रचनात्मक कला के उदाहरण

जब दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला की बात आती है, तो ऐसी कई गतिविधियाँ हैं जिन्हें उनकी अनूठी जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुकूलित किया जा सकता है। यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

स्पर्शीय कोलाज– बच्चों को विभिन्न प्रकार की बनावट वाली सामग्री जैसे कपड़े, पंख, सूत और बटन प्रदान करें। उन्हें बनावट का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करें और सामग्री को आधार पर चिपकाकर या सिलाई करके कोलाज बनाएं। यह स्पर्शनीय अनुभव बच्चों को स्पर्श की अपनी भावना को जोड़ने और विभिन्न बनावटों के साथ कलाकृति बनाने की अनुमति देता है।

मिट्टी की मूर्तियां– दृष्टिबाधित बच्चों के लिए मिट्टी से मूर्ति बनाना एक अद्‌भुत गतिविधि है। वे अपने हाथों का उपयोग मिट्टी को ढालने और आकार देने के लिए कर सकते हैं, वस्तुओं या जानवरों के स्पर्शपूर्ण प्रतिनिधित्व का निर्माण कर सकते हैं। उन्हें उनकी मूर्तियों में विभिन्न आकृतियों, बनावटों और विवरणों का पता लगाने के लिए प्रोत्साहित करें।

ध्वनि चित्र– दृश्य संकेतों का उपयोग करने के बजाय, बच्चे ध्वनि से प्रेरित चित्र बना सकते हैं। विभिन्न संगीत वाद्ययंत्र, विभिन्न ध्वनियाँ बनाने वाली वस्तुएँ, या प्रकृति की ध्वनियों की रिकॉर्डिंग प्रदान करें। उन्हें ध्वनियों को सुनने और पेंट या अन्य स्पर्श सामग्री के माध्यम से अपनी व्याख्या व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें।

टैक्टाइल ड्रॉइंग– बच्चों को टैक्टाइल ड्रॉइंग बनाने में सक्षम बनाने के लिए अनुकूलित उपकरण जैसे टैक्टाइल मार्कर या रेज़्ड–लाइन ड्रॉइंग किट का उपयोग करें। वे अपने द्वारा खींची गई रेखाओं और आकृतियों को महसूस करने के लिए स्पर्श की अपनी भावना का उपयोग कर सकते हैं। उन्हें विभिन्न पैटर्न और बनावट के साथ प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करें।

संवेदी कला– संवेदी तत्वों को कला गतिविधियों में शामिल करके कई इंद्रियों को संलग्न करें। उदाहरण के लिए, बच्चे रेत, चावल, या पेंट के साथ मिश्रित नमक जैसी सामग्रियों का उपयोग करके बनावट वाली पेंटिंग बना सकते हैं। वे अपनी कलाकृति में घ्राण तत्वों को जोड़ने के लिए सुगंधित मार्करों या पेंट्स का भी पता लगा सकते हैं।

स्पर्शनीय चित्रण के माध्यम से कहानी सुनाना– बच्चों को उनके द्वारा पढ़ी या सुनी गई कहानियों के साथ स्पर्शात्मक चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। वे कहानी में पात्रों, सेटिंग्स और महत्वपूर्ण क्षणों का प्रतिनिधित्व करने के लिए बनावट वाली सामग्री, ब्रेल लेबल और स्पर्श मार्कर के संयोजन का उपयोग कर सकते हैं। यह गतिविधि कलात्मक अभिव्यक्ति और साक्षरता कौशल दोनों को बढ़ावा देती है।

सहयोगी भित्ति चित्र– सहयोगी भित्ति परियोजनाओं में बच्चों को शामिल करके टीमवर्क और सामाजिक संपर्क को बढ़ावा देना। एक बड़ा कैनवास या दीवार की जगह प्रदान करें जहां बच्चे भित्ति चित्र बनाने के लिए एक साथ काम कर सकें। सामूहिक कलाकृति का निर्माण करते हुए प्रत्येक बच्चा अपने स्वयं के स्पर्श तत्वों या बनावट को भित्ति में योगदान दे सकता है।

टैक्टाइल फ़ोटोग्राफ़ी– टैक्टाइल प्रिंट बनाने वाले अनुकूलित कैमरों का उपयोग करके बच्चों को फ़ोटोग्राफ़ी से परिचित कराएँ। वे अपने परिवेश का पता लगा सकते हैं, वस्तुओं या बनावट को दिलचस्प पाते हैं, और स्पर्शनीय तस्वीरें बनाने की खुशी का अनुभव कर सकते हैं।

नृत्य और आंदोलन– कला दृश्य रूपों तक ही सीमित नहीं है। बच्चों को डांस और मूवमेंट के जरिए खुद को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करें। एक बहु–संवेदी अनुभव बनाने के लिए संगीत, ताल और विभिन्न सामग्रियों का उपयोग करें। भावनात्मक अभिव्यक्ति और आत्म–खोज के लिए नृत्य एक उत्कृष्ट माध्यम हो सकता है।

अनुकूलित डिजिटल आट– डिजिटल आर्ट प्लेटफॉर्म का अन्वेषण करें जो दृष्टिबाधित बच्चों के लिए अनुकूली सुविधाएँ प्रदान करता है। ये प्लेटफॉर्म दृश्य सामग्री को स्पर्श या श्रवण प्रारूप में परिवर्तित कर सकते हैं, जिससे बच्चे अपनी अनूठी संवेदी क्षमताओं के माध्यम से डिजिटल कला से जुड़ सकते हैं।

याद रखें, ये उदाहरण सिर्फ एक शुरुआती बिंदु हैं। कुंजी कला गतिविधियों को दृष्टिबाधित प्रत्येक बच्चे की विशिष्ट आवश्यकताओं और क्षमताओं को पूरा करने के लिए अनुकूलित करना है, एक पोषण और समावेशी वातावरण को बढ़ावा देना है जो उन्हें अपनी रचनात्मकता का पता लगाने और व्यक्त करने की अनुमति देता है।

14.14 कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए कलात्मक अभिव्यक्ति संप्रेषण का सशक्त माध्यम है। यह उन्हें भावनाओं, विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने की अनुमति देता है जो मौखिक रूप से व्यक्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है। कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए यहां कुछ रणनीतियां दी गई हैं–

नैरेटिव आर्ट को प्रोत्साहित करना– बच्चों को कहानी कहने वाली कला बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। आख्यानों को स्पर्शनीय चित्रण, ब्रेल कैप्शन, या कलाकृति के साथ मौखिक विवरण के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण उनके कहानी कहने के कौशल को बढ़ाता है और रचनात्मक सोच को बढ़ावा देता है।

सहयोगात्मक कला– समूह परियोजनाओं पर एक साथ काम करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करके सहयोगी कला अनुभवों को बढ़ावा देना। सहयोगी कला सामाजिक संपर्क, टीमवर्क और विचारों के आदान–प्रदान को बढ़ावा देती है, जिससे बच्चे एक दूसरे से सीख सकते हैं और प्रेरित हो सकते हैं।

कलात्मक प्रतिबिंब– बच्चों को उनकी रचनात्मक पसंद, व्यक्त की गई भावनाओं और उनकी कला के पीछे की कहानी पर चर्चा करके उनकी कलाकृति पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें। यह चिंतनशील प्रक्रिया उन्हें उनकी कलात्मक अभिव्यक्ति की गहरी समझ विकसित करने में मदद करती है और उनकी आत्म–जागरूकता को बढ़ाती है।

कला की सराहनारू टच टूर, कलाकृतियों के ऑडियो विवरण और स्पर्श कला प्रदर्शनी के माध्यम से बच्चों को कला के विविध रूपों से परिचित कराएं। अन्य दृष्टिबाधित कलाकारों द्वारा बनाई गई कला का अनुभव बच्चों को अपनी स्वयं की कलात्मक क्षमताओं का पता लगाने के लिए प्रेरित कर सकता है।

अनुकूली प्रौद्योगिकी– डिजिटल आर्टवर्क के स्पर्शनीय प्रतिनिधित्व बनाने के लिए सहायक तकनीक, जैसे 3डी प्रिंटर और हैप्टीक डिवाइस के उपयोग का अन्वेषण करें। अनुकूली तकनीक दृष्टिबाधित बच्चों को डिजिटल कला प्लेटफार्मों का पता लगाने, दृश्य सामग्री को स्पर्श या श्रवण प्रारूपों में बदलने के लिए सशक्त बनाती है। ये प्रौद्योगिकियां कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए नई संभावनाएं खोलती हैं और बच्चों को मुख्यधारा के कला मंचों से जुड़ने के अवसर प्रदान करती हैं।

एक समावेशी कला पर्यावरण का निर्माण

दृष्टिबाधित बच्चों को अपनी कलात्मक गतिविधियों में समर्थित और सशक्त महसूस करने के लिए एक समावेशी कला वातावरण बनाना आवश्यक है। समावेशी कला स्थान को डिजाइन करते समय निम्नलिखित पहलुओं पर विचार करें–

अभिगम्यता– सुनिश्चित करें कि नेविगेशन में सहायता के लिए स्पष्ट मार्ग, उपयुक्त प्रकाश व्यवस्था और स्पर्श चिह्नों के साथ कला स्थान भौतिक रूप से सुलभ है। सुलभ बैठने की व्यवस्था और वर्कस्टेशन प्रदान करें जो विभिन्न आवश्यकताओं को समायोजित करते हैं, जैसे समायोज्य टेबल या चित्रफलक।

मल्टी–मोडल निर्देश– विभिन्न सीखने की शैलियों और क्षमताओं को पूरा करने के लिए कई प्रारूपों में निर्देश और जानकारी प्रदान करें। मौखिक स्पष्टीकरण, ब्रेल या बड़े प्रिंट में लिखित निर्देश, और स्पर्शनीय प्रदर्शनों को मिलाएं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हर बच्चा कला गतिविधियों तक पहुंच और समझ सके।

संवेदी उत्तेजना– एक ऐसा वातावरण बनाएं जो कई इंद्रियों को संलग्न करे। कला–निर्माण के संवेदी अनुभव को बढ़ाने के लिए संगीत, ध्वनि, गंध और स्पर्श तत्वों का उपयोग करें। कलात्मक वातावरण को समृद्ध करने के लिए विंड चाइम्स, टेक्सचर वॉल हैंगिंग या सुगंधित पौधों जैसे तत्वों को शामिल करने पर विचार करें।

सहायक कर्मचारी और सहकर्मी– दृष्टिबाधित बच्चों की जरूरतों को समझने और एक समावेशी और सहायक वातावरण बनाने के लिए कला प्रशिक्षकों और साथियों को प्रशिक्षित करें। एक सकारात्मक और समावेशी कला समुदाय को बढ़ावा देने के लिए प्रतिभागियों के बीच सहयोग, सहानुभूति और आपसी सम्मान को प्रोत्साहित करें।

प्रदर्शनी के अवसर– बच्चों को अपनी कलाकृति दिखाने और अपनी रचनात्मक यात्रा को दूसरों के साथ साझा करने का अवसर प्रदान करें। बड़े समुदाय को शामिल करने वाली कला प्रदर्शनियों या सहयोगी परियोजनाओं का आयोजन करें। यह न केवल आत्म–सम्मान को बढ़ाता है बल्कि दृष्टिबाधित बच्चों की कलात्मक क्षमताओं के बारे में जागरूकता और सराहना को भी बढ़ावा देता है।

बोध प्रश्न–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:–

प्रश्न03– दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला के उदाहरण दीजिए।

....

....

प्रश्न04– दृष्टिबाधित बच्चों के कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए कुछ रणनीतियां बताइएँ।

....

....

14.16 सारांश

रचनात्मक कला में दृष्टिबाधित बच्चों के लिए खुद को अभिव्यक्त करने, दुनिया से जुड़ने और पहचान और उपलब्धि की भावना विकसित करने की अपार क्षमता है। कला सामग्री, तकनीक और वातावरण को अपनाकर हम कलात्मक अन्वेषण और आत्म–अभिव्यक्ति के लिए समावेशी अवसर पैदा कर सकते हैं। कथा कला को प्रोत्साहित करना, सहयोग को बढ़ावा देना और सहायक तकनीकों का लाभ उठाना कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे हम दृष्टिबाधित बच्चों की कलात्मक क्षमताओं को अनलॉक कर सकते हैं। उनके अनूठे दृष्टिकोण को अपनाकर और आवश्यक सहायता प्रदान करके, हम इन बच्चों को कला की जीवंत दुनिया में महत्वपूर्ण योगदान देने और फलने–फूलने के लिए सशक्त बना सकते हैं।

14.17 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

उत्तर 01– कम दृष्टि वाले छात्रों द्वारा निम्नलिखित रूप से रचनात्मक कला का अनुकूलन किया जा सकता है:

- एक समायोज्य फ्लेक्स–आर्म लैंप का उपयोग करें। एक अंतर्निर्मित आवर्धक के साथ एक का उपयोग करने पर विचार करें।
- विषम रंग की ट्रे पर सामग्री प्रस्तुत करें और ऐसी सामग्री का उपयोग करें जिसमें सामान्य रूप से अच्छा कंट्रास्ट हो।
- सामग्री रखने के लिए नॉनस्किड शेल्फ लाइनर या मैट लगाएं।
- काले रंग के फेल्ट टिप पेन से चित्रों की रूपरेखाओं को हाइलाइट करें, या रंग दें जिसे रंगीन माना जाना चाहिए या छात्र को रूपरेखा का पता लगाने और परियोजना में महत्वपूर्ण विशेषताओं का पता लगाने में मदद करें।

उत्तर 02– न्यूनतम दृष्टि वाले छात्रों के लिए निम्नलिखित रूप से रचनात्मक कला का अनुकूलन किया जा सकता है:

- शुरू में छात्र को अपने हाथों और उंगलियों से "देखने" में मदद करके चित्र या प्रोजेक्ट के प्रतिनिधित्व और सामग्री के स्थान को समझने में मदद करें।
- मौखिक रूप से जुड़े वर्णनकर्ताओं के साथ "लैंडमार्क" का पता लगाने के लिए छात्र के हाथों का मार्गदर्शन करें।
- यदि छात्र को किसी क्षेत्र को रंगना है, तो कागज को मेश स्क्रीनिंग या सैंडपेपर के ऊपर रखें ताकि जब वे रंग करें तो उन्हें व्यवहारिक प्रतिक्रिया मिले।
- उस क्षेत्र की एक वास्तविक रूपरेखा या सीमा बनाएं जिसमें उन्हें रंग भरने की आवश्यकता है।

उत्तर03–दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला के उदाहरण–टैक्टाइल कोलाज,मिट्टी की मूर्तियाँ, ध्वनि चित्र,टैक्टाइल ड्रॉइंग,संवेदी कला, टैक्टाइल फोटोग्राफी इत्यादि।

उत्तर04– दृष्टिबाधित बच्चों के कलात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देने के लिए कुछ रणनीतियां– नैरेटिव आर्ट को प्रोत्साहित करना, सहयोगात्मक कला,कलात्मक प्रतिबिंब,अलुकूली प्रौद्योगिकी इत्यादि।

14.17 अभ्यास कार्य

1. दृष्टिबाधित बच्चों के सन्दर्भ में रचनात्मक कला को समझाइए।
2. दृष्टिबाधित बच्चों में आप किस प्रकार संवेगात्मक और गामक कौशलों को विकसित करेंगे? वर्णन कीजिए।
3. दृष्टिबाधित बच्चों को रचनात्मक कला से मिलनें वाले लाभों का विस्तार से व्याख्या कीजिए।
4. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला गतिविधियों की योजना बनाते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ? वर्णन कीजिए।
5. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला के उदाहरण प्रस्तुत कीजिए।
6. दृष्टिबाधित बच्चों में कलात्मक अभिव्यक्ति को बढावा देने के लिए आप किन रणनीतियों को उपयोग में लायेंगे ? विवेचना कीजिए।

14.18 चर्चा के विन्दु/स्पष्टीकरण

1. छात्राध्यापक आपस में दृष्टिबाधित बच्चों के लिए रचनात्मक कला हेतु उपयोगी सामग्री और तकनीकों पर चर्चा करेंगे।
2. छात्राध्यापक आपस में दृष्टिबाधित बच्चों की कलात्मक गतिविधियों के लिए एक समावेशी कला वातावरण बनाने के सन्दर्भ में चर्चा करेंगे।

14.19 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- NCERT (2006). National Curriculum Framework 2005. Position paper National focus group in Education of Children with Special needs. New Delhi: NCERT 278
- Mincemoyer, C. C. (2016). Art - An Opportunity to Develop Children's Skills. Penn State Extension. The Pennsylvania State University.
- Dignan, K. C. (2012). Expanded Core Curriculum. Texas School for the Blind and Visually Impaired Retrieved from http://www.tsbvi.edu/tb-ecc

- Expanded Core Curriculum Advocacy (2016). Recreation, Fitness, and Leisure and the Expanded Core Curriculum. American Foundation for the Blind and Perkins School for the Blind. Retrieved from http://www.eccadvocacy.org
- Willings,C.(2020).Creative Art Adaptations.Teaching Students with Visual Impairments, Retrieved from https://www.teachingvisuallyimpaired.com/
- Begeske, Jasmine; Walsh, Leslie; and Ray Miranda, David (2023) "Multisensory Adaptations: Creating Art with Students Who Are Blind and Low Vision," Journal of the Arts and Special Education: Vol. 3 : No. 1, Article 4. Available at: https://docs.lib.purdue.edu/jase/vol3/iss1/4
- Art Education for the Blind [AEB]. (n.d.). About art education for the blind. Art Beyond Sight. http://www.artbeyondsight.org/sidebar/aboutaeb.shtml#aeb
- https://ugcmoocs.inflibnet.ac.in/assets/uploads/1/26/660/et/P21_M23200218111102025757.pdf

इकाई–15 खेल संस्कृति और मनोरंजन गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली एजेंसियां/संगठन

इकाई संरचना

15.01 प्रस्तावना

15.02 उद्देश्य

15.03 इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन

15.04 अखिल भारतीय नेत्रहीन शतरंज महासंघ **(AICFB)**

15.05 भारतीय पैरालम्पिक समिति

15.06 एबिलिम्पिक्स

15.07 विश्व दृष्टिबाधित क्रिकेट

15.08 भारत में नेत्रहीनों के लिए क्रिकेट एसोसिएशन **(CABI)**

15.09 सारांश

15.10 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

15.11 अभ्यास प्रश्न

15.12 चर्चा के विन्दु/स्पष्टीकरण

15.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.01 प्रस्तावना

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए खेल सुविधाओं की बेहतरी के लिए दुनिया भर में कई संगठन काम कर रहे हैं। आज भारत में भी ऐसे अनेक संगठन है जो राष्ट्रीय स्तर पर दिव्यांग जनों के लिए खेल संस्कृति और मनोरंजन गतिविधियों को बढावा देने का कार्य कर रहे है। इस इकाई में आप ऐसे ही कुछ प्रमुख संगठन और एजेंसियों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगें जो न केवल दृष्टि दिव्यांग लोगों के बीच खेलकूद और मनोरंजक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए काम कर रही हैं बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए इन्हें निखारने का भी काम कर रही है ।

15.02 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप इस योग्य हो जायेगें कि–

- दृष्टिबाधित छात्रों के लिये खेल संस्कृति और मनोरंजन गतिविधियों को बढ़ावा देने वाली एजेंसियां/संगठनो को जान सकेंगे।
- इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन का विस्तार से वर्णन कर सकेंगे।
- अखिल भारतीय नेत्रहीन शतरंज महासंघ की कार्यप्रणाली को समझ सकेंगे।
- भारतीय पैरालम्पिक समिति की स्थापना और दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए खेल के प्रचार और विकास में योगदान का वर्णन कर सकेंगे।

15.03 इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन

इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन (आईबीएसए) देश में नेत्रहीनों के बीच खेलों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित राष्ट्रीय स्तर की सबसे बड़ी खेल संस्था है। एसोसिएशन की स्थापना अप्रैल 1986 में ब्लाइंड रिलीफ एसोसिएशन, दिल्ली (बीआरए) की पहल के माध्यम से की गई थी। एसोसिएशन सोसायटी पंजीकरण अधिनियम के तहत एक गैर–लाभकारी निकाय के रूप में पंजीकृत है। एसोसिएशन को भारतीय ओलंपिक संघ द्वारा मान्यता प्राप्त है और अंतर्राष्ट्रीय ब्लाइंड स्पोर्ट्स फेडरेशन (आईबीएसए) से संबद्ध है, जो दृष्टिबाधितों के इस शीर्ष खेल निकाय में भारत का प्रतिनिधित्व करता है। यह भारत की पैरालंपिक समिति से भी संबद्ध है। इसका उद्देश्य दृ ष्टिहीनों के लिए राष्ट्रीय स्तर की खेल गतिविधियों को बढ़ावा देना था। 24 राज्यों के 161 संस्थानों और खेल संगठनों से संबद्ध इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन देश मे दृष्टिबाधित लोगों के बीच खेलों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित राष्ट्रीय स्तर की सबसे बड़ी खेल संस्था है।

बीआरए के साथ संयुक्त रूप से, इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन हर दो साल में एक बार दृष्टिहीनों के लिए राष्ट्रीय खेल मीट आयोजित करता रहा है, जिसमें देश भर से सैकड़ों उत्साही ब्लाइंड खिलाड़ी एक ही स्थान पर एकत्रित होते हैं। इन राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में दौड़, लंबी कूद, भाला और डिस्कस थ्रो, गोला फेंक और तैराकी जैसी एथलेटिक स्पर्धाओं के साथ–साथ शतरंज के इनडोर खेल कार्यक्रम शामिल हैं। एसोसिएशन द्वारा आयोजित इन खेल स्पर्धाओं ने दृष्टिबाधित लोगों के लिए सबसे बड़े और प्रमुख खेल आयोजन होने की प्रतिष्ठा अर्जित की है। .

देश में नेत्रहीन खेलों के मानकों को बढ़ाने और नए खेलों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एसोसिएशन नियमित रूप से कोचिंग शिविर आयोजित करता है। इन कोचिंग शिविरों में देश भर के प्रतिभागियों को वैज्ञानिक प्रशिक्षण, खेल चिकित्सा, स्वास्थ्य और आहार आदि के ज्ञान और प्रथाओं को प्रसारित करने के लिए प्रतिष्ठित प्रशिक्षकों और अन्य विशेषज्ञों की सेवाओं को नियोजित किया जाता है ताकि उन्हें खेल पर अपने कोचिंग कौशल और ज्ञान को उन्नत करने में मदद मिल सके। साथ ही, कबड्डी जैसे पारंपरिक खेलों के साथ–साथ फुटबॉल, जूडो, पावरलिफ्टिंग और टेबल टेनिस जैसे नए खेलों का प्रदर्शन प्रस्तुत करके खेल गतिविधियों के दायरे को व्यापक बनाने का प्रयास किया गया है। सेमिनार इन कोचिंग शिविरों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जहां प्रतिभागी देश में नेत्रहीन खेलों को लोकप्रिय बनाने और बढ़ावा देने के लिए उचित रणनीतियों पर चर्चा और विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी के लिए, एसोसिएशन एथलीटों का चयन करने के लिए परीक्षण आयोजित करता है और टीम के सदस्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है, इसके अलावा टीम के सदस्यों को उचित गियर से लैस करने सहित सभी लॉजिस्टिक और अन्य व्यवस्थाएं करता है। इस प्रकार एसोसिएशन भारतीय ओलंपिक संघ और भारतीय खेल प्राधिकरण से कॉर्पोरेट समर्थन और तकनीकी सलाह के साथ प्रमुख वित्तीय और संगठनात्मक जिम्मेदारियां भी उठाता है।

एसोसिएशन नेत्रहीन खेलों की रुपरेखा को और अच्छा बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहा है। एक ओर, यह गुणवत्ता और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने के लिए दृष्टिहीन खेलों पर कोचिंग शिविर और सेमिनार आयोजित कर रहा है, दूसरी ओर यह दृष्टिबाधित खिलाड़ियों की घटनाओं और उपलब्धियों की मीडिया कवरेज के लिए प्रयास कर रहा है। एसोसिएशन का मानना है कि नेत्रहीन खेल मुख्यधारा के खेलों से कम गंभीर गतिविधि नहीं है। इसी विश्वास के साथ, एसोसिएशन कॉर्पोरेट घरानों के लिए नेत्रहीन खेल आयोजनों का बड़े पैमाने पर विपणन और पर अज्ञात क्षेत्र में उनकी रुचि जगाने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है।

बोध प्रश्न–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 01– इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन (आईबीएसए) की स्थापना कब हुई।

....

....

प्रश्न 02– इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन में कितने राज्यों के कितनी संस्थानें संबद्ध है।

....

....

15.04 अखिल भारतीय नेत्रहीन शतरंज महासंघ (AICFB)

शतरंज एक दिमागी खेल है, दृष्टिबाधित लोगों के लिए यह एकमात्र खेल है जिसे वे अन्य लोगों के साथ समान स्तर पर खेल सकते हैं। यह उनकी बुद्धिमत्ता की पहचान, उनके अंधेपन को पार करने और मस्तिष्क स्तर पर प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन करने की क्षमता के बारे में है। बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि शतरंज खेलने का उद्देश्य नेत्रहीनों और दृष्टिहीनों के आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास को बढ़ाना है।

अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (AICFB) भारत में शतरंज के खेल के लिए केंद्रीय प्रशासनिक निकाय है। 1951 में स्थापित, महासंघ शतरंज के लिए विश्व निकाय इंटरनेशनेल चेस फेडरेशन (FIDE) से संबद्ध है। इसका वर्तमान मुख्यालय चेन्नई में है। अखिल भारतीय नेत्रहीन शतरंज महासंघ (AICFB) भारत में नेत्रहीनों के बीच शतरंज के खेल के लिए राष्ट्रीय निकाय है। एआईसीएफबी अखिल भारतीय शतरंज संघ (एआईसीएफ) से भी संबद्ध है जिसे भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है। अखिल भारतीय नेत्रहीन शतरंज महासंघ (एआईसीएफबी) की स्थापना 1997 में हुई थी और यह भारत में नेत्रहीनों के लिए शतरंज को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय ब्रेल शतरंज एसोसिएशन (आईबीसीए) जिसने 1998 में एआईसीएफबी संबद्धता प्रदान की थी, दुनिया भर में दृष्टिबाधित लोगों के बीच शतरंज गतिविधियों के विकास और प्रचार के लिए जिम्मेदार है। इसके साथ 18 राज्य निकाय संबद्ध हैं और 2800 से अधिक सक्रिय शतरंज खिलाड़ियों को एआईसीएफबी ने पंजीकृत किया है। प्ष्ठ ने 41 क्षेत्रीय स्तर के शतरंज टूर्नामेंट, 29 राष्ट्रीय टूर्नामेंट आयोजित किए हैं और विश्व शतरंज चौंपियनशिप में भाग लेने के लिए 16 बार भारतीय टीमों को भेजा है।

एआईसीएफबी को दिसंबर 2003में भारत में पहली बार एशियाई शतरंज चौंपियनशिप आयोजित करने का सम्मान भी मिला, जो भारत के इतिहास में पहला अंतर्राष्ट्रीय शतरंज टूर्नामेंट था। एआईसीएफबी नेत्रहीनों के लिए शतरंज गतिविधि में भारत को शेष विश्व के साथ एकीकृत करने में सक्षम रहा है। एआईसीएफबी के गठन और आईबीसीए से इसकी संबद्धता के बाद से, हमारे देश में नेत्रहीन शतरंज खिलाड़ियों ने जबरदस्त प्रगति की है।

बोध प्रश्नः–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 03– अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (AICF) की स्थापना कब हुई।

....

....

प्रश्न 04– एआईसीएफबी ने कितने सक्रिय शतरंज खिलाड़ियों को पंजीकृत किया है? .

....

....

15.05 भारतीय पैरालम्पिक समिति

पैरालिंपिक खेल एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बहु–खेल आयोजन है, जिसमें कई प्रकार की शारीरिक अक्षमताओं और बौद्धिक अक्षमताओं वाले एथलीट शामिल होते हैं। इसमें गतिशीलता विकलांग, विच्छेदन, अंधापन और सेरेब्रल पाल्सी वाले एथलीट शामिल हैं। सभी पैरालंपिक खेलों का संचालन अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (IPC) द्वारा किया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (IPC) पैरालंपिक आंदोलन की वैश्विक शासी निकाय है। इसका उद्देश्य ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन पैरालम्पिक खेलों का आयोजन करना और नौ खेलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ के रूप में कार्य करना, विश्व चौंपियनशिप और अन्य प्रतियोगिताओं की देखरेख और समन्वय करना है। यह 22 सितंबर 1989 को एक गैर–लाभकारी संगठन के रूप में स्थापित किया गया था, यह बॉन, जर्मनी में स्थित है,

और इसका उद्देश्य शुरुआत से लेकर निम्न स्तर तक की हानि वाले सभी लोगों के लिए खेल के अवसर विकसित करना है।

पैरालंपिक कमेटी ऑफ इंडिया (पीसीआई) वह निकाय है जो पैरालंपिक खेलों और अन्य अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक मीट में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए एथलीटों का चयन करने और आयोजनों में भारतीय टीमों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार है। संगठन की स्थापना 1992 में शारीरिक रूप से विकलांग स्पोर्ट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के रूप में की गई थी।

पैरालंपिक कमेटी ऑफ इंडिया (पीसीआई) जिसे अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (आईपीसी) द्वारा एनपीसी (राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति) भी कहा जाता है। आईपीसी हैंडबुक के अनुसार यह बौद्धिक और दृष्टिबाधित व्यक्तियों सहित विकलांग व्यक्तियों के लिए खेल के प्रचार और विकास के लिए भारत में एकमात्र संगठन है। इसे युवा मामले और खेल मंत्रालय (एमवाईएएस), और राष्ट्रीय खेल विकास संहिता (एनएसडीसी), भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय खेल महासंघ (एनएसएफ) के रूप में भी जाना जाता है। भारत में बौद्धिक और दृष्टिबाधित व्यक्तियों सहित विकलांग व्यक्तियों के बीच खेल के प्रचार और विकास के लिए भारत की पैरालंपिक समिति का गठन किया गया था।

पीसीआई सभी विकलांगता समूह के खेलों का प्रतिनिधित्व करता है, अर्थात अस्थि विकलांग, व्हील चेयर और पैराप्लेजिक, सेरेब्रल पाल्सी से प्रभावित, बौद्धिक रूप से अक्षम, दृष्टिबाधित और बौना समूह (आईपीसी के दिशानिर्देशों के अनुसार), इन सभी विकलांगता समूहों के एक छत्र संगठन के रूप में कार्य करता है। समिति पैरा एथलीटों को खेल उत्कृष्टता हासिल करने और दुनिया को प्रेरित और उत्साहित करने में सक्षम बनाती है।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न05—अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (IPC) के उद्देश्य बताइये। .

....

....

प्रश्न 06— पैरालंपिक कमेटी ऑफ इंडिया (पीसीआई) की स्थापना कब की गई?

....

....

15.06 एबिलिम्पिस

एबिलिम्पिक दिव्यांग व्यक्तियों के लिए एक व्यावसायिक कौशल प्रतियोगिता है जो उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने और बढ़ाने में सक्षम बनाती है। एबिलिम्पिक प्रतियोगियों को सशक्त बनाता है और उनकी क्षमताओं के बारे में सार्वजनिक जागरूकता पैदा करने में मदद करता है। "एबिलिम्पिक्स" शीर्षक "ओलंपिक ऑफ़ एबिलिटीज़" वाक्यांश से गढ़ा गया था। संयुक्त राष्ट्र के विकलांग व्यक्तियों के अंतर्राष्ट्रीय वर्ष के उपलक्ष्य में अंतर्राष्ट्रीय एबिलिम्पिक फेडरेशन द्वारा 1981 में टोक्यो में पहला अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक आयोजित किया गया था। कोलम्बिया में इस दूसरे अंतर्राष्ट्रीय एबिलिम्पिक के दौरान, अंतर्राष्ट्रीय एबिलिम्पिक को बढ़ावा देने और इसे नियमित आधार पर आयोजित करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन स्थापित करने का प्रस्ताव दिया गया था। इसलिए, हांगकांग में आयोजित तीसरे अंतर्राष्ट्रीय एबिलिम्पिक के दौरान इंटरनेशनल एबिलिम्पिक फेडरेशन (IAF) अस्तित्व में आया। तब से, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया (1995), प्राग, चेक गणराज्य (2000), दिल्ली (2003), शिज़ुओका, जापान (2007), सियोल, कोरिया (2011) और बोर्डो, फ्रांस (2016) में अंतर्राष्ट्रीय एबिलिम्पिच आयोजित किया गया है।

15.07 विश्व दृष्टिबाधित क्रिकेट

वर्ल्ड ब्लाइंड क्रिकेट काउंसिल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए क्रिकेट का प्रबंधन करने के लिए नेत्रहीन क्रिकेट का प्रशासन है। WBC की स्थापना सितंबर 1996 में हुई थी (जब विश्व स्तर पर नेत्रहीन

क्रिकेट को बढ़ावा देने और नियंत्रित करने के लिए दिल्ली में एक बैठक आयोजित की गई थी। भारत के जॉर्ज अब्राहम WBC के संस्थापक अध्यक्ष थे।

15.08 भारत में नेत्रहीनों के लिए क्रिकेट एसोसिएन (CABI)

सीएबीआई, भारत में नेत्रहीनों के लिए क्रिकेट का संचालन, आयोजन और विकास करने वाली सर्वोच्च संस्था है और इसके 30 राज्य/केंद्रशासित प्रदेश बोर्ड और 25000 से अधिक खिलाड़ी भारत में विभिन्न घरेलू स्तर के टूर्नामेंटों से संबद्ध हैं। CABI वर्ल्ड ब्लाइंड क्रिकेट लिमिटेड (WBC) और भारतीय पैरालंपिक समिति से संबद्ध है और विकलांगों के लिए समर्थनम ट्रस्ट की क्रिकेट शाखा और पहल है।

चूंकि खेल समर्थनम की प्रमुख पहलों में से एक था, इसलिए संगठन ने 2010 में नेत्रहीनों के लिए क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित करने की जिम्मेदारी संभाली। परिणामस्वरूप दि क्रिकेट एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड इन इंडिया (CABI) का गठन किया गया। दिलीप वेंगसरकर, सैयद किरमानी, सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़, सौरव गांगुली, अश्विन, विराट कोहली, युवराज सिंह, गौतम गंभीर, इरफान पठान, जहीर खान, क्रिस गेल, अर्जुन रणथुंगा और एडम गिलक्रिस्ट जैसे क्रिकेट दिग्गजों ने नेत्रहीन क्रिकेट को अपना समर्थन दिया।

सीएबीआई, जिला, राज्य, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर टूर्नामेंट आयोजित करता है। यह स्थानीय निकायों को प्रतिभाओं को पहचानने और कोच, फिजियोथेरेपिस्ट, प्रशिक्षकों, अंपायरों और अन्य टीम सहायक कर्मियों की टीमों को विकसित करने के लिए स्थानीय स्तर के टूर्नामेंट आयोजित करने में मदद करता है।

सीएबीआई, नेत्रहीनों के लिए खेल को बढ़ावा देकर क्रिकेट के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर काम कर रहा है। सीएबीआई का मानना है कि यह देश की दृष्टिबाधित आबादी के लिए एक बड़ी प्रेरणा होगी और यह याद दिलाएगी कि वास्तविक विकलांगता केवल दिमाग में है और कुछ भी असंभव नहीं है। उनके जीवन में अपेक्षित यह दृष्टिकोण दृष्टिहीन क्रिकेट के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और अंततः उन्हें मुख्यधारा में एकीकृत होने में मदद करेगा।

सीएबीआई एक राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता एनजीओ, विकलांगों के लिए समर्थनम ट्रस्ट की क्रिकेट शाखा और पहल है, जो विकलांग लोगों और वंचितों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आवास, पौष्टिक भोजन, व्यावसायिक प्रशिक्षण, और प्लेसमेंट आधारित पुनर्वास प्रदान करके समाज के बाकी हिस्सों के साथ तालमेल बिठाने में सक्षम बनाने के अवसरों की सुविधा प्रदान करने की दिशा में काम कर रही है।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न07— वर्ल्ड ब्लाइंड क्रिकेट काउंसिल की स्थापना कब हुई?

....

....

प्रश्न06— सीएबीआई के कार्यो का उल्लेख कीजिए। ..

....

....

15.09 सारांश

भारत सहित दुनिया भर में कई संगठन दृष्टिदिव्यांग व्यक्तियों के बीच खेल और मनोरंजक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं। इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन (आईबीएसए) देश में नेत्रहीनों के बीच खेलों को बढ़ावा देने के लिए समर्पित राष्ट्रीय स्तर की सबसे बड़ी खेल संस्था है। द ऑल इंडिया चेस फेडरेशन फॉर द ब्लाइंड (AICFB) भारत में नेत्रहीनों के बीच शतरंज के खेल के लिए राष्ट्रीय निकाय है। जबकि, वर्ल्ड ब्लाइंड क्रिकेट काउंसिल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट का प्रबंधन करने के लिए नेत्रहीन क्रिकेट का एक संगठन है। दृष्टिहीन व्यक्तियों के साथ साथ अन्य दिव्यांग जनों के लिए भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्य अवसर प्रदान करने के लिए भारतीय पैरालंपिक समिति सफलता पूर्वक कार्य कर रही है।

15.10 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

उत्तर 01– इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन (आईबीएसए) की स्थापना 1986 में हुई।

उत्तर 02– इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन में 24 राज्यों के 161 संस्थानें संबद्ध है।

उत्तर 03– अखिल भारतीय शतरंज महासंघ (AICF) की स्थापना 1951 में हुई।

उत्तर 04–एआईसीएफबी ने 2800 से अधिक सक्रिय शतरंज खिलाड़ियों को पंजीकृत किया है।

उत्तर 05– अंतर्राष्ट्रीय पैरालंपिक समिति (IPC) का उद्देश्य ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन पैरालम्पिक खेलों का आयोजन करना और नौ खेलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय संघ के रूप में कार्य करना, विश्व चौंपियनशिप और अन्य प्रतियोगिताओं की देखरेख और समन्वय करना है। यह 22 सितंबर 1989 को एक गैर–लाभकारी संगठन के रूप में स्थापित किया गया था, यह बॉन, जर्मनी में स्थित है, और इसका उद्देश्य शुरुआत से लेकर निम्न स्तर तक की हानि वाले सभी लोगों के लिए खेल के अवसर विकसित करना है।

उत्तर 05–पैरालंपिक कमेटी ऑफ इंडिया (पीसीआई) की स्थापना 1992 में की गई?

उत्तर 06– वर्ल्ड ब्लाइंड क्रिकेट काउंसिल की स्थापना सितंबर 1996 में हुई।

उत्तर 07– सीएबीआई, नेत्रहीनों के लिए खेल को बढ़ावा देकर क्रिकेट के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर काम कर रहा है। सीएबीआई का मानना है कि यह देश की दृष्टिबाधित आबादी के लिए एक बड़ी प्रेरणा होगी और यह याद दिलाएगी कि वास्तविक विकलांगता केवल दिमाग में है और कुछ भी असंभव नहीं है। उनके जीवन में अपेक्षित यह दृष्टिकोण दृष्टिहीन क्रिकेट के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और अंततः उन्हें मुख्यधारा में एकीकृत होने में मदद करेगा।

15.11 अभ्यास प्रश्न

1. दृष्टिबाधित बच्चों के लिए मनोरंजक सुविधाओं को बढ़ावा देने में संगठनों या संस्थानों की भूमिका का विस्तृत विवरण दें।
2. इंडियन ब्लाइंड स्पोर्ट्स एसोसिएशन का विस्तार से वर्णन कीजिए।
3. अखिल भारतीय नेत्रहीन शतरंज महासंघ की कार्यप्रणाली को समझाइऐ।
4. भारतीय पैरालम्पिक समिति की स्थापना और दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए खेल के प्रचार और विकास में योगदान का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

15.12 चर्चा के विन्दु/स्पष्टीकरण

प्रश्न 01– छात्राध्यापक आपस में खेल और मनोरंजक गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले राष्ट्रीय और अन्तेर्राष्ट्रीय संगठनों के मध्य सम्बंध पर चर्चा करेगें।

प्रश्न 02– छात्राध्यापक आपस में विश्व दृष्टिबाधित क्रिकेट में भारतीय टीम के अब तक के प्रदर्शन के सन्दर्भ में चर्चा करेंगें।

15.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Lieberman, L. J. (1996), Adapting games, sports, and recreation for children and adults. Deaf-Blind Perspectives, 3(3), 5-8. http://www.tr.wou.edu/tr/dbp/pdf/may96.pdf
- Mincemoyer, C. C. (2016). Art - An Opportunity to Develop Children's Skills. Penn State Extension. The Pennsylvania State University.
- UNESCO (2016). Different meanings of "curriculum". The United Nations Educational, Scientific and Cultural Organization, Paris. Retrieved from

http://www.unesco.org/new/en/education/themes/strengthening-education- systems/q ua l ity-fra mework/techn ica l-notes/ different -meaning-of-curriculum/

- WHO (2008). School policy framework: implementation of the WHO global strategy on diet, physical activity and health. World Health Organization, Geneva.
- Indian Blind Sports Association (IBSA) https://blindsportsindia.org/index.html
- All India Chess Fedration for Blind (AICFB) https://www.aicfb.in/about-us/
- Paralympic Committee of India (PCI) https://www.paralympicindia.org.in